प्रकाशक—
आयुर्वेद विज्ञान ग्रन्थमाला कार्यालय,
अकालीमार्केट, अमृतसर।

१९५४ ई०

मुद्रक—
नया हिन्दुस्तान प्रेस,
चांदनी चौक, दिल्ली।

विषय-सूची

भस्म-विज्ञान के आधार ग्रन्थ और ग्रन्थ संकेत

ग्रन्थ	संकेत
अक्सीर आजम	अ अ.
अनुपान तरंगिणी	अनु त
अनुभूत योगमाला	अनु. यो. मा
अर्क प्रकाश	अ. प्र.
अलकीमिया	अल की
अलतवीव	अ त.
असरार उलातिवा	अ.ति
असरार सदरिया	अ स.
असरार हिकमत	अ. हि
आनन्दकन्द	आ क.
आयुर्वेद-प्रकाश	आ वे प्र.
आयुर्वेद विज्ञान	आ वे. वि
आयुर्वेद सम्मेलन पत्रिका	आ स प.
औषध कल्पलता	औ. क ल.
ऋद्विखण्ड वादिखण्ड	ऋ. खं.
काशफ अक्सीर	का अ.
काकचण्डीश्वर तन्त्र	का. चं त
कुश्ताजात अक्सीर	कु. अ.
कुश्ताजात रहीमी	कु र.
गदनिग्रह	ग नि
चरक [illegible]	च. स
	चा. चि.
	चि क क.
	चि चं
	चि र
	जा अ.
	जो हि.

ग्रन्थ	संकेत
टोडरानन्द	टो
तजुर्बात तुलसी	त तु.
तिव्व कीमियाई	ति. की.
देवीयामल तन्त्र	दे. या.
देशोपकारक	दे उ
देवेन्द्रगिरि सग्रह	देवे स
धन्वन्तरी	धन्व
धातुविद्या प्रकाश	धा.वि
नपुन्सकामृत	नपु.
निघण्टु रत्नाकर	नि र
नारायण विलास	ना. वि
नूतन विधि	नू वि.
प्रत्यक्ष औषध निर्माण	प्र.औ नि
पारद संहिता	पा सं.
वाजीकरण कल्पद्रुम	वा. क. क.
भारतीय रसपद्धति	भा र प
भारत भैषज्यरत्नाकर	भा. भै र.
भावप्रकाश	भा. प्र.
भैषज्यरत्नावली	भै. र.
भैषज्यसारामृत	भै सा
मखजन	मख.
मनाउलअक्सीर	म अ.
मादनउलअक्सीर	मा. अ
मुजर्रबात फिरोजी	मु. फि
मिफताय उल खजाईन	मि.ख
यूनानी सिद्धयोग सग्रह	यू सि स
योगचन्द्रिका	यो चं.

योगचिन्तामणि	यो चि.
योगतरंगिणी	यो त.
योगसार	यो. सा.
योगसागर	यो. सागर
योगमहार्णव	यो म
योगरत्नाकर	यो र
रफीक उलातिवा	र ति.
रत्नाकर औषध योग	र. औ यो.
रमूजुलतिवा	रमू. ति.
रसकल्पलता	र.क ल
रसककालीय	र. क.
रसकामधेनु	र का धे
रसकौमुदी	र कौ.
रसचण्डांशु	र. च
रसचिन्तामणि	र चि
रसचूडामणि	र चू.
रसजलनिधि	र. ज. नि
रसतन्त्रसार	र त. सा
रसतरंगिणी	र त
रसदर्पण	र द
रसदीपक	र दी
रसदीपिका	र दीपिका
रसप्रकाशसुधाकर	र प्र सु
रसपद्धति	र प
रसप्रदीप	र प्र
रसपारिजात	र पा
रसमंगल	र
रसमंजरी	र मंजरी
रसमानस	र मा.
रसमुक्तावली	र मु.
रसयोगसागर	र यो. सा.
रसरहस्य	र रहस्य
रसरत्नप्रदीप	र. र प्र
रसरत्नमणिमाला	र. र. म मा.
रसरत्नकोष	र र. को.
रसरत्न कौमुदी	र र कौ.
रसराजलक्ष्मी	र रा ल
रसराजकौस्तुभ	र. र कौस्तुभ
रसरत्नाकर	र. र
रसराजशिरोमणि	र रा शि
रसराजशंकर	र रा श
रसरत्नसमुच्चय	र र स
रसरत्नदीपिका	र र. दी
रसराजसुन्दर	र. रा सु.
रसबोध	र बो
रसबोधचन्द्रोदय	र बो. च.
रससंग्रह सिद्धान्त	र स. सि.
रससिद्धान्त	र सि.
रससिद्धान्त संग्रह	र. सि स.
रससागर	र सागर
रससार	
रससारपद्धति	
रससंकेतकलिका	
रसाध्याय	
रसामृत	
रसायनशास्त्र	
रसायनसार संग्रह	
रसायनसंहिता	

रसायनसार	रसा सा.
रसायनखण्ड	रसा. ख.
रसार्णव	रसार्णव
रसालकार	रसा. लं.
रसावतार	रसावतार
रसावतार दूसरा	रसावतारदूसरा
रसेन्द्रकल्पद्रूम	रसे. क.
रसेन्द्र चिन्तामणि	रसे. चि.
रसेन्द्र चूडामणि	रसे. चू,
रसेन्द्ररत्नकोप	रसे. र. को
रसेन्द्रमार सग्रह	रसे. सा. सं.
लो हसर्वस्व	लो. स
लोरपद्धति	लो. प.
वाहट	वा
वगसेन	व से
वसवराजीय	व. रा.
वृन्दमाधव	वृ मा.
वृ. योग तरगिणी	वृ. यो. त
वृ. रसप्रदीप	वृ. र प्र.
वैद्यकल्पद्रुम	वै. क:
वैद्यचिन्तामणि	वै चि.
वैद्यदर्पण	वै द.
वैद्यरहस्य	वै, र
वैश्योपकारक	वै उ
शार्ङ्गधर	शा. ध.
सनत अकबर	स अ
सिद्ध भैषज्यमणिमाला	सि भै. मा
सिद्धयोग सग्रह	सि यो. स
सिद्धौषधि प्रकाश	सि औ. प्र.
सुश्रुत सहिता	सु सं.
हिकमत अक्सीर	हि अ.

भस्म-विज्ञान के उपोद्घात की अशुद्धियां

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६६	१६	आतमस्वरूप	सत्यस्वरूप

तीसरा साधनपाद

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६४	७	स्तपन	तपन
"	८	स्तपन	तपन
"	११	स्तपन	तपन



चतुर्थ-भस्म पाद

—:o:—

भस्मों के प्रकार

इस बातको हम पीछे सिद्ध कर चुके है कि हमने आरम्भमे धातुओ की भस्में जब बनाई थी उस समय हमने वे रसायनवाद के निमित्त ही बनाई थी और उन्हें जो कुछ जांचा या समझा था वह सभी उसी निमित्त था, किन्तु जब इनका उपयोग लाभदायी सिद्ध हुआ तो उस समय भी हमने इन भस्मो को उसे व्यावहारिक उपयोगिता की दृष्टि से ही जाँचा, रचना दृष्टि से नही। धातुओ से बनने वाली उनकी भस्में अपने पूर्वरूप को छोड कर इस नये रूप मे जो आ जाती है इनका ऐसा भस्म रूप किन कारणो से बनता है और इनकी उस रचना का रूप क्या होता है ? इसका ज्ञान आज भी हम न जानने के बराबर ही रखते है। वास्तव में हमारा परम्परागत ज्ञान ऐसे क्रम से आगे बढा है जिसमे धातु भस्मो के वास्तविक रूप को जानने का न तो कोई प्रयोजन सामने आया न व्यावहारिक दृष्टि से उसकी उपयोगिता में इस अज्ञान ने बाधा डाली। ज्ञात धातुओ को जिस परम्परा द्वारा जिस उद्देश्य के लिये उनकी भस्में हमारे अचार्यो ने बनाई थी उनका वह क्रम ही हमारे लिये मार्ग दर्शक रहा। उनके अनुभव ने हमारे लिये इनके उपयोग का मार्ग प्रस्तुत कर दिया था इसीलिये हम उसका अन्धानुसरण करते चले आ रहे है। भस्मो की वास्तविक रचना रूप को न जानते हुए भी व्यावहारिक दृष्टि से जब इसमे कोई बाधा नही आती हमने उसे जानने या समझने का प्रयत्न नही किया। इसमे एक बडा बाधक कारण यह भी था कि हम दार्शनिक विचारधारा के अनुसार धातुओ को पृथिवी तत्त्व के अन्तर्गत पार्थिव पदार्थ मानते थे, उस समय हमारी पहुच धातुओ की मौलिकता तक नही हुई थी, इसीलिये भस्मे यौगिक है इसकी सम्भावना का कोई आधार भी नही था। यह ज्ञान तो हमे नव्य-रसायन शास्त्र ने दिया कि पृथिवी तत्त्वरूप नही प्रत्युत धातुए तत्त्वरूप है और उन धातुओ से बनने वाली भस्मे उनकी अन्य तत्त्वोसे बनी यौगिक है। हमने इनके उक्त कथन से एकाएक अपना दृष्टिकोण नही बदला, प्रत्युत इसकी सत्यता को जानने

समझनेका जो हमे प्रायोगिक प्रत्यक्ष ज्ञान उसने दिया उसकी सत्यता से मुह मोडा नही जा सकता और यह बात नही है कि हमारा झुकाव सबसे पूर्व इस ओर हुआ हो, प्रत्युत इसके अनुसन्धान कर्ता आचार्य डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र राय है जिन्होंने सब से पूर्व अपने प्राचीन तथा नव्य रसायन-शास्त्र का पूर्णतया क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त कर सबसे पूर्व इस बात को जानने की चेष्टा की थी कि आखिरकार हमारे रसायनवाद के ग्रन्थोमे वर्णित धातु भस्मे है किस प्रकार की ? और उनके यौगिको का रूप क्या है ? इस बात को प्रयोग विधियो द्वारा आप ने ही सबसे पूर्व देखा व समझा था। सृष्टि के समस्त पदार्थो की रचना मूल तत्त्वो से हुई है क्या प्राच्य और क्या पाश्चात्य इस बात मे तो सभी सहमत है और उन्ही मूलतत्त्वो के परस्पर मिलने से अन्य पदार्थ बनते है इसे भी सब मानते है। जब धातुए प्रत्यक्ष प्रयोग से मौलिक रूप सिद्ध होती है तो उनसे बनने वाली भस्मे सिवाय यौगिक के और क्या हो सकती है ? धातु भस्मे है भी यौगिकरूप, जिसे विश्लेषण विधि से सही सही बताया जा सकता है, इसी लिये इन्हे यौगिक ही मानना चाहिये।

भस्मों के विभेद का कारण—हम अपने रस-ग्रन्थो के आधार पर प्राय किसी धातुसे भस्म बनाने के लिये दो मार्ग अपनाते है, या तो धातु को किसी वनस्पति के योगसे भस्म बनाते है या बलि, हरिताल, मैनसिलके योग से भस्म बनाते है, यही हमारे भस्म बनाने के साधारणतया दो विभाग है। वनस्पति से बनी हुई भस्मे तथा बलि, हरिताल, मैनसिल आदि के योग से बनी भस्में दोनो भिन्न भिन्न प्रकार की है इसको तो रस-ग्रन्थकार भी स्वीकार करते है और इन दोनो में वनस्पति से बनी भस्मो को उन्होंने श्रेष्ठ भी माना है, यद्यपि इस विभेद के मूल कारण तक हमारी पहुच नही हुई थी तथापि इन दोनो में अन्तर अवश्य है इस बात को आचार्य भी मानते थे। इसी अन्तर को आधुनिक रसायन-शास्त्र अपनी विश्लेषण और सश्लेषण दोनो प्रकार की प्रायोगिक विधियो से सिद्ध करता है।

धातुओ की भस्म जो किसी वनस्पति के योग से बनती है उसके यौगिक निर्माण में उक्त वनस्पति कोई हिस्सा नही लेती। वास्तव में वनस्पतिया तो केवल उत्प्रेरक का काम करती है, उनमें कुछ वनस्पतिया तीव्र उत्प्रेरक का काम करती है, कुछ मन्द, कुछ उत्प्रेरकहीन भी होती है। जो वनस्पतिया

उत्प्रेरक नही उनमे धातुए रख कर भस्म बनाई जाय तो धातुओ मे कोई परिवर्तन नही आता, वह जैसी की तैसी ही बनी रहती है। जो साधारण उत्प्रेरक का काम करती है उनके साथ धातुओ को पुट देने पर वह धीरे धीरे ऊष्मिद मे परिणत हो जाती है। कुछ वनस्पतिया ऐसी भी है जो तीव्र उत्प्रेरक है उनके सम्पर्क में धातुए रखकर जब अग्नि दी जाती है तो वह शीघ्र ऊष्मिद मे परिणत हो जाती है। ऐसी वनस्पतियो मे रुपया, अशर्फी, पैसा रख कर आच देने पर वह कुछ फूल जाते है, इन्ही वनस्पतियो को हमारे आचार्यो ने मारक वनस्पतियो की सज्ञा दी है।

कोई भी धातु जो ऊष्मिद (भस्म) में परिणत हो जाती है वह चाहे दो भिन्न भिन्न वनस्पतियो मे रख कर क्यो न बनाई गई हो, उसका वह ऊष्मिद (भस्म) रूप वही होगा जो प्रकृति मे निर्धारित है। वह अपने अनुपात के अनुसार ऊष्मजन से मिलकर उतने ही रूप की बनेगी जितने रूप निश्चित है। वह कितने रूपकी बन सकती है ? इसे हम एक सारणी द्वारा व्यक्त करते है।

धातुभस्मों में ऊष्मजनका अनुपात

धातु	निर्माणार्थ द्रव्य	यौगिक प्रकार	भस्मकावर्ण
सुवर्ण	साधारण वनस्पति से	सु$_2$ऊ सु$_2$ ऊ$_3$	अरुण गेरुआ रग
चादी	,, ,,	र$_2$ ऊ	मटमैला सफेद
चादी	तीव्र उत्प्रेरक वनस्पति से	र$_2$ ऊ$_2$	सफेद
ताम्र	साधारण वनस्पति से	ता ऊ	भूरा या लाल
ताम्र	तीव्र उत्प्रेरक वनस्पति से	ता$_2$ ऊ	मट मैला, सफेद
लोह	साधारण वनस्पति से	लौ ऊ	भूरा अरुण
लोह	,, अधिकपुटो मे	लौ$_2$ ऊ$_3$	हिरमिजी लाल
वग	,, कढाई यन्त्र मे	व ऊ	मट मैला सफेद
वग	,, उपल सम्पुट मे	व ऊ$_2$	सफेद
सीसा	,, कढाई यन्त्र मे	सी ऊ	हल्का पीला
सीसा	,, अधिक पुटो में	सी ऊ$_2$	हल्का लाल
सीसा	,, ६० पुटी	सी ऊ$_2$, सी ऊ$_3$	तेज लाल
जस्ता	,, कढाई यन्त्र मे	ज ऊ	मट मैला पीला
जस्ता	,, तीव्र आँच मे	ज ऊ$_2$	सफेद फूलासा

हमारी शास्त्रीय विधियों से भिन्न इस समय धातुओं को ऊष्मिद में परिणत करने की अनेक विधियां और भी ज्ञात हो चुकी हैं उनमें से कुछ निम्न हैं —

(१) धातुओं को तीव्राग्नि में घुला कर उस घोल में अन्य धातु यौगिक डाल कर यौगिक परिवर्तन द्वारा।

(२) कुछ यौगिक जब उस परिवर्तन में ऊष्मिद न बन कर उदूष्मिद बनते हैं तो उन्हें पुनः उत्ताप प्रभाव में लाकर उसके उस यौगिक के विच्छेदन विधि द्वारा।

(३) तीव्र उत्ताप में धातुओं को रक्त तप्त करके उस पर ऊष्मजन की धार मारने से भी शीघ्र धातुएं ऊष्मिद में परिणत हो जाती हैं।

उक्त विधियों में से किसी भी विधि से कोई भी धातु भस्म बनाई जाय उनके यौगिक (भस्म) का रूप जो निश्चित है वही बनेगा, उनके अनुपातमें कोई अन्तर नहीं आता। हम सबों द्वारा वनस्पतियोंके योगमें बनने वाली भस्मोंमें जो उनके वर्णों में प्रायः अन्तर देखा जाता है उसमें प्रधान तीन कारण हैं— (१) वनस्पतियों की मात्राका उस भस्ममें मिलते रहना। (२) उत्तापकी मात्राका निश्चित रूपमें न लगना। (३) सम्पुटका कभी पात्र बड़ा होना कभी छोटा होना कभी उसमें नुगदा ज्यादा दिया जाना कभी कम, कभी सन्धिका दृढ बन्द रहना, कभी सन्धिका अच्छी तरह बन्द न होना आदि अनेक त्रुटियां हैं जो उन भस्मोंके रूपमें अन्तर डाल देती हैं, फिर भी धातुओंके ऊष्मिद प्रायः उक्त रूपके ही पाये जाते हैं। जिस तरह वनस्पति योगसे धातुएं ऊष्मिद बनाती हैं इसी प्रकार जब हम बलि, हरिताल या मैनसिल मिला कर किसी धातुको पुट देते हैं तो बलि योगसे बनने वाली भस्में वनस्पति योगसे बनी भस्मोंसे बिलकुल भिन्न यौगिकमें बनती हैं। धातुओंके साथ चाहे हम हरिताल मिलावें या मैनसिल या केवल बलि इन तीनों के योग से जो भस्में बनती हैं वह प्रायः निम्न सारणी में व्यक्त किये अनुपात में ही बनती हैं।

धातु भस्मों में बलिका अनुपात

सुवर्ण	बलि, हरिताल या मैनसिल मे	सु$_{2}$ ब	अरुण
रजत	" " "	र$_{2}$ ब	सुरमई रंग
ताम्र	" " "	ता ब, ता$_{2}$ ब	नीलाभायुक्त, भूराकाला
लोह	" " "	लो ब, लो$_{2}$ ब$_{3}$	हल्का लाल, गहरालाल
बंग	" " "	ब ब, ब ब$_{3}$	मटमैला, सफेद, सुनहरा
सीसा	" " "	सी ब, सी ब$_{2}$	सुरमई वर्ण, काला

जस्त	"	"	"	ज व, ज $व_2$	सफेद, हल्का पीला
पारा	"	"	"	पा व,	लाल स्वादार
पारा	"	"	"	पा व $सो_2$ $व_3$	अरुण स्वारहित

जिन भस्मोमें वलि की मात्रा अपने अनुपात से अधिक होती है या जो धातुए वलिको अधिक अनुपात में लेकर यौगिक (भस्म) निर्माण करती है, वह भस्मे शरीर के लिये उपयोगी नही होती, उनका स्वाद कुछ विशेप प्रकार का कपाय-तिक्त धातव होता है। उनके सेवनसे वाति, क्लम, ग्लानि या वमनेच्छा, रेचन आदिके उपद्रव देखे जाते है, इसीलिये उन वलिकाइद भस्मोको पुन पुट देकर सरल वलिकाइद यौगिकमें वदल लिया जाता है तभी वह ग्राह्य होती है।

उक्त भस्मरूप योगिकोंसे भिन्न धातुए अधातुओ, वायव्योंसे मिल कर और भी अनेक यौगिक वनाती है और आधुनिक रसायन-शास्त्री उन्हे वनाते है तथा अनेक रासायनिक व व्यापारिक व्यावहारिक कामोमें लाते है किन्तु उन सवसे हमारा यहा कोई सम्वन्ध नही, हमारी भस्में धातुसे वनी भस्मे इन दो प्रकारोंके भीतर ही रहती है, केवल पारदकी एक भस्म अवश्य ऐसी है जो एक तीसरे प्रकारकी होती है जिसे हम अपवाद मानते है। पारदकी तीसरी प्रकार की भस्म लवणजनके योगसे वनने वाली लवणाइद है जिसको हम रसकपूर या दारचिकनाके नामसे अभिहित करते है, वाकी और कोई भी हमारी भस्म लवणाइद रूप में नही वनती।

भस्म परीक्षा

कोई भी धातुकी भस्म वनजाने पर वह ठीक वन गई है कि नही ? इसको जाननेकी इच्छा प्रत्येक वैद्यके हृदयमें रहती है और इस समय जवकि हम इस वातको समझने के योग्य हो रहे है कि हमारी भस्में धातुओ से अधातुओ व वायव्य तत्त्वो के योग से वनने वाली यौगिक रूप है, इसका ज्ञान जिस नव्य रसायन शास्त्र की सहायता से प्राप्त कर रहे है वही हमे भस्मो के यौगिको की परीक्षा विधि भी वताता है, हम इनकी वताई विधियो से इसकी परीक्षा क्यो न करे ? इस समय प्रत्येक वैद्य के लिये ऐसा करना सुलभ नही। वैद्य तो यह चाहते है कि नव्य विधि से जाचने का यदि कोई साधन हो भी तो ऐसा सुलभ होना चाहिये जिसके द्वारा घर वैठे भस्मो की परीक्षा कर सकें। किन्तु रसायन शास्त्र के विद्यमान साधनो में से एक भी ऐसा सरल साधन नही जिसे हम भस्मो की परीक्षा के लिये वैद्यो के सामने रख सकें। उनके वह साधन व जाचने के क्रम ऐसे है जो विना कुछ

जाती है, इसीलिये ऐसी भस्मो का सेवन न करावें। उसे वरावर भावना देकर पुट देते रहे और वीच-वीच में उनके स्वाद की परीक्षा लेते रहे जव वह निस्वाद हो जाय तव उनका उपयोग करें। इन भस्मो में से अभ्रक, गोदन्ती, अकीक, प्रवाल, शख, सीप, कौडी, रत्न, सगयसव आदिकी भस्में ऐसी है जिनके स्वाद द्वारा परीक्षा की आवश्वयकता नही होती। इन धातुओ के जो यौगिक देह-वाद में हम उपयोजित करते है वह प्राय. ऊष्मिद होते है इसीलिए इनके ऊष्मिद न तो हानिकर होते है न उन्हें जाचने की आवश्यकता होती है। हाँ एक वात ध्यानमें रखना चाहिए कि शख, सीप, कौडी की ताजी वनाई हुई भस्में उसी समय प्रयोग में लाई जाय तो वह जीभ को लगती है, इन्हें या तो निम्बू रस की या अर्क गुलावकी एक भावना देकर सुखाकर तव उपयोग करें या कुछ दिन खुली पडी रहें तव इन्हें प्रयोगमें लावे। वास्तवमें यह चून ऊष्मिद रूप तीक्ष्ण-क्षाररूप होती है और ताजी जिह्वा पर लगाने से जिह्वा को काट देती है, यदि इसे पानी में एक भावना देकर सुखा दिया जाय तो यह ऊष्मिदसे ऊद्रूष्मिद नामक यौगिकमें वदल जाती है फिर इसकी तीक्ष्णता जाती रहती है, यौगिक वदलने पर ही उसके गुण, स्वभाव सव वदल जाते है। पारद के वलिकाइद (रससिन्दूर, हिंगुल) ऐसे यौगिक जो रवा रूप वनते है इनमें वलिकी न्यूनाधिक मात्रा इनके भीतर रहती ही नही। वास्तव में पारद के यौगिक जो सेवनीय है वह स्वाद परीक्षा क्षेत्रमे नही लाए जासकते, न उन्हें जाचने की आवश्यकता है। पारद जव यौगिक में परिणत न हुआ हो तो वह कच्चा ही भिन्न रह जाता है जिसे दृष्टिसे देखा जा सकता है।

अकीक और अभ्रक भस्म

कुछ पत्थर ऐसे है जिनका उपयोग हमारे रस-ग्रन्थोमें नही मिलता, अकीक भी उन्ही में से एक है, किन्तु इस पाषाण की रचना श्याम अभ्रक से मिलते रूप की है। जिन तत्त्वोंके योगसे काला अभ्रक वनता है उन्ही तत्त्वोके योगसे अकीककी भी रचना हुई है। रचना कालमे कुछ स्थान का अन्तर होता है अभ्रक अकीककी अपेक्षा पिघ-पाषाणके मध्यमे जाकर वनता है, जहा का ताप और चाप अकीककी अपेक्षा अधिक रहता है। अकीक उस पिघ-पाषाण (आग्नेय शिलाओ) के ऊपरीय स्तरो में वनता है, अभ्रक भीतरके स्तरमें। यद्यपि दोनोके मूल-तत्त्व एक से है तथापि उनके यौगिकोके गठन में कुछ साधारण-सा

विभेद अवश्य है। यथा—

अकीक—६ शै ऊ$_{२}$ स्फ$_{२}$ ऊ$_{3}$ मेग ऊ लो ऊ।

श्याम अभ्रक—३ शै ऊ$_{२}$ स्फ$_{२}$ ऊ$_{3}$ ३ मॅग ऊ २ उ$_{२}$ ऊ।

उक्त मौलिक रचना से स्पष्ट है कि अकीककी अणु रचनामे शैलिका ऊष्मिदकी मात्रा अभ्रकसे दूनी है। इधर अभ्रककी रचनामे मेगनेशियम ऊष्मिदकी मात्रा अकीक से तिगुनी है। अकीकमे लोह ऊष्मिदका एक अणु विशेष है वहा अभ्रकमे जलके २ अणु विशेष मिले हुए होते है। इन दोनोकी यौगिक रचना इतनी सम समीप है कि यदि अभ्रकके स्थान मे अकीक और अकीकके स्थानमें अभ्रकका उपयोग किया जाय तो लाभकी दृष्टिसे कोई बडा अन्तर नही आता। अकीकका उपयोग यूनानी चिकित्सा में अधिक हुआ है, अभ्रकका हमारी रस-चिकित्सा मे। किन्तु हमने इन दोनोमें से जब एकके स्थान पर दूसरेका उपयोग किया तो उनका लाभ एक जैसा ही दिखाई दिया। हृदय सम्बन्धी रोगोमें यूनानी वाले अकीकका विशेष उपयोग करते है हमने अभ्रकका करके देखा तो उसका भी अकीक जैसा ही लाभ दिखाई दिया। अकीकको हमने अधिक पुटें देकर भी देखा है, आरम्भमें अकीककी भस्म सफेद बनती है, किन्तु चार पाच पुटमे ही अकीककी भस्म अभ्रक जैसी ही लाल वर्णकी मुलायम हो जाती है। मैंने अभ्रक और अकीक दोनो की भस्मोका काफी उपयोग किया है मुझे तो जो गुण अभ्रक भस्म में दिखाई दिए है वही अकीक भस्ममे मिलते है। अकीक भस्क को ज्वरोमें भी उसी प्रकार देकर देखा है जैसे अभ्रक भस्मको देते है, यह भी बढी हुई शरीरकी गर्मीको उसी तरह घटाती है जैसे अभ्रक भस्म। इसलिए काला अभ्रक और अकीक दोनोकी भस्मे एक जैसा रूप गुण वाली समझ कर व्यवहार करें, यह मे अपने अनुभवके आधार पर सम्मति देता हू। विशेष वर्णन उनके गुण, धर्मों के साथ देखें।

अकीक भस्म की विधियाँ

(१) अकीकको अग्निमे तपा कर अर्क केवडा या नीलोफर या अर्क गुलावमें तब तक बुझावें जब तक वह भुर भुरा न होजाय। फिर चूर्ण कर गुलाब जलकी भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलोकी पुट दे। फिर रूह केवडाकी भावना दे कर रख ले। अ. त, स अ.

(२) अकीकको उपरोक्त विधिसे बुझा कर आठ गुना कमलगट्टा-गिरी चूर्णके मध्य रख कर सम्पुट कर २० सेर उपलोंकी पुट दें तो भस्म हो। कोई कोई ग्रन्थकार इसे दो बार पुट देता है। मा, अ त., भा अ., स. अ, म. अ

(३) अकीकको वासाफूल, सेवतीफूलके १६ गुने नुगदेमें रख कर सम्पुटकर गज पुट की आंच दें, फिर केवडेके अर्ककी भावना देकर रख ले। अ त.

(४) अकीकको अर्क गावजवामें तब तक बुझावें जबतक भगुर न हो जाय फिर १६ गुने जपा पुष्प (गुडहल) में रख सम्पुट कर २० सेर उपलोकी पुट दें। फिर इसी विधि से १ पुट गावजवां पुष्प और १ पुट चांगेरी (तिपतिया) की दें तो चाकी रंगकी भस्म हो। स अ, अ अ

(५) अकीकको अर्क केवडा या वेदमुश्कके अर्कमे बुझा कर गुलावके फूलोंके मध्य रख सम्पुट कर २५ सेर उपलो की पुट दें तो भस्म हो। अ स

(६) अकीकको कूटकर चूर्ण बनाय कुमारी रसकी भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दें तो भस्म हो। र. त सा.

(७) अकीकको कूटकर चूर्ण बनाय दूधकी भावना दे टिकिया बनाय, सुखाय सम्पुटकर गजपुट की आंच दें। नोट—दूधमें पुट देनेसे अकीक फूल जाता है, इसलिए सम्पुटका पात्र बडा लेना चाहिए। र तं सा

(८) अकीकको जहरमुहरयातके नुगदामें रखकर १ मन उपलोंकी आंचदें। अ स.

(९) अकीकको गुलाब जलमें बुझाकर प्रथम भगुर बनालें फिर गुलाब जलकी भावना देकर प्रयोगमें लावें। वह बिना पुट की भस्म है। र त. सा.

(१०) अकीकको सुहजना छाल चूर्णके मध्य रख सम्पुट कर १ मन उपलोकी आंच दे तो भस्म हो। मा अ., म. अ

(११) अकीकको रीठाफल छिलकाके चूर्णमे रख सम्पुट कर १ मन उपलोंकी आंच दे तो भस्म हो। म अ, अ. स.

(१२) अकीकको बबूल पत्रके नुगदेमें रख सम्पुट कर १० सेर उपलोंकी आंच दे तो भस्म हो। अ स, यू. सि. स.

(१३) अकीकको पुदीनाके नुगदेमें रख सम्पुट कर १० सेर उपलोकी आंच दे तो भस्म हो। यू सि स

(१४) अकीकको सिरसके पत्तोंके नुगदेमें रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आंच दे तो भस्म हो। अ त

(१५) अकीकको पिस्ताके मध्य रत्न सम्पुट कर १० सेर उपलोंकी आंच दे तो भस्म हो। अ. म. मु. फि

(१६) अकीकको नीलोफर, वारतगके चूर्णमें रत्न सम्पुट कर २० सेर उपलों की आंच दे तो भस्म हो। म. अ

(१७) अकीकको कमलगट्टा, नीलोफर बबूलफली जलमहयात, भागरा, अनगोर्भा के मिश्रित नुगदेमें रत्न सम्पुट कर २५ सेर उपलोंकी पुट दे तो भस्म हो। म. अ.

(१८) एक घरिया में ३०–४० तोला चादी गलावे उस गली चादी पर अकीकका दाना रखदे अकीक तिडककर जल जायगा, सफेद होजाने पर निकाल ले। फिर दूसरा दाना डाले, जब सारा अकीक भस्म बन जाय उसे चूर्ण कर दहीकी भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलोकी आंच दे। म अ

वक्तव्य—ऊपर जो १८ विविया अकीक भस्मकी बताई है उनमें अकीक कितनी मात्रामें ले और नुगदा कितनी मात्रामें इसका उल्लेख नहीं किया है। इन योगो में अकीक १ तो से लेकर ५ तो. तक तथा नुगदा या चूर्ण १० तोलासे २० तोला तक लेना चाहिए। और पुटोंमें उत्ताप की मात्रा अकीकको काफी आनी चाहिए, इसलिए प्राय गजपुटकी आंच दें तो कोई हानिकी बात नहीं है, ज्यादा आंचमें इसके यौगिकके टूटने का डर नहीं रहता।

अकीक-भस्म के गुण

इसकी मात्रा १ रत्तीसे लेकर ४ रत्ती तक है। कोई कोई इससे भी ज्यादा १ माशे तक देते है किन्तु अधिक मात्रा की अपेक्षा न्यून मात्रामें देना लाभकर है। अकीक भस्म प्रदर, प्रमेह, रक्तार्श, रक्तष्ठीवन, ज्वर, कास, हृदयोद्वेग, हृदयदौर्बल्य, हृदयावसाद, रक्तस्राव, जीर्ण फुफ्फुसक्षत, आन्त्रक्षत, सुजाक, मन्दज्वर, विवर्धित उष्णताको दूर करता है, वीर्य ग्रन्थि, स्नायुतन्तु व मतिष्क को बल देता है, वीर्यको गाढा करता है। मूत्रशर्करा, उन्माद, मनीलिया, ऋतवाधिक्यमें लाभदायी है।

अकीक भस्मका उपयोग उन्ही अनुपान से करे जो अभ्रकके लिए दिए जायगे, यूनानी चिकित्सक इसकी भस्मका उपयोग प्राय मुरब्बा आवला, सेब या गाजरसे कराते हैं उसमें चादीके दो चार वर्क लगा कर उसके साथ अकीक

भस्म देते है मक्खन से हृदयदौर्बल्य, हृदयोद्वेगमें अच्छा लाभ देता है। य मस्तिष्क सम्बन्धी निर्बलतामें मलाई में मिला कर देते है।

अभ्रक

प्रकृति में अभ्रककी रचना आग्नेय शिलाओंके मध्य हुई है जहा इसवे निर्माण कालमें बहुत भारी ताप, चाप विद्यमान था, तभी तो अभ्रक पर साधारर उत्तापका कोई प्रभाव नही होता। परीक्षा से देखा गया है कि अभ्रक को ६०० श के उत्ताप पर रखा जाय तो उसका यौगिक, उसकी द्युति, कान्ति में कोई विका नही आता। इसीलिये आजकल जहा अनेक प्रकार की भट्ठियो में उत्ताप को सद देखते रहने की आवश्यकता होती है वहा उन भट्ठियो के मुह पर अभ्रक के पा दर्शक बडे पत्रो का दरवाजा बना कर लगा देते है। अभ्रक उत्ताप और विद्युत व अवरोधी होता है इसके पत्रो को पार कर उष्णता बाहर नही पहुँचती, इसीलि भट्ठियो के भीतर उत्ताप को देखने में सुविधा रहती है। परीक्षा से देखा गया कि अभ्रक के पत्रो की द्युति ८०० शतांश पर धूमिल होने लगती है और १०० श० पर यह धीरे-धीरे नष्ट होती है। इसलिये अभ्रक की भस्म बनाते समय इ बात का ध्यान रखें कि पुट देते समय उसे तीव्र गजपुट की आच दी जाय हमारा तो अनुभव है कि ज्यादा घोटाई और पूर्ण गजपुट की खुली आच दे पर अभ्रक ३–४ पुट में ही निश्चन्द्र हो जाता है, ६–७ पुटो में तो उत्तम भस बन जाती है।

अभ्रक की भस्म बनाते समय कुछ योगो में सुहागे का उपयोग हुआ है। मे सम्मति यह है कि अभ्रक भस्म बनाते समय उसके साथ सुहागा नही मिला चाहिये। टकण या सुहागा वास्तव में मौलिक तत्व रूप पदार्थ है, यह जब अभ्र में मिला कर अग्नि में दिया जाता है तो अभ्रक का जो शैलिका ऊष्मिद यौगि होता है उसका ऊष्मजन टकण ले लेता है, उधर शैलिका जब ऊष्मजन मयुक्त होता है तो वह पाशुजम से मिल कर काच के यौगिक में बदल जा है। वास्तव में सुहागा अभ्रक के प्रकृति में बने रूप को छिन्न-भिन्न कर दे है, इसलिये वह अभ्रक फिर अभ्रक न रह कर अन्य यौगिक मे बदल जाता जिसकी भस्म के गुण, धर्म भी अभ्रक भस्म के गुण-धर्मों से बिल्कुल ही भि होते है। अभ्रक भस्म बनाने का उद्देश्य तो यह है कि अभ्रक के वास्त गठन में इतना ही परिवर्तन या हेर फेर हो कि वह विशेष रूप से ऊष्मिद

रणत हो जाय, किन्तु उसके मूल घटकों का वास्तविक रूप नष्ट न हो। सुहागे को इसमें मिला कर जब धमन करते हैं तो उससे कांच जैसा पदार्थ कुठाली में नीचे जाकर लगता है या कांच के से कण कुठाली में जहां तहां लगे मिलते हैं जिसको प्राचीन आचार्यों ने अभ्रक सत्व माना था। यथा—

पादांश टङ्कणोपेतं मुसली रसमर्दितम्।
रुन्ध्यात्कोष्ठ्या दृढध्मात सत्वरूप भवेद्घनम्॥ र र स, पा स

चौथाई सुहागा मिला कर मूसली रस की भावना दे कुठाली में रख कर दृढ़ धमन करने पर सत्व रूप अभ्रक प्राप्त होता है।

धान्याभ्रक निर्माण विधि

कृष्णाऽभ्रकं समादाय वज्राख्यं बलवत्तरम्।
एकपत्रं ततः कुर्याद्रसेकर्पासपत्रजे॥
स्थापयेत् त्रिदिनं यावत्ततो घर्मेनिधापयेत्।
दिनमेकं रसैस्तैश्च व्रीहियुक्तैश्चवस्त्रके॥
निःक्षिप्यंसुदृढे क्षिप्त्वा पोट्टलींमर्दयेत्करैः।
तत्सर्वं चूर्णितं कृत्वा प्रयाति च यथा बहिः॥

औ यो, र चि, र र, रसा स, र को, वन्व, यो म, र रा सु, र का वे,

काले अभ्रक को गरम करके कपास के पत्तो के रस में बुझावे और एक एक पत्र भिन्न-भिन्न करके उन्हे कपास के पत्तो के रस में ३ दिन भिगोकर धूप में पड़ा रहने दे, फिर अभ्रक की चौथाई धान डालकर अभ्रकको कम्बलकी पोटली में बांध कर खूब मर्दन करे। हाथसे मल मल कर उसे बारीक करदे और उस पोटली को पानी में डुबो-डुबो कर सारे बारीक चूर्ण को उस पोटली से बाहर पानी मे निकाल दे उस पानी से फिर अभ्रक को दोलन विधि से दूसरे वर्तन में निथका कर निकाल ले, नीचे बैठी हुई रेत को त्याग दे, इस अभ्रक को धूप में सुखाले यह धान्याभ्रक है।

वक्तव्य—यूनानी चिकित्सा के प्राचीन ग्रन्थो में अभ्रक भस्म बनाने की न कोई विधि मिलती है न वे अभ्रक भस्म का उपयोग ही जानते थे, इसे इन्होंने रस चिकित्सको से मालूम किया। आरम्भ में वह श्वेताभ्रक भस्म का ही प्रयोग करते थे, धीरे-धीरे कृष्णाभ्रक का भी करने लगे किन्तु इनके बनाने की विधियो का ज्ञान उन्हे वैद्यो से ही हुआ।

अभ्रक भस्म (केवल भावना द्वारा)

देवदालीरसेगाढं धान्याभ्रं भावयेच्छतम् ।
कपूर धवलं सूक्ष्मं निश्चन्द्रं जायते ध्रुवम् ॥ टो , पा स

श्याम अभ्रक से वना धान्याभ्रक को देवदाली के रस में १०० भावना दे तो कपूर जैसा सफेद निश्चन्द्र सूक्ष्म चूर्ण प्राप्त हो । यहा पर ग्रन्थकार का अभिप्राय केवल भावना देने से है, देवदाली की भावना देने से उसका वर्ण रस के मिश्रित होते रहने पर कुछ न कुछ हरापन लिये होना चाहिये किन्तु ग्रन्थकार कहता है–भावना देते-देते काला अभ्रक सफेद कपूर जैसा वन जाता है और वह निश्चन्द्र हो जाता है ।

(२) रसाला मूसलीवारिपुटिते च मुहुः मुहुः ।
निश्चन्द्रं मृत्युमाप्नोति कर्मयोग्यं भवेत्तत. ॥ टो., पा. स.

धान्याभ्रक को विदारीकन्द और मूसली के क्वाथ की वारम्वार भावना देता रहे । यहापर पुट शव्द भावनाके अर्थमें है । अर्थात् उक्त दोनो वनस्पतियोके रस की भिन्न भिन्न भावना दे, पुन सूखने पर फिर रस डालकर खरल करता रहे इस विधिसे तव तक खरल करता रहे जव तक अभ्रक निश्चन्द्र न हो जाय ।

(३) श्वेत अभ्रक चूर्ण १० तोला को, केलाकन्द रस की एक भावना दे भानु-पाक करे, इसी प्रकार ३ भावना दे । इसके वाद इसमें ३ माशे चादी के वर्क मिला कर पुन एक भावना दे इस प्रकार ४ भावना के वाद अभ्रक निश्चन्द्र हो जाता है । मात्रा १ रत्ती । प्रत्येक ज्वरो में । स अ

(४) धान्याभ्रक ३ तो० को हल्दी के रस मे खरल करते हुए इतनी भावनाए दे कि वह निश्चन्द्र हो जाय । फिर इसमें इलायची छोटी, वन्सलोचन, मूसली श्वेत प्रत्येक ३ तो० मिला कर एक दिन घोट कर रख ले । मात्रा १ माशा यकृत विकार प्रमेह, सुजाक में लाभदायी है । र ति

(५) धान्याभ्रक ५ तो०, नौसादर २ तो०, फिटकरी ३ तो० । सव को एकत्र कर पानी से इतना खरल करे कि अभ्रक निश्चन्द्र हो जाय । फिर पानी से धोकर नौसादर, फिटकरी निकाल दे सुखाकर रख ले । मात्रा ४ रत्ती पैत्तिक ज्वरो में दे ।

(६) धान्याभ्रक को दही के पानी (तोड) मे एक दिन भिगो कर धो ले फिर काकजघा रस की तव तक भावना देता रहे जव तक निश्चन्द्र न हो जाय ।

मात्रा २ रत्ती। सुजाक, रक्तमूत्रता, रक्तपित्त, रक्तष्ठीवन, कास, श्वास, काली खासी और उष्णप्रकृति ज्वरो मे, जलोदर, यकृत, प्लीहा, वृद्धि, प्रमेह, प्रदर मे लाभदायी है। र ति, मि ख

वन्याभ्रक को पेठा रस और गवी के दूध की ७-७ भावना दे तो अभ्रक १४ भावना में निश्चन्द्र हो जाता है, मात्रा ४ रत्ती। उक्त रोगो में तथा मस्तिष्क निर्बलता मे, प्रमेह मे विशेष लाभदायी है। र ति, मि ख

श्वेताभ्रक चूर्ण को हाथीसुण्डी के रस में भिगो कर भानुपाक करे, इस प्रकार ७ भावना दे तो निश्चन्द्र हो। मात्रा १ रत्ती। यह सर्प विष पर अगद का काम करता है। अ स, मि ख

अभ्रक भस्म (धमन विधि द्वारा)

रम्भाद्भिरभ्रं लवणेन पिष्ट्वा चक्रीकृतं टंकण मध्यवर्ति।
दुग्धेन्धनेषु व्यजनानिलेषु स्नुह्यर्क [1]मूलाखुपुटैश्च सिद्धम्॥

रसे चि, भा भै र, रसे सा स, र ज. नि

[1] मूलाम्बु भा भै र इति पाठोऽस्ति।

अभ्रक को बराबर केलाखार का पानी डाल कर खरल कर टिकिया बनाय सुखाय नीचे ऊपर सुहागे की चुटकी दे कुठाली मे जमाकर कोयलो पर रख धमन करे, लाल हो जाने पर उसे दूध में बुझावे फिर थोहर के, आक के दूध की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय पुट दे तो अभ्रक भस्म बने।

उक्त विधि की व्याख्या दूसरे ग्रन्थकार निम्न पाठ मे देते है —

वज्राभ्रकं समादाय निक्षिप्य स्थालिकोदरे।
रम्भादिक्षार तोयेन पचेद्गोमयवह्निना॥
यावत्सिन्दूरसंकाशं न भवेत्स्थालिकाबहिः।
सेचनीयं ततः क्षीरैस्ततः सूक्ष्मं विचूर्णयेत्॥

रसे सा स, भा भै र

अभ्रक को कढाई में रख उसमें केला क्षार का पानी डाल उसे उपलो की आच में पकावे, उस पानी के सूखने पर इतनी तीव्र अग्नि दे कि कढाई का तला लाल हो जाय उस समय उस अभ्रक को दूध में बुझा दे। इसी विधि से तब तक करे जब तक अभ्रक का सूक्ष्म चूर्ण न हो जाय, उसे पीस ले।

वक्तव्य—इसमें सुहागा नही डाला गया है बाकी दोनो पाठ एक ही विधि

को बताते हैं ।

यद्यपि कुछ वनस्पतियो का उक्त पाठमें भेद है तथापि उक्त दोनो का भाव एक है उक्त पाठोकी विस्तृत व्याख्या निम्न पाठमें अन्य ग्रन्थकारदेते है । यथा

(३) कृष्णाभ्रमभेकवपूर्वं वज्राख्य चैकपत्रकं कृत्वा काष्ठमये ऊखलके चूर्णं मुसलेनकुर्वीत, भूयो दृपदि च पिष्ट वास्त्र. सूक्ष्मावकाश तलगलितम् , मण्डूकपर्णिकायाः प्रचुररसे स्थापयेत् त्रिदिन, उद्धृत्यतद्रसादथपिष्याद्धैमन्तिक धान्यभक्तस्य, अच्चोदात्यन्ताम्ल स्वच्छजलेन प्रयत्नेन मण्डूकपर्णिकायाः पूर्व रसेनैव [1]मर्दन कुर्यात्, स्थालीपाकं पुटनं [2]चान्यैरपि भृङ्गराद्यै', तालादिपत्रमध्ये कृत्वापिण्डं निधाय भस्त्राग्नौ, तावदहेन्न यावन्नीलोऽग्नि दृश्यते सुचिरम्, निर्वापयेच्च दुग्धेन दुग्ध प्रक्षाल्य वारिणा तदनु, पिष्ट्वा घृष्ट्वा वस्त्रं चूर्णं निश्चन्द्रिकं कुर्यात् ।

च द, र चि, र का धे

१ मोदक कुर्यात् चक्रदत्ते इति पठोऽस्ति । २ चाद्येरपि च द इति पाठ

काले अभ्रकमेंसे वज्रको छाट इलहदा इलहदा पत्र करे, फिर लकडीके ऊखलमूसलीमें कूटकर चूर्ण करे और कपडेमें छान ब्राह्मी रसमे तीन दिन भीगा रहने दे, फिर निकाल कर पीस चावल (भात) की काजी वनाकर उसके स्वच्छ जल में भिगो दे फिर ब्राह्मीके रसमें खरल करता हुआ भावना दे लड्डू वनाय कढाईमें रख भानुपाक करे, इसी प्रकार भागरेके रसकी भावना दे भानुपाक करे, फिर तालादिके पत्रमें उसे लपेट गोला वनाय कुठालीमे रख धमन करे, जव तक वह तपकर लाल न हो जाय और नीली ज्वाला न देने लगे जव तक धमन करे फिर निकाल दूधमे वुझावे फिर पानीसे धोकर पीस ले और कपडेमें से छान कर फिर घोटे, इस तरह तव तक करे जव तक निश्चन्द्र न हो जाय।

(४) अंगारोपरि विन्यस्तं ध्मातमेव दलीकृतम् ।
निक्षिपेत् काजिके कृष्णमभ्रकं वह्निसन्निभम् ॥
ततोऽस्य कांजिकस्थस्य चिरंघर्मे विधारणम् ।
पेषणं च विधातव्य पौन. पुन्येन पंडितैः ॥
चांगेरी स्वाग निर्यासैरप्येवं विधिमाचरेत् ।
तण्डुलीयक मूलस्य रसेनापि तत परम् ॥
ततोऽस्मिन्खदिरांगारै नीते नीतेऽग्निवर्णताम् ।

क्षिपेत् पुनः पुनः क्षीरे यथा निश्चन्द्रिकं भवेत् ॥
र रा सु, टो, पा स.।

टोडरानन्दे उक्त पाठ त्रुटितोऽस्ति।

काले अभ्रकको अगारो पर तपा कर जुदे २ वर्क करे, फिर काजी में भिगो धूपमे रख कर वार वार पीसे फिर कोयलो पर रख तपा तपा कर दूध में वुझावे। फिर धान्याभ्रकको तिपतिया (खट्टी) के रसकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय कोयलो पर रख धमन करे और दूवमें वुझावे फिर काटेवाली चौलाईके रसकी भावना दे उक्त विधिसे कोयलो पर रख पुट दे इसी विधिस तव तक धमन कर दूधमे वुझावे जव तक निश्चित न होजाय।

(५) कृष्णं चाभ्रं ध्मातमङ्गारवह्नौ वह्निश्राय काञ्जिके सन्निवेश्य।
धृत्वारौद्रे याममेकं च पश्चात्पिष्ट्वातोयैश्चारुचाङ्गारिकोत्थैः॥
भूयो भूयो मेघनादाम्भसा तत्तीव्राङ्गारैर्निर्धमेत्सेचयेच्च।
क्षीरेणैवसप्तधा भावयेत्तन्निश्चन्द्रस्याल्लोहवत्पाचयेच्च।
भृङ्ग्याघ्री शुक्ल वर्षाभुतोयैर्भेकीहन्सीगण्डिनी दुग्धिकोत्थैः।
पाठाब्राह्मी सूर्यभक्ताकुमारीतोयैः सिक्तं छागदुग्धाभिपिक्तम्।
शुद्धं गुञ्जाबुद्धिमान् रोगशान्त्यै योगेष्वभ्रं सर्वदोक्त प्रमाणम्॥
रसे चू, र का वे।

काले अभ्रकको अगारोमे रख लाल करके काजीमें वुझावे पुन काजीमे रख कर ३ घटा तीव्र आच पर उसे लाल करे, फिर तिपतिया के रसकी भावना दे कुठाली में रख फिर धमन करे और दूवमें वुझावे इस प्रकार चौलाई के रसकी भावना दे ७ वार दूवमें वुझावे। फिर इसे लोहविधिवत् वनस्पतियोके रस पकावे।

भावना की वनस्पतियां—भागरा, कटेली, सफेद साठी, ब्राह्मी, हन्सराज, वडी दूव, घी, पाठा, मण्डूकपर्णी, हुलहुल, कुमारी इनकी भावना देकर धमन करे और वकरी के दूधमे वुझावे तो अभ्रक भस्म वने। मात्रा १ रत्ती।

(६) धान्याभ्रकमम्लपिष्टं पुटे तप्तेऽम्लसेचनम्।
ततपिष्ट्वा धारयेत्खल्वे भाव्यमम्लारनालकैः॥
तप्त तप्तं चारनालैः पाच्यं शोध्य पुन. पुनः।
पुटे वा धमनैः पाच्यं त्रिंशद्वारं पुन. पुन.॥

दुग्धंतप्त पुटं पच्यात्तप्त दुग्धेन सेचयेत् ।
एवं त्रिसप्तवाराणि शोष्य पेष्य पुटे पचेत् ॥
पेपयित्वापचेत्स्थाल्या लौहदर्व्या विचालयेत् ।
दुग्धस्थ च ततो दुग्धैः पुटे पच्यात्पुनः पुनः ॥
एवं सप्त दिनं पच्याद्दिवा चैकं पुट निशि ।
तण्डुली वज्रवल्ली च लतामूलीपुनर्नवा ।
चांगेरीमरिचचैव वलायाः पयसा सह ।
एभिश्चपेपयेच्चाभ्रं प्रत्येकं त त्र्यह त्र्यहम् ॥
स्थित्वातप्ते पुटे पश्चात्प्रत्येकेन पुन पुनः ।
पिष्ट्वापुनः पुटे घृष्ट्व कज्जलाभं मृतं भवेत् ॥ र र

धान्याभ्रकको जम्वीरी या निम्बू रसमें पीस कर टिकिया वनाय कुठालीमे रखकर धमन करे लाल होनेपर निकाल कांजीमें या किसी अम्लके रसमे वुझावे। इस प्रकार धमन करके गौ दूध, अम्ल रस और काजीमें २०-२० वार वुझावे, फिर तपावे और दूधमें वुझाता रहे, इस तरह पुन. २१ वार करे, फिर काजीसे धोकर सुखाय पीसले। उस चूर्णको फिर कढाईमें रख कर दूधमे पकावे और करछीसे चलाते हुए दूधको सुखादे फिर निम्न वनस्पतियोमें दिनमें पकावे, रात्रि में पुट दे, फिर कढाईमें डाल दूधमें पकावे, फिर धमन कर दूधमें वुझावे और पीसे इस प्रकार २१ वार करे। भावनाकी वनस्पतिया —चौलाई, हड़सहारी, मूसली, साठी, तिपतिया, मिर्च, वला प्रत्येककी तीन भावना दे और फिर धमन विधिसे पुट दे, इस प्रकार वारम्वार करने पर अभ्रककी कज्जल सदृश्य निश्चन्द्र भस्म हो जाती है। यह जो ७ विधिया ग्रन्थकारोने अभ्रक भस्म वनानेकी वताई है वास्तवमें यह आरम्भिक कालकी विधिया है।

अभ्रक भस्म (एक पुटी)

सुवर्चिकामानमितं गुण च तयोः समानं गगनं प्रगृह्य ।
सम्मेल्यहण्ड्याञ्च निधायसर्वं सर्वार्थकार्यां प्रददीत वह्निम् ॥
रसा सा

सोरा और गुड वरावर पानी डाल कर घोट इनके वरावर अभ्रकका वारीक चूर्ण मिलाय सम्पुट कर गजपुटकी पुट दे या भट्टीमें रख कर भस्म करे तो एक पुटमे अभ्रक भस्म हो। पुन इस भस्मको पानीसे घोट ५-७ वार पानी

से धोकर सुखाले, तब व्यवहारमें लावे ।

(२) श्वेताभ्रक चूर्णसे डेढगुना सोरा मिलाय खरल कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १२-१५ सेर उपलोकी पुट दे, अगले दिन निकाल पीस कर ६-७ वार खूव पानी से धोकर उसका सोरा निकाल दे फिर सुखाकर रख ले। मात्रा ४ रत्ती । अ ति, सि यो स

(३) श्वेताभ्रक चूर्ण १० तो० को मूलीका रस, गिलोय क्वाथकी भावना देनेके वाद ५ तो० सोरा मिलाय टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलोकी आचदे, पुन अगले दिन निकाल पीस कर उसका सोरा धोकर निकाल दे और काम में लावे । नि यो स., स अ

(४) धान्याभ्रकस्य भागौ द्वौ भागैकं शुद्ध गंधकम् ।
वटक्षीरेण समर्द्य ह्यंधो मूषां निरोधयेत् ॥
पचेद्गजपुटेनैव वारमेकं मृतं भवेत् । र रा सु, टो, भा भै र, धा स.

धान्याभ्रक २ भाग, वलि १ भाग, वटदूधकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो एक ही आचमे अभ्रक भस्म हो ।

(५) श्वेताभ्रक चूर्ण १० तो को दो दिन मेंहदी रस की फिर १ दिन कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुटकी आच दे । मात्रा ४ रत्ती । स अ, मि ख

(६) श्वेताभ्रक चूर्ण १० तो के वरावर पारा मिलाय वटाँकुर रसकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय वट जटाके टुकडे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे । मख, मि. ख.

(७) श्वेताभ्रक चूर्ण को किप्टा (स्वर्ण कारो के आभूषण धोने की खटाई) के पानी की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय किप्टेके नुगदेमें रख सम्पुट कर गजपुट की पुट दे तो एक पुट में भस्म हो । अ की, मि ख

(२ पुटी) वज्राभ्रमश्म सदृशं पीतमार्कवजद्रवै. ।
त्रिदिनं मृण्मये पात्रे धारयेच्चखरातपे ॥
चतुर्थेऽह्निमर्दयित्वा कृत्वा तस्य तु गोलके ।
पुनः पीतस्य भृंगस्य दलपुष्पस्य गोलकं ।
धृत्वा तद्गोलके कार्यं मृदाकर्पट वेष्टणम् ॥
दद्याद्गजपुटं सम्यगेवंदेयं पुटद्वयम् ॥

अरुणाभं भवेद्भस्म सर्वयोगेषु योजयेत् ।
यदिदं चक्रिकायुक्तं तत्रापि दोषवर्जितम् ॥ र च.

मिट्टी की हाण्डीमें वज्राभ्रकको डाल पीले आकके पत्तोके रसमें भिगो कर भानु-पाक करे, रस सूखने पर और डाल दे, चौथे दिन खरलमें डाल घोट कर टिकिया बनाय सुखाय भृ गराजके पीले पत्तोके नुगदेमें लपेट सम्पुट कर गजपुटकी आंच दे, इस विधिसे दो पुट दे तो दो पुटमे लाल रगकी भस्म बने । यदि इसकी टिकिया ही रहने दे तो कोई हर्ज नहीं ।

(२) श्वेताभ्रक पत्रोको लाल करके गौ दुग्धमें बुझावे, इस प्रकार ८-१० वार करे, फिर कूटकर चूर्ण बनाय कुमारी रसकी भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की पुट दे । इस विधिसे २ पुट देने पर भस्म बने ।
मात्रा १-२ रत्ती । चा चि, अ त, मि ख.

(३) श्वेताभ्रक चूर्ण १० तो० सिरका जामुन २ बोतल इन्हे चीनी के या कॉच के बर्तन में सम्पुट कर ४० दिन धान्यराशि मे दबा दे, फिर निकाल खरल कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे । यदि चमक दिखाई दे तो इसी सिरका की एक भावना देकर एक पुट और दे । मात्रा १ रत्ती, उष्णप्रकृति, प्राकृतिक उष्णतावृद्धि, दाह, पैत्तिक प्रमेह, रक्त मूत्र में लाभदायी है । स अ, मि ख

(४) श्वेत अभ्रक से १॥ गुना सोरा मिला कर थोहर के दूध की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलो की पुट दे । दूसरी बार पुन थोहर दूधकी भावना दे इसी विधिसे दो पुट दे तो भस्म हो । लेखकका मत है कि यह आमवात मे लाभदायी है । लेखक ने इसे बडे आडम्बर विधि से बनाना बताया है जिसका उल्लेख करना वृथा समझ दिया है । मात्रा १ माशा ।

(५) श्वेताभ्रक चूर्ण १० तो० अनारदाना के खट्टे पानी की ३ १० तो० सोरा मिलाय टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर उपलो की आच दे, पुन निकाल निम्बूरस की भावना दे से एक पुट और दे ।

(३ पुटी) अभ्रकं त्रिपलं शुद्धं क्षिपेच्छुक्ते चतुर्गुणे ।
चत्वारिंशद्दिनान्येव स्थापयेत्तत्र बुद्धिमान् ॥

पलार्धं पारदं शुद्धं पलं बंबूरजं नवम ।
कुसुमञ्च समादाय मर्दयेद्भिषगुत्तमः ।
उभयोर्गुटिका मेकां कृत्वा तत्रैव निःक्षिपेत् ।
दण्डेन चालयेन्नित्यं त्रिदिनं नाधिकं ततः ॥
मर्यादा दिवसे पूर्णे खल्वेक्षिप्त्वा विमर्दयेत् ।
घनत्वमागतं दृष्ट्वा चक्रिकां कारयेद्बुधः ।
घर्मे संशोष्य विधिना ततो गजपुटे पचेत् ।
पुनः शुक्तांतरेणैव मर्दयेदेकवासरे ॥
वन्योपलैः पचेदेवं कुर्याद्वारत्रय ततः ।
भस्मी भूतमिदं खादेद्गुञ्जामात्रं निरन्तरम् ॥

वै द, र रा सु, भा भै र

१२ तो० अभ्रक को चौगुने सिरका में ४० दिन भिगो रखे, फिर २ तोला पारा, ४ तोला बबूल के ताजे फूल में घोट इसकी गोली बनाय उसी अभ्रक में डाल डंडे से ३ दिन चलाता रहे, चौथे दिन सबको खरल में डाल घोटे, गाढा होने पर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट में रख गजपुट की अग्नि दे, इस प्रकार सिरका की १ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे इसी विधि से ३ फुट दे तो अभ्रक की भस्म हो। यह भस्म दृष्टिवर्धक, अग्निवर्धक, और प्रमेहादि रोगो का नाशक है। इसकी मात्रा १ रत्ती है।

(२) दध्ना च गुड संयुक्तं चिञ्चाद्रवसमन्वितम् ।
त्रिपुटं जायते भस्म पचेद्गजपुटेन तु ॥　　　र सा

अभ्रक में गुड, दही और इमली का पानी मिलाकर खूब घोट टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे। इस विधि से ३ पुट दे तो अभ्रक की भस्म बने।

(३) धान्याभ्रक को दही की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इसी विधि से ३ पुट दे तो निश्चन्द्र भस्म बने।

म अ, मि ख.

श्वेताभ्रक चूर्ण १० तो० को गधी के दूध की भावना दे टिकिया बनाय [सु]खाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इसी प्रकार दो पुट और दे तो भ[स्]म हो। मात्र १–२ रत्ती।　　　अ त, अ स.

(५) धान्याभ्रमक में छठा भाग पारा मिलाय निम्बू रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय उन टिकियों के नीचे-ऊपर सुहागे की चुटकी दे सम्पुट कर गजपुट की पुट दे । इस विधिसे ३पुट दे तो अभ्रक भस्म हो । अ स ,मि ख.

(६) गंधर्व पत्र तोयेन गुडेन सह भावितम् ।
अधोर्ध्वे वटपत्राणि निश्चन्द्रं त्रिपुटैः खगम् ॥

र रा सु , भा भै र , र र स , र च

अभ्रक के बरावर गुड मिलाकर एरड पत्रो के रस की भावना दे, टिकिया बनाय सुखाय उसके नीचे-ऊपर बट के पत्र दे लपेट सम्पुट कर गजपुट की अग्नि दे । इस तरह ३ पुट दे तो अभ्रक की भस्म हो ।

(७) धान्याभ्रक १० तो एरण्ड पत्र रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय एरण्ड के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो भस्म बने । मात्रा २ रत्ती । म अ , स अ , मि ख

(८) श्वेताभ्रक चूर्ण को धतूरा रस की ३ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो को पुट दे इस विधि से ३ पुट दे तो भस्म हो । लेखक का मत है कि यह भस्म स्तम्भक है । अ स

(९) श्वेताभ्रक चूर्ण १० तो को मूली रस की ३ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे इस विधि से ३ पुट दे तो निश्चन्द्र भस्म हो । मात्रा २ रत्ती । अश्मरी में लाभदायी है । मि ख

(१०) श्वेताभ्रक चूर्ण को चागेरी रस की ३ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से ३ पुट दे तो निश्चन्द्र भस्म हो । कु र ,मि ख

(११) श्वेताभ्रक चूर्ण को त्रिफला क्वाथ की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे इस विधि से ३ पुट दे तो निश्चन्द्र भस्म हो । नोट—कुश्ते-जात अक्सीरने ७ पुट दी है । कु अ , रमू. ति , मि ख

(१२) श्वेताभ्रक को श्वेतगुञ्जा क्वाथ की ७ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे । इस विधि से ३ पुट दे तो निश्चन्द्र भस्म हो । म अ , मि ख.

(४ पुटी) धान्याभ्रं टकण तुल्यं गोमूत्रैस्तुलसी जलै[१] ।
वाकुची [२]शूरणोद्भवैर्दिनं पिष्ट्वा पुटे पचेत् ॥

जयन्त्याश्चद्रवैः पश्चान्मर्दयित्वा[3] त्रिधा पुटेत् ।
क्रिययैवं[4] चतुर्वारं निश्चंद्रं सर्वरोगजित् ॥
र च., र ज. नि, भा. भै. र, र र.

१. दलै र. च. इति पाठ । २ शूरणैरल्पै र. च इति पाठ । ३. मर्द्यमर्द्य र. च इति पठित । ४. चतुर्गजपुटेनैव र, च. इति पाठ ।

धान्याभ्रक के सम भाग टकण ले गोमूत्र और तुलसी रस वाकुची और जिमीकन्द के रस की भावना दे गजपुट की आच दे । इसी प्रकार जयन्ती के स्वरस में मर्दन कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३ पुट दे तो निश्चन्द्र अभ्रक की भस्म हो ।

(२) श्वेताभ्रक चूर्ण को आक दूध की २ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की पुट दे, फिर निकाल धतूरा रस की २ भावना दे पुट दे, इसी विधि से ४ पुट दे तो अभ्रक भस्म हो । म. अ., मि.ख

(५ पुटी) नागवला भद्रमुस्ता दुग्धं तु वटकस्य च ।
यद्वावटजटातोयैर्हरिद्रा वारिणा पुटेत् ॥
मंजिष्ठा क्वाथ तोयेन सर्वैरेभिर्यथा क्रमम् ॥
पुटित भावनायोगाद्धरमेतत्पुटेन्मुहुः ॥
जायते ह्यरुणं चाति भस्म वज्राभ्रकोद्भवम् । र रा सु

अभ्रक, नागवला, मोथा, वट दूध या वट जटा का क्वाथ, हल्दी का पानी, मँजीठ का काढा इन सवकी क्रमश भावना व पुट देता रहे तो ५ पुट में अभ्रक की लाल भस्म हो ।

(२) धान्याभ्रं गुड तुल्य च श्रेष्ठ क्षीरेण मर्दितम् ।
कुर्यात् सुचक्रिकां शुष्कां सम्यग्गजपुटे पचेत् ॥
ततो धत्तूर पत्तूर कुमारी शशि वाटिका ।
प्रत्येक स्वरसेनैव पुटेदाशु मृतिं व्रजेत् ॥ पा स, र त, र रा सु, टो.

धान्याभ्रक के समान गुड मिला कर गो दुग्धमें घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट में फूक दे फिर धतूरे के पत्तो के साथ घोट कर गजपुट की पुट दे, इसी प्रकार गजपीपर, कुमारी और कुमुदनी के रस की भावना देकर पुट देता रहे तो ५ पुट मे अभ्रक भस्म हो ।

(७ पुटी) व्योमपत्राणि सौवीर मार्कवस्वरसे क्षिपेत्[1] ।

त्रिदिनानि ततः क्षिप्त्वावस्त्रे व्रीहिषु मर्दयेत् ॥
वटार्कक्षीर धत्तूर रसै. सम्मर्द्य तत्पुनः ।
क्रमात्सप्तपुटं कृत्वा गगनं म्रियते ध्रुवम् ॥ र. को

अभ्रक पत्रो को काजी सहित आक के पत्तो के रस में ३ दिन भिगो कर वस्त्र में वाध उसके साथ धान मिलाय मर्दन कर धान्याभ्रक वनाय सुखाय पुन वट दुग्ध, आक दुग्ध, धतूरा रस की क्रम से भिन्न-भिन्न भावना व पुट देता रहे तो ७ पुट में अभ्रक भस्म हो ।

(२) कृष्णाभ्रक चूर्ण १० तो० को वट जटा क्वाथ की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे । इस विधि से ७ पुट दे तो निश्चन्द्र भस्म हो । स अ

(३) तद्वद्रम्भारसेनापि सप्तवारं पुटेद्भिषक् ॥
एवंस्वल्पै.पुटैरेव गगनंमृतिमाप्नुयात् । र त, भा प्र

इसी तरह केला के रस में अभ्रक को भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर अर्ध-गजपुट की आँच दे । इस प्रकार ७ पुट दे तो अभ्रक भस्म हो ।

(१० पुटी) धान्याभ्रं रविक्षीरै रविमूलद्रवैश्च वा ।
मर्दितं[1] पुटित पश्चात् सप्तधा म्रियते ध्रुवम् ॥
सघृतैर्माहिषीक्षीरै मर्द्य देयं पुटत्रयम् ।
म्रियते नात्र संदेहो सर्वरोगेषु योजयेत् ॥

रसे सा स,भा भै र ,नि र ,रसा सा ,र.च ,रसे चि ,ऋ.ख ,र ज नि ,यो चि ,चा चि ।

१. मर्द्यं मर्द्यंतत र च इतिपाठ । ऋ ख निम्नयो उभयो पक्तिभ्यामधिक । योगचिन्तामणौ रसतरगिण्या भावप्रकाशेऽपि भिन्न भिन्न पाठ प्रतिपादितः । 'ततो वटजटा क्वाथैस्तद्वद्देय पुटत्रयम् । रसेन्द्रचिन्तामणौ अय पक्ति अधिक ।

धान्याभ्रक को अर्क दुग्ध या अर्क रस में घोटकर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से ७ पुट दे, ऋद्धि खण्ड वादिखण्ड में घी और दूध की भावना देकर ३ पुट और देने का विधान वताया है । उक्त ७ पुटी को इसने १० पुटी अभ्रक भस्म वनाई है । रसचिन्तामणिकार ने घी, दूध के स्थान पर वटजटा क्वाथ की ३ पुट दी है ।

(२) कृत्वा धान्याभ्रकं तच्च शोषयित्वा विमर्दयेत् ।
अर्कक्षीरै दिनं खल्वे चक्राकारं च कारयेत् ॥

वेष्टयेदर्कपत्रैश्च सम्यग्गजपुटे [1]क्षिपेत् ॥
पुनः मर्द्यं[2] पुनः पाच्यं सप्तवारान् [3] पुनः पुनः ।
ततो वटजटा क्वाथैः तद्वद्देय पुटत्रयम् ॥
म्रियते नात्र सदेह. प्रयोज्य. सर्वकर्मसु ।

र रा सु, र. प्र., व रा., वृ. यो त, वै द., भा प्र, र. त

१ पचेत् र प्र इति पाठ ।

२ प्रयत्नत र. प्र, भा. प्र, र च, चि, रत्नाभरणे इति पाठ ।

३ सर्वं रोगेषु योजयेत् ,, ,, ,, ,, ,,

४ भावप्रकाशे रसतरगिण्या द्वाभ्याग्रन्थाभ्या भिन्नपाठ प्रतिपादित ।

धान्याभ्रक को अर्क दूध में एक दिन घोटकर फिर छोटी-छोटी टिकिया बनाय धूप में सुखाले फिर उन्हें आक के पत्तो में लपेट कर सम्पुट मे रख गजपुट की अग्नि दे । इस तरह से ७ बार आच दे फिर वटजटा क्वाथ की भावना देकर ३ आच दे तो १० पुटो मे अभ्रक की लाल भस्म बने ।

वक्तव्य—यद्यपि १० पुटी अभ्रक भस्म की यह दोनो विधिया एक हैं केवल पाठ भेद है तथापि इनका उल्लेख अनेक ग्रन्थो में आने से दोनो पाठ हमने पाठको के सामने रख दिये है ।

(३) केनाप्यस्य तृणस्यापि रसेनापि प्रमर्दितम् ।
पुटितं दशधा भस्मं निश्चन्द्रं जायते ध्रुवम् ॥ र रा सु

नोनिया साग के रस में अभ्रक को घोट कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से १० पुट दे तो अभ्रक की निश्चन्द्र भस्म हो ।

(४) धान्याभ्रं कासमर्दस्यरसेन परिमर्दितम् ।
पुटितं [1]दशवारेण म्रियते नात्र संशय ॥

र रा सु, र च, रसे चू, र प्र सु, र र स, आ वे प्र, भा र प.

१ शतवारेण र प्र सु, रसे चूडामणौ इति पाठ ।

धान्याभ्रक को कसौदी के रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इसी विधि से १० पुट दे तो अभ्रक भस्म हो ।

(११ पुटी) कृष्णाभ्रक चूर्ण को पोटली मे बाध भेड के दूध में भिगो दे अगले दिन १ सेर भेडके दूधमे दोलायन्त्र विधिसे स्वेदन करे। इस प्रकार ७ दिन

स्वेदन करे, फिर भेड के दूव की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे फिर १ पुट निम्बू रस की, एक शराब की और एक मक्खन की दे तो अभ्रक भस्म हो। म अ, स अ, मि ख

सनत अकवर का लेखक २० तो० कृष्णाभ्रक को १ सेर भेड के दूव मे भिगोकर अगले दिन कडाई में डाल कर पकाना लिखता है। इस विधि से ७ बार करे, फिर १ सेर भेड के दूध की भावना देकर पुट दे और उसने निम्बू रस शराब, मक्खन की मात्रा २०-२० तो० बताई है। इसे उसनेशक्ति वर्धक, बृंहण, रसायन लिखा है। मात्रा २ रत्ती।

(१२ पटी) श्लक्ष्ण व्रीहि भिरेकतः समतुलै रूर्णापटे घर्षयेत्।
ऊर्णासंस्थित काञ्जिकादपहृत तत्षोडशांशेन वा
वस्वशेन सुटङ्कणेन मिलितं सम्मर्दितं भावितम्।
दुग्धैरर्कभवैश्च वास्तुकरसैर्वा कासमर्दद्रवै-
र्मत्स्याक्षी सलिलैश्चगन्धबतिकाद्रावैश्चशिग्रुद्रवैः।
चक्रीकृत्य तदर्कपत्रपिहित पक्वं गजाह्वैः पुटै-
र्यावच्चन्द्रिकमभ्र भस्म भवति प्राय. सुपीतारुणम्।
तत्केचित्तुविभावयन्तिचरमे द्वित्र्येकपाकान्तरे।
वर्णार्थत्वथ तद्वपुर्वलकर वृष्य प्रमेहापहे॥ र. प, र. का. धे

रसकामधेनो त्रुटित पाठ प्रतिपादित।

साफ नरम अभ्रक को काजी मे भिगो कर अगले दिन उस अभ्रक के बराबर धान मिलाकर कम्बल मे बाध रगडे और अभ्रक के सूक्ष्म कणो को जल मे या काजी में उस पोटली को डुबो-डुबो कर मल-मल कर निकालता जाय इस प्रकार धान्याभ्रक बनाय सुखाय उसका १६ वा भाग या आठवा भाग सुहागा मिलाय निम्न वनस्पतियो की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे, स्वाग शीतल होने पर निकाल इसी क्रम को दोहराता रहे। वनस्पतियाँ—आक दूध, वथुआ, कसौंदी, मछेछी, वन चमेली, सुहजना, इन ६ वनस्पतियो की पुट दे तो लाल-पीले रग की अभ्रक भस्म बनती है। यदि नागवाला, मोथा, वटदुग्ध या वटजटा, हल्दी, मजीठ इनकी १—१ भावना और १—१ पुट और दे दे तो अभ्रक भस्म का रग वदल जाता है यह १२ पुट की अभ्रक भस्म फिर लाल वर्ण की हो जाती है।

(१३ पुटी) धान्याभ्र मेघनादे[1] कपनयनजले जम्भलेटङ्कणेन ।
खल्वे सम्मर्द्यगाढं तदनुगजपुटान् द्वादशैव प्रदद्यात् ।
मीनाक्षी भृङ्गतोयैस्त्रिफलजलयुतैर्मर्दयेत्सप्त रात्रम्[2] ।
गन्ध तुल्य च[3] दद्यात्प्रवरगजपुटात्पचतांयाति मेघः ॥
र स-क, र का धे, वृ यो त, यो र, भा भै र.

१ कदलीघनजलेटकणाकोलतोये वृ यो तरगिण्या इति पाठ ।
२ वारम् योगरत्नाकरे इति पाठ । ३ दत्वा योगरत्नाकरे इति पाठ. ।

धान्याभ्रक में अष्टमाग सुहागा मिलाकर चौलाई, मछेछी, आक के दूव में भावना देकर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट मे रख गजपुट की पुट देता रहे इस प्रकार १२ पुट देने के वाद फिर मछेछी, भगरा, त्रिफला इनके रसो में ७ दिन भावना दे उस अभ्रक के वरावर वलि मिलाय टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की एक और पुट दे तो १३ पुट में अभ्रक की उत्तम भस्म हो ।

(१५ पुटी) पुनर्नवा मेघनादद्रवैर्धान्याभ्रकं दिनम् ।
[1]मर्द्य गजपुटे [2]पच्यात्पुनश्चिञ्चाऽथ सूरणैः ॥
द्रवै मुस्ताभवैर्मर्द्य पृथग्देयं पुटत्रयम् ।
(कासमर्दरसैः पञ्च गोमुत्रैस्त्रिफलैरपि ।
न्यग्रोधक्वाथकैमर्द्य दद्याद्दशपुटान् पुनः ।
पट् च जम्बीरनीरेण गोक्षीरेण पुटत्रयम् ।) व.रा.अय पाठ अधिकः
एवमर्क दलैर्वेष्ट्य देयं [3]वामोच सम्पुटे ।
निश्चन्द्रं जायते ह्यभ्र यथायोगेपु योजयेत् ॥
(शतधा पुटित भस्म जायते पद्मरागवत् ।) व राजीये अय पक्तिरधिक । र का वे, र र, भा भै र, देवे स, व रा.

१ पुटेपचेन्मर्दयित्वा र का. वे इति पाठ
२ पाच्य चिञ्चा सूरणै पुन. वसवराजीये इति पाठ ।
३ रुव्वा च सम्पुटेत् वसवराजीये इति पाठ ३ शराव सम्पुटे र का धे. इति पाठ ।

धान्याभ्रक को पुनर्नवा, चौलाई, इमली, जिमीकन्द और मोथा इनकी पृथक्-पृथक् भावना व पुट देवे । प्रत्येक की तीन-तीन पुट दे, इस विधि से १५ पुट दे

तो उत्तम भस्म वने। वसवराजीय के लेखक ने कसौंदी की ५, गोमूत्र, त्रिफला, वट जटाक्वाथ इनकी १०–१० जम्बीरी रस की ६, गो दूध की ३ भावना व इतनी ही पुटें दी हैं। इस प्रकार जो ग्रन्थकार ने पुटें गिनाई है वह ५६ पुट वनती हैं, किन्तु ग्रन्थकार कहता है कि १०० पुट दे। इसका अभिप्राय यह है कि उक्त कही हुई वनस्पतियो में से इच्छानुसार आगे पुट देता रहे।

(१६ पुटी) तुण्डुलीयक वृहती नागवल्ली कंगुनी पिण्डतगर नैपाली
किरातपुनर्नवोदुम्बरपर्णी हिलमोचिका मण्डूकपर्णी तिक्तिकाऽऽ
खुपर्णी कामदनार्काद्रक पलङ्क्य सूत मातृकाद्याभिर्भिन्नभिन्न
मर्दन पुटनैः मारणीयम्। र च., र का वे, रसे चिं.

चौलाई, वडी कटेली, पान, कगुनी, तगर, चिरायता, साठी, गूलर, हुलहुल, ब्राह्मी, कडवी तुम्बी, मूसाकन्नी, मैनफल, आक, गोखरू, कुमारी इन वनस्पतियो में भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से भिन्न भिन्न वनस्पतियो में १६ पुट दे तो अभ्रक भस्म हो।

(१८ पुटी) पुनर्नवा रसै र्भाव्यमभ्रक चैकधा पुनः।
त्रिफलाया रसै. पञ्च वारान्निम्बस्य द्वादश ॥
यावन्निश्चन्द्रितां याति तावद्देयः पुटः क्रमात्।
र. र, धन्व., रसे क., र. यो सा.

अभ्रक को पुनर्नवा की एक भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इसी विधि से त्रिफला की पाच और नीम के रस की १३ पुट दे। अथवा जव तक अभ्रक निश्चन्द्र न हो जाय पुट देता रहे, यह अभ्रक रसायन वनता है।

(२० पुटी) धान्याभ्रकं समादाय कासमर्दभवैद्र वैः।
दिनैकंपेषयित्वाऽथ चक्रिकाकारितानयेत् ॥
ततो गजपुटं दद्याद्दशवार विधानत. ।
रविक्षीरैस्ततो दद्यात्तद्वद्देय पुटानितत् ॥
एवंतुविंशतिपुटै रेवाभ्रस्य मृतिर्भवेत्।
सिन्दूर सदृशं भस्म जायते नात्र संशय ॥ र त.

धान्याभ्रक को कसौदी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट में रख गजपुट की पुट दे इस विधि से १० पुट दे, फिर आक दूध मे १० पुट

दे तो २० पुट में सिन्दूर जैसी लाल भस्म बने।

(२) पाचयेद्द्वित्रिदिवसं जम्बीररस काञ्जिकैः ।
त्रिफलाया रसैर्भाव्यं ततः शिग्रुरसैः पुनः ॥
प्रत्येकशो विधातव्यं मर्दनं सूक्ष्मबुद्धिना ।
ततोलज्जालुक रसै र्वाजिगन्धारसैस्तथा ॥
भावनं पुटनं कार्यमितिचाभ्रक मारणम् ।
भावना नारिकेलस्य पात्रेचानेन शस्यते । र का वे

प्रथम अभ्रक को दो तीन दिन जम्बीरी रस व काजी में डाल कर उबाले फिर धोकर त्रिफला क्वाथ की भावना दे, सूखने पर इसी विधि से निम्न वनस्पतियो की भावना दे—सुहजना, लाजवन्ती, असगन्ध, इन सबो में प्रतिवार तव तक भावना देकर पुट देता रहे जब तक निश्चन्द्र न हो जाय। प्रत्येक की पाच-पाच पुट दे तो २० पुट में निश्चन्द्र हो जाती है। ग्रन्थाकार कहता है कि नारियल के खपरे का पात्र बना कर यदि उसमें भावना दे तो अच्छा है।

(३) नागवल्ली दलरसैर्वट मूलत्वचा तथा ।
वृषामत्स्यादनीभ्यांच मत्स्याद्या स पुनर्नवा ॥
वटवृक्षस्य मूलेन मर्दितं पुटितं घनम् ।
सिन्दूर सदृशो वर्णोभवेद्विंशतिमेपुटे ॥ र प्र. सु

धान्याभ्रक को पान, वटजटा, वासा जलपीपर, मछेछी, साठी इनके क्वाथ या रस में क्रम से भावना व पुट देता रहे, इस प्रकार २० पुट दे तो सिन्दूर सदृश्य अभ्रक भस्म बने।

(४) वट मूल त्वचः क्वाथैस्ताम्बूली पत्र सारतः ।
वांसा मत्स्याक्षिकाभ्या च मीनाद्या स कठल्लिका ॥
पयसा वट वृक्षस्य मर्दित पुटितं घनम् ।
भवेद्विंशति वारेण सिन्दूर सदृश घनम् ॥

र रा सु, र त, रसे चू, र कौ, र र स, र प्र सु, भा भै र

वट के जड की छाल का काढा, पान का रस, अडूसा, जलपीपर, मछेछी, लाल पुनर्नवा का रस, बड का दूध, इनमे से एक-एक औषध की भावना देकर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस

विधि से २० पुट दे तो अभ्रक की लाल वर्ण भस्म वने।

(५) शुद्धं धान्याभ्रकं मुस्ता सुण्ठी षड् भाग योजितम्।
मर्दयेत्कांजिकेनैव दिनचित्रकजैः रसैः॥
ततो गजपुटं दद्यात् तस्मादुद्धृत्य मर्दयेत्।
त्रिफला वारिणा तद्वत् पुटं देयं पुटैस्त्रिभिः॥
वलागोमूत्र मुसली तुलसी सूरण द्रवैः।
मर्दितं पुटित वह्नौ त्रित्रिवेलं व्रजेत् मृतिम्॥
र. म, र का धे, चि र, र रा सु, र प्र.

शुद्ध धान्याभ्रक में मोथा और सोठ का चूर्ण छठा भाग मिलाय, १ दिन कांजी में खरल कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट में फूक दे। इसी प्रकार चित्रक और त्रिफला के काढे में ३–३ वार, फिर वला, गोमूत्र, मूसली, तुलसी, जिमीकन्द प्रत्येक के रस मे ३–३ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट में फूके तो अभ्रक की २० पुट में उत्तम भस्म हो

(२१ पुटी) धान्याभ्रकं समादाय मूलिकायाद्रवै दृढम्।
पेषयेद्दिनमेकंतु द्विदिनम्वाभिषग्वरैः॥
वेष्टयेद्वटपत्रैश्च गगनं कृत चक्रिकाम्।
एकविंशति वाराणि पुटेदेवं प्रयत्नतः॥
निश्चन्द्रिक भवेद्भस्म निर्विकार गुणोत्तमम्।
एवं मृत तु गगनं वीतशक प्रयोजयेत्॥ र. द.

धान्याभ्रक को मूली रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय वट-पत्रो में लपेट सम्पुट कर गजपुट की पुट दे, इस विधि से २१ पुट दे तो अभ्रक की निश्चन्द्र निर्विकार उत्तम गुणवान् भस्म हो। ऐसी भस्म को नि शक हो प्रयोग में लावे।

(२) कृष्णाभ्रक को वकरी के दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे, इस विधि से २१ पुट दे तो निश्चन्द्र भस्म हो।
मा अ, मि. ख.

(३) श्वेताभ्रक चूर्ण को दूधी, कुमारी और आक इन तीनो की क्रम से ७–७ भावना व पुट दे तो २१ पुट में उत्तम भस्म वने। अ. स

(४) श्वेताभ्रक चूर्ण को गिलोय रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की पुट दे, इसी विधि से २१ पुट दे तो अभ्रक की उत्तम भस्म बने। स. अ.

(५) श्वेताभ्रक चूर्ण को थोहर, आक दूध, केला कन्दरस, मेंहदी रस प्रत्येक की क्रम से ५-५ भावना व पुट दे, अन्त मे १ पुट आक दूध की दे तो, २१ पुट मे उत्तम भस्म हो। मज, मि ख

(६) श्वेताभ्रक चूर्ण को निम्बू रस, भागरा रस, धतूरा रस प्रत्येक की क्रम से ७-७ भावना व पुट दे तो २१ पुट में अभ्रक भस्म हो। अ स ,मि ख

(७) धान्याभ्रकं तुषाम्लाम्लै रातपेस्थापयेद्दिनम्।
यामं मर्द्य चतुर्गोलं रुद्ध्वा गजपुटे पचेत्॥
एवं गोक्षीर मध्यस्थ स्थाप्यं मर्द्य पुटे पचेत्।
एव कर्पासतोयेन स्थाप्यं पेष्य पुटे पचेत्॥
ततोम्लैश्चैवकार्पासैर्गवाक्षीरैः पुनः पुनः।
घर्मपाकं मर्दनं च पुटञ्चैव मनुक्रमात्॥
एकविंशत्पुटे प्राप्ते मृतो भवति निश्चितम्। र र

धान्याभ्रक को तुष के अम्ल की काजी में भिगो कर धूप मे रख अगले दिन खरल कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इसी प्रकार गो के दूध में भावना दे पुट दे, फिर कपास रस, अम्लरस, गौ दुग्ध आदि मे क्रम से भानुपाक करे और पुट देता रहे, इस प्रकार २१ पुट देने पर अभ्रक की भस्म हो।

(८) कृष्णाभ्रकसमादाय द्विप्रस्थ चूर्णयेद्[1] बुधः।
गोमूत्रालोडित भाण्डे [2]क्षिप्त्वा वह्नौ दिनं पचेत्।
अर्क दुग्धैः पुनः पिष्ट्वा कृत्वा टिक्कडिकाः शुभाः।
वेष्टयेत्वर्क पत्रैश्च खर्परस्थाः पुनः पचेत्॥
एवमेवार्क दुग्धस्य दद्यात्सप्तपुटानि च।
पुटत्रयं कुमार्याश्च त्रिफलायाः पुटत्रयम्॥ चि. र.
(गुडस्य च पुट दत्वा पुनः पंचामृतैः पुटेत्।
ततोवटजटाक्वाथैः सम्यक् देयं पुटत्रयम्॥
एव निश्चन्द्रितो याति सर्वरोगेषु योजयेत्।

मृतंत्वभ्रं हरेन्मृत्युं जरापलित नाशनम्) ॥ भा. भै. र, यो चि.

चिकित्सा रत्नाभरणे मूलपाठस्य उक्त चतुष्पक्ति स्थाने निम्न द्वाभ्या पंक्तिभ्या स्थापितम् ।

म्रियतेनात्र संदेहो निश्चन्द्रो मृत्युहारकः ।
एवं शतपुटो वापि सहस्र पुटिस्तथा ॥ चि र

(१) न्मृदु चिकित्सारत्नाभरणे इति पाठ ।

(२) वह्नौ-तश्च " " "

दो सेर कृष्णाभ्रक को आठ गुना गोमूत्र मे मन्द मन्द आच पर पकावे और घोटता रहे, फिर अर्क दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय उस पर आक के पत्ते लपेट सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस प्रकार आक दूध की ७ पुट दे। फिर ३ पुट कुमारी रस की दे, फिर त्रिफला की ३ पुट दे, फिर गुड के साथ मिलाकर १ पुट पञ्चामृत (गिलोय, गोखरू, मूसली, मुण्डी, सतावर) की दे, फिर वट जटा क्वाथ की ३ पुट दे, कुल २१ पुट देने पर निश्चन्द्र भस्म वने ।

चि० रत्नाभरण मे उक्त चार पक्तिया नही है उसके स्थान पर उक्त दो पक्तिया दी हुई है जिसका पाठ ऊपर दिया है ।

(२६ पुटी) ततो धान्याभ्रकं कृत्वा पिष्ट्वा मत्स्याक्षिकारसैः ।
चक्री कृत्वा विशोष्याथ पुटे दर्द्वभके पुटैः ।
पुटे देयं हि षड्वार पौननेवरसैः सह ।
[1]कलाशं टकणेनापि समर्द्य कृत.चक्रिकाम् ।
अर्धेभाख्ये पुटै स्तद्वत् सप्तवार [2]प्रयत्नतः ।
एवं वासारसेनापि तंदुलीय रसेन च ॥ र. रा सु., भा. भै. र, र. चू., र. च.

१. अभ्राश र चू. इति पाठ ।

२ पुटेत् खलु र च. इति पाठ ।

पुटयेत् सप्तवाराणि पूर्वोक्त विधानतः ।
एवं सिद्धं घन सर्व रोगेषु विनियोजयेत् ॥

र च. अय पाठ अधिक ।

धान्याभ्रकको मछेछीके. रसमें खरल कर टिकिया वनाय सपुटमें रख, आधे गजपुट की अग्नि दे । इस प्रकार छ वार पुट दे, पुन पुनर्नवाके रसकी ६

पुट दे। फिर १६ वा भाग सुहागा मिला कर घोट टिकिया वनाय सम्पुट में रखकर ऐसी ७ पुट देवे। इसी तरह चौलाईके रसकी ७ पुट दे तो २६ पुटमें अभ्रक भस्म वने।

(२) धान्याभ्रकं पञ्चवारं अथभसिद्दपुटेन्मुस्तक क्वाथयोगात्।
रम्भानीरेणतद्वत्तदनु च सलिलैस्तण्डुलीय प्रसूतैः॥
भृङ्गोत्थे नापिवारातदनुखलु वरानीर पूरेणपिष्ट्वा।
दत्वागन्धं च तुल्यं सकृदिह पुटितो वारिदोयातिमृत्युम्। र त.

धान्याभ्रकको मोथा क्वाथकी भावना दे ५ पुट दे, फिर केला कन्द रसकी भावना दे ५पुट दे, फिर चौलाई रसकी भावना दे ५ पुट दे, भागरा रसकी भावना दे ५ पुट दे, त्रिफला क्वाथकी भावना दे ५ पुट दे, इस प्रकार २५ पुट देकर अन्त में वरावर का वलि मिलाकर एक और पुट देने पर अभ्रक भस्म वन जाती है।

(२८ पुटी) सूक्ष्मचूर्णं ततः कृत्वा पिष्ट्वा हन्सपदी रसैः।
चक्राकारं कृतं शुष्कं दद्यादर्धे गजाह्वये॥
षट् पुटानि ततोदत्वा पुनरेवं पुनर्नवा।
रसेन मर्दितं गाढ़ मभ्रांशेन तु टंकणम्॥
पुनश्च चक्रिका कृत्वा सप्तवार पुटेत खलु।
तण्डुलीय रसे नैव तद्वद्वासारसेन च॥
पुटयेत्सप्त वाराणि पुटं दद्याद्गजार्धकम्।
अनेनविधिना चाभ्र म्रियते नात्र संशयः॥
चन्द्रिकारहितं सम्यक् सिन्दूराभं प्रजायते। र.प्र सु,भा. भै.र.

धान्याभ्रकको हन्सराजके रसमें भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलोकी आचदे, इमी प्रकार ७ पुट दे, फिर अभ्रक का १६ वा भाग सुहागा मिलाकर पुनर्नवा रससे टिकिया वनाय सम्पुट कर २० सेर उपलोकी आचदे, इस विधि से ७ आच दे। (सुहागा एक ही वार मिलावे) फिर चौलाई रसकी ७ पुट दे, इस तरह २८ पुटमें अभ्रककी उत्तम निश्चन्द्र लाल रंग की भस्म वने।

(३० पुटी) धान्याभ्रक समादाय तण्डुलीयोद्भवैर्द्रवैः।
दिनत्रय पेषयित्वा ततश्च कृतचक्रिकाम्॥

पुटेद्गजपुटेनैव दशवारं प्रयत्नतः ।
ततः,पुनर्नवानीरैस्तद्वदेव पुटेद्भिषक् ।
वटशुङ्गकषायेण तद्वदेव-पुटेत्तथा ॥
एवं त्रिंशत्पुटैरेव गगनस्यमृतिर्भवेत् । र. त

धान्याभ्रक को चौलाई की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की पुट दे, इस विधिसे १० पुट दे। इसी विधिसे पुनर्नवा रसकी १० पुट और वटाकुर रस की १० पुट दे तो ३० पुटमे उत्तम अभ्रक भस्म बने ।

(२) सटङ्कण गवां दुग्धैः पिष्टं प्रपुटितं घनम् ।
निश्चन्द्रिकं भवेद्वारैस्त्रिंशद्भिर्गुणवत्तरम् ॥ रसे. चू.

अभ्रकमें अष्टमाश सुहागा मिलाय गोदुग्धकी भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुटकी आच दे, इस प्रकार ३० पुट दे तो श्रेष्ठ गुण-वान् अभ्रक भस्म बने । सुहागा प्रथम बार ही मिलावे ।

(३) गोजिह्वा रस संस्कृतं प्रथमतः कृष्णाभ्रक मर्दयेत् ।
खल्वे तच्च पुटेत्सुमर्दितमिद ग्रन्थीयकस्य द्रवैः ॥
एरण्डास्थिकशृङ्गलोध्रकरसैः प्रत्येकशो मर्दितम् ।
प्रत्येकपुटयेच्च यावदखिलं निश्चिन्द्रकंस्यादिदम् ॥ धन्व.,र का. धे.

पहले काले अभ्रकको गोजिया (बनगोभी) के रसकी भावना दे टिकिया बनाय सुखाय गजपुटकी आच दे, फिर क्रमसे पीपरामूल क्वाथ, एरण्ड, हडसहारी, मेढासिगी, लोध प्रत्येककी भिन्न भिन्न भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की पुट दे । अभ्रकको इनमें तबतक पुटे देता रहे जबतक निश्चन्द्र भस्म न हो जाय । प्रत्येककी पाच पाच पुट देनेपर अभ्रक की निश्चन्द्र भस्म हो जाती है ।

(३२ पुटी) पाठा शुक्लपुनर्नवाऽमृतलता हसारसा जीवनी ।
कौमारी वटपाद निम्ब सुरसा गन्धाश्मचूर्णं बला ।
गोजिह्वा हिलमोचिका च रजनी भेकाविशाला हिमः ।
निगुण्डी घननादिनी मधुरसा शृङ्गीय धेन्वादिनी ।
चागेरी गिरिकर्णिका च बदरी जम्बीरपूरार्द्रकम् ।
श्रीपर्णी च कुरण्टिका कुनटिका काकाण्डिका माचिका ।

एतेषां स्वरसे विमर्दनवशान्नागादयैवं पुटै-
र्लोह याति मृतिं तथाऽभ्रमपिवैनैवापरान्यान्मृति ॥

र च र का से

पाठा, सफेद मांठी, गिलोय, हंसराज, रास्ना, ओंगली, गोखुरू, वट, निम्ब, तुलसी, वलि, (गन्धक), खरैटी, गोजिया, हुलहुल, हल्दी, ब्राह्मी, इन्द्रायण, जाय-फल, सभालू, मोथा, मुलहटी, मेढासिंगी, दूधी, निर्गुण्डी, सिन्धुवाल्ना, बेर, जम्बीरीनिम्बू, अद्रक, गम्भारी, पीतकिकिणी, लोध, [illegible], मकोय और स्वरस की भिन्न भिन्न भावना दे, टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुटकी आंच देता रहे तो ३३ पुटमें लोह या अभ्रक की उत्तम भस्म बन जाती है।

(३५ पुटी) इहकेचिच्छुभ प्राहुर्गगनस्य च मारणम् ।
स्तेनराजरसं चैव सूर्यभक्तारसं तथा ॥
अश्वगन्धा च निर्गुण्डी रुदन्ती विजया तथा ।
शतावर्या रसेचैव आटरूपरसं तथा ॥
बलाचातिबला चैव शाल्मली सत्वमेव च ।
कूष्माण्डक रसं चैव मुस्तयारसमेव च ॥
विदारीवरकन्द च तुलसी मदन तथा ।
भल्लातकरसश्चैव वार्ताकी रसमेव च ॥
कपित्थस्य रसेचैव द्राक्षाफल रसे तथा ।
न्यग्रोधस्य रसचैव मर्कक्षीरं तथैव च ॥
उशीर वालकं कुष्ठं तथा लोहितरोहितम ।
चम्पकं काकमाची च गोक्षुरशतपत्रिका ॥
दाडमी कपिकच्छूश्च धात्रीफल रसं तथा ।
पुनर्नवा तथा ब्राह्मी चित्रकस्य रस तथा ॥
मुण्डीरस शिरीषस्य गुडूच्याश्च रसस्तथा ॥
अभ्रकस्य पुट देय प्रत्येकैर्योजयेद्रसैः ।
सर्वरोगान्निहन्त्याशु तम. सूर्योदयोयथा ॥

वा र, यो सा

कोई वैद्य निम्न विधिसे अभ्रक भस्म करनेका विधान बताते है ।—चोरक हुलहुल, असगन्ध, सभालू, रुद्रवन्ती, भांग, सतावर, वासा, कघी, खरैटी, मोचरस,

पेठा, मोथा, विदारीकन्द, तुलसी, मैनफल, भिलावा, वनभाटा, कैथा, किसमिस, वटजटा, आकदूध, खस, सुगन्धवाला, कुठ, रहेडा, चम्पा, कोच, आँवला, साठी, ब्राह्मी, चित्रक, मुण्डी, सिरस, गिलोय इन ३५ वनस्पतियोंकी एक एक भावना और एक एक पुट देता चला जाय तो लाल वर्णका अभ्रसिन्दूर नामा भस्म बने।

(४० पुटी) वटप्ररोहक्वाथेन धान्याभ्रं परिपेषितम्।
एरण्डपत्रै रावेष्ट्य पुटयेत्कृत चक्रिकाम्॥
दशवार पुटित्वैवं पुटेत्क्षुद्राकषायतः।
वासया कलिवृक्षस्य क्वाथेन च तथा पुटेत्॥
चत्वारिंशत्पुटैरेव गगनं मृतिमाप्नुयात्।
निश्चन्द्रिकमवेद्भस्म क्षय कास विनाशनम्॥ र त

धान्याभ्रकको वटकी कोपलके रसकी भवना दे टिकिया बनाय सुखाय एरण्ड पत्रमे लपेट सम्पुट कर गजपुटकी पुट दे, इसी विधिसे १० पुट दे। फिर कटेली की १०, वाँसा रसकी १०, बहेडाकी १० पुट देने पर अभ्रककी निश्चन्द्र भस्म हो।

(४२ पुटी) धान्याभ्रकं समादाय मुस्ताक्वाथैः पुटत्रयम्।
तद्वत् पुनर्नवानीरैः कासमर्दरसै स्तथा॥
नागवल्लीदल रसैः सूर्यक्षीरैः पृथक् पृथक्।
दिनं दिनं मर्दयित्वा क्वाथैर्वटजटोद्भवैः॥
दत्त्वा पुट त्रय पश्चात्त्रिपुटन्मूसली जलैः।
त्रिगोक्षुर कषायेण त्रिपुटेद्वानरी जलैः॥
मोचाकन्द रसै पाच्य त्रिवारं कोकिलाक्षकैः।
रसै पुटेत्ततो धेनुक्षीरै रष्टपुटेन् मुहुः॥
दध्नाघृतेन मधुना स्वच्छया सितया तथा।
एक मेवपुटं दद्यादभ्रं त्वेवंमृतं भवेत्।
सर्वरोग हरं व्योम जायते योगवाहिकम्।

र रा.सु, रसे चि, वृ यो त, भा भै.र, रसे सा स, र का घे, यो म.

धान्याभ्रकको ३ पुट मोथेके काढे की, फिर साठीके रस, कसोदीके रस, पानके रस और आकका दूध, वट जटा क्वाथ, मूसली रस, गोखरू क्वाथ, कौचका रस, मोचकद रस, तालमखाना रस, प्रत्येककी ३-३ पुट दे फिर गोदूधकी ८ पुट दे। दही, मक्खन, मधु, श्वेत चीनी प्रत्येककी एक पुट दे इस प्रकार ४२ पुटमे सर्व

रोग हर अभ्रककी उत्तम भस्म वने ।

(२) वज्राभ्रार्कवदुग्ध धेनुसलिलै र्ब्राह्मीरुदन्ती वला ।
वासा चित्रक शाल्मली वल वरा कूष्माण्डिका दाडिमी ॥
जाती गोक्षुर शंखपुष्पि लतिका मेदा मृता वर्वरी ।
द्राक्षा मूलक राक्षसी तुलसिका मुंडी विशाला सहा ॥
गोजिह्वा सलिलैर्विदारि लतिका शृंग्युग्रगधा जटा ।
शतपुष्पा तपनोद्भवश्च रसकैः सर्वेश्च्येद्वैश्वराट् ॥
रात्रौ सपरिपाचये द्गजपुटे सप्तैववारान् पृथक् ।
न्यग्रोधस्य जटारसस्य सततं केशेसतोयस्य च ॥
भावाश्चैव पुटाश्च विंशतिमिता घृष्ट्वा कपित्थस्यवै ।
चिंचिण्या फलकोद्भवैश्च सलिलै श्री मत्पुटेनांचितैः ॥
पश्चान्निम्बु रसेन धेनुपयसा समिश्र्य गौडस्य च ।
दध्ना खंड घृतस्य रम्य मधुना वाराश्र पंचदश ॥
पश्चाच्चन्द्रिक योर्मिवार्जित मथाभ्र वै सुशुद्ध भवेत् ।

र. रा. सु भा र प

अभ्रकको थूहर, आकके दूध, गोमूत्र, ब्राह्मी, रुद्रवती, खरेटी, अडूसा, चित्रक सेमल, पान, त्रिफला, पेठेका रस,चवेली, गोखरू, अनारके पत्ते, शखपुष्पी, मेदा, गिलोय,तुलसी, मुण्डी, इन्द्रायण, वायकेफूज, वनगोभी, विदारी कन्द, काकडासिगी, जटामासी, सौफ, दन्ती इनके रस या क्वाथोमें भावना देकर टिकिया वनाय सुखाय कपडमिट्टी कर गजपुटकी आच दे, इस तरह ७ आच दे। वडको जटा या भागरेके रसमें भावना देकर २० पुट दे । पीछे कपित्थ, कोदोका काढा, इमलीके बीजोके क्वायकी भावना दे गज पुटकी आँच दे । इस तरह निम्बू रस, दही, घृत, खाड, और शहद आदिकी १५ भावना व पुट देवे तो ४२ पुटमें अभ्रक भस्म वने ।

(३) सूक्ष्मचूर्णं तत कृत्वा पलाण्डूरसमर्दितम् ॥
चक्राकार कृतं शुष्क पचेदर्धगजाह्वये ॥
एव वासारसेनापि निर्गुण्डी स्वरसेन च ।
आर्द्रकस्वरसेनापि गुडूचीस्वरसेन च ॥
अर्कक्षीरेण स्नुह्याश्च कुमारीस्वरसेन च ।

मर्दयित्वापूटादेयायावन्निश्चन्द्रिक भवेत् ॥ रसामृत

धान्याभ्रक को प्याज की तथा आक दूध, थोहर दूध, वाँसा, सभालू, अद्रक, गिलोय, कुमारी, इन प्रत्येक की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गज पुटकी आच दे। इस प्रकार तवतक भावना व पुट दे जब तक निश्चन्द्र न हो जाय। आचार्य श्री यादव जी ने सिद्ध योग सग्रह मे २१ पुट प्याज रसकी देकर ७ गिलोय की, ७ आक दूधकी, ७ वाँसा रसकी इस प्रकार कुल ४२ पुट देनेका आदेश दिया है। (सिद्ध योग सग्रह)

(५० पुटी) धान्याभ्रक दृढ मर्द्य मर्कक्षीरे दिनावधि ।
वेष्टयेद्धानुपत्रैश्च चक्राकारतु कारयेत् ॥
कुजराख्ये पुटे पच्यात्सप्तवार पुनः पुन ।
ततो वटजटाक्वाथैर्मुस्ताक्वाथैः पुटत्रयम् ॥
तद्वत्पुनर्नवाक्षीरैः कासमर्दरसैस्तथा ।
नागवल्ली रसैर्युक्त सूर्यक्षीरैः पृथक् पृथक् ॥
दिने दिने मर्दयित्वा क्वाथैर्वटजटोद्भवैः ।
दत्वा पुटत्रय पश्चात्त्रिपुट मूसलीजलैः ॥
त्रिगोक्षुर कपायेण त्रिपुटैः वानरीरसै ।
मोचाकन्दरसैः पाच्य त्रिवार कोकिलाक्षकैः ॥
रसैः पुटेत्ततो धेनुक्षीरोदकं पुटं मुहुः ।
दध्ना घृतेन मधुना स्वच्छयासितया तथा ॥
एकमेकं पुट दद्यादभ्रस्यैवंमृतिर्भवेत् ।
सर्वरोगहरं व्योम जायते योगवाहकम् ।
कामिनीमद दर्पघ्न शस्त पुस्त्वोपघातिनाम् ।

वृष्यमायुष्यकर शुक्रवृद्धि सन्तान कारकम् ॥ रस मजरी

धान्याभ्रक चूर्णको आक दूधमे दिन भर खरल कर टिकिया वनाय सुखाय आकके पत्तोंमें लपेट सम्पुट कर गजपुटकी आँच दे, इस विधिसे ७ पुट दे। वट जटा क्वाथकी इस विधिसे ३ पुट दे, फिर मोथा और पुनर्नवा, कसौदी, पानरस, आक दूध, वटजटा, मूसली, गोखरू, कौच, मोचकन्द, तालमखाना और गौ दूध इन प्रत्येककी ३-३ पुट दे। तत्पश्चात् १ दहीकी, १ घी की, १ शहदकी, १ खाँडकी दे इस विधिसे ५०पुटमें यह योगवाही अभ्रककी भस्म वने।

नोट—४२ पुटो की प्रथम और दूसरी तथा ५० पुटी यह अभ्रक भस्म तीनो एक ही सी है इनमे साधारण अन्तर है।

(५६ पुटी) धान्याभ्रक द्रवैर्मर्द्यं मत्स्याक्षीतुलसीद्रवै.।
मलजे कोकिलाक्षस्य कुमारीश्वेतदूर्वयो: ॥
व्याघ्रीकन्द पुनर्नव्या दिनमेतैर्विमर्दयेत् ।
कुञ्जराख्ये पुटै. सप्त पिष्ट्वा पिष्ट्वा पचेत्पुन. ॥
तद्वत्पञ्चामृत पाच्य पिष्टा पिष्ट्वा तु सप्तधा ।
एव निश्चन्द्रिना याति सर्वरोगेपु योजयेत् ॥
र र, भा भै र, व रा

१ व्याघ्री, पुनर्नवयोश्च दिनमेतद्विमर्दयेत् व रा, अय पाठ

धान्याभ्रकको मछेछीरस, तुलसीरस, तालमखानामूलक्वाथ, कुमारीरस, श्वेत दूब, कटेलीरस, पुनर्नवा इनकी पृथक् पृथक् भावनादे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुटकी आच देता रहे। एक एक वनस्पतिकी इसी विधिसे ७-७ भावना व पुट दे पश्चात् पञ्चामृतकी भी सात भावना और सात पुट दे तो ५६ पुटमे निश्चन्द्र अभ्रककी भस्म बने

(५८ पुटी) चूर्णित निक्षिपेदभ्र रसेकर्पास पत्रजे।
मर्दयित्वाततश्चूर्णं तद्रसैः सम्पुटे क्षिपेत् ॥
आरण्योत्पलकैः पश्चात्पुटान्येतैश्च विंशतिः।
दद्याद्वराहसञ्ज्ञानि मर्दनञ्च तत पुटम् ॥
ऊनविंशे पुटे जाते व्योमखल्वेविनिक्षिपेत् ।
मर्दयेत्कटुतैलेन ततः सम्पुटके क्षिपेत् ।
निरुद्ध्य सम्पुट सम्यङ्मृदा कर्पटयुक्तया
पुटयेदुपविंशानि वाराणि च यथाक्रमम् ॥
ततो व्योमसमादाय खल्वे सम्मर्दयेत्ततः।
कटुतैलेनतद्व्योम दृढेभाण्डेविनिक्षिपेत् ॥
उपरिष्ठात्पुनर्दद्यात्कटुतैल घनं यथा ।
अङ्गुलद्वयमानेन व्योमोपरि तथा भवेत्
भाण्डवक्त्रं सन्निरुद्ध्यपिधान्यकर्पटैर्मृदा ॥
शुष्कामारोपयेच्चुल्ल्या काष्ठाग्निं ज्वालयेदध. ॥

तावत्प्रज्वालयेदग्निं यावन्निस्तैलतां व्रजेत् ।
निस्तैलं गगनं कृत्वा कज्जलाभंविचन्द्रिकम् ॥

र ओ यो ,र चिं , र र , रसा स , र को , धन्व ,यो म ,र रा सु ,र का धे

धान्याभ्रकको कपासके रसकी भावना दे टिकिया वनाय सम्पुटमे रख वराह पुटकी आच दे, इस विधिसे २० पुट दे फिर सरसोके तेलकी भावना दे टिकिया वनाय सम्पुट कर वराह-पुटकी आँच दे, इस विधिसे १६ पुट दे, फिर त्रिफलाकी १६ पुटदे फिर अभ्रक को पीस कढाईमे डाल उस पर इतना तेल डाले कि दो अगुल तेल ऊपर तक आजाय, फिर इस तेल का पाक करे जब सारा तेल जल कर भस्म मात्र वाकी रहे उतार ले यह ५८ पुटी कज्जल सदृश निश्चन्द्र अभ्रक भस्म हो ।

(६० पुटी) एवं मुस्तारसेनापि तण्डुलीय शिफारसैः
टकणेन समं पिष्ट्वा चक्राकारमथाभ्रकम् ॥
षष्टिसख्यापुटैः पक्वं सिन्दूर सदृशं भवेत् ।

अभ्रकके वरावरका सुहागा मिला कर मोथा रसकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुटकी आच दे । इस प्रकार मोथाकी २० और चौलाई मूल रसकी ४० पुट दे तो ६० पुट में अभ्रक की उत्तम भस्म हो ।

तद्वन्मुस्तारसेनापि तण्डुलीयरसेन च ।
[1]पीतामलक सौभाग्य पिष्ट चक्रीकृताभ्रकम् ॥
पुटितषष्टिवाराणि सिन्दूराभं प्रजायते ।

रसे चू , र रा सु भा भै र , र र स , पा स

[1] शिवा रसेन्द्र चूडामणि इतिपाठ

इस प्रकार नागरमोथाके रस, चौलाई रस और पके हुए आँवलोके रसकी क्रमसे भावना देकर टिकिया वनाय एक एककी वीस पुट दे तो अभ्रककी लाल सिन्दूर जैसी भस्म वने । ग्रन्थकार कहता है जव आमलक की भावना दे तो प्रथम भावनामें १६ वॉ भाग सुहागा मिलावे तव भावना दे वार वार सुहागा देनेकी आवश्यकता नही । नोट—प्रथम अभ्रक भस्म और यह दूसरी दोनो विधिया एक है । ग्रन्थो में केवल पाठ भेद दिया है ।

(७०पुटी) पुनर्नवा कुमारीं च चपलां वानरीं तथा ।
मुसलीं चेक्षुवल्लींच तथार्द्राऽमलकी रसैः ॥

प्रत्येकैकेन पुटयेत् सप्तवारं पुनः पुन ।
अर्क सेहुण्ड दुग्धेन प्रदेया सप्तभावना ॥
एव तन्म्रियते वज्रं सर्वरोग हरं परम् ।

र रा सु, टो, पा स, भा नै र.

अभ्रक को साठी, कुमारी, पीपल, कौंच, मूसली, ईख, अद्रक रस, आमलारस, आक और थोहरके दूध की ७-७ भावना व पुट दे तो ७० पुटमें अभ्रक भस्म सर्व रोग हर बने ।

(८१ पुटी) मुस्ताक्वाथेन धान्याभ्रं पचविंशत्पुटे पचेत् ।
गोमूत्रैस्त्रिफला क्वाथैः पक्त्वा च पूर्ववत्पचेत् ॥
पचविंशत्पुटैरेवं कासमर्दद्रवैः पचेत् ।
देय पुटत्रयं क्षीरैर्मर्दयेच्च पुटे पुटे ॥
निश्चन्द्रं जायतेह्यभ्रं जरामृत्युरुजापहम ॥ व ग र र.
रस रत्नाकरे त्रुटित पाठ तत्र प्रथमपादो नास्ति ।

धान्याभ्रकको नागरमोथा क्वाथकी भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुटकी आच दे, इस प्रकार २५ पुट दे, फिर इसी प्रकार गोमूत्र, त्रिफला क्वाथकी २५-२५ पुट दे, फिर इसी विधिसे कसौंदी रस और गो-दुग्ध की ३-३ पुट दे इस प्रकार ८१ पुट दे तो अभ्रककी निश्चन्द्र भस्म बने ।

(१०० पुटी) क्षीरत्रयंकाकमाची गोक्षुरःखरमंजरी ।
वटप्ररोहो गोमूत्रं तुलसी कदली शिफा ॥
एभिरभ्रं विमर्द्याथ दशवारं पृथक् पृथक् ।
पुटेत्पुट विधानज्ञः क्रमेणैवभिषग्वरः ॥
शतधा पुटनादेव रक्तोत्पल समप्रभम् ।
निश्चन्द्रं जायते भस्म सर्वदोष विवर्जितम् ॥ र त.

आक, वट, थोहरका दूध व मकोय, गोखरू, अपामार्ग, वटांकुर, गोमूत्र, तुलसी, केला, इन दस ओषधियोंमें से प्रत्येक की दस दस भावना व पुट दे । इस प्रकार १०० पुट देने पर रक्त कमल जैसी निश्चन्द्र अभ्रक भस्म बने ।

(२) धान्याभ्रक विनिक्षिप्य मूसलीरस मर्दितम् ।
स्थाल्यां क्षिप्त्वा निरुध्याथपिधान्यामध्यरन्ध्रया ॥
स्थाल्यधोज्वालयेद्वह्निं यामपर्यन्त मुद्धतम् ।

तत क्षिपेत्पिधान्योहि व्योम्नस्त्वष्टगुणपय. ॥
जीर्णं पयसिपिष्ट्वा तत्तालमूलीरसैः पुनः ।
इत्थं हि साधयेद्व्योमत्रिवारमतियत्नतः ॥
अजादुग्धपुटैः पश्चाद्वाराणि विंशति खले ।
कम्पिल्लेन रसेनापि विष्णुक्रान्ता रसेन च ॥
कदलीकन्दतोयेन तालमूली रसेन च ।
शतवारं पुट देय भवेद्व्योम रसायनम् ॥ न पु, भा भै र

धान्याभ्रकको मूसलीके रसकी भावनादे हण्डीमे डाल उसे चूल्हे पर चढाय १ प्रहर आठ गुने दूध मे पकावे दूध जल जाने पर इसी तरह मूसली क्वाथमे पकावे, फिर उसे खरलमें डाल वकरीके दूधकी भावना दे टिकिया वनाय सम्पुट कर गजपुटकी आचदे, इस विधिसे २० पुटदे, फिर कवीला, अपराजिता, केलाकन्द रस, मूसली रस प्रत्येककी वीस वीस भावना व पुट दे, इस तरस १०० पुटमें यह अभ्रक भस्म रसायन वनती है। इसे महाकल्प नामक रसायन कहा गया है।

(३) दुग्ध त्रय कुमार्याम्बु गंगा [1]पत्र नृमूत्रकम् ।
[2]वटाङ्कुरमजारक्त मेभिरभ्रं सुमर्दितम् ॥
शतधा पुटितं भस्म जायते पद्मरागवत् ॥
निश्चन्द्रिक भवेत्तत्तु शुद्ध देयं रसायने ।
र ज नि, र म, र र प्र, र का वे, वृ यो त, र च.

१ पुत्र र च इति पाठ १ गगा जल र र इति पाठ १ गगा पत्य र. का धे. इतिपाठ ।

१ गजमूत्र वृ यो त इति पाठ । २ वटशुग र ज नि, र च इति पाठ ।

२ वटभृ ग वृ यो त. इति पाठ ।

वट थूहर और आकका दुग्ध, घीकुमार का रस, नागरमोथा, नरमूत्र, वटाकुरका रस, वकरीका रुधिर इन प्रत्येकमें धान्याभ्रक को घोट घोटकर १०० वार पुट देनेसे अभ्रककी पुखराज मणिके समान भस्म वनती है। इसे रसायन सम्वन्वी योगो मे व्यवहार करे

(११० पुटी) महिषी दुग्ध मादाय धान्याभ्रक विपचेत्तत. ।
दिनमेकं तदादाय यवचिञ्चीरसैः पुटेत् ॥

तावदभ्रं तु पुटयेद्यावदंजन सन्निभम् ।
वराहाख्यं पुटेदद्याद्योनी संख्यापरानराः ॥
तत एरण्ड तैलेन पुटानित्रीणि दापयेत् ।
मुण्डीरसेन पुटयेत् त्रिवार भृङ्गवारिणा ॥
निर्गुण्डिकारसैः पश्चात् पाठानीरैस्तत. पुटेत् ।
पुनर्नवारसै श्चैव मार्कण्डीनीरसैस्तत ॥
उत्तरावारुणीनीरै जीवनी नीरैस्तु पुटेत् ।
तण्डुलीयकनीरेण ततश्चत्रिफलोदकै ॥
व्योपनीरेण पुटयेत दशवारान तन्द्रितः ।
एवमभ्रं साधयित्वा योगेपु विनियोजयेत् ॥ र ल

धान्याभ्रकको भैंसके दूधमें एक दिन पकावे फिर हिरनखुरीकी भावना देकर सपुटमें रख गजपुट की आच दे इसी विधिसे ४पुट दे ताकि अञ्जन जैसा होजाय, फिर एरण्ड तेलकी भावना दे ३ पुट दे, फिर मुण्डी रसकी भावना दे ३ पुट दे, इसी प्रकार भृ गराज, सभालू, पाठा, पुर्ननवा, विदारीकद, इन्द्रायण, जीवन्ती, चौलाई, त्रिफला, त्रिकटु, इन सब की भावना देकर पुटे देता रहे, इसी विधि से दस दस पुट दे तो ११० पुट में अभ्रकको निश्चन्द्र उत्तम भस्म बने ।

(सहस्रपुटी) धान्याभ्रकं शुद्धिमुपैतिपश्चात् खल्वे सुरम्ये किलघर्पयित्वा ।
जले चतु पष्टिवनस्पतीना घर्मेऽथसशोष्यदिनान्तकाले ।
वनोत्पलानां पुटमाचरेच्च एव विधं मारितमभ्रकं च ।
वनस्पतीनां क्रमएवमुक्तं दुग्ध रवेर्वैवटदुग्धवज्री ।
कुमारिकानामनिलारितिक्ता मुस्ता गुडूची विजया त्रिकण्टकम् ।
वार्ताकिनी पर्णिद्वय वगुल्मान्सिद्धार्थकोवैखरमजरीणाम् ।
वटप्ररोह अज शोणितं च विल्वाग्नि मन्थाग्निसतिन्दुकानाम् ।
हरीतकी पाटिलकासमूहैः गोमूत्र धात्रीकिल जम्भ कुम्भी ।
तालीसपत्र स च तालमूली वृपाश्वगन्धामुनिभृंगराजम् ।
रम्भाजल सार्द्रं सुसप्तपर्णं धत्तूर लोध्रं च सदेवदारु ।
वृन्दासुदूर्वा द्वयकासमर्द मरीचिके दाडिम काकमाची ।
सशखपुष्पी नतनागवल्ली पुनर्नवा मण्डुकपर्णिका च ।
इन्द्रायणी भार्गी च देवदाली कपित्थलिंगी कटुशिग्रुकानाम् ।

कोशातकी मूपकपर्णिकान मीनाक्षिका कारवितैलपर्णी ।
कुम्भीतथार्द्रा च शतापरीणां एभिश्चतोयेसित खल्वमध्ये,
विवर्पयेच्छुष्क भवतथैव वनोत्पलानां पुटमग्निशीतम् ।
पुनः पुन. खल्वतले विवर्पयेत् एभि क्रिया पोडशवारमेकम् ।
वल्ली जलाना पुटमारभेत् च निश्चन्द्रगोपारुणरङ्ग तुल्यम् ।
भस्मामृतदिव्यरसायने च नानानुपानैरजरामरत्वम ॥

र रा सु, आ वे प्र

धान्याभ्रकको निम्नलिखित ६४ औपधियो में से प्रत्येकके रस या क्वाथ आदि में घोट, टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर पुट दे, इसी विधि से १६-१६ पुट दे तो यह लाल वर्ण की श्रेष्ठ अभ्रक भस्म बनाती है। वनस्पतिया— आक, वट और थूहर का दूध मोथा, घीकुमारी का रस, वट जटा, विल्व रस, गोमूत्र, गिलोयका रस, कटेरी, कदम्ब, शालपर्णी, पृश्नपर्णी, श्वेत सरसो, खर मजरी, अडूसा, आमला, वहेडा, विल्व चित्रक, तेंदू, हरड, पाटलकी जड, वकरेका रुधिर, लोध्र, जल-कुम्भी, तालीस पत्र, मूसली, अगस्तिया, भागरा, हिरन-खुरी, केलेका रस, सप्तपर्ण, धतूरा, देवदारु, तुलसी, दोनो दूर्वा, असगन्ध, कास मर्द (कसौंदी) मडूकपर्णी, मिर्च दाडिम, काकमाची, शखपुष्पी, वालछड, पानका रस, पुनर्नवा (साठी), मूपा कर्णी, इद्रायण, भारगी, देवदाली, कैंथा, शिव-लिंगी, कटुवल्ली, टाककारस, काई, जवासा, मछेछी, कलौंजी, तैलपर्णी, सतावर ।

(२) क्षीरत्रयंकाकमाची मुस्ताघृतकुमारिका ।
वटप्ररोहोगोमूत्रं विल्वमूलनलेवृप: ॥
फलभिक मजारक्तं कण्टकारी कदम्बकः ।
अग्निमन्थशालिपर्णी श्रीपर्णी पाटलीगुड ॥
तिलपर्णी पृश्निपर्णी गोक्षुराखरमजरी ।
शुल्कसिद्धार्थको लोध्र वृहतीहिलमोचिका ॥
धत्तूरकासमर्दश्च मातुलानी गुडूचिका ।
मरिषस्तुलसीदूर्वा वाजिगन्धा च तिक्तिका ॥
मडूकपर्णी मदन पिण्डीतगर मेव च ।
शंखपुष्पी नागवल्ली घोण्टा श्वेतपुनर्नवा ।
आपुकर्णी सप्तपर्णः रम्भाकन्दरसस्तथा ॥

भृङ्गराजो देवदारु तालमुली च मालती ।
अगस्त्य पत्रतालीश चित्रक जलकुम्भिका ॥
दाडिमस्यदलञ्चैव तण्डुलीयकमेव च
एरण्डमूलपत्राणि श्योनाको वस्त्ररञ्जनी ॥
पालंक्याभद्रमुस्ता च मीनाक्षी कोकिलाक्षकः ॥
पूर्वाचार्यैः कीर्तितोऽयमभ्रस्य मारकोगण. ।
यथारोगं यथालाभ भेपजैःपुटयेद्घनम् ॥

र रा सु, र त.

नोट-इसमें प्राय प्रथम पाठ की ही वनस्पतिया है । केवल पाठ भेद है ।

गवांमूत्रेण धान्याभ्रं मर्दयित्वा पुनः पुनः
शराव सपुटेरुद्ध्वा पुटेद्यत्नात्सहस्रशः ॥ रस जल निधि

धान्याभ्रकको गोमूत्रमें वार-वार घोट सपुटमें रख गज पुटमें फूके, इस तरह एक हजार वार पुट देनेसे उत्तम भस्म हो ।

अभ्रक भस्म के गुण

अभ्रकके स्थान पर अकीक भस्म और अकीक भस्मके स्थान पर अभ्रक भस्मका उपयोग करे यह एक दूसरे के प्रतिनिधि है । जो गुण अभ्रकके शास्त्रोंमें लिखे है यही गुण अकीककी ७ या १० पुटी भस्म मे पाये जाते है । अभ्रक को प्रायः हम जीर्ण ज्वरो में या यो कहिये कि शरीर का उत्ताप वढे रहने पर देते है अभ्रक भस्मके सेवनसे वढे हुए उत्तापकी मात्रा घट जाती है, यही काम अकीक भी करता है । मन्द ज्वर की स्थितिमें या वढी हुई शरीरकी गर्मीमें हृदय प्रायः धडकने लगता है, चित्त व्याकुल होता है उस स्थितिमें चाहे अभ्रक भस्म दें या अकीक दोनो ही एक जैसा लाभ करते हैं । इससे भिन्न मस्तिष्क व स्नायु सम्बन्धी निर्वलता व विकारोमे जिस तरह अकीक उपयोगी है उसी प्रकार अभ्रक भी उपयोगी है । कास, क्षय, रक्तपित्त, रक्तातपता, धातुक्षीणता आन्तरिकदाह, प्रमेह, प्रदर आदिमें जिस प्रकार अभ्रक लाभ करता है उसी प्रकार अकीक लाभ करता है । शरीरकी निर्वलता मानसिक दौर्वल्य तथा फुफ्फुस हृदयादि की निर्वलतामे दोनो ही वडे उपयोगी है ।

अभ्रक भस्म अनुपान

सतगिलोय १ माशा मिश्री ३ मा० से प्रमेहमें या पीपर चूर्ण २ रत्ती शहद

३ मा० के साथ प्रमेह, श्वास, कास, क्षय ज्वर, उदर विकार, अरुचि, भ्रम, कामलामे दें, या हल्दी चूर्ण १ माशा पीपर २ रत्ती या त्रिफला चूर्ण १।। मा० शहद ३ माशेमे प्रमेहमे, सुवर्ण वर्क २ मुरब्बाआँवला १ नगके साथ क्षय ज्वरमे, हरड चूर्ण १।। माशा गुड ४ माशे के साथ वातरक्तमें, इलायची छोटी १ मा० मिश्री ३ मा० के साथ रक्त पित्तमें, त्रिफला चूर्ण ३ माशा शहद ६ माशा घृत १ तो० मे नेत्र ज्योति क्षीणता, निर्बलता में, कुन्दरु की जड का चूर्ण १ मा० मिश्री ३ माशाके साथ रक्तार्श, रक्तप्रदर, रक्तमूत्रतामें, त्रिफला, त्रिकटु चूर्ण १।। मा० घृत ३ माशा शहद ६ माशा से शूल, अम्लपित्त, वमनमे, चादी वर्क २ स्वर्णवर्क २ मुरब्बा गाजर १ तोला से धातु क्षीणता में मूर्वाघनसत्व ४ रत्ती शहद ३ माशा से व्रणमे, विदारी कन्द चूर्ण १।। माशा मिश्री ३ मा० के साथ खाकर ऊपर दूध पीवे निर्बलतामें, भिलावा चूर्ण १ माशा गुड ३ मा० से अर्शमें, सोठ, पोहकर मूल, भारगी, असगन्धका चूर्ण व मिश्री चूर्ण ३ माशे से वात व्याधिमें, दारचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसरका मिश्रित चूर्ण १।।माशे मिश्री ३ मा० से पैत्रिक रोगोमें, कायफल, पीपर चूर्ण १माशा, शहद ६ माशेसे श्लेष्म वृद्धि, कास, श्वासमें, दोनो खार सुहागा ४ रत्तीके साथ मन्दाग्निमें, अश्मरी, मूत्रकछमें, भाग चूर्ण ४ रत्ती मिश्री ३ मा० के साथ सग्रहणीमे दें, लौग ४ रत्ती ६ मा०शहदसे शीघ्रवीर्यपातमे, धातु क्षीणतामे, विडग, त्रिकटु चूर्ण १ माशा घी ३ मा० से क्षय, पाण्डु, ग्रहणी, शूल, श्वास, प्रमेह अरुचि, कास, मन्दाग्नि उदर विकारमे अभ्रक भस्म देनेसे लाम होता है ।

कच्छू पृष्ठ

कछुआके शरीरका कवच प्राय ऊर्ध्व भागका कठोर कवच जो अस्थि जैसा कठोर होता है यद्यपि इसकी रचना विलकुल अस्थि जैसी नही होती, तथापि वहुत कुछ मृग शृगकी रचना के अनुरूप होती है उसमे भी मुख्य घटक चूनफास्फुरेत का ही होता है ।

हमारे रसग्रन्थो मे इसका कही देहवाद पर उपयोग हुआ हो, ऐसा दिखाई नही देता, हा यूनानी के नव्यचिकित्सा ग्रन्थो मे अवश्य इसका उपयोग पाया जाता है ।

कच्छू पृष्ठ का उपयोग—कछुका की कठोर पीठ के खाल रहित भाग को पत्थर पर पानी डालकर घिसते है जिस व्यक्ति को मन्थर ज्वर अपनी

अवधिसे अधिक समय तक बना रहता है उसे दोनो समय शहद मिलाकर चटाते है इससे मन्थर ज्वर में लाभ होता है। मन्थर ज्वर के पश्चात् जब बालको को शोष रोग हो जाता है उस समय भी इसको मुनक्का के साथ मिलाय गोली बनाकर देने से लाभ होता है। मात्रा १-२ रत्ती तक।

कच्छू पृष्ठ भस्म—कछुआ की हड्डी को इसी तरह कोयलो की आच पर रख देते है जब वह जलकर राख बन जाय निकाल कर पीस लेते है। अ स.

(२) कच्छू पृष्ठ को अधजला कर कूट चूर्ण बनाय कुमारी, वासा, गोजिह्वा, जख्महयात के रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो कच्छू पृष्ठ भस्म हो। मात्रा १ माशा। मन्थर ज्वर में रक्तष्ठीवन, क्षयक्षत मे लाभदायी है। अ स, मि त

वक्तव्य—कच्छू पृष्ठ भस्म और शृ ग भस्म दोनो के गुण समान है जहा-जहा जिन जिन रोगो पर शृ गभस्म का उपयोग करते है वहा वहा कच्छू पृष्ठ भस्म का उपयोग करे वही लाभ मिलेगा जो शृ ग भस्म में देखते है। इन्हे एक दूसरे के प्रतिनिधि रूप मे भी प्रयोग किया जा सकता है।

कपर्दिका

जिस तरह शख और सीप एक विशेष जलजन्तुओ द्वारा अपने शरीर का कवच निर्माण करते है उसी तरह कौडी के जन्तु भी अपने शरीर की रक्षा के लिये चूनकज्जलेत का कवच बनाते है। उसे हम उन जन्तुओ को मारकर या स्वत मर जाने पर जब वह जीव सड गल कर निकल जाता है या सडा-गला कर निकाल देते है तब उसे धोकर साफ कर काम मे लाते है। यह कौडिया भिन्न-भिन्न जाति के जतुओ द्वारा बनाई जाने के कारण कई रग व आकार की होती है, किन्तु औषध के लिये प्राय पीली कौडी का ही उपयोग किया गया है। जो पीली कौडी अच्छी भारी, गठीली और बडी हो वही अधिक कार्य मे लाई जाती है। रसायनिक रचना की दृष्टि से शख, सीप, प्रवाल, कौडी प्रधानतया चूनकज्जलेत के मुख्य योगिक है किन्तु इन प्रत्येक सजीव प्राणियो का भोजन, स्थान व परिस्थितिया एक जैसी नही होती। इन्ही अन्तरो के कारण इनके कवच रचना मे भी कुछ न कुछ सूक्ष्म अन्तर देखा जाता है। इसीलिये इनसे बनने वाली भस्में भी प्राय कुछ न कुछ गुण स्वभाव मे अन्तर रखती है।

कपर्दिका शोधन—कौडिया समुद्री जीवो का कवच होने से और समुद्र

की तलहटी में पड़ी रहने से उनमें कई प्रकार के सामुद्रिक अपद्रव्य भी उनके ऊपर भीतर जम जाते हैं। जिन्हें दूर करने के लिये इन्हें सोडे के पानी में डालकर उबालने से और कई बार के स्वच्छ जल से धो डालने पर वह सब दुर्गुण छुट जाते हैं। कुछ व्यक्ति कौडियो को शुद्ध करने के निमित्त उन पर निम्बू का रस या और कोई अम्ल डालकर उन्हें भिगो देते हैं। निम्बू रस में कौडियों को कभी नहीं भिगोना चाहिये। अम्ल के प्रभाव से चूनक-ज्जलेत जो एक प्रकार का क्षारीय यौगिक होता है—वह घुलकर लवण में बदलने लगता है, इससे कौडियो का यौगिक टूट जाता है, इससे उसका गुण स्वभाव सब बदल जाता है, ऐसा नहीं करना चाहिये।

कपर्दिका भस्म

वराटिकास्तु विमलान् शरावे स्थापयेद्भिषक्।
सन्धिलेपं पुन कृत्वा शोषयेदातपे पुन ॥
करीषाग्नौ पचेत्कार्यं यत्नतस्तुभिषग्वर।
शरदिन्दुनिभ भस्म सर्वरोगेषु योजयेत्॥ र. त

शुद्ध कौडियो को शराव सम्पुट में बन्द कर सुखाय उपलो की अग्नि मे पुट दे तो श्वेत वर्ण की भस्म बने। इसे समस्त रोगो मे दे।

(२) वराटिका विशोधितात्त्वलातकानले स्थिता।
यदाभवेत्तुफुल्लिका मृता तदाशनोचिता॥

रसराज सुन्दरे भिन्न पाठ प्रतिपादित। र त, र रा सु

कौडियो को उपले की आँच पर रख दे वह जल कर जब सफेद हो जाय निकाल कर पीस ले। सि यो स, अ अ

(३) रसश्च गन्धपाषाण. प्रत्येक कर्पमात्रकम्।
श्लक्ष्णचूर्णं द्वयो. सम्यक् प्रकुर्यात्कुशलो भिषक्॥
एतच्चूर्ण पीतवर्णं कपर्दाभ्यन्तरे कृतम्।
शराव सम्पुटे कृत्वा लिप्त्वा संशुष्कगोमयैः॥
सुतीव्राऽग्नौ पचेत्तावद्यावद्गच्छति भस्मताम्।
समुद्धृत्याश्मना सर्वं चूर्णंज सकपर्दकम्
र रा सु, र. यो. सा.

पारा, वलि समभाग कज्जली कर उसे कौडियो मे भर सम्पुट कर गज-

पुट की आंच दे निकाल सबको पीस ले। भस्म करने मे पारा बलि तो उड जाता है केवल कौडियो की भस्म रह जाती है। इसे अतिसार, ग्रहणी, जीर्ण-ज्वर, मन्दज्वर, मन्दाग्नि, ज्वरातिसार, मे देवे। मात्रा २-४ रत्ती, शहद में इसका नाम नृसिंह पोटली रस है।

(४) कौडियो को अग्नि मे तपा-तपा कर १०-१० बार गोमूत्र, भागरा, धतूरा, वनकपास रस, हिंगोट रस मे वुझादे तो कौडी भस्म अच्छी बने। बधिरता, गुदभ्रंश, अभिघात मे देवे। एक मास सेवन करने पर शरीर का वर्ण गौर हो जाता है। स्त्री सेवन करे तो वन्ध्या हो जाती है। अ. त., मा अ

(५) न० २ की विधि से कौडी जला ले फिर इसे नीव पत्र के नुगदे में रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आँच दे तो यह भस्म सुजाक में लाभ करती है, रक्तस्राव को रोकती है। मात्रा ४ रत्ती। स अ

कपर्दिका भस्म के गुण—क्षय, कफ रोग, परिणाम शूल, मन्दाग्नि, पित्त विकार, सग्रहणी, सुजाक मे लाभदायक है। कान वहता हो तो कान में डालने से जख्म को भर देती है। मात्रा ४ से ८ रत्ती

कसीस

लोह चूर्ण को वलिकाम्ल में डाल दें तो लोह उसमें घुल जाता है वह वलिकेतू वन जाना है। पूर्व काल में माक्षिक को अग्निपर भूनकर उसे जलमें घोल देते थे। उस जल में जो माक्षिक का ताम्र वलिकेत होता था वह घुल जाता था उसे ऊपर से नियार कर गाढा कर लेते थे और उसके रवे जमा लेते थे वह नीला थोथा वनता था, वाकी गाद में और पानी डाल कर उवाल लेते थे और उस पानी को नियार कर उसे गाढा करके उसके रवे जमा लेते थे वह हराकसीस वन जाता था। माक्षिक ताम्र और लोह दोनो का वलि से मिलकर वना यौगिक होता है। किन्तु आज कल तुत्थ और कसीस दोनो ही वलि के तेजाव से वनाये जाते है। वह भी रसायनिक विनिमय के समय। कसीस के अणु की रचना (लो व ऊ$_4$ ७उ$_2$ ऊ) है, रसग्रन्थो मे कसीस का उपयोग हुआ है किन्तु इसकी भस्म वनाकर देहवाद या रसायनवाद मे कही काम मे नही लाया गया। किन्तु नव्य ग्रन्थो मे इसकी भस्म वनाने की कुछ विधिया दी है।

वास्तवमें कसीस लोह दजिका ही यौगिक है जिसके अणुमे जलके भी ७अणु सगठित हुये है, जब कसीस को आग पर भूनते है तो कसीस का अणु टूट जाता है और उसका जल उड जाता है उस समय वह लोह वलिकेत रह जाता है, उस समय उसका रग खाकी सफेद सा होता है उसे यदि अधिक आच दी जाय तो उनका वलि भी उड जाता है और वह लोह फिर से ऊप्मिद बन जाता है, वह वास्तव मे कसीस की भस्म न बनकर लोहकी भस्म बन जाती है जो रग मे लाल होती है।

कुछ गन्थो में कसीस भस्म की जो विधिया दी है निम्न है।

कसीस भस्म—कसीस को प्रथम अग्नि पर भूने जब सफेद मटमैला हो जाय उतार कर आवला, भॉगरा, कलिहारी प्रत्येक के रसकी क्रमश भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आच दे ऐसी दो पुट दे तो भस्म बने। सि यो स

(२) कसीस को भूनकर भागरे के रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट को आच दे इसी विधि से ३ पुट दे तो भस्म बने। र त सा

(३) कसीस को कुमारी, करेला, सत्यानासी रस की १–१ भावना दे फिर ३ भावना खट्टे दहीकी दे टिकिया बनाय सुखाय भागराके नुगदामे रख सम्पुट कर गज पुट की आच दे तो भस्म बने। र. यो सा

(४) कसीस को भागरा रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म बने। प्र ओ नि

कसीस के गुण—जो गुण लोह भस्म के है प्राय वही कसीस भस्म मे पाये जाते है। किन्तु इसकी भस्म अक्सर योगो में डालने के लिये ही बनाते है।

कांच

काच वास्तव मे शुद्ध रेत (शै ऊ$_2$) और चून ऊप्मिद (चू$_2$ऊ) तथा सैधव या पाशुक्षार (सै$_2$ऊ = पा$_2$ऊ) या मैग्नीसियम ऊप्मिद (मै ऊ) को एक साथ मिलाकर तपाने से एक पारदर्शक स्फटिक बन जाता है जिसे काच के नाम से हम पुकारते है और यह नित्य के व्यवहार की चीजो मे से है। इस समय अनेको तरह के रग विरगे काच के वर्तन शीशिया आदि, जो दिखाई देती है उनमे उक्त यौगिको से भिन्न किसी में वग, किसी में सीसा, सोमल,

सिलीनियम, वेरियम, जिरकोनियम, ताम्र, निकिल, क्रोमियम, रजत, सुवर्ण आदि की निश्चित मात्रा मिलाकर जब उन्हें गलाते हैं तो वही काच भिन्न भिन्न धातुओ के मेलसे अनेक रगोका वन जाता है। इसका उपयोग तो हमारे रसग्रन्थो में कही नहीं मिलता। किन्तु नव्य ग्रन्थ-कर्ताओ में से किसी किसी ने इसका भी देहवाद पर उपयोग किया है। इसके लिये जो काच लिया जाय वह साधारण व सादा काच लिया जाय।

कांच भस्म

सर्वार्थकार्योधृतलोहजालेरिङ्गालवन्हौ वहुतप्ततप्तम्।
कृष्ण च काचं शतवारमेव कन्याद्रवे संशमयेत वैद्यः॥
एका कृते चद्रिकया वियुक्तं काचस्य भस्मानुकुमारिकायाम्।
मन्दार दुग्धेऽपि च भावयित्वा पिधाय चक्री च पुटेद्गजाख्य॥
रसा सा.

काच के काले टुकडो को अगारो पर रखकर लाल करे और लाल होने पर उन्हे कुमारी रस मे वुझाता रहे। सौ वार वुझावे तो काच चमक रहित सफेद पीसक वन जाता है उसे कूट पीस खरल में डाल कुमारी रस की या आक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो काच की भस्म वने।

(२) काच को एकवार थोहर दूध में वुझावे फिर तुलसी और थोहर के नुगदे में रख सम्पुटकर सुखाय गजपुट की आच दे तो श्वेत भस्म वने। आमवात, सन्धिवात, अर्धांग, अर्दिति, वहुमूत्र में लाभदायी है। मात्रा २ चावल से १ रत्ती तक मक्खन में दे।　　　　अ त, मि ख

(३) मैनसिल को पान मे घोट उसका लेप काच पर करके सुखाय सम्पुट कर गजपुटकी आंच दे इसी विधि से ३ पुट दे तो काच भस्म वने। यह अश्मरी को तोडकर निकाल देता है। मात्रा १–२ माशे तक।　　　　म अ, मि ख

(४) कांच को हाथी दात के वुरादे के पानीमें तव तक वुझावे जव तक काच पीसक न वन जाय फिर हाथी दात के वुरादे में रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे। इस विधि से ४–५ पुट दे तो काच भस्म वने। इस भस्म में वरावर का वुरादा हाथी दात तथा चौथाई गिलअरमनी मिलाय पीस कर रख ले। प्रमेह, प्रदर, अश्मरी वन्ध्यत्व को नष्ट करता है। मात्रा ३ माशे।
म अ, मि ख

कांस्य

काँसा और भर्त यह दोनो ही ताम्र की सकर धातुए है। जब ९० प्रतिशत ताम्र तथा १ ५ प्रतिशत जस्त तथा १ ३ प्रतिशत वग डालकर गलाते है तो कास्य बनता है। इसी तरह जब ९२ से ९९ प्रतिशत ताम्र में १.६ प्रतिशत जस्त तथा १ ८ प्रतिशत वग मिलाकर गलाते है तो भर्त बनता है। इससे स्पष्ट है कि कास्य और भर्त दोनो ही ताम्र की सकर धातुए है, दूसरे कासा और भर्तमें बहुत ही कम मात्रामे अन्तर है। इस समय इनके मिलाने के अनुपात मे कुछ और भी अन्तर डाला जाता है, फिर भी इसका मुख्य घटक ताम्र की मात्रा उपरोक्त जैसी ही रहती है। कासा और भर्त दोनो ही सकर धातुए होने से इनका उपयोग मूल धातु की अपेक्षा बहुत कम हुआ है। स्वतन्त्र तथा देहवाद मे तो इनका उपयोग मिलता ही नही, हा कुछ योगो मे इनका उपयोग हुआ है। इससे भिन्न यह दोनो ही ताम्र की मुख्य सकर धातुए होने से इनकी भस्मो के गुण भी ताम्र के सदृश होने पर भी इनकी अपेक्षा ताम्र-भस्म को ही डालना ज्यादा उपयुक्त समझा गया, इसीलिये इनका व्यवहार बहुत कम हुआ है।

वास्तव में पित्तल, कासा, भर्त जैसी सकर धातुओ की भस्मे मिश्रित धातुओ की होने के कारण ज्यादा उपयोगी सिद्ध नही हुई इसीलिये इनका व्यवहार नही बढा। शुद्ध धातुओ की भस्में इनकी अपेक्षा अधिक उपयोगी है, इसीलिये उनका व्यवहार ही ज्यादा रहा है इसीलिये उनके बनाने की विधिया भी काफी मिलती है। इसकी चार ही विधिया है वह भी जो ताम्र आदि के भस्मार्थ दी है वही है यथा—

(१) गन्धकंताल संयुक्तं स्नुह्यर्कक्षीरेण भावयेत् ।
लेपयेत्कास्य पत्राणि पुटैर्भस्म प्रजायते ॥

र सा, र का धे, रसामृत, र त, र र स, र रा सु भा भै र
र र, रत्नसमुच्चये, रसराज सुन्दरे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

कॉस्य पत्र के बराबर बलि और हरिताल को आक दूध मे घोट पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो काँसा की भस्म बने। र त सा, र सि स

(२) त्रिक्षार पञ्चलवण समधाऽम्लेन भावयेत ।
कांस्याऽऽरकूट पत्राणि तेन कल्केन लेपयेत् ॥
रुध्वागजपुटे पक्व शुद्ध भस्मत्व माप्नुयात् ।
र र स, भ मं र

सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पांचो नमक, सब बराबर निम्बू रस की ७ भावना दे इसका लेप कासे के पत्रो पर कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो कांस्य भस्म बने ।

(३) अर्क क्षीरेण सम्पिष्टो गन्धकस्तेन लेपयेत् ।
समेन कास्यपत्राणि शुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहु ॥
ततो मृपापुटे धृत्वा पुटेद्गजपुटेन च ।
एवं पुटद्वयाद्कास्यं रीतिश्च म्रियते ध्रुवम ॥
वृ र प्र, वै द, आ वे प्र, र रा सु, र त, भा भै र, व रा

वसवराजीये रसराज सुन्दरे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

वलि को आक के दूध में घोट बराबर के कासे के पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि मे दो पुट दे तो कासा, पीतल की भस्म बने । वसवराजीय के कर्त्ता ने ७ पुट दी है ।

(४) तुल्यंहिंगुलं निम्बुकस्याम्भसा सूक्ष्म पत्रीकृत कास्यकंलेपयेत् ।
शोषितत्रिपुटित सम्पुटस्थ ततो घोषपुष्पं तदापञ्चतांयात्यलम् ॥
र सागर

कासे के सूक्ष्म पत्र बनाय उस पर बराबर का हिंगुल निम्बू रस में घोट लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से ३ पुट दे तो कास्य भस्म बने ।

कुक्कुटाण्ड त्वक्

मुर्गी के अण्डे जिनमें से बच्चे निकल गये हो या जिनके भीतर का कलल द्रव निकाल लिया गया हो, ऐसे खोखले अण्डो को लेकर उन्हे नमक के पानी मे उबाल देते है, उबालनेपर उसके भीतर जो कललीय वाह्य कला चढा होती है वह अण्डोसे छूट जाती है जिसे धोकर निकाल देते है ऐसे अण्डोको कूटकर चूर्ण बना लेते है, इन्हे भस्म के लिये व्यवहार मे लाते है । इन अण्डो के भस्म का उपयोग रसवाद के ग्रन्थो मे नही मिलता, यूनानी चिकित्सा के प्राचीन ग्रन्थो में

भी इसका कही उल्लेख नही मिलता। इसकी भस्मो को बनाने का क्रम नया है इसलिये ज्यादा इसका कोई वर्णन किसी प्राचीन ग्रन्थमे देखनेको नही आया।

रासायनिक रचना—अस्थि, शृग, कच्छपृष्ठ आदि जैसे अन्य जीव-जन्तुओ द्वारा चून कज्जलेत व फास्फुरेतके यौगिक बनते है उसी श्रेणीकी रचना अण्डोकी भी होती है। चून फास्फुरेत एक ऐसा उपयोगी यौगिक है जिसकी आवश्यकता प्रत्येक सजीव जगत के प्राणी को रहती है, अण्डे के छिलको मे इसकी मात्रा अस्थि आदिको की अपेक्षा ज्यादा रहती है। चून फास्फुरेत् एक ऐसा यौगिक है जो स्नायु तन्तुओ, मस्तिष्क के सूत्र जालो को विशेष बल देता है इसके सेवन से उत्तेजना बढती है। इसीलिये जिन चिकित्सको ने इसकी भस्म का उपयोग किया विशेष लाभदायी सिद्ध होने के कारण जल्दी ही इसका उपयोग बढ गया। इसकी भस्म की विधिया अब तक जिन चिकित्सको के द्वारा प्रचलित की गई है वह निम्न है।

कुक्कुटाण्ड त्वक् भस्म

(१) अण्डो के छिलको को नमक के पानी में उबाल कर मलै, उसकी झिल्ली छुडा दे और धोकर उसे झिल्ली से साफ करके सुखाय चूर्णकर कुमारी रस की या निम्बू रस की या चागेरी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुटकर गज पुट की आच दे, इस प्रकार ४-५ पुट दे तो अण्डो के छिलको की भस्म बनै। र त सा, अ त, अ स, मि भै म

(२) उक्त विधि से साफ किया अण्डाचूर्ण और उसका चौथाई—हिंगुल किसीने बराबर और किसीने बीसवा भाग भी डाला है। किसीने कुमारी रसमे, किसी ने प्याज रसमे, किसी ने निम्बू रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर किसी ने १० सेर की किसी ने १५ सेर २० सेर उपलो की आच दी है। अ स, अ त, स अ, मि भै म, मा अ

(३) उक्त विधि से साफ किया अण्ड के छिलके का चूर्ण ६ तोला नौसादर २ तोला कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आँच दे इसी विधि मे ७ पुट दे तो भस्म बनै। अ स

(४) उक्त विधि मे साफ किया अण्ड के छिलके का चूर्ण १० तोला पारा १ तोला निम्बू रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से १०० पुट दे, ५० पुट पारा मिलाकर

५० पुट विना पारा की दे। मखजन, मि स

(५) साफ किये अण्डे के छिलके का चूर्ण आक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलो की आच दे इसी विधि से ६ पुट दे तो भस्म वने। अ स, चा चि

(६) साफ किये अण्डे के छिलके के चूर्णको निम्बू रस, अद्रकरस, सिरका, शराव प्रत्येक की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो कीआच दे। इस तरह ४ पुट दे तो भस्म वनै। मा. अ

(७) अण्डे के छिलके के चूर्ण को शराव की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २॥ सेर उपलो की आँच दे। इस विधि से २८ पुट दे। अ स, मि ख.

कुक्कुटाण्ड त्वक् भस्म के गुण—अण्डो की भस्म दमा, खाँसी, रक्त पित्त रक्त ष्ठीवन, क्षय, अतिसार, यकृतविकार, आमाशयविकार सुजाक, प्रमेह, प्रदर, लालामेह, ऋतवाविक्रय, स्वप्नदोप, शीघ्रपात, मधु मेह, मानसिक क्लीवत्व, नपुन्सकता आदि रोगो में लाभ करती है। प्राय नामर्दी में अधिक व्यवहृत होती है। अच्छी शक्तिवर्धक वलवर्धक मानी जाती है। मात्रा १ रत्ती से २-४ रत्ती तक है। उपयोग—अक्सर मक्खन, मलाई दूध से देते है।

खर्पर

खपरिया का प्राचीन नाम रसक है। खर्पर नाम ज्यादा प्राचलित होने से हमने इसी नाम को ग्रहण किया है। खपरिया क्या वस्तु है इसका हम विस्तृत विवेचन उपोद्घातके पृष्ट १६३ पर रसक नाम से कर आये है। इस लिये यहाँ पुन दोहराने की आवश्यकता नही। खपरिया भी जस्त, सीसा, चाँदी के खनिजो का अवशिष्ट (किट्ट) भाग है, कोई मौलिक धातु नही, इसीलिये इसका उपयोग भी ज्यादा नही हुआ। खर्परकी भस्म स्वर्ण मालती वसन्त नामक योग मे डाली जाने से वह योग क्षय मे विशेप लाभदायी सिद्ध होता है, इसलिये खपरिया भस्म का महत्त्व कुछ वढ गया है, उस तरह इसका उपयोग नाम मात्र को है। आजकल यह खपरिया नामक पदार्थ कई कारणो से अप्राप्य हो रहा है, इसके स्थान पर इस समय दो भाग जस्त एक भाग सीसा आधा भाग चाँदी मिलाकर इसकी भस्म प्रथम काढाई यन्त्र मे वनाकर फिर कुमारी की पुट देकर तय्यार करे उसे स्वर्ण मालती वसन्त नामक योग मे डाले ऐसी मेरी

सम्मति है। ऐसी सम्मति मेरी किस आधार पर वनी है उसे रसक के लेख में पढे।

खर्पर भस्म

खर्परं पारदेनैव वालुका यन्त्रगंपचेत्।
चूर्णयित्वा दिनं यावच्छोभन भस्म जायते ॥

रसे सा स, भा भै र, र. त

खपरिया को पारद मिलाकर एक दिन खरल करके कॉच कूपी में डाल वालुका यन्त्र में रख परिपाक करें तो खपरिया की भस्म वने। रसतरगिणी-कारने उक्त विधि से ३ पुट देनी लिखी है।

(२) खर्परो विमल' शुद्धस्तुल्य तालक पेषित:
सम्पुटस्थ स्त्रिपुटित: सर्वथा मृति माप्नु यात्

र त.

खपरिया के वरावर हरिताल चूर्ण मिलाकर जल से घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुटकर कुक्कुट पुटकी पुट दे, इस प्रकार ३ पुट दे तो खर्पर भस्म वने।

गोदन्ती

प्रकृति में गोदन्ती की रचना चूनजम के एक परमाणु से वलि के एक परमाणु और ऊष्मजन के दो परमाणु के साथ जलके भी २ अणु जव सम्मिलित होते है तव पत्राकार या गोदन्त के आकार के रवे गोदन्ती नामक खनिज पाषाण के वनते है जिसका सूत्र चूवऊ$_2$ २ उ$_2$ ऊ है।

हम जव इसकी भस्म वनाते है तो गोदन्ती की रचनामें जो दो जल के अणु होते है वह अग्नि प्रभावसे निकल जाते है इससे भिन्न उसके मुख्य यौगिकमें एक परिवर्तन और होता है, जहां वलिके साथ ऊष्मजन के २ परमाणु मिले होते है अग्नि प्रभाव में आकर वहाँ ऊष्मजन की सख्या वढ कर ४ हो जाती है अर्थात् उस समय इसके योगिक का रूप चूवऊ$_4$ यह होता है यही हमारी गोदन्ती भस्म है। इस गोदन्ती भस्म को पानी से गीला करके किसी कपडे पर लेपदें तो वह कपडेपर फिर जमकर सख्त होजाती है। इसका कारण यह है कि वह गोदन्ती भस्म फिर जल का शोषण कर अपने पूर्णयौगिक (गोदन्ती) के रूप में आ जाती है। आजकल वडे-वडे सरकारी अस्पतालो में पलस्तर देने के

लिये पेरिस आफ प्लास्टर नाम से जो चीज उपयोग में आती है वह वास्तव में हमारी गोदन्ती भस्म ही तो होती है इसकी कोई भी वैद्य परीक्षा ले सकता है।

पैरिस आफ प्लास्टर आजकल बहुत बढ़िया से बढ़िया किस्म के आते हैं जिनके निर्माण मे कई प्रकार की विशेषता व शुद्धता को ध्यान में रखकर उन्हें बनाया जाता है किन्तु वह सब सिवाय गोदन्ती भस्म के और कुछ नहीं है।

गोदन्ती भस्म

(१) शराव सम्पुटन्तस्थं गोदन्तं सुविशोधितम।
क्रियते पुटित भस्म जायते शशिसुन्दरम् ॥ र त

साफ की हुई गोदन्ती को शराव में सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो सफेद भस्म बने।

(२) गोदन्त शोषयेन्मूत्रे गवायाम द्वय तथा।
कुमार्या पुटनात्तस्य भसित स कृदुत्तमम् ॥ र. मा

गोदन्ती को गोमूत्र में ६ घंटा पकावे फिर निकाल कुमारी के लुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो भस्म बने।

(३) गोदन्ती को हुलहुल, अपामार्ग, असगन्ध, आक, गिलोय, अरानवेल, दूध, नकछिकनी, लसोढापत्र, प्याज, मैनफल, कनेरकी कोपल, एरण्ड, धतूरा, नीव, मकोय, इनमें से किसी के लुगदे में रख सम्पुट कर २० सेर की आंच दे। यदि ज्यादा गोदन्ती हो तो गजपुट की आंच दे तो भस्म बने।

हि अ, मि ख, अ त, म अ, अ स, चा चि, स अ, कु अ, र त सा.

(४) गोदन्ती को ७ दिन नीबू रस मे तर करके चूनाकली के दाबू पर फिटकरी चूर्ण बिछाय उस पर गोदन्ती रख चूना का ही दाबू दे १—१½ घंटे की तीव्र आंच दे तो भस्म बने। म अ

(५) गोदन्ती को कूट धतूरा अफसनतीन गिलोयक्वाथ की १–१ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय भूभुल में दबा दे, बस भस्म हो जायगी। यू. सि स

(६) गोदन्ती को १० दिन आक दूध मे या कुमारी रस मे या गुलाब अर्क मे भिगो कर निकाल सम्पुट कर २५ सेर उपलों की आंच दे तो भस्म हो। चा चि, स अ

गोदन्ती भस्म के गुण—रक्तस्राव, रक्तपित्त श्वास, पित्त ज्वर, विषम ज्वर, क्षय, कास, अर्दित, अर्धांग, आक्षेप, आमवात, चलसन्धि वात, प्रसूता ज्वर

अतिसार, यकृतविकार, जीर्णज्वर मे लाभदायी है।

मात्रा इसकी २ रत्ती से लेकर १½ माशे तक है।

गोमेद भस्म

अभ्रक, अकीक और गोमेद एक ही तत्वो की रचना के तीन रूप है, इनके यौगिको में जो भेद है उनका विस्तृत विवरण उपोद्घात के १३६ पृष्ट पर रत्न उपरत्नो के प्रकरण मे देखें। गोमेद रत्न होने के कारण मूल्यवान् हैं इसलिये इसकी भस्म का उपयोग बहुत कम हुआ है। वास्तव मे इसकी भस्म का उसी प्रकार अधिक उपयोग होना चाहिये जैसे अभ्रक का रस ग्रन्थो मे है और अकीक का यूनानी ग्रन्थो मे है। गोमेद की रचना उक्त दोनो जैसी होने से इसकी भस्म के गुण-धर्म भी अभ्रक अकीक जैसे ही है। यह मै अपने अनुभव के आधार पर बतला रहा हू और इसकी भस्म का विधान ग्रन्थ किसी ग्रन्थ मे तो मिलता नही केवल रस चूडामणि मे एकविधि दी है यथा—

(१) गोमेदं गन्धयोगेन लकुचद्रव पेपितम्।
पुटित्वाऽष्ट वारैश्च जातं भस्म पलोन्मितम ॥
र चू, र यो सा

गोमेद को तपा-तपा कर बडहल के रस मे बुझाता रहे जब भगुर हो जाय बराबर का बलि मिलाकर बडहल रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से १० पुट दे तो गोमेद भस्म बने।

वक्तव्य—गोमेद की रासायनिक रचना अभ्रक व अकीक के अनुरूप है यदि इसमे बलि मिलाकर इसकी भस्म बनाई जाय तो इसके रत्नकी रासायनिक रचना नष्ट होकर उससे नया बलिका यौगिक बन जाता है और इसका गुण-धर्म सब बदल जाता है। इसीलिये इसको उक्त ग्रन्थ के दिये विधान से भस्म नही बनानी चाहिये। प्रत्युत जो विधि यूनानी ग्रन्थोमे अकीक भस्मकी दी है उन विधियो से बनावे अर्थात् केवल तपा-तपा कर बुझावे और कुमारी रस आदि की भावना देकर भस्म बनावे तो इसकी भस्म मे अपने समस्त गुण-धर्म विद्यमान रहते है और यह अभ्रक, अकीक भस्मवत् बडी उपयोगी भस्म बनती है।

जस्ता (यशद)

भौतिक गुण—यह नीलाभायुक्त श्वेत धातु है, किन्तु यह घन वर्धनीय

नही, चोट मारने पर चटख जाती है और २०५° शतांश तक गरम करके इसे कुटा जाय तो यह चूर्ण-विचूर्ण हो जाता है और १५० शतांश तक गरम करके इसे वढावे तो इसकी तार वन सकती है और वह तार ठण्डी होनेपर पुन शीघ्र नही टूटती। यदि इसे ८०० शतांश तक गरम किया जाय तो हवाकी विद्यमानता मे यह श्वेत प्रकाश देता हुआ जल कर जस्त ऊष्मिद (ज ऊ) मे परिणत हो जाता है, यही हमारा शास्त्रीय पुष्पाजन है, जिसे साधारण बोल-चाल की भाषा मे जस्ता का फूल कहते है। इसकी परमाणु मात्रा ६५'३ घनता ७'१, तथा द्रवाक ४२८ श० और क्वाथनांक ९८०° श० है तथा इसकी युयुक्षा दो है।

रासायनिक गुण—यह उवलते हुये पानी मे डाल दिया जाय तो जल का विच्छेद करता है इसीसे उस जलसे उदजन निकलने लगता है, हल्के पवनाम्ल या वलिकाम्ल या तीव्र सैंधव या पाशुज के क्षारीय घोल में इसके पत्र डाले जाय तो इनकी विद्यमानता मे भी वह जल का विच्छेद करता है और उस घोल से उद्‌जन निकलने लगता है। यह ऊष्मजनसे और वलिसे मिलकर तथा अन्य तत्वों से मिलकर कई यौगिक निर्माण करता है। किन्तु रस ग्रन्थो मे इसके दो ही प्रकार के यौगिक (भस्म) मिलते है।

जस्ता भस्म

(ऊष्मिद) जसदं लोहजे पात्रे द्रावयित्वा पुनर्धमेत्।
अत्यन्ततप्ते निम्बस्य पत्रमेकं विनिक्षिपेत्॥
घर्षणाल्लोहदण्डेन वह्निरुत्तिष्ठति ध्रुवम्।
यथायथा भवेद्‌घृष्टि भस्मी भावस्तथातथा॥
भस्मीभूत पृथक्कृत्य घर्षयेत्तत्पुन. पुनः।
नेत्ररोगेषु सर्वेषु[1] पुष्पाञ्जन मितं शुभम्॥

र. त., र. रा सु, भा भै. र., वै. द., रसा सा., वृ. र प्र.

[1] भस्मीभूत अधिक ग्रन्थे इति पाठ

लोहे की कढाई में जस्ता को पिघला कर ८०० श० तक गरम करे और उस पर निम्ब पत्र डाल कर सीक से हिलावे तो श्वेत ज्वाला देकर जस्ता फूल होने लगता है, जो फूल बनता जाय उसे हटाता जाय और वाकी पर निम्व पत्र डाल कर सीक से हिलाता जाय इस तरह करने पर सारा जस्ता सफेद फूल सा हल्का बन जाता है इसे पीस कर आख में डाले। अ. स.

नोट—आज कल वाजारी जस्ता का फूल वनाने वाले विना निम्व पत्र के इसी तरह उसकी भस्म या फूला वनाते है ।

(२) जासत्वं कणशः कृत्वा यामैकमवगाहयेत् ।
अहिफेन जले किंवा रामठस्योदकेऽपि वा ॥
ततो दृधृत्य खराङ्गारै खर्परे गालयेद्भिषक् ।
घर्षयेल्लोहदर्व्याऽथ भमंस्स्याद्घटियुग्मत ॥ र. च.

जस्ता को थोडा सा गरम करके कूटकर चूर्ण वनाय अफीम या हीग के जल में एक दिन भिगो कर तपावे फिर उसे ठीकरे में गला कर तीव्र आच दे और लोहदण्ड से रगडता रहे तो २ घडी में जस्ता की सफेद फूल सी हल्की भस्म वने। पहिली और यह दानो विधिया एक है ।

(३) यशद विमलंन्यस्य कटाहे गालयेद्भिषक् ।
अपामार्गस्य चूर्णं च स्वल्पं स्वल्प मुहुर्मुहुः ॥
विनिक्षिपेद्भिषग्वर्यो लोहदर्व्याऽथ चालयेत् ।
भस्म यावद्भवेत्सम्यक् चूर्णं तावत्समापयेत् ॥
राशीकृत्य ततो भस्म शरावेण पिधापयेत् ।
ज्वलदङ्गार वर्णस्याद्यशदं तु यथा चिरम् ॥
तथा प्रदीप ये द्वग्निं दिनमेकमिपक्तमः ।
स्वत शीत ततो ज्ञात्वा यशदं मृतमाहरेत् ॥ र त

जस्त को कढाई में डालकर पिघलावे और अपामार्गकी चुटकी देकर रगडता रहे, चुटकी दे देकर रगडते रहने से जस्ता की भस्म वनती चली जायगी, जव सारी भस्म वन जाय एकत्र कर एक प्याले से ढक तीव्र आच दे ताकि कढाई लाल हो जाय सारे दिन आच लगा कर शीतल होने दे, निकालकर पीस ले जस्ता की भस्म हो जायगी ।

(४) प्रतप्ते यशदे वह्नौ भंगा पोस्तोद्भवंरज. ।
दत्वा प्रचालये दर्व्या यावच्चूर्णत्व माप्नुयात् ॥
वस्त्रपूतं तु तच्चूर्णं कुमारी रस मर्दितम् ।
कृत्वा टिक्कड़िका. शुष्का स्ततो गजपुटे पचेत् ॥
एवं सप्तपुटै सम्यग्यशदं मृतिमाप्नुयात् । र. मृ

जस्ताको कढाई में गलाकर भाग पोस्त चूर्ण की चुटकी दे-देकर रगडता

हुआ भस्म वनावे । फिर कुमारी रसकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुटकर गजपुट की आच दे इस विधि से सात पुट दे तो जस्ताकी भस्म वने ।

(५) लवणं तण्यस्नुही भाव्यं पत्रलिप्तं च खर्परे ।
चिञ्चाऽश्वत्थ चूर्णेन म्रियते पुट योगतः ॥ र सागर

जस्ता के पत्रो पर थोहर दूध मे पिसा नमक का लेप कर उन पत्रों को ठीकरे में रख कर पिघलावे और इमली, पीपल के चूर्ण की चुकटी दे देकर रगडता हुआ भस्म वनावे । भस्म वन जाने पर एकत्र कर ३-४ घण्टे की और तीव्र आच दे तो ठीक हो ।

(वलिकाइद) पादांश गंधं जसदस्य चूर्णे विनीत पञ्चाङ्गुल तैलयोगे ।
पचेत लोहस्य कटाहिकायां तीव्राग्निना शीतमनुद्धरेत् ।
रसा सा

जस्ता का चौथाई वलि का चूर्ण कर ले, जस्ता को कढाई मे गला कर उस वली की चुटकी दे देकर रगडता रहे जब भस्म वन जाय तो जस्ता के वरावर एरण्ड तेल थोडा थोडा डालता हुआ रगडता रहे तेल जल जाय उसके १-२ घटा और आच देकर उतार ले, पीस रक्खे ।

(२) शुद्धं यशदमादाय कटाहे तीव्र वह्निना ।
प्रद्राव्यभिपजा वर्या समया रद गर्भके ॥
खल्वे निक्षिपेद्यत्नात्तत सम्पेपयेद्द्रुतम् ।
पिष्टिं विधाय यत्नेन क्षालयेन्निम्बुवारिणा ॥
यशद प्रमितं गंध दत्त्वा संचूर्णयेत्तत ।
शराव सम्पुटस्थं तु पुटयेदथ यत्नत. ॥
रीत्यानयातु यशदं मृतिमायातदुत्तमम् ।
इत्थं मृतन्तु यशद सर्व रोगेपु योजयेत् ॥　　र त

जस्ता को कढाई मे गला कर वरावर का पारा डाल दे और उतार ले गरमागरम खरल करे और पिप्टी वन जाने पर निम्बूरस डालकर धो ले फिर वरावर का वलि मिलाय घोट सम्पुट कर लघुपुट की की आच दे तो जस्ता की भस्म वने ।

(३) जसदस्य चतुर्थांश पारदं गन्धकं प्रिये ।
मर्दयेन्खल्वके सम्यक्कन्यानिम्बूरसै पृथक् ॥

लेपयेत्तेन पत्राणि गजाह्वा पाचयेत्पुटे ।
एकमेव पुटेनैव भस्मसाज्जसद् भवेत् ॥

र च, र रा सु, भा भै र.

जस्ता से चौथाई पारा वलि को मिलाकर पिष्टी वनाय निम्वूरस, कुमारी-रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो एक पुट में ही जस्ता भस्म वने ।

(अपुट) जस्ता बुरादा को चीनी के प्याले में डालकर उसमें निम्वूरस निचोड धूप में रख दे । सूखने पर और रस डाल दे तथा कभी कभी हिला दिया करे १०-१२ दिन धूप मे रखने पर जस्ता सफेद भस्म मे परिणत हो जायगा, आख में डाले । स अ, कु ह, पा स

(७) १ तो० जस्ता को पिघलाकर उस पर वथुआ का चोया दे ४० तो० रस का चोया देने पर भस्म वन जायगी, फिर विनौला तेल ५ तो० का चोया देवे तो सफेद से पीली भस्म वनेगी, आँख में डाले । स अ, अ त

(८) जस्ता पत्रों को जलजमनी के नुगदे मे रखकर सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो भस्म वने । प्रमेह, सुजाक मे दे । ति अ

(९) जस्ता को गलाकर मिश्री और लौग की चुटकी देकर रगडता हुआ भस्म वनावे, फिर त्रिफला क्वाथ की १ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ८ सेर उपलो की आच दे तो भस्म वने । प्रमेह, प्रदर, प्रसूता रोग मे दे । मा अ

(१०) जस्ता को गलाकर नीम की लकडी से रगड कर भस्म वनावे, फिर कुमारी रस त्रिफला क्वाथ की १-१ भावना दे टिकिया वनाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से २१ पुट दे फिर शहद, दही, दूध, ईखरस प्रत्येक की भावना दे पुट देता रहे तो २५ पुट मे उत्तम जस्ता भस्म वने । इसे प्रमेह, सुजाक, कामला मे दे । स अ

(११) जस्ता गलाकर गोखरु, अपामार्ग, हरमल की चुटकी देकर घर्पण विधि द्वारा भस्म वनावे । भस्म वन जाने पर ३ घटे और आच दे । र स

(१२) जस्ता चूर्ण को आक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय गेहूँ के आटे को थोहर दूध मे नुकदा वनाय उसमें रख सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो भस्म वने । र सि

(१३) जस्ता पत्र को इमली चूर्ण के मध्य बिछाय वस्त्र सम्पुट में रख बान तुष की आंच दे तो भस्म बनें । र नि.

(१४) जस्ता को जलाकर पुनर्नवा की चुटकी दे घर्षण विधि से भस्म बनावे । पीछे उतार मीठा तेलिया की चुटकी देकर एकत्र कर ३ घटा और आंच दे तो भस्म बने । नि मं मा

(१५) जस्ता, पारा बराबर मिश्रण कर तुल्य घोल में खरल कर टिकिया बनाय वस्त्र सम्पुट में रख ५ सेर उपलों की आंच दे । श्वास में लाभदायी है । अ स, नि र.

(१६) जस्ता, पारा मिश्रण कर गोजिह्वा के रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय वस्त्र सम्पुट कर करीषाग्नी में रख दे तो जस्ता की भस्म बने । कु क, पा न.

(१७) जस्ता पारा का मिश्रण कर मिश्री और हरड की चुटकी देकर घर्षण विधि से भस्म बनावे । फिर कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो भस्म बने । सि भै मा, मा अ.

(१८) जस्ता, पारा का मिश्रण बनावे फिर इसको फिन्दक के नुकदे में रख वस्त्र सम्पुट कर गजपुट में करीषाग्नि की आंच दे तो भस्म बने । र ति.

(१९) जस्ता, पारा का मिश्रण बनाय उसे आतशी शीशी में डाल उस पर ४० गुना जलनिम्ब का रस डालकर बालुका यन्त्र में रख पकावे तो जस्ता भस्म बने । अ स.

(२०) जस्ता को गलाकर उस पर एक छेद की हुई हण्डी औंधी मार दे उस छेद से छः मासा पारा डाल दे और आंच लगाता रहे । ३ घंटे आंच देने के बाद ६ माशा हिंगुल चूर्ण डाल दे और सींक से हिलाता रहे, फिर ३ घंटे बाद ६ मा० हरताल डाल दे फिर ३ घटा बाद ६ मासे बलि डाल दे और हिलाता रहे तो भस्म बने । आमवात में लाभदायी है, शक्ति वर्द्धक है । स.क.

(२१) जस्ता ७ तो० पारा १ तो० मिश्रण कर १॥ तो० हिंगुल मिलाय शराब की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो भस्म बने । र सि

(२२) जस्ता, पारा का मिश्रण बनाय उसमें जस्ता के बराबर सोमल मिलाय पुनर्नवा रस की ७ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय एक हण्डी में रख ताम्र

कटोरी से ढक कर नमक का दाब् देकर ८ प्रहर की ग्राच दे तो भस्म बने। नामर्दी, प्रमेह, मुजाक, स्वप्नदोष में लाभदायी है कु र.

(२३) जस्ता को गलाकर सोरा, हरिताल, वन्हि, मैनसिल, सुहागा, फिटकिरी, नौसादर इनकी मिली हुई चुटकी देकर घर्षण विधि से भस्म बनावे, भस्म बन जाने पर उसे एकत्र कर प्याले से ढक ३-४ घटा और तीव्र ग्राच दे, फिर पानी डालकर घोटे और उसे धोता रहे, फिर कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की ग्राच दे। इस विधि से ३-४ पुट दे तो भस्म बने। र यो मा.

जस्ता भस्म के गुण—

जसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफ पित्तह्न्।
चक्षुष्य परमं मेहान् पाण्डु श्वासं च नाशयेत्॥

र र स, र सा प, पा स.

जस्ता चरपरा, ठण्डा, कफ, पित्त को हरने वाला, नेत्र रोगो में परम हितकारी, प्रमेह, पाण्डु, श्वास रोग को नाश करने वाला है।

जहर मोहरा

इसका परिचय रस ग्रन्थो द्वारा नही मिलता, यूनानी चिकित्सा ग्रन्थो से कुछ परिचय प्राप्त हो जाता है। अधिक ज्ञान इसका आधुनिक खनिज शास्त्र से प्राप्त होता है। पञ्जाब प्रन्त में इसका उपयोग जन समाज द्वारा काफी समय से होता चला आया है।

यह एक हरा पीला सफेद अगूरी रग का चिकना चमकदार पत्थर है जिसकी कठोरता २½ से ४ तक होती है। औषध के लिए अगूरी रग का पत्थर उत्तम माना जाता है और इसको अमृतसर काश्मीर के सगतराश इसके अच्छे अगूरी टुकडो को काट तरास कर उसे सानपर चिकना चमकीला बना कर जहर मोहरा खताई के नाम से वेचते है। जहर मोहरा खताई कटे, बनाए हुए जहरमोहरा के टुकडो का नाम है। यह कोई इस रूप का खनिज पदार्थ नहीं है। वास्तव मे जहर मोहरा अपने प्राकृतिक रूप मे ही बडा मुलायम चमकीला, चिकना रगदार कलमी पत्थर होता है। इसके तीन चार विभेद अब तक पाये गये है (१) जहर मोहरा (Serpentine) (२) अस्बेस्टेस (Asbestos) हर्न ब्लेण्ड (Hornblende) इनमे जहरमोहरा बिना रेशे

का कल्मी रवादार पत्थर है। असवेस्टस सूतसा रेशेदार मुलायम चमकीला सफेद पत्थर है। जहर मोहरा की यह किस्म अग्नि व विद्युत प्रतिरोधी अदाह्य होने के कारण इसका व्यवहार गैसलम्प की जाली, विद्युत अवरोधी अनेक स्थानो मे तथा अग्निप्रतिरोधी पदार्थो के रूप में इसके कपड़े, तख्ते आदि बनाये जाते है यहा तक कि आग वुझाने वालो के कपडे भी इसके रेशे से बनाए जाते है। सीमेन्ट में मिलाकर इसके खपडेल छतें बनाई जाती है ताकि गर्मी अन्दर न आसके, यह इतना उपयोगी पदार्थ है कि अनेक व्यवसायो में जहा अग्नि प्रतिरोध, विद्युत प्रतिरोध की आवश्यकता होती है उपयोग मे लाया जाता है।

रासायनिक रचना—सैलिका, स्फटिकाम चूनजम, मैग्नैशियम और लोह यौगिक के सम्मिलित अणुओ की रचना वाली आग्नेय शिलाओ के मध्य ताप चाप की विशेष परिस्थिति मे जहर मोहरा के शिला पट्ट की रचना होती है, जिसकी रसायनिक रचना का सूत्र यह है $उ_2$ $मै_3$ $शै_2$ $ऊ_8$। इसी जहर मोहरा के अणुओ में कुछ प्रकृति गर्भ मे ऐसा ताप चाप में फेर फार होता है जिसमे असवेस्टस के रेशो की उत्पत्ति होती है। यहा एसवेस्टस का विशेष उल्लेख इस लिए किया है कि इसका उपयोग भी हमारे यहा कही कही सोम-कलनार के नाम से हुआ है।

जहर मोहरा का उपयोग

पजाव मे प्राय छोटे छोटे दुग्ध पायी वालको को जव तालु लटक जाता है अर्थात् तालु भ्रंश होता है उस समय उन वच्चो को हरे पीले दस्त आने लगते है वच्चा दूध नही पी सकता, सिर इधर उधर मारता रहता है, वमन होती है ज्वर भी हो जाता है, उस समय मातायें जहर मोहरा को पानी डाल पत्थर पर घिस कर वच्चो को प्राय पिलाती है इससे चमत्कृत लाभ होता है। इससे भिन्न इसका उपयोग धीरे धीरे उष्णकाल के अतिसार, वमन, विशूचिका आदि रोगो मे भी होता है इसका अव व्यवहार सारे देश में होता है।

जहरमोहरा भस्म—इस जहर मोहरा को कूटकर दूव की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म वने। र त स

ताम्र

शुकचञ्चु हिंगुलाभं कोमल भिद्यते लघु ।
खनिदोष विनिर्मुक्तं शुल्व कालिकवर्जितम् ॥ र. र स

तोते की चोंच या हिंगुल की जैसी आभावाला काटने पर नरम और कटी जगह कालिमारहित, खानि दोषरहित, चमकदार ताम्र ठीक होता है ।

भौतिकगुण— ताम्र ताजा कटा हुआ गुलाबी चमकीला होता है किन्तु खुली हवा में पडा रहे तो हवा के प्रभाव से इसकी चमक दमक घटती रहती है, यह ताप और विद्युत् का अच्छा वाहक है और उत्तम घन वर्धनीय व तन्त्वीय है किन्तु दृढता में लोहे से कम और सुवर्ण चाँदी से अधिक दृढ है और कठोरता मे भी यह सोना चाँदी से कुछ अधिक कठोर है । इसकी परमाणु मात्रा ६३ ५ तथा घनता ८.९, द्रवांक १०८३ श, क्वथनांक-२१०० श है । यह १ और २ में युयुक्षावान् है ।

रासायनिक गुण—यह धनात्मक तत्त्व है, उत्ताप प्रभावसे यह शीघ्र ऊष्मजन से मिलकर ऊष्मिद में परिणत होने लगता है, ताम्र के ऊष्मीकृत होने पर इसके ऊपर एक ऊष्मिद हुई काली भूरी पपडी की तह बन जाती है जो चोट मारने पर झड जाती है । ताबे को जब २१०० श से अधिक का उत्ताप पर तपावें तो यह नीली ज्वाला देकर जलने लगता है । ताम्र के उत्ताप प्रभाव या तीव्राम्लो के संयोग से अनेकों रासायनिक यौगिक बनाये जाते है । यथा--

ताम्र ऊष्मिद— ताम्र पत्रो को सान्द्र लवणाम्ल मे डाला जाय तो यह प्रथम उसके लवणजन से मिलकर लवणाइद में बदलता है और उस तीव्राम्ल में घुलता रहता है । सारा का सारा जब घुल जाय तो इसमें तीव्र पाशुजक्षार का घोल डाल देते है तो ताम्र यौगिक में विनिमय होता है और वह लवणाइद से प्रथम उदूष्मिद ता (ऊउ)$_3$ में बदलता है और उस घोल मे अवक्षिप्त होकर नीचे बैठ जाता है, इसे निकाल कर भूना जाय तो यह फिर ताम्रक ऊष्मिद (त$_2$ऊ$_3$) में बदल जाता है यदि इसे अधिक भूना जाय तो ताम्रसऊष्मिद (ता$_2$ऊ) में बदल जाता है ।

वलकाइद—यह बलि से मिल कर दो रूपका यौगिक निर्माण करता है एक ताम्रक बलिकाइद (ताब) दूसरा ताम्रस बलिकाइद (ता$_2$ ब) जब हम २ तोला ताम्र चूर्ण के साथ १ तोला बलि मिलाकर ४०० श तक

गरम करे तो उससे ताम्रक वलिकाइद बनाता है। हमारी भस्में प्राय इन्ही रूप की या ताम्र वलिकाइद की बनती है। आजकल इसे रासायनिक विनिमय विधि द्वारा निम्न रीति से बनाते हैं।

ताम्र को लवणाम्ल में डालकर प्रथम लवणाइद बना लेते हैं फिर उस घोल मे उदवलिकाइद की वायु को प्रवेश कराते हैं तो ताम्र लवणाइद में रासायनिक विनिमय होता है और वह लवणाइद से वलिकाइदमें परिवर्तित हो तलस्थ हो जाता है।

हम अपनी विधिसे ताम्रकी भस्म बनाकर आगे और पुटे देते चले जाय तो वह ताम्रक वलिकाइद धीरे-धीरे ताम्रस वलिकाइद (ता व)में बदलता है, इसमें ताम्र४तो के साथ १ तोला वलिका सयोग रह जाता है यह अतृप्त यौगिक होने से अधिक युयुक्षावान् होता है इसी से यह अधिक लाभ करता है।

रसायन शास्त्री इसे निम्न विधि से बनाते हैं-एक बन्द बर्तन में ताम्र पत्र लटका कर ४०० श० के उत्ताप तक गरम करते है फिर उसमे नली के द्वारा वलि की वाष्प को प्रवाहित करते हैं तो ताम्र ताम्रस वलिकाइद मे परिणत हो जाता है। अथवा ताम्रक वलिकाइद चूर्ण को ४०० श० तक गरम रख कर उस पर उदजन वायु को प्रवाहित करते है तो ताम्रक वलिकाइदसे(ता व) ताम्रस वलिकाइद(त$_2$व)में बदल जाता है। अथवा वलिका एक परमाणु उदजनसे मिल कर उदवलिकाइद में बदल जाता है। इस समय रासायनिक विनिमय द्वारा इस तरह ताम्रके साथ लवणजन, ब्रह्मणिका, नैलिका, पवन आदिके योगसे कई यौगिक निर्माण किये जाते है।

ताम्रके सकर—ताम्र २ भाग जस्ता १ भाग मिला कर गलाने से पीतल बनता है, ताम्र ६ भाग बग १ भाग मिलाकर गलानेसे कासा बनता है, ताम्र ६ भाग स्फटिकम १ भाग मिलाकर गलानेसे नकली सोना बनता है। ताम्र ६ भाग निकिल १ भाग मिलाकर गलाने से नकली चादी (जर्मन सिलवर) बनती है, इस तरह यान्त्रिक व्यवहार के लिये ताम्र के पचासो प्रकार के सकर–दृढत्व, घनत्व तनाव,लचक, स्थिति स्थापकता रखने वाले–बनाये जाते है जिनका मशीन पुरजो मे व्यवहार होता है जैसे गन मैटल, ह्वाइट मैटल आदि।

ताम्र भस्म (करछी पाक)

गन्धकस्य पलं प्रोक्तं रसस्य द्विपल तथा।

नैपालस्य विशुद्धस्य ताम्रस्य च पलं भवेत् ॥
ततोगन्धार्धं चूर्णेन ताम्रं संयुज्य चूर्णयेत् ।
शेषार्धं गन्धकं कृत्वा पारदं खल्लयेद्भिषक् ॥
रसेन हस्तितुण्ड्याश्च लोहपात्रे पचेच्छनैः ।
कृत्वापङ्कसमं पाकं ताम्रेण सह योजयेत् ॥
तच्च गन्धक चूर्णेन सम्वेष्ट्य हविषा सह ।
पाचयति भिषग् प्राज्ञ: पाकविन्मृदु वह्निना ॥
आलोड्य मधुसर्पिर्भ्यां भुक्त्या तक्र पिवेदनु ।
अग्निमान्द्यमजीर्णं च ग्रहणीं पाण्डु कामलाम् ।
परिणामरुजं चाशु नाशयेत्तु प्रयोजितम् ॥

व से, र का घे, भा भै र

४ तो० वलि ८ तो० पारा, ४ तो० ताम्रचूर्ण, आधा वलि पारे के साथ मिलाय कज्जली करे आधा वलि ताम्र चूर्ण मे मिलाकर घोट ले। एक करछी में प्रथम कज्जली डालकर उसमे हाथी सुण्डी का रस डाल कर पकावे और जव पकते पकते गाढा कीचड सा हो जाय तव उसमें ताम्र चूर्ण डाल दे और उसे मन्द मन्द आच पर पकाता तथा हिलाता रहे, जब वलि जल जाय और ताम्रभस्मवत् दिखाई दे उतार कर पीस ले उसमें दुगना घी, चौगुना शहद मिलाकर अवलेह वना ले। इसकी मात्रा १ माशा है। अग्निमान्द्य, अजीर्ण, ग्रहणी, पाण्डु, कामला, परिणाम शूल में तक्र के साथ सेवन करावे तो उक्त रोगो में लाभ हो। यह भस्म वनाने की प्राचीन विधि है।

(अपुटी) सूतं द्विगुण गन्धेन खल्वे कृत्वा प्रयत्नतः।
सौवर्चलंरसार्द्धेन दत्त्वाऽऽप्लाव्यार्क पत्रकैः ॥
तोयैर्वा शिवकर्णोत्थैर्लिप्त्वा घर्मेषु पत्रकै. ।
जम्बीरनीरे सुचिरं गालितं मर्दयेच्छुभम् ॥
दद्याद्रक्तिद्वय चास्य नागवल्लीद्रवै युतम् ।
गुल्माम्ल पित्त शूलामप्लीह पाण्डु ज्वरापहम् ॥

र च, रसे क, र र कौ, र र स, र क ल, र र, र. यो. सा

पारे से दूना वलि मिलाकर कज्जली वनाय उसमें पारा से आधा काला नमक मिलाय उसे हुलहुल का रस या करना के रस से घोट ताम्रपत्रो पर उस

क। लेप कर धूप मे सुखावे, फिर उन पत्रो को चीनी के प्याले में डालकर उस मे जम्वीरी निम्बू का रस भर दे और धूप मे रख दे, कुछ दिन में जब ताम्रपत्र गल जांय उन्हें खरल कर पीस कर रख ले। मात्रा इसकी दो रत्ती है। गुल्म, अम्लपित्त, शूल, आमवृद्धि, प्लीहावृद्धि, पाण्डु, ज्वर में पान के रस में मिलाकर चटावे तो उक्त रोगो में लाभ हो।

स्थाली पुटी ताम्र भस्म

(१) सूतगन्धौ कुमार्यद्भि मर्दयित्वा प्रलेपयेत्।
ताम्रपत्र तेन पश्चात्स्थाल्या गर्भं निरोधयेत्॥
शरावेणाथ संयुक्ता तत्र मुद्राम्बु भस्मतः।
भस्मना पूरयेत्स्थाली माकण्ठ तां पिधाय च॥
चुल्ल्यामारोप्य तदधौ वह्निं प्रज्वालयेद् दृढम्।
चतुर्यामं पचेत्पश्चात् स्वागशीतं समुद्धरेत्॥
वृ यो त, र त, र प्र सु, भा भै र

रससुधाकरे भिन्नपाठ प्रतिपादित।

पारा, वलि वरावर लेकर कज्जली वनाय कुमारीरस में घोट ताम्रपत्रो पर लेपकर सुखाय हण्डी के मध्य भस्म के वीच मे उन पत्रो को दावू दे गलेतक राख दवा कर भरकर हण्डी का मुख सम्पुट कर चूल्हे पर रख ४ प्रहर की निरन्तर तीव्र आँच दे तो ताम्र भस्म वने। रसतरगिणीकार ने भस्म के स्थान पर लवण भरने का आदेश दिया है। सि औ प्र

(२) सूतमेकं तथा गन्ध[1]कन्याम्भो विमर्दयेत्।
लिप्त्वा तुल्ये ताम्रपत्रे स्थाल्यागर्भे[2] निरोधयेत्॥
सम्यङ् मृल्लवणैः [3]सधिं पार्श्वे भस्म निधाय च।
चतुर्याम पचेच्चुल्या पात्र पृष्ठे च गोमये॥
जलं पुनः पुन देय स्वाङ्गशीत विचूर्णयेत्।
म्रियते नात्र सदेहो सर्वरोगेषु योजयेत्॥
आ क, र र, र का धे, रसमञ्जरी, र च

१ यामेकन्या विमर्दितम् आनन्द कन्दे इति पाठ। १ मर्द्य तु कन्यका रसै रसचण्डाशु इति पाठ। २ निधापयेत् रसरत्नाकरे आनन्द कन्दे इति पाठ। ३ सन्धि आनन्द कन्दे रसमजर्यामिति पाठ। रसरत्नाकरे रसचण्डाशौ

तृतीय पक्ति र्नास्ति ।

पारा वलि वरावर ले कज्जली वनाय कुमारी रस मे घोट कज्जली के वरावर ताम्रपत्रो पर उक्त कज्जली का लेप कर सुखाय हण्डी में नमक के मध्य सम्पुट मे रख हण्डी के मुख की सन्धि को मिट्टी से वन्द कर उस पर गोवर का गढा वनाय उसमे जल भर दे और हण्डी को चूल्हे पर रखकर ४ प्रहर की आच दे गोवर के गढे का जव जल सूख जाय तो और डाल दे, इस विधि से करने पर ताम्र की भस्म वने ।

(३) सूतार्धो गन्धको मर्द्योयामैकं कन्यकाद्रवैः ।
द्वयोस्तुल्य ताम्रपत्रं पूर्वकल्केन लेपयेत् ॥
दिनैक स्थालिका यन्त्रे पक्वामादाय चूर्णयेत् ।
सूर्यावर्तो रसो ह्येप द्विगुञ्जा श्वासजिद्भवेत् ॥

शा व, र र, र का वे, वन्व, रसे सा स, र प्र सु, र र स,
र च, रसे चि, वृ नि र, वै र, र रा. सु, भा भै र, र यो सा

पारा से आधा वलि मिलाय कज्जली कर १ प्रहर कुमारी रस मे खरल करे उस कज्जली के वरावर ताम्रपत्र ले उन पर लेप कर न० १ व २ की विधि से स्थालीपाक करे । इसका नाम सूर्यावर्त्त रसहै और यह श्वास मे लाभदायी है ।

(४) सूताच्च द्विगुणं ताम्रपत्रं कन्यारसै. प्लुतम् ।
पिष्ट्वा तुल्येन वलिना भाण्डमध्ये विनिक्षिपेत् ॥
छन्नं शरावकै रैतत्तदूर्ध्वं लवणं त्यजेत् ।
मुखे शरावकै दत्वा वह्निं याम चतुष्टयम् ॥
अवचूर्ण्यैवतच्छुल्व वल्लमात्रं प्रयोजयेत् ।

र म, र र म, भा भै र, पा म

पारे से दुगुना ताम्रपत्र दोनो के वरावर वलि प्रयोग विधि १—२ के अनुसार भस्म वनावे ।

(५) ताम्रपादाशत' सूतताम्रतुल्यं तु गन्धकम् ।
कन्यारसेन सपिष्य ताम्रपात्राणि लेपयेत् ॥
निक्षिप्य हण्डिका मध्ये शरावेण निरोधयेत् ।
हण्डिकां पटुनापूर्य पचेद्यामत्रयं भिपक् ॥
सूताभावे भिषक् युक्त्या हिंगुले च समर्पयेत् ।

ततो म्रियते इति शेप । रसे चि.

ताम्र से चौथाई पारा ताम्र के बराबर बलि प्रयोग विधि वही न० १-२ की, इसमें ग्रन्थकार ने ३ प्रहर की आच दी है। ज्ञात होता है इसके समय में पारद का कुछ अभाव रहा होगा तभी इसने इस योग मे ताम्र से चौथाई पारा डाला है दूसरे कहता है कि यदि पारा न मिले तो उसके स्थान पर हिंगुल डाले। यह पारे के अभाव की स्थिति का बोधक है।

(६) सूक्ष्माणि ताम्रपत्राणि पादांशेन सूतकम्।
गंधकेनाम्लघृष्टेन तस्य कुर्याच्च गोलकम् ॥
ततः पिष्ट्वा च मीनाक्षीं चांगेरीं वा विचक्षण।
वल्कल्केन वहिर्गोले लेपयेद्व्यङ्गुलोन्मितम् ॥
धृत्वा तद्गोलकं भाडे शरावेण च रोधयेत्।
तद्भाण्डं पटुनापूर्य माकण्ठं भस्मनोपरि ॥
क्रम वृद्ध्याग्निना चुल्ल्यां पक्त्वा यामचतुष्टयम्।

र र स, यो चि, शा व, भा प्र, र सा, पा स, र र स, र कौ, व रा, र रा सु, र सि सं, र प्र, चि र, र का.धे, र त, वृ यो. त, रसमजरी रसप्रदीपे, चिकित्सारत्नाभरणे, रसकामधेनौ भिन्न पाठ प्रतिपादित । र त वृ यो त रसमंजर्याम् भिन्न पाठ प्रतिपादित । तथा र प्र, चि र भ, यो चि, र काम धेनौ निम्न पाठ अधिक प्रतिपादित ।

स्वांग शीत समुधृत्य मर्दयेत्सूरणद्रवैः।
दिनैक गोलकं कुर्यादर्धं गन्धेन लेपयेत् ॥
सघृतेन ततो मूषा पुटे गजपुटे पचेत्।
स्वांगशीतं समुद्धृत्य मृते ताम्रं शुभं भवेत् ॥

बसवराजीये यत्किंचित् भिन्न पाठ प्रतिपादित । योगचिन्तामणौ त्रुटित पाठः, रसतरंगिण्या त्रिपुट दत्तम् ।

ताम्र के सूक्ष्म पत्रो पर उसका चौथाई पारा लेकर निम्बू-रस मे घोटे, इसी तरह बलि को निम्बूरस में घोट गोला बनाले, फिर मछेछी या चागेरी के कल्क को उस गोले पर २ ंगुल लेप कर दोनो का लेप ताम्रपत्र पर करके हाडी मे रख कर सुखावे, पुन सकोरे से ढाक दे। ऊपर से पिसा हुआ नमक भर दे फिर ऊपर राख से दबाकर भर दे, हाडी को चुल्हे पर चढाकर ४ पहर पकावे, स्वयं शीतल

होने पर निकाले ताम्र भस्म होगी। रसप्रदीप, रसकामधेनु आदि कुछ ग्रन्थकारो ने इसी ताम्रभस्म को पुन. जिमीकन्द के रस मे खरल कर टिकिया वनाय सुखाय उन टिकियो पर घृत में घोटा हुआ वलि का लेप कर सम्पुट मे रख गज-पुटकी आच देना लिखा है, यह ताम्रभस्म वान्ति, भ्रान्ति रहित उत्तम भस्म वनती है, यह भस्म तो उक्त स्थालीपाक में ही वन जाती है। ज्ञात कुछ ऐसा होता है कि किसी से कुछ कच्चा रह गया होगा तभी उन्होने दूसरे पुट का विधान दिया। रसतरगिणीकार ने ताम्रसे चौथाई वलि डाली है और उसने ३ पुट दी है। कुछ ग्रन्थकारो ने इस ताम्र भस्म का नाम त्रियोनि रस दिया है और वताया है कि इसे हरड और गुड के साथ एक रत्ती सेवन कराने पर शोथ, पाण्डु, श्वासादि रोगो में लाभ होता है।

(७) पारदं गन्धकं ताम्रं सममम्लेन लेपयेत्।
भावात्तीव्र पुटाद्भस्म वालुकायन्त्रतोऽथवा॥

र सं क, र चि, र का धे.

पारा वलि की कज्जली वनाय निम्बूरस में घोट पारे के वरावर ताम्रपत्रों पर लेप कर सम्पुट में रख वालुका यन्त्र में दावू दे ४ प्रहर की आच दे तो ताम्रभस्म वने।

(८) पलानि पंचशुद्धानि ताम्रपत्राणि वुद्धिमान्।
गृहीत्वा योजयेत्तत्र तदूर्ध्वं शुद्ध सूतकम्॥
मर्दयेन्निम्वुकद्रावैस्त्रिदिनान्युभयं भिषक्।
ताम्रपत्रं समं शुद्धं गन्धकं तत्र निक्षिपेत्॥
मर्दयित्वा घटीयुग्मं काचकूप्या च निक्षिपेत्।
यामानष्टौ पचेदग्नौ वालुकायन्त्र संस्थितम्॥
एषा ताम्रेश्वरो हन्याच्छ्वासादीनखिलान्गदान्।
धातुपुष्टिकरश्चैव सूतिका रोग नाशनः॥

वे. द, वृ र प्र, र रा सु, र यो सा, र लं, र त

रसालंकारे ताम्रात् द्विगुणवलि पारद नियोजित। रसतरगिण्या त्रिगुण बलिपारद नियोजित. तथा भूधर यन्त्रे पंचदिनावधि पाचन कुर्यादिति विशेष।

२० तो० ताम्र वुरादा, १० तो० पारद दोनो को निम्बूरस में ३ दिन घोट कर पिष्टी वनावे। पिष्टी वन जाने पर २० तो० वलि डाल कर कज्जली कर

काच कूपी मे भर वालुका यन्त्र मे रख ८ प्रहर की आच दे। रसालंकार ने ताम्र से दूना वलि और इतना ही पारा डाला है तथा ५ दिन की आच दी है।

रसतरंगिणीकार ने ताम्र से तिगुना वलि पारद मिलाया है पानरस की भावना दी है और भूधर यन्त्र मे ५ दिन तक आच देने का विधान दिया है। जिस विधि से वही ताम्रभस्म ४ प्रहर मे बन जाती हो तो ५ दिन उस पर क्यो वृथा श्रम किया जाय ? इसी तरह रसायनसार के कर्ता ने ताम्र वलि ३-३ सेर पारा १ सेर डालकर कूपी पाक करने का विधान दिया है। इतनी अधिक मात्रा मे वैद्यो से ताम्रभस्म कूपीपाक नही हो सकता, यह अव्यवहारीय है।

(६) अंब्र्यंशेन रसेन तुल्य वलिना जम्भाम्बुपिष्टेन च।
लिप्त्वा ताम्रदलानि सस्तरचितान्यर्कस्य पक्वच्छदैः॥
भाण्डैरन्ध्रिणि तिन्तिडीक विटपत्वग्भस्म सम्पूरिते।
यस्त्रैकं परिपाचितानि शुचिना तीव्रं म्रियन्ते सकृत्॥

र प, र का वे.

ताम्रपत्र से आधा पारा पारे के बराबर वलि मिलाय कज्जली कर जम्बीर रस मे घोट कल्क वनाय उसका लेप ताम्र पत्र पर कर सुखाय आक के पत्तो मे लपेट इमली की भस्म के मध्य दाबू देकर ४ प्रहर की तीव्र आच दे तो ताम्र की शीघ्र भस्म बने।

(१०) अथसमगन्धक सूतात्कज्जलिका मातुलुङ्गरसपिष्टम्।
कृत्वा शोधनलेप लिम्पेत्पत्रीकृतेशुल्वे॥
अथतत्कच्छपयन्त्रे निहितं तीव्रेणवह्निना पुटितम्।
यामत्रयेव्यतीते गृह्णीयात्स्वांग सशीतम॥
भवति च रसेऽतिमिष्ट न च कुरुते भक्षित समुत्क्लेदम्।
तद्गदकर्मणि योग्यं विद्धि तदा साधु ससिद्धम्॥

लो स.

पारा वलि वरावर मिलाय कज्जली कर विजौरारस मे घोट कल्क वनाय ताम्र पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर वालुका यन्त्र में दावू दे कर ३ प्रहर की तीव्र अग्नि दे तो ताम्र भस्म वने।

(१ पुटी) लांगलीमूल संग्राह्य गधक च तथैव च।
रसेन सहित चैव ताम्र पत्राणि लेपयेत्॥

शुद्धभस्म तदाकुर्यात् प्रशस्त मिदमौपधम् ।

श्री क ल, पा स

लाँगूली मूलरसमें पारा गवकको घोट कर उसका ताम्र पत्रो पर लेप करे, सुखाय सपुट कर गजपुट में फु क दे तो ताम्र की भस्म वने ।

(२) गन्धकंरस संयुक्त मर्क क्षीरेण भावयेत् ।
लेपयेच्छुल्व पत्राणि पुटै भस्मप्रजायते ॥

वृ यो त, रसा सा, र र, र सा, र का धे

वृ योग तरगिण्यॉ रसायनसारे रसरत्नाकरे अम्लेन कज्जली पिष्ट्वा ताम्र पत्रेण लेपयेत् अथ पाठ भेद ।

पारा वलिकी कज्जलीको आक दूध या निम्बू रसमे घोट उस कल्क का ताम् पत्रोपर लेपकर सुखाय सम्पुटकर गजपुटकी आच दे तो ताम् की भस्म वनै ।

(२ पुटी) रसेनताम्र पत्रकं विलिप्य गन्धकेन च ।
क्षिपेत्तु सूरणोदरेसुवेष्ठ्यगोमयेनतम ,
पचेततं महापुटे सुशीतले समुद्धरेत् ।
विषाग्नि पित्तगन्धकै र्विमृद्यते पचेद्दिनम् ॥
शराव सम्पुटे रसः सुरक्त रूपमेतिस ।
रसस्तु सूचिकामुखोनिरुपितोऽस्यतण्डुलम् ॥

र दी, र यो सा

पारा वलि की कज्जली वनाय जिमीकन्दरस मे कल्क वनाय ताम् पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे फिर वलि मिलाय मीठाते-लिया, चित्रकरससे घोट टिकिया वनायसुखाय सम्पुट कर गजपुटकी आच दे तो ताम् भस्म वनै । इसकी मात्र १ सरसो से लेकर १ चावल लिखी है ।

(३) ताम्रस्यद्विगुण सूत जम्वीराम्लेन मर्दयेत् ।
आदौ भूपान्तरेक्षिप्त्वाधत्तूरस्य तु पत्रकम् ॥
तत्पृष्ठे ताम्रतुल्यन्तु गन्धकं चूर्णितं क्षिपेत् ।
तत्पृष्ठ्ये मर्दितताम्रं पूर्वं तुल्य तु गन्धकम् ।
आच्छाद्यं धत्तूर पत्रे रुध्वा गजपुटे पचेत् ।
स्वांगशीत तु तच्चूर्णं भस्मी भवति निश्चितम् ॥

आ क, र र

ताम्र चूर्ण से दूना पारा मिलाय जम्बीरी निम्बू के रसमे घोट पिष्टी वनावै, फिर सम्पुट पात्र में धतूरा के पत्र बिछा कर ताम्र के वरावर वलि नीचे ऊपर बिछाकर धतूरा पत्र मे ढँक कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो ताम्र की भस्म वनै।

(४) रसेन ताम्रस्य दलानि लिप्त्वागन्धेत ताम्राद्द्विगुणेन पश्चात्।
वस्त्रेणबद्धाऽथसमुद्रजेन क्षारत्रयेणापिचवेष्ठयित्वा।
मृदाचसंलिप्य पुटंददीत दलानि ताम्रस्यविचूर्णयेच्च।
धत्तूरचित्राद्र्रकटुत्रयै श्चविमर्दयेतत्रिदिनं प्रमाणम्।
कलाप्रमाणं च विषंचदत्वा वल्लेददोतस्य च वातशूले॥

र दी, र र स, नि र, रसा स, र को, रसे क, र चि, र का वे. वै चि र र प्र, व रा। वसवराजीये र र प्रदीपे भिन्न पाठ प्रतिपादित।

ताम्र पत्रो से दूना वलि वरावर का पारा दोनो को घोट कज्जली कर निम्बू रस से कल्क वनाय ताम्र पत्रो पर लेप कर सुखाय तीनोखार समुद्र नमक के चूर्ण के मध्य रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो ताम्र की भस्म वने। उसे निकाल पीस कर धतूरा, चित्रक, अद्रक, त्रिकटु की १-१ भावना दे पुन ताम्र भस्म का १६ वाँ भाग उसमें मीठातेलिया चूर्ण मिलाय पीस कर रख ले। इसकी मात्रा ३ रत्ती है, वात शूलमें दे।

(३ पुटी) जम्बीर रस संपिष्ट रस गन्धेन लेपितम्।
ताम्र पत्र शरावस्थं त्रिपुटै र्यातिभस्मताम्॥

र का धे, रसामृत, रसमंजरी, र र स, र सा, र पा, र च, र त, वृ यो त, रसा-सा, पा, स, भा भै र

पारा, वलि वरावर ले कज्जली वनाय निम्बू रसमें घोट करक कर उसका लेप ताम्र पत्रो पर कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो ताम्र की भस्म वने।

(७ पुटी) शुद्धं सूतं द्विधागन्ध कुमारी रस मर्दितम्।
त्र्यहान्तेगोलकं कृत्वा ततस्तेनप्रलेपयेत्॥
तयोः समं ताम्र पत्रे हण्डिकान्तर्निवेशयेत्।
तद्भांण्डे भस्मना ऽऽपूर्य चुल्ल्यांतीव्राग्निनापचेत्।
द्विदिनान्ते समुद्धृत्य चूर्णयेत्स्वाङ्गशीतलम्।

जम्बीर स्वरसः पिष्ट्वा रुद्ध्वा सप्त पुटैः पचेत् ॥
गुंजैकं मधुना ऽऽज्यैर्नालिह्याद्धन्तिभगन्दरम् ।
वर्जयेच्छीतलाहारं रसेऽस्मिन्रविताण्डवे ॥

रसे सा स, र च, वैं चि, रसे, क, र र स, भैं सा स, र र, र यो त, टो, र श्री यो, र र को, र चि, र रा सु र क ल, र र, त., व रा, र र दी, धन्व, र दी, र को, र प्र सु, चि र भ, र कौ र स सि, र पा, रसा, र का धे, र त सा, सि यो स

अय योगस्य भिन्न-भिन्न ग्रन्थे अनेक नाम्ना दृश्येत-यथारविताण्डव, ताण्डव भैरव, वारिताण्डव, पिनाकपाणि, त्रिगूडाख्य, उदयादिप्य, ताम्रेश्वर ज्वरोकुंश नवज्वरमुरारि, भगन्दर नाशन, रक्तमाहेश्वर, शूलगजकेसरी, शूलाकुश, श्लेष्मोहर सूर्यावर्त, स्वच्छन्द भैरव, ज्वर शूलहर, ताम्रसायन, देहसिद्धिकरताम्र, इत्यादि ।

पारे से दूना वलि एकत्र कर कज्जली वनाय कुमारी रसकी भावना दे उन दोनो के वरावर ताम्र पत्रों पर लेपकर सुखाय सम्पुट कर भस्म यन्त्र में दाब दे दो दिन की आच दे तो ताम्र भस्म वने। देखो स्थाली पुट न १ की ताम्र भस्म और इसताम्र भस्मको, पुन जम्बीरी निम्बूकी भावना दे टिकियावनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो ताम्र की भस्म वने। इस ताम्र भस्म का उपयोग अनेक ग्रन्थ कारो ने किया है यह अधिक वैद्यो के द्वारा व्यवहृत होता है अधिक लाभदायी है।

(१०पुटी) सूतगन्धकयोः कुर्यात्कज्जलीं समभागयो. ।
शिरीष पुष्पस्वरसे मर्दयित्वाञ्जन प्रभम् ॥
ताम्र पत्राणि च तथा लेपयेद्भिषगुत्तम. ।
रुध्वालवण यन्त्रेतुपचेत्तानि दिनत्रयम् ।
नि सर्गशीतान्युद्धृत्य सूक्ष्म चूर्णंसमाचरेत् ।
उपर्युक्तद्रव्य रसै रेकैकं च पृथक् दिनम् ॥
चक्रिका कारये त्सूक्ष्मा. शोषयित्वा खराऽऽतपे ।
पुटैत्क्रोड पुटे सर्वस्वरसै रेवमाचरेत् ।
ताम्रयोगेऽयमुचितानुपानैः सर्वरोगहा ।

र यो सा, नू वि.

पारा बलि बराबर कज्जली बनाय सिरस के फलों की भावना दे ताम्र-पत्रोंपर इसका लेप कर सुखाय सम्पुटकर लवण यन्त्र में दाब दे तीन दिन की निरन्तर आंच दे फिर निकाल तत्पश्चात् सिरस रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे, इस विधि से १० पुट दे तो ताम्र की उत्तम भस्म बने। इसे समस्त रोगों में दे।

(२१ पुटी) पलानीशस्य चत्वारि बलेर्द्वादश तावती।
तास्रस्य चक्रिका देया रसस्योर्ध्वं शरावकम्॥
दत्त्वाविवृद्धभाण्डस्थ पूरयेद्भस्मानाद्दृढम्।
अग्निं प्रज्वालयेत् यामद्वयं शीतं विचूर्णयेत्॥
पुटेद्द्वादशधासूर्य दुग्धेनालोडित पुन.।
वरापावक भृङ्गानाद्रवै स्त्रीण्येव विभावयेत्॥
अयमर्केश्वरो नाम्ना रक्तमण्डल कुष्ठजित्।
रसे सा स, र च, र चि, वृ यो त, र रा नु, भा भें र

पारा १६ तो बलि ४८ तो ताम्र चूर्ण ८८ तो पारा ताम्र की पिष्टी बनाय बलि मिलाय किसी वनस्पति रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुटकर भस्म यन्त्र मे दाबू दे २ प्रहर की तीव्र आंच दे, फिर निकाल आकदूध की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुटकर गजपुट की आंच दे, इस विधि से १२ पुट दे तत्पश्चात् त्रिफला चित्रक और भागरा की इसी विधिसे ३-३ पुट दे तो २१ पुट मे ताम्र की उत्तम भस्म बनै। इसका ग्रन्थकार ने अर्केश्वर नाम दिया है और वह कहता है कि यह ताम्र भस्म रक्तमण्डल कुष्ट को दूर करता है।

(२) त्रिंशद्भागमितं ताम्रं सूताद्भाग त्रयं शिला।
ताम्रतुल्यादि गृह्णीयाद्धन्य भाल्लातकानिच॥
तानि संकुट्टयित्वाऽथशिलाताम्रं विमिश्रयेत्।
द्विगुण गन्धक दत्त्वा सम्पुटेतत्परिक्षिपेत्॥
हण्डिकायन्त्रमध्यस्थं पचयामावधिर्हितत्।
तावच्चुल्ल्यु परिक्षिप्त्वा वह्नि चाद्य प्रदापयेत्॥
अवतार्य स्वयंशीतं तत्ताम्रं मृतमुत्तमम्।
पिप्पल्या स्वरसे नाद्रो चिंचिका स्वरसे न च॥
बदर्या. स्वरसे नापिकन्यकाया रसेन तत्।

भावनाश्चपुटं तत्त्वा प्रत्येकं पंच पंच च ॥
ततः सूक्ष्मं विचूर्ण्याथ तत्ताम्रं योग्य मात्रया ।
पिप्पल्या सहितं दद्यान्माषमात्रं भिषग्वरैः ॥
स तद्रेचयेत्सम्यग्यावद्यामावधिर्भवेत् ।
नैव मूर्छा न चक्लेदोवान्तिर्भ्रान्तिर्न विद्यते ॥
र का धे, र चि, र यो सा, भा भै र.

ताम्रचूर्ण, पारा २०-२० भाग मैनसिल ३ भाग भिलावा २० भाग, वलि २० भाग प्रथम ताम्र की पारदसे पिष्टी बनावें फिर उसमे मैनसिल मिलादे और भिलावा को कूटकर फिर भिलावा मिलादे फिर वलि मिलाय सम्पुटकर भस्म यन्त्र में दाब दे ५ प्रहर की आंच दे तो ताम्र की भस्म बनै। इस ताम्र को पीस पीपर, इमली, वेर और कुमारी रस प्रत्येक की पाच पाच भावना और पुट दे तो २१ पुट में कल्पपादप रस नाम की ताम्र भस्म बने। इस भस्म की मात्रा एक माशा है, पीपर चूर्ण के साथ सेवन करावे तो यह ताम्रभस्म रेचन कराती है, खूब दस्त लगते हैं किन्तु मतली व भ्रान्ति, क्लम, मूर्छा आदि उपद्रव कोई नही करती।

वक्तव्य—अन्य टीकाकारोने इसे १ एक ही पुट देकर उक्त वनस्पतियो की केवल भावना देना ऐसा अर्थ किया है किन्तु ग्रन्थकार भावना और पुट दोनो देने का आदेश देता है केवल भावना का नही।

(१ पुटी) पलप्रमाण सूतेन वलिनाद्विगुणेन च ।
शुद्धत्रिपलतालेन कृत्वाकज्जलिकात्र्यहम् ॥
पलमानेन कर्त्तव्यं शुद्ध ताम्रस्य सम्पुटम् ।
पिधान पात्र सग्रस्त तलं पात्रस्य वत्खलु ॥
कज्जलीं सम्पुटस्यान्त निदध्यान्तदनान्तरम् ।
अधस्तादुपरिष्टाच्च सम्पुट स्याऽऽक्षिपेत्खलु ॥
आकण्ठे पटु चूर्णन्तु निधायचनिरुध्य च ।
विशोष्यगज सञ्ज्ञेन पुटे न पुटयेत्तत. ॥
पटु चूर्ण विधायाथ सिन्धु मध्येविनिक्षिपेत् ।
पथ्याद्र करसोपेतो वल्लमानेन सेवितम् ॥
रसोऽग्नि शेष शूलघ्नः स्याच्छूलगज केसरी ।

पारा ४ तो० बलि ८ तो० हरिताल १२ तो० तीनोको मिला कर कज्जली बनावे ४ तो० ताम्र की कटोरी बनाय उस कटोरी मे कज्जली भर ताम्र पत्र से ही सम्पुट कर लवण यन्त्र में दाबू दे सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो ताम्र भस्म बनै। इसे पीस ३ रत्ती की मात्रा हरड नमक अद्रक रससे सेवन करे तो उदर के शूल गुल्म दूर हो इसका नाम शूलगज केसरी है। रस तरंगिणी के कर्ता ने कज्जली में ताम्र चूर्ण मिलाय सम्पुट कर पुन लवण यन्त्र मे दाबू दे सम्पुट कर गजपुटकी आचदी है।

(२) शुल्वेसूत ससंद्वयोरपिसमोगन्धस्तदर्द्धः पुन-
स्तालश्चार्धशिलायुतोपिरचयेत्पिष्टंततः कज्जलीम्।
लिप्त्वाताम्रदलानि मार्त्तिकदृढे पात्रे निधायाऽथतत्
पाच्यंसैकित यन्त्रके ऽर्धदिवसंशीतं स्वतोनिर्हरेत्॥

वै. र., नि. र., र. चू, चि. र म., यो त., टो, र. औ. यो., र. र. स., र. पा., वा., यो. चि., र. रा. सु, निम्नग्रन्थेषु भिन्न पाठ प्रतिपादित।
र. प, र. का. धे, र चं., रसे चू., र. अ. सु, र र स, र त, पा स, भा मैं र,

ताम्र पत्र पारा हरिताल १-१ भाग बलि २ भाग मैनसिल आधा भाग कज्जली बनाय निम्बू रस मे सबो को घोट कल्क बनाय ताम्र पत्रो पर लेप कर सम्पुट कर बालुका यन्त्र में या लवण यन्त्र में दाबू दे २ प्रहर की आँच दे। नीचे के ग्रन्थकारो ने एक पहर की आच दी है। शीतल होने पर निकाल पीस ले इसका नाम सोमनाथी ताम्र है। इसे ३ रत्ती पीपर चूर्ण घी शहद से चटावे तो कास, श्वास, अग्निमान्द्य, अर्श, पाण्डु, प्लीहा रोग, गुल्म, वातशूल, रक्तविकार आदि मे लाभ करता है। यह सोमदेव नामका सिद्धका कहायोग है।

(३) बलिना पलमात्रेणतद्द्रव्येरससम्मितैः।
विषतिन्दुक साम्येन वत्सनाभ पटूत्तमैः॥
कलिहारी शिलाव्योप तालपूग करञ्जकैः।
कृत्वा चूर्णं हि जम्बीर द्रवेण विद्रवीकृतम्॥
तत्सर्वं खल्वके भाण्डे विनिक्षिप्य ततःपरम्।
कृत कण्टक वेध्यानि पल ताम्र दलान्यथ॥
लिप्त्वापाद्‌ांशसूतानितस्मिन्कल्के निगूहयेत्।

एतत्सिद्धमुखागतविनिहित श्रीसोमदेवोदितम् ॥
गुञ्जा युग्ममितं कणाड्यसहित सत्पथ्यसं सेविनम् ।
गुल्मप्लीह शकृद्विबन्ध जठरं शूलाग्निमांद्यापहम् ॥
वातश्लेष्म सशोपगुल्मनिचयं जूत्यांदिक नाशयेत् ।

र चू , र यो सा

एक तो० पारद को ४ तोला ताम्र पत्रो पर लेप चढावें फिर बलि, कुचला, मीठातेलिया नमक, लागुली, मैनसिल, त्रिकटु, हरिताल, सुपारी, करजगरी, प्रत्येक ४ तोला सबका चूर्ण बनाय जम्बीरी निम्बू के रस में घोट कल्क बनाय ताम्र पत्रो पर लेपकर मुखाय सम्पुटकर लवण यन्त्र या भस्म यन्त्र मे दावू दे २ पहर की आच दे तो ताम्र भस्म बने । इसकी मात्रा भी २ रत्ती है, पिछली विधि के अनुसार ही उक्त रोगो मे लाभ करता है ।

(४) यद्वा तानि समेन गन्धक शिला तालेन गन्धेन वा ।
शिष्टेनद्वितयेनचाम्लसलिलैः पिष्टेन[1]पक्वान्यपि ।
यद्वा प्रस्तर गन्धकेन निबिडंलिप्तानि भाण्डान्तरे ।
क्षिप्त्वासंपुटितानिकेवलमहः पक्वानि जीवन्ति नो ॥

र. प , र का धे , र सि

१ पंकैरपि इति रसपद्धतो पाठ भेद

बलि और मैनसिल या हरिताल या केवल बलि को निम्बू रस में घोट ताम्र पत्रो पर लेप कर सम्पुट कर लवण यन्त्रमे दावू देकर २-३ प्रहर की आच दे तो ताम्र की निरुत्थ भस्म बनै ।

(२ पुटी) शुद्ध ताम्र भव चूर्ण समहिंगुल मिश्रितम् ।
निम्बू रसेन संपिष्टं कारयेच्चक्रिकाःशुभाः ॥
शोपयित्वा विधानज्ञो यन्त्रे डमरूके पचेत् ।
ऊर्ध्वपात्रगत. सम्यग्युक्त्या ग्राह्योरसोत्तमः ॥
अधःपात्र गतं ताम्र चूर्णं गन्धक मिश्रितम् ।
जम्बीर रस संपिष्ट मर्दभाख्ये पुटे पचेत् ॥
शुल्वं भस्मीभवत्येवं सर्व दोष विवर्जितम् ।

रसतरंगिण्या भिन्न पाठ प्रतिपादित रसामृत , र त., पा स

ताम्र चूर्ण के बराबर हिंगुल मिलाय निम्बू रस की भावना दे टिकिया

वनाय सुखाय डमरूयन्त्र में वन्दकर आच दे तो ऊपर के पात्र मे पारद और नीचे के पात्र में ताम्र भस्म मिलेगी। ताम्र को निकाल उसमे वलि मिलाय जम्बीरी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आच दे तो ताम्र भस्म वने।

(३ पुटी) शुद्धताम्रस्य भागैकं चतुर्भागं तु तालकम्।
द्विगुणैस्तुरविक्षीरै र्मर्दयेच्च दिनत्रयम॥
तल्लिप्तताम्रपत्राणि लेपितानि विशोषयेत्।
गर्भयन्त्रे विनिक्षिप्य सप्तधा घृत कर्पटे।
वारत्रयं गजपुटे तत्पचेत्ताम्र संयुतम्॥
तालकामृत ताम्रं दमनुपानेन सेवयेत्।

र रा श, रसा सा, र मा, र. यो सा, भा भै र

रसायन सारे भिन्न पाठ प्रतिपादित

(२) ताम्रपत्र १ भाग हरिताल ४ भाग ताम्र से दूना आक दूध हरिताल को ३ दिन आक के दूध में खरल कर उस कल्कका लेप ताम्र पत्रो पर कर सुखाय घी मे तर किये हुए कपडे में लपेट सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से ३ पुट दे तो तालकामृत नाम की ताम्र भस्म वने।

(३) ताम्र से दूनी हरिताल को निम्बू रस में घोट ताम्र पत्रो पर लेप कर सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे इस विधि से ३ पुट दे ताम्रभस्म वने। सि औ प्र

(४) ताम्र पत्रो को कुमारी रस आक दूध मे ७-७ वार तपा-तपा कर वुझावे फिर वरावर का हरिताल, मीठातेलिया चूर्ण के मध्य ताम्र चूर्ण को रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इसी विधि से तीन पुट और दे तो ताम्र की भस्म वने।

मा अ, कु र

(एकपुटी) शुद्धसूतस्त्रिभागः स्याद्भागैक ताम्र चूर्णकम्।
त्रिदिनं मर्दयेदम्लैः क्षालितं पिष्टि माहरेत्॥
माक्षिकाद्धौतसत्वं च पिष्टतुल्यं प्रकल्पयेत्।
तत्सर्वं त्रिदिन मर्द्यं चक्रमर्ददलद्रवैः॥
तद्गोलं गर्भयन्त्रस्थ त्रिदिन तुप वह्निना।
करीषाग्नौ दिवारात्रं पचेद्वा भस्मतां व्रजेत॥ र र

ताम्र चूर्ण १ भाग, पारा ३ भाग दोनो की पिष्टी वनाय निम्बू रस मे

खरल कर पुन अच्छी तरह वारम्बार धोवे फिर माक्षिक सत्व पिष्टी के बराबर मिला कर पनवाड के रस में ३ दिन खरल कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर भस्म यन्त्र या लवण यन्त्र में रख अथवा करीषाग्नि में दाबू दे या तुषकी अग्नि में उसे ३ दिन की आँच दे तो ताम्र भस्म बने।

वक्तव्य—पिष्टी में माक्षिक से निकाला सत्व डालना लिखा है। माक्षिक सत्वरूप जो भाग निकलता है वह तो ताम्र और लोह का ही अंश होता है। दूसरा जो उड़कर वलि के रूप में ऊपर लगता है उसे तो सत्व नहीं माना जा सकता। सत्व लेने पर तो ताम्र भस्म बन नहीं सकती देखिये निम्न योग।

(२) चतुर्गुणं च ताम्रस्य सचूर्णं माक्षिकं क्षिपेत्।
निम्बूरसेन सयोज्य घण्टात्रयंच घोटयेत्॥
त्रिमाषिकां वटीं कृत्वा शोषयित्वा पुटे धरेत्।
त्रिघण्टक तीक्ष्णाग्नौ ताम्रभस्म तु कारयेत्॥

रसा म

ताम्र चूर्ण में चौगुना माक्षिक चूर्ण मिलाय दोनो को निम्बू रस से ३ घटा खरल कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लवण यन्त्र में दाबू दे ३ घटा की तीव्राग्नि दे तो ताम्र भस्म बने।

(३) ताम्र चूर्ण से दूना माक्षिक चूर्ण मिलाय निम्बू रस से घोट टिकिया बनाय सुखाय नकछिकनीके नुगदेमें रख सम्पुट कर गजपुटकी आच दे तो ताम्र भस्म बने। मिफताहुल खजाईन के लेखक ने साप के मुह में रख सम्पुट कर आच देना लिखा है। र सि, मि ख

(४) १ तो० ताम्रपत्र, हरिताल, फिटकरी, सुहागा प्रत्येक माशा १ चांगेरी रस मे पीस ताम्र पत्रो पर लेपकर सम्पुट में रख गजपुट की आच दे तो ताम्रभस्म बने। र सि

(५) ताम्रपत्र, नौसादर, हरिताल समभाग सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो ताम्र भस्म बने। र सि

(६) ताम्रपत्रो को तपा तपाकर फिटकिरी, सोराके पानी में ७-७ वार बुझावे फिर बराबर की हरिताल को आक दूध में पीस पत्रो पर लेपकर सुखाय दूबी के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो ताम्र भस्म बने। अ स.

(७) ताम्रपत्र के बराबर हरिताल चूर्ण को मीठातेलिया के नुगदे में रख उसके मध्य ताम्र रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आंच दे तो भस्म बने ।
सि. औ प्र.

(८) भांगरारस में हरिताल को पीस ताम्रपत्रो पर लेप कर सुखाय मिरस बीजो के नुगदे में रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे तो ताम्रभस्म बने ।
अ. स , कु र

(९) कुमारीरस संपिष्ट शिलागन्धक लेपितम् ।
शुल्व तु भाण्डे निहितं चषकेण निरोधयेत् ॥
भाण्डस्यास्य मथो रुन्ध्या दन्तधूमं विपाचयेत् ।
यामैकेन मृतियाति नात्र कार्या विचारणा ॥
र म , र. का धे

मैनसिल और बलि को कुमारीरस की भावना दे कल्क बनाय उसका लेप ताम्रपत्रो पर कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे या भस्म यन्त्र में दाबू दे १ प्रहर की आच दे तो ताम्रभस्म बने ।

(१०) आच्छादित शिलाताम्रं द्विगुणं वालुकाह्वये ।
पक्त्वा संचूर्णगन्धेशौ दिनार्धं त पुन पचेत् ॥
श्वासमेहाद्रिनामायं महाश्वास विनाशनः ।
र चं , वृ नि र , भा भै. र

दुगने मैनसिल चूर्ण में ताम्रपत्रो को रख सम्पुट कर वालुका यन्त्र में दाबू दे २ प्रहर की आच दे, पुन निकाल पीस बराबर का बलि मिलाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो ताम्र की श्वासमेहाद्रि नाम की भस्म बने । यह महाश्वास रोग को नष्ट करे ।

(११) हिंगुल हरिताल को निम्बूरस मे घोट ताम्रपत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो ताम्रभस्म बने । म अ

(१२) पारा ताम्रचूर्ण बराबर पिष्टी बनाय हरिताल चूर्ण मिलाय कुमारी रस मे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो ताम्रभस्म बने ।
मा अ

(नम बलि) शुद्धं शुल्व गन्धकवै समांश पूर्वं स्थाल्या स्थापयेद्गन्धकार्धम्
मध्ये शुल्व स्थापनीय प्रयत्नात्तस्योर्ध्वं वै गन्धचूर्णस्य चार्धम्

स्थालीमुखे चूर्णघटीं निवेश्य लेप तथा सैंधवमृत्स्नयाऽपि ।
चुल्याच कुर्यादथ वह्निमेव यामत्रयेणैव सुपाचित भवेत् ॥
शातीभूतं दोषहीन तदेव कृत्वा चूर्णं गालित वस्त्रखण्डे ।
सेव्यं सम्यक् चैकवल्लप्रमाणं कासं श्वासं हन्ति गुल्मप्रमेहान् ॥
र प्र सु, र च, च द, रसा सा, रसे चू, र सा

चक्रदत्ते रसायनसारे तथा रसेन्द्रचूडामणौ भिन्न पाठ प्रतिपादित । रसेन्द्र चूडामणौ वलिर्लकुच द्रव भावना दत्त्वा इति विशेष । रससारे बलिमम्लपिष्टवा गजपुटे वह्नि दत्त्वा इति भेद ।

ताम्रपत्र के बराबर वलि मिलाय एक हण्डी में आधा वलि नीचे बिछाय उस पर ताम्रपत्र बिछाकर बाकी वलि उन पत्रों पर जमाकर उस पर नमक का दाबू दे मुख को सम्पुट कर चूल्हे पर चढाय ३ प्रहर की आंच दे तो ताम्र भस्म बने। उसे खरल कर कास, श्वास, गुल्म, प्रमेह, में सेवन करावे। मात्रा ३ रत्ती। रसेन्द्रचूडामणि ने वलि को बडहलरस की भावना देकर कल्क बनाय उसका लेप ताम्रपत्रों पर कर सुखाय स्थाली पुट देना लिखा है।

(द्विगुण वलि) ताम्रद्विगुणगन्धेन चाम्लपिष्टेन तत्पुन ।
क्षिप्त्वाह्यधोर्ध्व भागेन देया पिष्टाम्लकैर्बुधै. ॥
तत्पिण्डं भाण्डगर्भे तु रुद्ध्वा चुल्ल्या विपाचयेत् ।
यामैकं तद्विपाकेन भस्मी भवति निश्चितम् ॥
र र, रसाध्याय, रसा स, र र स, र यो सा.

रसायन सहिताया रसरत्नसमुच्चये च भिन्न भिन्नपाठ प्रतिपादित । रसरत्न समुच्चये चागेरी रसस्य भावना दत्त्वा रसाध्याये कुमारी रसस्य भावना दत्त्वा रसायन सहितायाम् तक्रस्य भावना दत्त्वा इति अन्तर स्यात् ।

ताम्र से दूना वलि लेकर निम्बूरस की भावना दे उसका लेप ताम्रपत्रों पर कर सुखाय बाकी वलि ताम्रपत्रों के नीचे ऊपर बिछाय सम्पुट कर उसे हण्डी में रख लवण यन्त्र या वालुका यन्त्र मे दाबू दे १ प्रहर की आंच दे तो ताम्र की भस्म बने। रसायन सहिताकार ने वलि को तक्र की भावना दे उसका लेप ताम्रपत्रों पर किया है और चार प्रहर की मन्द मन्द आंच दी है। वह कहता है कि यह ताम्रभस्म वमन के लिये प्रयुक्त करे। जब वमन आवे तब गरम जल पिलावे तो कास, श्वास, कण्ठरोग, हृदयरोग, मन्दाग्नि, कफवृद्धि,

क्षय मे लाभ होता है। अन्य ग्रन्थकार जो एक प्रहर की अग्नि देकर बनाने का विधान देते हैं उनकी भस्म इतनी अच्छी नहीं बनती। यह अन्तर है।

(२) जम्भाम्भसा सैंधवसंयुतेन सगन्धकं स्थापय शुल्वपत्रम्।
पङ्कायमानं पुटयेच्च युक्त्या वान्त्यादिकं यावदुपैति शान्तम्॥
रसे चिं, र का धे

बलि को जम्बीर रस मे घोट कल्क बनाय आधेका लेप ताम्रपत्रो पर कर आधा बलि उन पत्रो के नीचे ऊपर बिछाय लवण यन्त्र मे रख उक्त विधि से आंच दे तो ताम्र की भस्म बने।

(३) ताम्रपत्र को ७ बार आक के दूध मे बुझावे फिर आक दूध में घोटी हुई बराबर की बलि का लेप कर सुखाय अपामार्ग के लुगदे में रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आंच दे तो ताम्र भस्म बने। र सि

(४) ताम्रचूर्ण के बराबर बलि मिलाय दूर्वी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो ताम्र भस्म बने। सि भै मा.

(दो पुटी) उक्त विधि से ताम्रभस्म बनाकर ७ भावना चित्रक रस की दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की एक आंच दे तो ताम्र भस्म बने। यह क्षुधावर्द्धक, बलवर्द्धक है। र सि

(३ पुटी) कन्यातोयेताम्रपत्रं सुतप्तं कृत्वा वारान्विंशतिं प्रक्षिपेत्तत्।
शुद्धं गन्धं तद्द्विभागं विमर्द्य निम्बूतोयैस्ताम्रपत्राणि लिप्त्वा॥
भाण्डे कृत्वा रोधयित्वा तु भाण्डं शालाऽग्नौ तं निक्षिपेत्पञ्चरात्रम्।
शीतं जातं भावयेदुक्ततोयैर्यद्धानीरैस्त्रैफलैरेकघस्रम्॥
मध्वाज्याभ्यां पेषयित्वा पुटेत्तच्छुद्धं सिद्धं जायते देहसिद्धयै।
रसा स, यो म, र दी, र यो सा.

ताम्रपत्रो को तपा तपा कर कुमारी रस मे २० बार बुझावे फिर दुगने बलि को निम्बूरस की भावना दे कल्क बनाय उसका लेप ताम्रपत्रो पर कर सुखाय सम्पुट कर हण्डी मे रख वालुकायन्त्र मे दाबू दे पाच रात शाल की लकडी की आंच दे, फिर निकाल निम्बूरस कुमारीरस की और त्रिफला की १-१ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे, पुन शहद में घोट टिकिया बनाय सम्पुट कर एक पुट और दे तो ताम्र की देह सिद्धि कर भस्म बने। ग्रन्थकार कहता है इसकी १ रत्ती मात्रा घी शहद से चाट कर

ऊपर से गेम्वल मूसली का रस पीवे और उसके ऊपर दूध खांड डालकर पीवे। शामको चाहे गुड, खटाई युक्त भोजन करे। इस तरह ६ महीना सेवन करनेपर वीर्य पुष्ट होता है, भूख बढ़ती है, शरीर की झुरिया मिटकर वह दृढ हो जाता है, नेत्रज्योति बढ जाती है, तथा वह दीर्घायु प्राप्त करता है।

(२) ताम्र मे दुगना बलि मिला कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे फिर निकाल कर फरीदबूटी के रसकी भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इस विधि से ३ पुट दे तो ताम्र की उत्तम भस्म बने।

सि श्री प्र.

(३) गवाश्मना वा शिलया रविदुग्धेन पेषितम्।
जम्भाम्भसापि पुटनैस्ताम्रं भस्मत्वमाप्नुयात्॥

र प, र र स, र पा, पा स.

गवक व मैनसिल को आक के दूध में घोट ताम्रचूर्ण मे मिलाय सम्पुट मे रख गजपुट की अग्नि दे इस तरह ३–४ पुट में ताम्र की भस्म बने।

(५ पुटी) कण्टकवेधी कृत ताम्रपत्र तुल्यांशगन्धकैः।
अम्लपिष्टै प्रलिप्याथ रुध्वागजपुटे पचेत्॥

अथपाठ ऋद्धिखण्डे वादिखलण्डे निर्दिष्टि अन्यग्रन्थेपुनिम्न पाठ प्रतिपादित

गन्धेन ताम्र तुल्येन ह्यम्लपिष्टेन लेपयेत्।
कण्टकवेधी कृत पत्र मन्धयित्वा पुटे पचेत्॥
उद्धृत्य चूर्ण येत्तस्मिन्पादांशं गन्धक क्षिपेत्।
जम्बीरैरारनालैर्वा [1]पिष्ट्वारुध्वा पुटे पचेत्॥
एवचतु. पुटैःपच्यादुगन्धोदेय पुटे पुटे।
सितशर्कया पञ्च पुट देयं मृत भवेत्॥

ऋद्धिखण्डे रस चिन्तामणी पष्ठ पाद स्थाने निम्नपाठ दृश्यते "मातुलुङ्गरसै पिष्टवा पुटमेक प्रदापयेदितिपाठ"।

ऋ ख रसे चि, र त, र र, आ क

१ मृगदूर्वाऽथवाद्रवै
पिष्टवापिष्ट्वापचेत्तद्वत्सगन्ध च चतु पुटे आनन्दकन्दे रसरत्नाकरे इतिपाठ। इतना अन्तर होने पर भी विधि में कोई अन्तर नही है।

ताम्रपत्र के बराबर बलि को अम्ल में घोट ताम्रपत्रो पर लेप कर सम्पुट

मे रख गजपुट की आच दे। पुन उन पत्रों को [illegible] [illegible] [illegible]
या दूध के रस मे घोट टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे।
इस प्रकार बलि मिलाकर ४ पुट दे फिर [illegible] पुट बिना [illegible] मिलावे [illegible]
की गा केवल निम्बू रस मे घोटकर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट
की आच दे तो ताम्र की भस्म बने।

(३ पुटी) पाषाणभेदी मत्स्याक्षी द्रवैर्द्विगुण गन्धकैः।
ताम्रस्य लेपयेत्पत्र रुद्ध्वा गजपुटे पचेत ॥
सप्तांशेन पुनर्गन्ध दत्त्वा द्रावैश्च पेषयेत।
एव सम्पुटे पक्व ताम्र भस्मभवेद्ध्रुवम ॥

र र, रसेन्द्र

रसेन्द्र चूडामणौ भिन्नपाठ प्रतिपादित। शिलाभावनानन्त पुटं दत्वा।

ताम्रपत्र मे दूने बलि को पाषाणभेद और मछेछी के रस की भावना दे पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, पुन ताम्र से सातवा भाग बलि मिलाय उक्त रसो की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस तरह ३ पुट दें तो ताम्र की भस्म बने। नि प्रो प्र.

(२) ऐङ्गुदूकेकिण्व रसेऽथदुग्धेत्रिस्त्रिर्निषिक्तं च रसधलिप्तम्
द्विभाग गन्धाञ्जितढुग्धिकाम्बुल्पुततोभस्म पुटेभृतं च।
सगन्धसूर्याम्लगणार्द्रकाग्नि भृङ्गोद्भवाम्भोभिरनुक्रमेण।
पचामृतेनाथ च सप्त कृत्व. पृथग्पुटैःसिद्ध मिदं गदारिः ॥

रसावतार दूसरा, र यो सा

ताम्रपत्र को इगुदी रस, किण्वघोल, और दूध इनमे तपा तपा कर ३-३ बार बुझावे फिर दूधी के रस मे ताम्र से दूना बलि घोट ताम्र पत्रोपर लेप कर सम्पुट कर भस्मयन्त्र के मध्य दाब देकर ८ प्रहर की आच दे, पुन १२ वा भाग बलि मिलाय हुलहुल, अम्लगण, अद्रक, चित्रक, भारा और पचामृत (गिलोय गोखरू, मूसली, गोरखमुण्डी, शतावर) इन प्रयेक की १-१ भावना दे कर १-१ पुट दे तो ७ पुट देने पर ताम्रभैरव नामक ताम्रभस्म सिद्ध हो, यह समस्त रोगो को दूर करता है।

(८ पुटी) चिंचेङ्गुदीबूर्तपयस्वर्नानांनिर्गुण्डिपंचागरसेऽथ यूपे।
वन्नार्कदुग्धंक्रमशस्त्रिवारान्निर्वापितं शुद्ध्यतिताम्रपत्रम्।

सकाञ्जिकेन द्विगुणेनपंच कृत्वासुगन्धेनकृतोपलेपम् ।
छायाविशुष्कंपुटपाकपक्वपंचत्वमाप्नोतिशुभंचशुल्वम् ।
पुटानि[१] पंचामृतजानिपच फलत्रयस्यत्रिपुटान्यवाप्य ।
सिद्धसुधाभूतमिदंत्रिदोषज्वरादिरोगापहमादिशन्ति ॥

रसावतार दूसरा, र.यो सा

१ नाप्यञ्चति गन्धक च रसावतर इति पाठ

ताम्रपत्रो को इमली, हिंगोट, धतूरा, दूधी मभालू, थोहर रस, और आक दूध में क्रमश ३-३ बार तपातपा कर बुझावे, फिर ताम्रपत्रो से दूना बलि ले काजी में पीस ताम्रपत्रो पर लेपकर सुखाय सम्पुटकर गजपुटकी आंच दे तो ताम्र की भस्म बने । इस ताम्र भस्म को गिलोय, गोखरू, मूसली, गोरखमुण्डी शतावर, हरड, बहेडा, आवला, प्रत्येक रस की भावना व पुट दे तो आठ पुट में अमृत के तुल्य ताम्र की भस्म बने ।

(६४ पुटी) गन्धकार्कोद्येकभगौको च शराव सम्पुटं पचेत् ।
स्वाङ्गशीतं च सम्पेष्य खल्वेवस्त्रेणगालयेत् ॥
सामुद्रं तत्समं कृत्वा पुनः पुटनमाचरेत ।
तदेवतत्क्षिपेद्देयं सामुद्रं च पुन पुनः ॥
कासीसस्य जलेनैव वारं वारं विभावयेत् ।
चतु.षष्टिपुटादित्थनिरुत्थ योगवाहिकम ॥
[१]तत्साम्लं सौरणकन्दे पुटेत्पञ्चामृतेऽथवा ।
अष्टदोषाश्च पूर्वोक्तान्न करोतिगुणावहम् ॥

र चि ,र का धे ,र स,क

१ तत्ताम्र रससकेतकलिकायामितिपाठ ।

ताम्रचूर्ण १ भाग बलि दो भाग दोनो को एकत्र कर सम्पुट में रख अर्ध गजपुट की आच दे, पुन निकाल पीस छान उसके बराबर समुद्र नमक मिलाय कसीस जल से घोट टिकिया बनाय सम्पुटकर गजपुट की आच दे, जितनी मात्रा में समुद्र नमक कम होता जाय उतना उतना मिलाकर इस तरह कसीस जल की भावना दे टिकिया बनाय पुटें देता रहे। कुल ६४पुट दे । चौसठ पुटोमें अन्तकी पुट जिमीकन्द की भावना या पञ्चामृतक्वाथ की भावना दे कर पुट दे तो आठ

दोषो से रहित पूर्ण गुण युक्त ताम्र की भस्म बनै ।

ऊष्मिद ताम्र भस्म

(सतपनपुटी) कन्यातोयेताम्रपत्रं सुतप्तंकृत्वावारान्विंशतिप्रक्षिपेत्तत् ।
ताम्राद्द्विगुणंअभ्रक कृष्णवर्णमर्धंभागंपारदं तत्रयोज्यम् ॥
ताम्रादर्धं पिप्पलीयविडगंसोष्णंत्रितयंश्लक्ष्णचूर्णीकृतेन ।
शूलंशोथंपाण्डुपित्ताम्लग्रहणीं यक्ष्माकुक्षिगुल्मरोगेहनं च ।
रसे चि भा भै र

ताम्रपत्र को तपा तपा कर कुमारी रस में २० वार बुझावैं, फिर ताम्र से दूना धान्याभ्रक और ताम्र से आधा पारा मिलावै और ताम्र का आधा पीपर विडग और मिर्च का चूर्ण मिलाकर खूब खरल करके रख ले । इसकी मात्रा १० रत्ती है घृत शहद मे मिलाकर चटावै तो शूल, शोथ, पाण्डु, अम्लपित्त, ग्रहणी, यक्ष्मा, कुक्षिशूल, गुल्म आदि रोगो में लाभ हो ।

नोट—ताम्र को ग्रन्थकार ने तपा तपा कर २० वार ही बुझाना लिखा है वास्तव में ताम्रपत्रो को तब तक बुझावे जब तक वह जलकर चूर्ण विचूर्ण न होजाय, जब वह ऊष्मिद हो जाता है तभी पिस सकता है इस तरह कच्चा रह जाता है ।

(२) ताम्रस्यद्विगुणं सूतं जम्बीराम्लेनमर्दयेत् ।
सितशर्करयाप्येव पुटत्रये मृत भवेत् ॥ र र.

ताम्र मे दूना पारा जम्बीरी रस मे खरल कर पिष्टी बनाय पिष्टी के बरावर खाड ले उसके मध्य रख सम्पुटकर गजपुट की आचदे, इस विधिसे ३पुट दे तो ताम्र की भस्म बने । सनत अकवर के लेखक ने पिष्टी को आक मूल के नुगदे में गुगल मिलाय उसमें रख गजपुट की आच दी है यह कहना है कि एक पुट में ही ताम्र भस्म बन जाती है । स अ

(३) पारा, ताम्रचूर्ण की पिष्टी के साथ समुद्रझाग, व खाड को मिलाय करीर या पीपल रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय करीरके नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की पुट दे, मादन उल अक्सीर का लेखक कहता है इस प्रकार १०-१२ पुट दे तो उत्तम भस्म बनती है ।
मखजन, मा अ.

(४) ताम्र पारद की पिष्टी को चागेरी के नुगदे में या रतनजोत के

नुगदे में रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे या लवण यन्त्र मे पुट दे तो ताम्र भस्म बने ।   अ स, दे उ, र सि.

ताम्र चूर्णं रसेशुद्धं द्वयमेतद्विघृष्यच ।
काकोदुम्बरिका मूल भवैस्तोयैर्विभावयेत् ॥
पूर्ववत्पुटतेतस्मिन्पारद शुद्ध मानयेत् ।
एकैक रक्तिको दद्यात्काकोदुम्बरिवारिणा ॥
कुष्ठ कष्टं युते नूनं नाशयेदचिरेणतत्

र चि, र का वे, र यो सा

ताम्र चूर्ण पारा मिलाकर कठूमरके मूलक्वाथ की भावना दे पिष्टी बनाय कठूमरके नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट को आच दे इसी विधि से पारद मिलाकर तब तक पुटे देना रहे जब तक भस्म न बन जाय । इसकी मात्रा १ रत्ती है । कठूमर के रस से सेवन करने पर श्वित्रकुष्ठ जो नया हो उसमें लाभ होता है ।

(६) त्रिक्षारैः पटुभिः स्नुगर्क पयसाक्षीरेणपिष्टैर्यथा ।
लाभेचाम्ल गणद्रवेणदशधाध्मात्वाविलिप्याऽनले ।
शेफाली सलिलेऽम्लवर्ग सलिलेनिर्वापिता [1]न्यल्पशः ।
पूर्वप्रक्रिया त्रिगन्यलुलिता भस्मस्युरर्कच्छदः ।

[1] भूरिश. रस पद्धतौ इति पाठ ।   र प, र का वे.

तीनो क्षार पाचों नमक इनको थोहर और आक दूध में घोट ताम्र पत्र पर लेप कर उन्हे खूब तपावे और सिहारू या सिओल के रसमे वुझावे इस प्रकार अनेक बार वुझाने पर ताम्र की भस्म बने ।

(७) रगच्छेतदनन्तपुनुना परिवेष्ट्य मुद्रा ताम्रस्य सावयवमार्क वल्कल सम्पुटिदत्ति पटु सुरभे क्रुद्धि स्यात्सोम नाथ रस एप मध्ये समीर हर्ता ॥

सि भै मा, र यो सा.

वग के पत्रो में ताम्र को रख कर उसे फिर आक के नुगदेमे रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो ताम्र की श्वेत भस्म बने ।

एक ग्रन्थकार ने भिलावा, दूसरे ने सिरस, तीसरे ने अकोल, चौथे ने हरमलके नुगदे में लपेट कर आच देने का विधान दिया है । किसी मे रखकर पुट दे भस्म बन जाती है ।   अ स, स अ मा अ, मि ख मखजन,

(८) ताम्र पत्रो के वरावर सोमलको आक दूव या पुननर्वा के रस में ोट ताम्र पत्रो पर लेप कर सम्पुट कर १० मेर उपलो की आच दे तो ताम्र की स्म वने । अ स, मा अ

(९) सोमल ३ तो० को थोहर के दूध मे पीस ५ तो० ताम्र पत्रो पर लेप र सुखाय थोहर के नुगदे मे रस सम्पुट कर गजपुट की आँच दे पुन २॥ तो० ारा मिलाय नकछिकनी रस मे घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो ताम्र भस्म वने । र सि.

(१०) ताम्र पत्रोको निम्बू रसमे ७ वार वुझाय वरावरका सोमल निम्बू रस मे घोट ताम्र पत्रो पर लेप कर उसे वस्त्र सम्पुट मे लपेट आग लगादे, पुन. उसे आक दूव मे घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २ मेर उपलो की आँच दे तो भस्म वने । अ स

(११) ताम्र चूर्ण २ तो०सोमल ६मा०सुहागा ६ मा० नौसादर १तो०सवको आक दूव मे खरलकर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो को आच दे, पुन कुमारी रस की भावना दे सम्पुट कर २॥ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ४१ पुट दे तथा दही की २१ पुट दे कुल ६३ पुट में उत्तम ताम्र भस्म वने। अ स

(१०) ताम्र को कटेली के रस में तपा तपा कर तव तक वुझाता रहे जव तक सारा ताम्र पत्र चूर्ण न हो जाय उसमे फिर वरावर का पारा मिलाय कटेली रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलो की आच दे इस विधि से २१ पुट दे तो ताम्र की सफेद भस्म वने । मखजन

(१२) ताम्र पत्रो को तपा कर उस पर कनेर सफेद के रस का चोया ४८ घण्टे तक देता रहे । दूसरा लेखक कहता है ३ घण्टे तक चोया दे तो ताम्र भस्म वन जाती है । सि औ प्र, अ त

(१३) ताम्र पत्र को निम्बू रसमे वुझावे फिर अकाश वेल, लहसुन, पीपर, भागरा के नुगदेमें रख कर गजपुट की आच दे तो ताम्रकी सफेद भस्म वने । स अ, मा अ

(१३) ताम्र पत्रो को कठूभर के रस में २१ वार वुझावे और कनैर फूल, ...गणावूटी के नुगदे में रख १५ सेर की आच दे या ताम्र पत्रो को कटेली रस

में २१ वार बुझावे और लाणा के नुगदे में रख गजपुट की आच दे तो ताम्र भस्म बने ।
अ स

(१४) सोरा, और नौसादरके पानी में ताम्र पत्रो को तपा-तपाकर १०० वार बुझावे तो चूर्ण-विचूर्ण हो जायगा उसे काम मे लावे। सि. औ प्र

(१५) वेल पत्र रस या अकोल रस मे ताम्र पत्रो को १०० वार बुझावे फिर अकोल के नुगदे में रख गजपुट की आच दे तो सफेद भस्म बने ।
अ की, म अ, पा स

(१६) ताम्र पत्रो को सज्जी के पानी में २१ वार बुझावे और गोखरू तथा लोध के नुगदे में रख १५ सेर की आच दे, या फिटकिरी के पानी में २१ वार बुझावे और बबूल फली के नुगदे में रख सम्पुट कर ७ सेर उपलो की आच दे, या जामुन के रस में २१ वार बुझावे और जामुन के नुगदे में रख २० सेर उपलो की आच दे । या वनतम्बाकू के नुगदे मे २१ वार बुझावे और इसी के नुगदे मे या ककोडा के नुगदे में रख गजपुट की आच दे तो ताम्र भस्म बने ।
सि भै म, मि ख, र सि, अ त, मा अ

(१७) ताम्र पत्रो को ५१ वार हरड चिरायताके क्वाथमे बुझावे और इसी के नुगदे मे रख १० सेर की आच दे या पीपल के छाल के पानी में १०१ वार बुझावे और इसी के नुगदे में रख पाच पुट दे या कुमारी के रस और भेड के दूध में १०१ वार बुझावे और पान में घोटी हुई भाग तथा वट जटा के नुगदे मे रख गजपुट की आच दे या तुलसी के रस में १०१ वार बुझावे और तुलसी के नुगदे में रख १२ सेर उपलो की आच दे । या राई पत्र के रस में १०१ वार बुझावे और राई के नुगदे में रख ५ सेर उपलो की आच दे । या थोहर के दूध मे १०१ वार बुझावे और प्याज के नुगदे में रख ७ सेर उपलो की आच दे, इस तरह ३ पुट दे । सि औ प्र, पा स, अ त, र सि, अ की, सि भै मा, भा, मा अ

(१८) निम्नलिखित ग्रन्थकार निम्न बूटियो में ताम्र भस्म बनाने की निम्न विधि देते है । सहदेवी मे, झाऊ में, लाणा में, वुई मे, या हाथीसुण्डी को आक दूध में घोट उसमें, या खुम्भ और करीर के नुगदे मे या आकाश वेल में, अण्डे के चूर्ण मे, या हीग, कुशा में, पुनर्नवा, जगली हल्दीके मिश्रित नुगदे मे, चागेरी में, जगली गुलाब में या लाजवन्ती के नुगदे मे या अर्कक्षार में या अमरवेल मे या नकछिकनी,ढाक पत्र चूर्णदोनोकेआक दूधसे बने नुगदेमे, अफीम, आक दूधमे या

हीग के नुगदे में या केवल अफीम स्त्रिदुग्ध मे, यादूवी के नुगदे मे ताम्र पत्रो को रख ५–७ सेर उपलो की आच दे तो भस्म वने। र. सि., अ त, अ स, मि ख, मा अ, सि औ. प्र, म अ,

(१९) ताम्र पत्र को झाऊ की राख में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे, पुन वेरफलके नुगदेमें दूसरी पुट दे तो ताम्र भस्म वने। अ स, दे उ

(२०) ताम्र चूर्ण को ७ भावना कटूमर रस की दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ७ सेर उपलो की आंच दे इस विधि से ३ पुट दे तो ताम्र भस्म वने। सि भै मा.

(२१) ताम्र चूर्ण को सञ्जीवन-एरण्ड के रस की इतनी भावना दे कि टिकिया वन जाय सुखाय सजीवन एरण्ड के नुगदे में रख १० सेर उपलो की आच दे तो श्वेत भस्म वने। त तु, पा स.,

(२२) ताम्र चूर्ण को पुननर्वा रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो भस्म वने। सि औ. प्र.

(२३) ताम्र चूर्ण को वडी कटेली रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० मेर उपलो की आच दे इस विधि से ३ पुट दे तो भस्म बने। जामेउल अक्सीर के लेखक ने दो पुट आक दूध की दी है। स. अ., जा. अ.

(२४) ताम्रचूर्ण को सत्यानासी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सत्यानासी के नुगदे में रख २० सेर उपलो की आच दे इस विधि से ३ पुट दे तो ताम्र भस्म वने। अ त.

(२५) ताम्रचूर्ण को गोजिह्वा के रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से ३ पुट दे तो भस्म वने।
पा स, अ त

(२६) ताम्रचूर्णको नकछिकनीके रसमें ११वार वुझावे फिर आकमूलके नुगदे मे रख गजपुट की आच दे इस विधि से ३ पुट दे तो ताम्र भस्म वने। पा स

(२७) अपामार्ग भस्म को अपामार्ग रस में घोट ताम्रपत्रो पर लेपकर उन पत्रो को तपाकर अपामार्ग के रस में वुझाता रहे जव ताम्र पत्र फूलने लगें अपामार्ग के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म वने। र सि

(४ पुटी) ताम्र पत्रो को नकछिकनी के नुगदे में रख गजपुट की आच दे इस विधि से ३ पुट दे, फिर ताम्र से दूना सोरा मिलाय पुनर्नवा के नुगदे मे

रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो ताम्र भस्म बने । र. सि

(७) ताम्र पत्रो को चागेरी के नुगदे में रख १० सेर की आच दे इस विधि से ८ पुट दे तो ताम्र भस्म बने । अ स, मि ख

(८ पुटी) ताम्र पत्र को थोहर के नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे इस विधि से ७ पुट दे तो ताम्र भस्म बने । स. अ

(१० पुटी) ताम्रचूर्ण को आक दूध मे घोट टिकिया बनाय सुखाय आक के पीले पत्तो के नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे इस विधि से ७ पुट दे तो ताम्र भस्म बने । कुछ ग्रन्थकारो ने १० पुट देनी लिखी है ।

सि भै म, मा अ, स अ

(२) ताम्रचूर्ण को कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २०सेर उपलोकी आच दे इस विधिसे १० पुट देतो ताम्र भस्म बने ।

स अ

(४० पुटी) ताम्रपत्रो को फिटकिरी चूर्ण में रख सम्पुटकर ५ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ४० पुट दे तो ताम्र भस्म बने । मा अ, जा अ

(५० पुटी) ताम्र चूर्ण को दूधी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुटकर ८ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ५० पुट दे तो ताम्र की श्वेत भस्म बने । स अ.

(सौ पुटी) ताम्र को चोपचीनी के नुगदे मे रख सम्पुटकर १० सेर उपलो की आच दे इस विधि से १०० पुट दे तो ताम्र की उत्तम भस्म बने । मा स

वक्तव्य — उक्त विधियो मे प्राय ताम्र १--२ तो० से अधिक नही है और नुगदा १० तोला ले तथा जहा आच की मात्रा नही लिखी है वहा १०–१२ सेर उपलो की पुट दे ।

ताम्रभस्म के गुण

ताम्रं तिक्त कषायके, चमधुरंपाकेऽथवीर्योष्णकम् ।
साम्ल पित्तकफापह जठररुक्कुष्ठामजन्त्वन्तकृत् ॥
ऊर्ध्वाधः परिशोधन विषयकृत्स्थौल्यापहं क्षुत्करम् ।
दुर्नाम क्षयपाण्डु रोगशमन नेत्र्य, परलेखनम् ॥

ताम्र भस्म चरपरी, कसैली, मधुर पाक मे उष्ण वीर्य, अम्लहै और

कफ पित का नाश करती है, उदार के रोग, कुष्ठ, उदर क्रिमि को मारती है और वमन विरेचन से ऊर्ध्व और अधो मार्ग से मल को निकाल शरीर का शोधन करती है विष विकार, यकृत् वृद्धि, स्थूलता को घटाती है, क्षुधावर्धक है। क्षय, पाडु को शमन करती है, नेत्र रोगों में लाभ कारी व लेखन करती है।

ताम् भस्म के अनुपान सोंठ चूर्ण २ मा के साथ उष्ण जल से अतिसार मे, चित्रक क्वाथ जो काजी में बना हो उससे जलोदर मे, त्रिकुटा चूर्ण के साथ उष्ण जलसे वात शूल, गुल्म, विशूचिका में, या अद्रकरस शहद से गुल्म शूल मे, अपामार्ग क्षार सज्जी और जवाखार से उदुम्बर कुष्ठ में, धतूरा बीज, मीठातेलिया चूर्ण आधी रत्ती से शहद में लेने से विषम ज्वर मे, कबीला चूर्ण ३ माशे शहद के साथ उदर क्रिमि में, हरड चूर्ण मुनक्का युक्त शहद से अम्ल पित्त में, खस चूर्ण केसर के साथ मूर्छा में, जवासा क्वाथ के साथ भ्रम (चक्कर आने मे, इलायची, भागरा चूर्ण शहद के साथ मूत्र कृच्छ में, इमली खार, जगहरड, त्रिकटु, करज चूर्ण ४ माशे के साथ उदर शूल गूल्म मे, त्रिफला, त्रिकटु, विडग इनके क्रम विवर्द्धित चूर्ण से शहद मिला कर लेने से ग्रहणी, अम्लपित्त, शूल, गुल्म, मन्दाग्नि, धातु क्षय आदि में, तक्र शहद के साथ कामला परिणाम शूल, पाण्डु, ग्रहणी, कास, प्लीहा वृद्धि, अजीर्ण में, त्रिकटु चूर्ण शहद के साथ हस्त कम्प, ग्रीवा कम्प, पक्षाघात मे, नाग केसर चूर्ण से मूर्छा में धमासा क्वाथ से चक्कर आने मे, करजबीज चूर्ण शहद से शूल में, पीपर चूर्ण शहद से मन्दाग्निमें आवला चूर्ण शहदसे अम्लपित्त मे, भारगी बहेडाचूर्ण शहद से श्वास, कास में, नागकेशर चूर्ण से अर्श में, या हरड चूर्ण शहद से अर्श मे, ताम्र भस्म को देने पर लाभ होता है। ताम्र भस्म की मात्रा १ रत्ती से लेकर ३ रत्ती तक है।

तुत्थ

तुत्थ वास्तव में ताम्र और बलिका यौगिक पदार्थ है। जब हम इसकी भस्म बनाते है तो वह तुत्थ की नही बल्कि ताम्र की भस्म बनती है जो भस्म हम कज्जली से या केवल बलि मिला कर बनाते है उन ताम्र भस्म और इस तुत्थ भस्म मे कोई अन्तर नही होता। केवल मात्र तुत्थ भस्म मे जो सुहागा मिलाया

जाता है सुहागा मौलिक तत्त्व होने से यह भी वलि व ताम्र के साथ मिलकर अपना भिन्न यौगिक निर्माण करता है, जो तुत्थमे मिला होने से वह तुत्थ भस्म ताम्र से गुणो से भिन्न हो जाता है।

तुत्थ भस्म

(१) लकुचद्रवगन्धाश्म टंकणेन समन्वितम् ।
निरुध्द्य मूपिकामध्ये म्रियते कौक्कुटै पुटैः ॥

र त, र र स, आ प्र, र रा सु, पा स, भा. भै र

वलि सुहागा और तुत्थ इन तीनो को वडहलके रस की भावना दे टिकिया वनाय मुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे तो तुत्थ भस्म वने। रस तरगिणी कारने केवल वलि योग से ही भस्म वनाने का विधान दिया है और लिखा है यदि एक पुट मे न वने तो एक पुट और दे।

(२) सूत गन्धक कज्जल्यां समतुल्य विमर्दयेत् ।
सूतार्धटंकणं दत्वाभावयेल्लकुचद्रवैः ।
भृत्वाकूप्यां पचेद्वह्नौ तीव्र सूते समुद्धरेत् ।
गलेसिन्दूरनामास्यात्तुत्थभस्मादप्यधस्तले ॥

रसा.सा, भा. भै र, र त

पारा वलि सम भाग कज्जली वनाय पारे से आधा सुहागा और सबके वरावर तुत्थ मिलाय वडहलके रस की भावना दे सुखाय काचकूपी मे भर वालुका यन्त्र में रख ४ पहर की आच दे तो शीशी के गले पर रस सिन्दूर और तल मे तुत्थ भस्म वनी हुई मिलेगी।

(३) तुत्थ ५तो०रीठा फल ४०तो० इसके गुदेमे रख सम्पुट कर १० सेर की आच दे तो तुत्थ भस्म वने। र त सा

(४) ५तो० तुत्थ को १०तो० सगजराहतके मध्य रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आँच दे तो भस्म हो, इसे अर्श के मस्सो पर लगाने से मस्से झड जाते है। अ त

(५) १ तो० तुत्थ ५ तो० कपूर मे सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो तुत्थ भस्म वने सुजाक फिरग मे लाभदायी है। अ त स अ

(६) हुक्का पीने के तम्वाकू के मध्य तुत्थ रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो

की आंच दे अलतवीवका लेखक कहता है १ पुट मे वने, सनन अकवर का लेखक ८-१० पुट देने का विधान देता है। एक पुटी का नेत्रमें सुरमावत् प्रयोग करे और १० पुटी को यकृत विकार में दे।

(७) तुत्थ को विना बुझे चूने मे दवा कर पानी डाले जव चूना ठण्डा हो जायनिकाल गेरू के मध्य दावू देकर ४ प्रहर का आचदे तो भस्म हो। र यो ता

तुत्थ भस्म के गुण सुजाक फिरग, रक्तविकार, अर्श, नाडीव्रण, भगन्दर में लाभदायी है। जिन रोगो मे ताम्र भस्म लाभ करती है उनमे तुत्थ भस्म करती है। मात्रा १ रत्ती

त्रिवंग और त्रिवंग भस्म

प्राचीन रस ग्रन्थो में त्रिवग भस्म का कही उल्लेख नही मिलता, नये ग्रन्थो में जरूर हुआ है किन्तु वह भी हिन्दीके उर्दू के ग्रन्थोमें ही देखा जाता है। कुछ ग्रन्थो ने वग, सीसा और जस्ता को त्रिवग कहा है, कुछने चांदी, वग और सीसा को त्रिवग कहा है। यह मेल केवल रग रूप के आधार पर वनाया गया है वास्तविकता कुछ नही है। चू कि त्रिवग भस्म का उपयोग प्राय. प्रचलित है इसलिये जिन जिन ग्रन्थो मे इसके योग दिये है वह निम्न है।

(१) वग सीसा और जस्ता समभाग कडाई मे पिघला कर पोस्त डोडा, भाग किसी ग्रन्थकार ने हल्दी चूर्ण भी मिलाया है, इनकी चुटकी देकर घर्षण विधि से भस्म वनावै। किसी ने लोह मूसली से, किसी ने वटदण्ड से रगड कर भस्म वनाने का विधान दिया है, भस्म वन जाने पर कडाई मे उसे एकत्र कर प्याले से ढक ३—४ घण्टे की तीव्र आँच दे। पुन खरल में डाल किसी ने दही की, किसी ने कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर किसी ने ६—७ सेर की, किसी ने १०-१२ सेर उपलो की आँच दी है। पुन किसी ने ३ पुट, किसी ने ७ पुट किसीने १० पुटकी आँच दी है। यह पीले रग की भस्म वनती है। सि यो स., चा चि, अ त, स अ, मि ख, मखजन

(२) उक्त त्रिवग को कडाई मे गलाकर सोरा की चुटकी दे वेरीके दण्डसे रगडकर उक्त विधि से भस्म वनावै। सोरा तिगुना हो। शीतल होने पर निकाल पीस ले। लेखक कहता है इसके सेवन से ३ दिन में श्वास रोग जाता रहता है। सुजाक, प्रमेह मे भी लाभ करता है। मात्रा २ माशे खाड मे दे।

दूसरा ग्रन्यकार कहता है कि भस्म वन जाने के वाद कुमारी रस अर्क दुग्ध और दही की ३-३ भावना व ३-३ पुट दे तो ६ पुट मे उत्तम भस्म वने ।
मखजन , स अ

(३) उक्त त्रिवग को गलाकर शक्कर की चुटकी दे घर्षण विधि से भस्म वनावै । शक्कर त्रिवग से २० गुनी हो । भस्म वन जाने पर वाद में ३-४ घण्टा आच दे उतार खरल में डाल पानी से धो डालै । मात्रा १ रत्ती ।
मखजन

(४) त्रिवग को गलाकर लौग, अजवायन, आक, धनूरा, भाग, हल्दी, वेर इन सवो की चुटकी दे घर्षण विधि से भस्म वनावे । पुन कुमारी रस, दही, धतूरा, शराव प्रत्येक की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की पुट दे, इस तरह ४ पुट दे तो भस्म वनै, यह वलवर्द्धक, कामवर्द्धक, स्तम्भक, व प्रमेह में लाभदायी है । मात्रा १—२ रत्ती । मखजन

(५) त्रिवग को गलाकर निम्व दण्ड से रगड कर भस्म वनावे फिर भस्म का २० वाँ भाग सुवर्ण वर्क इतना ही पारा मिलाय त्रिफला, त्रिकटु, गोखरु इनके मिश्रित क्वाथ से भावित कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३ सेर उपलो की आच दे, पुन भस्मके वरावर विना वुझा चूना और भस्मका चौथाई लाल कसीस(Ammonium dichromet)मिलाय भागपत्र ५सेर आकका दूध ½ सेर शराव १ वोतल इन सवो को वक यन्त्र में डालकर इनका अर्क निकाल ले इस अर्क में उक्त त्रिवग को भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सपुट कर ५ सेर उपलो की आच दे । इस विधि से १०१ भावना व पुट दे तो त्रिवग की उत्तम भस्म वने । मखजन, मि. ख

त्रिवंग भस्म के गुण—त्रिवग भस्म प्रमेह, प्रदर, नपु सकता, निर्वलता, मे प्राय देते है, इसके सेवन से विषयेच्छा वढती है । मात्रा १रत्ती ।

त्रिधातु भस्म

सीसा,जस्ता, पारा सम भाग सवको कढाईमे पिघलाकर वेर फलके चूर्णकी चुटकी देकर पुनर्नवा मूल से रगडता रहे, भस्म वन जानेपर खरल मे डाल रगड कर पानी से धो डाले फिर कुमारी रस की ३ भावना और एक भावना भेड के दूध की दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १ मन उपलो की आच दे तो पीले रग की भस्म वने । अ स.

(२) चादी, वग, पारा सम भाग सकर वनाकर चौलाईके रसकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २॥ सेर उपलोकी आँच दे। इस विधि से २१ पुट दे तो भस्म वने। मात्रा १ रत्ती।

(३) सीसा, वग, पारा सम भाग कढाईमें पिघला कर आक फूलका चूर्ण डाल कर आक मूल से घर्षण विधि द्वारा भस्म वनावे, भस्म वनने पर २—३ घण्टा और आच देकर पीस रखै। मात्रा १ रत्ती। सा अ.

द्विवंग भस्म

(१) वग, सीसा सम भाग पिघला कर लौंग की चुटकी दे आक मूलकी या इमली, पीपल चूर्णकी चुटकी दे निम्व दण्डसे घर्षण विधि द्वारा भस्म वनावै भस्म वन जाने पर सवको एकत्र कर ३—४ घण्टा तीव्र आच दे तो भस्म वने।

आक मूल से रगड़ कर वनी भस्म मधुमेह में अधिक लाभ करती है और लौंग चूर्णकी चुटकीसे वनी भस्मको जिस स्त्रीको भ्रूण वृद्धि न हो रही हो उस स्त्रीको सेवन कराने पर गर्भस्थ वालक खूव वढता है। इन सव विधियो से वनी भस्म प्रमेह, प्रदर, निर्वलतामे लाभदायी है, स्वप्नदोषको दूर करती है। मात्रा१ रत्ती। र सि, मि ख, म, अ, अनु यो. मा.

(२) वग और जस्ता को गलाकर भिण्डी चूर्ण की चुटकी देकर भिण्डी की लकडी से हिलाकर भस्म वनावे तो भस्म वने। मात्रा १ रत्ती। र. सि

(३) जस्ता सीसा पिघला कर सोरा की चुटकी दे घर्षण विधि से भस्म वनावे, पश्चात् सोरा धोकर निकाल दे और उपयोग मे लावे। मात्रा १रत्ती। र. सि.

नीलमणि भस्म

नीलमणि के चूर्ण में वलि मिलाय विजौरा रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधिसे ७पुट दे तो नीलम की भस्म वने। पा. स.

वक्तव्य—नीलम की भस्म वलियोग से वनी हुई अधिक लाभदायी नही। इसकी तो भस्म वनाने की सरल विधि यही है कि नीलम को तपा तपाकर किसी अर्क में वुझाता रहै जव वह खस्ता हो जाय, पीसा जा सके उस समय इसे किसी अर्क की भावना देता रहे, पुन. टिकिया वनाय सम्पुट कर गजपुट की

आँच दे तो उत्तम नीलम की भस्म वने।

पद्मराग

वहुत से वैद्य व हकीम पद्मराग को माणिक्य या चूनी समझते है। रसग्रथो मे कही भी माणिक्य या चूनी का उल्लेख नही हुआ है। पद्मराग तो नीलम का सहोदर है जिसकी कठोरता वज्र से ही एकमात्रा कम है। लाल (माणिक्य) और याकूती (चूनिया) तो इससे विल्कुल ही भिन्न रत्न है, देखो उपोद्घात पृष्ठ १५० रत्नो उपरत्नो के रूप। पद्मराग और नीलम यह आसानी से नही कुटते न आसानी से पीसे ही जा सकते है। इसलिये इन्हे स्तपन विधि द्वारा तपा तपा कर वुझाने से जव यह चूर्ण विचूर्ण होने लग जॉय तव इनको कूटकर भस्म वनानी चाहिए।

पद्मराग भस्म

(१) शिलाजतु शिलाभेद अम्लवेतसके तथा।
चुल्लिका टङ्कण क्षार शिखिपित्तेन भावयेत्॥
अनेन पद्मरागश्च म्रियते पुटयोगतः। र का धे

शिलाजीत, पाषाणभेद, अम्लवेत, रेह (कल्लर), सुहागा इन सवको मोर-पित्त की भावना दे नुगदा वनाकर उसके मध्य पद्मराग को रख सम्पुट कर गज-पुट की आँच दे इस विधि से कुछ पुटे दे तो पद्मराग की भस्म वने।

पन्ना

सस्कृत मे पन्ना को तार्क्ष्य कहते है इसी जाति का एक दूसरा रत्न भी है जिसे सस्कृत में मरकत कहते है इन दोनो में साधारण सा ही भेद है। मरकत और पन्ना दोनो का उपयोग एक सा ही है, गुण भी एक से ही है।

पन्ना भस्म

(१) सोठ चूर्ण को मैनफल के क्वाथ में घोट नुगदा वनाय उसमे पन्ना को रख सम्पुटकर ८–१० सेर उपलो की आच दे, इस विधि से २० पुट दे तो पन्ना की भस्म वने। र त सा

(२) मैंनसिल, हरिताल और वलि को वडहल के रस की भावना दे नुगदा वनाय उसमे पन्ना रख सम्पुट कर कुक्कुटपुट की आच दे, इस विधिसे ८ पुट दे तो पन्ना भस्म वने। र र स-

(३) पन्नाको चूर्णकर गुलाव अर्ककी भावना दे टिकिया वनाय कुमारीके नुगदे मे रख सम्पुटकर १० सेर उपलोकी आच दे तो पन्ना भस्म वने। मि ख

पन्ना भस्म के गुण—विष नाशक है, अम्लपित्त को दूर करता है, रेचक है, शीतल है, उन्माद, योपापस्मार (हिस्टीरिया) तथा मनोलिया, मन्दस्मृति, श्वास, दाह, शोथ, वमन में लाभदायी है। ओज व बलवर्धक है।

प्रबाल चन्द्र पुटी

प्रवाल को सोडाके पानीमें उवालकर धो डाले, सुखाय चूर्णकर निम्बूरसकी या गुलाव अर्क की या चन्दनादि अर्क की भावना देता रहे, जव खूव घुट जाय छाया में सुखाय पीस ले। सि यो सं., स अ, नू वि.

प्रबाल भस्म

(१) स्त्रीदुग्धेन प्रवालञ्च भावयित्वा तु हण्डिके।
मध्येऽपि तक्रसहितं स्थापयेत्तां निरोधयेत्॥
चुल्ल्यामग्निप्रतापेन म्रियते प्रहरद्वयम्। रसे सा स.

प्रवाल को हण्डी मे डालकर स्त्रीदुग्ध की भावना दे, दूध के सूख जाने पर उसमें तक्र डालकर हण्डी को चूल्हे पर रखकर आग जलावे ६ घटा तीव्र आच दे तो प्रवाल की भस्म वने। म अ, मि ख, सि भै मा

(२) मौक्तिकस्य विधिःप्रोक्तः प्रवालेऽपितथाविधिः। र रा सु

अथवा जैसे मोती की भस्म वनाने की विधि दी है उस विधि से प्रवाल की भी भस्म वनावे।

(३) प्रवालको आकदूधमें भिगोय सम्पुटकर २० सेर उपलोकी आच दे। रमू ति

(४) निम्बू रस मे भिगोय सम्पुटकर २० सेर उपलो की आच दे। स अ

(५) प्रवाल को कुमारी के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो प्रवाल भस्म वने। यू सि सं, सि भै मा, चा चि

(६) प्रवाल को रीठा के नुगदे में, या मक्खन में या पीपलचूर्ण और गुलाव फूलमें, या गिलोय और कमलगट्टामें या अनार पत्रके नुगदेमे रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे तो प्रवाल भस्म वने। अ. स, अ. ति., धा. वि., अ की, अ त., चा चि., मि ख,

(७) प्रवाल के वरावर वलि मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया

बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो भस्म बने। धा वि.

(८) प्रवाल को तपाकर केला रस में बुझावे और केला के नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे। मा अ

(९) प्रवाल को गुलाब, खसखास और खुरासानी अजवायव के नुगदे मे रख प्रत्येक की १-१ पुट दे तो उत्तम भस्म बने। अ. त.

प्रवाल भस्म के गुण—कास, श्वास, प्रमेह, प्रदर, ज्वर, निर्बलता, दिमागी कमजोरी, हृदयोद्वेग, पाण्डु, में लाभदायी है, अच्छी दुग्धवर्धक है।

पारद

भौतिक गुण—यह एक द्रव रूप चादीवत् श्वेत आभावान् धातु है। द्रवता के कारण इसकी आणविक स्थिति बहुत शिथिल है इसीलिये यह साधारण उत्ताप पर अन्य धातुओ से मिल जाता है और आसानी से उन धातुओ के भीतर प्रवेश कर मिश्रण बना लेता है, और इसका धातुओ के अणुओं पर इतना प्रबल प्रभाव पडता है कि वह अपनी दृढता, तात्वीयता खो देती है।

मिश्रण—जब पारद किसी धातु में मिलाया जाय तो वह गरम हो जाता है। सैंधजम, पाशुजम जैसी अर्ध धातुओसे मिलाने पर इतना अधिक वेग से उत्ताप बढता है कि उसके सम्मिलन काल में विस्फुटन होता है, चिनगारिया निकलती है और यह उनसे मिलकर यौगिक बना लेता है। प्रयोगो से ज्ञात हुआ है कि यदि सैंधजम् डाला जाय तो उसके एक परमाणु से पारद के पाच परमाणु मिलकर पारद सैंधेत नामक यौगिक का निर्माण करता है और यदि पाशुजम डाला जाय तो उसके एक परमाणुसे पारदके दो परमाणु मिलकर पारद पाँशुजेत का यौगिक निर्माण करता है। इसी तरह यह सोना, चादी से मिलकर भी भिन्न यौगिक के रूपमें परिवर्तित होजाता है, किन्तु इसके यह यौगिक दृढ नही होते। सैंधजम, पाशुजम, चूनजम आदि से बने पारद के यौगिक को पानी में डाल दे तो यह अर्ध धातव तत्त्व पारद को छोडकर जल का विच्छेद कर जल के ऊष्मजन से सयुक्त हो जाते है और उदूष्मिद नामक दाहक क्षार में परिणत हो जाते हैं, ऐसे समय पारद फिर मुक्त हो अपने असली रूप में आ जाता है। पारद की इस शिथिल बन्धनकारी स्थिति को समझकर आजकल रसायन शास्त्री सुवर्ण आदि को शुद्ध रूप में प्राप्त करने के लिये इसे परिवर्तक के रूप में

व्यवहार करते है।

पारद द्रवरूप होने से यह कुछ न कुछ जलवत् साधारणतया हवा मण्डल के उत्ताप पर उडता रहता है। इसकी सत्यता को परखने का आसान तरीका यह है कि एक वडी लम्वी वोतल में सेर दो सेर पारा डाल दे और उस वोतल के मध्य दोलायत्रवत् सुवर्ण या चादी के वर्क लटका दे, वोतल वन्द करके कुछ दिन उठा कर रख दे तो थोडे दिनके वाद आप देखेगे कि वह पत्र खस्ता या भुर-भुरे होकर झडने लग जायगे और उस पारे मे गिर पडेंगे, इससे सिद्ध होता है कि पारद भी जलवत् उडता रहता है।

पारा साधारण ताप व चाप दोनो से शीघ्र प्रभावित होता है इसके इस भौतिक गुण को जान कर ही अनेक प्रकारके ताप मापक व चाप मापकयन्त्रो में इसका उपयोग किया जा रहा है। थर्मामीटर इसी पारदके इस गुणकी करामात है। इसकी परमाणु मात्रा २००६ और घनता १३ ५ है। यदि पारद को शून्य ताप से निम्नतम—३९ श की हिमाक स्थिति पर रखा जाय तो यह जम कर सोना, चादी जैसा कठोर हो जाता है उस स्थिति मे इसे कूट-पीटकर इसके तार या पत्रे भी वनाये जा सकते है।

रासायनिक गुण—यह साधारण हवा मण्डल के उत्ताप पर ऊष्मजन से नही मिलता, इसीलिये यह हवा मे खुला पडा रहने पर कभी मलिन नही होता, इसकी आभा-प्रभा सदा ही चादीवत् स्थिर वनी रहती है, किन्तु ३६० श के उत्ताप पर खुला रख कर गरम किया जाय तो फिर यह ऊष्मजन से सयुक्त हो ऊष्मिद (पा ऊ) वन जाता है। यह लाल वर्ण की पारद भस्म होती है। ऊष्मोन (Ozon) तीन ऊष्मजन परमाणुके सगठनसे वनने वाले इस वायव्य को पारद की वोतल मे छोडा जाय तो पारद साधारण उत्ताप मे ही उससे मिल कर ऊष्मिद में परिणत हो जाता है। पारद पर हल्के वलिकाम्ल या लवणाम्ल का कोई प्रभाव नही होता, किन्तु सान्द्र वलिकाम्ल के साथ ३६० श तक गरम किया जाय तो पारद वलि के साथ मिल कर वलिकेत मे परिणत हो जाता है, यह पारद की सफेद भस्म वन जाती है जो कैलोमल के नाम से ऐलोपैथिक में व्यवहृत होतीहै। इसपारद भस्मके साथ वरावरका नमक मिलाकर काचकूपीमे रख ३०० श तक गरम करे तो उक्त पारद भस्म फिर रसकपूर नामक नये भस्म के रूप मे वदल जाता है, जिसके यौगिक का परिवर्तन निम्न रूप मे होता है।

प्रथम वलिकाम्ल से—पा + २उ$_2$व ऊ$_4$ = पा व ऊ$_4$ + २उ$_2$ ऊ + व ऊ$_2$

पुन लवण से—पा व ऊ$_4$ + २ से ल = पा ल$_2$ + से$_2$ व ऊ$_4$ पारद की इस प्रकार वनने वाले यौगिको की सहायता से पारद की युयुक्षा शक्ति को जाना जा चुका है, पारद की युयुक्षा इसी आधार पर जानी गई है कि किस तत्त्व से यह कितने प्रकार में मिल कर यौगिक निर्माण करता है।

हमारे रस ग्रन्थो में पारद की श्वेत, लाल, काली, पीली, नीली कई प्रकार की भस्मो के निर्माण का उल्लेख आता है, उनमें से रस कपूर, दारचिकना नाम से इसकी श्वेत, और वलि योग से विना अग्निके घर्षण विधि द्वारा काली, उत्ताप से लाल भस्म तो समस्त वैद्य वना लेते है, किन्तु नीली और पीली भस्में जिन वनस्पतियो के योग से वनती है वह आज तक किसी वैद्य से वनती नही देखी गई। किम्वदन्ती है कि पारद की श्वेत भस्म वनस्पति योग से भी वन जाती है, यदि ऐसा हो तो जव तक वह सामने न आवै और उसके यौगिक को विश्लेपण कर देखा न जाय तव तक वह किस रूप की है कुछ कहा नही जा सकता। रसायन शास्त्र के सिद्धान्त इस सम्वन्ध मे प्रायोगिक विधियो से जो सिद्ध करते है वह तो यह है कि पारद की किसी वनस्पति से मिल कर कोई भस्म वनने की सम्भावना नही, यदि है तो वह ऊष्मजन से है, यदि कोई उत्प्रेरक वनस्पति की सहायता से पारद ऊष्मजन से सयुक्त हो जाय तो वह लाल वर्ण की भस्म वनेगी न कि श्वेत।

हमने देखा है, कई ठरकी विरादरी के व्यक्ति स्फटिकम (अल्युमीनियम) की कटोरी में किसी वनस्पति का रस दो चार वूद डाल कर १-२ रत्ती पारा उसमें डाल कर अगुली से उस कटोरी मे पारे को रगड़ने लगते है, रगडने से पारद वनस्पतिमें मिलकर सूक्ष्म कणोमें विभक्त होता चला जाता है और कटोरी से लग जाता है, उस समय वह उत्प्रेरक का काम करता है, इससे स्फटिकम की कटोरी ऊष्मजन से मिल कर ऊष्मिद (स्फ ऊ$_3$) मे परिणत होने लगती है, ज्यादा देर तक मल कर रख दे तो उस कटोरी के आस पास सफेद भस्म एकत्र हो जाती है और कटोरी में जहा तहाँ गढे पड जाते है। वे ठरकी विरादरी के व्यक्ति उसे पारद की भस्म वताते है। जो वास्तवमें अल्यूमिनियम की होती है।

वास्तव में पूर्वाचार्यों ने जो पारद की भस्मे वनाई थी उन्ही भस्मोको आज भी हम सफलता पूर्वक वनाते चले आरहे है, जो नही वनती उनका उल्लेख उनके

ग्रन्थो में अवश्य है और वे कहते है कि यह भस्म बनती होगी किन्तु वैद्यो से अब नही बनती। जो भस्में परम्परा से बनती चली आ रही है हम सर्व प्रथम उन्ही का उल्लेख करेंगे।

पारद् भस्म प्रकार—

सूतभस्म द्विधा ज्ञेयमूर्ध्वगं तलभस्म च।
ऊर्ध्वं सिन्दूर कर्पूर रसावन्याद्धौभवेत्॥

र रा श, वृ यो, त र, रा सु

पारद भस्म दो प्रकार की होती है एक ऊर्ध्वलग्न दूसरी तललग्न, ऊर्ध्व-लग्न तो रस सिन्दूर, रसकपूर, दारचिकना आदि है इनसे भिन्न नीचे लगने वाली दूसरी तलभस्म भी दो प्रकार की है एक विना अग्निस्पर्श के दूसरी अग्निसम्पर्क वाली। यथा-

अन्यच्च—

सूतं गन्धक संयुक्त कुमारीरस मर्दितम्।
कृष्ण वर्णं भवेद्भस्म देवानामपिदुर्लभम्॥

आ वि., नि र र रा.सु, र सा प, पा स

पारा बलि बराबर मिलाकर एक दिन खरल करे, दूसरा ग्रन्थकार कहता है कि इसे कुमारी रस की भावना दे तो विना अग्नि सम्पर्कके श्यामवर्ण की पारद भस्म बने, इसी का अन्य आचार्यों ने कज्जली नाम दिया है। इसी पारद भस्म को साधारण आच देकर जब उसकी पपडी बनाई गई तो इसका नाम आचार्यो ने पर्पटी रखा। यथा—

शुद्धे सूते शोधित गन्धक चूर्णेन तुल्यता कार्या।
तावन्मर्दनमनयो र्यावन्नकणोऽपि दृश्यते सूते।
पश्चात् कज्जल सदृशं चूर्णं लोहोत्थित यत्नेन।
निर्धूम वदरकाष्ठाङ्गारे न्यस्तं विलिप्य तैलसमम्।
सद्योगोमयनिहिते कदलीदले ढालयेन्मृदुनि।
लोहोत्थितमवशिष्टं कठिनं तत्र ग्रहीतव्यम्।
पश्चात्पर्पटिरूपा पर्पटिका कीर्त्यते लोके।
मयूरचन्द्रिकाकारं लिङ्गं यत्र तु दृश्यते।

रसे सा स, रसा सा, र. चि, व से, भा प्र, वृ नि. र, र च, यो

र, वृ नि. र, र प्र सु, रसे. चिं, यो त, भै र, र रा सु. भा भै. र,

विमल पारद और वलि को खरल में तब तक घोटे जब तक दोनो अच्छी तरह मिलकर कज्जल सदृश न हो जाय, और पारद का कोई कण रह न जाय उस कज्जली को लोह की भारी करछी मे डाल कर धूम्र रहित वेर की लकड़ी के अङ्गारो पर करछी को रखकर गरम करे, जव वह तेल सदृश लेपन योग्य हो उसे गोवर का समतल स्थान वनाकर उस पर केला का पत्ता विछाय वह द्रव उस पत्ते पर उडेल दे और दूसरे पत्ते से दवाकर पतला कर दे, जो अवशिष्ट उस करछी में रह जाय उसे छोड दे। यह पर्पटी नाम से ससार प्रसिद्ध पारद भस्म है। इसमें कही कही मयूर की चन्द्रिकाकार के चिह्न परिलक्षित होते हैं।

वक्तव्य—अव पर्पटी को निम्नविधि से वनाना चाहिये। एक काफी भारी लोहेकी करछी या पीतल की करछी ले उसे अग्निपर रख दे जव वह गरम हो जाय उतार ले, उसे साफ कर उसमे जरा सी कज्जली चुटकी से डालकर देखे कि वह पिघलती है कि नही। यदि कज्जली करछी में डालते ही पिघलने के साथ ही जल उठे तो करछीको कुछ ठण्ढी करे यदि कज्जली न पिघले या कम पिघले तो करछी को जरा और गरम करे। वास्तव में करछी का उत्ताप ३०० श के भीतर और २५० श के ऊपर रहना चाहिये तो कज्जली अच्छी तरह पिघलती है। कज्जलीको करछी में डालनेपर करछीका उत्ताप कज्जली ले लेती है और करछी ठण्ढी होने लगती है उस समय उसे जरा और आच पर रखकर गरम करे तो उस करछी का उत्ताप फिर वढ जाता है। जव कज्जली करछी में डाली जाय तो उसे चम्मच से हिलाते रहना चाहिये। धीरे-धीरे उस मन्द आच पर सारी कज्जली पिघल जायगी। जव करछी ठण्ढी होने लगे उसे जरा आच पर रखकर गरम कर ले वह फिर जैसी की तैसी द्रव वनी रहेगी। ३००° श पर उस कज्जलीको घटा भर तक रखे रहे तव वह कुछ सघन हो जाती है। कज्जली को द्रव करने से पूर्व गौ के गोवर का एक छोटा सा दो अगुल मोटा चवूतरा वना ले और उस गोवर के चवूतरे पर केले का पत्ता फैलाकर विछा दे पिघली हुई कज्जली को चम्मच से भरकर शीघ्रता से उस केले के पत्ते पर ढाल कर उसी चम्मच से शीघ्र फैला दे और दूसरे केले के पत्ते से उसे ढक कर जोर से दवा दे तो कज्जली और फैलकर पपडी सी वनकर जम जाती है। केले के

पत्ते पर कज्जली को ढालने और जमाने में शीघ्रता से काम ले, क्योंकि कज्जली जब केले के पत्ते पर ढाली जाती है तो जल्दी ठण्डी होकर जमने लगती है। हमारी बताई हुई इस विधि से पर्पटी बनाने पर १ माशा भी कज्जली उस करछी मे न तो रहने पाती है, न वह जलती है न किसी तरह खराब होती है सारी की सारी ठीक बन जाती है।

इस कज्जली से आगे पारद की और भी कोई भस्म बन सकती है ? इस पर भिन्न भिन्न रसाचार्यों ने आरम्भ में जो प्रयोग किये थे उनके कुछ उदाहरण हम आगे दे रहे है —

सूतश्चतुष्पलमितः समशुद्धगन्धः स्याद्धूमसारिपचुरेकमिदं क्रमेण।
सम्मर्दयेद्विमल दाडिमपुष्पतोये वस्त्रं विमिश्र्यासितसोमल मापकेण।
एतन्निधाय सकलं जलयन्त्रगर्भे सम्मुद्र्यसन्धिमुदितेन पुराक्रमेण।
आपूर्य यन्त्रमुदकेन दिनानि चाष्टौ वह्निं क्रमेण तदधो विदधीत विद्वान्।
पश्चाच्च तज्जलमुदस्यरसंतलस्थ मादाय भाजनवरेसुभिषडनिदध्यात्।
सम्पूज्य शम्भुगिरिजा गिरिजातनूज मद्याच्छुभेऽहनि रसं वरमेकगुञ्जाम्
व. यो त, भा भै र

पारा १६ तो० वलि १६ तो० घर का धुआ १ तो० सोमल १ माशा, सवको घोट कज्जली वनाय अनारफूलरस की १ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय जलयन्त्र के गर्भ मे रख सन्धि वन्दकर जलयन्त्र के पात्र को सदा जल से भरा रखकर उस सम्पुट पर आठ दिन वनोपल की आँच देता रहे तो पारद की तल भस्म वने। इस जलयन्त्र का स्वरूप निम्नलिखित विधि मे ग्रन्थकार वताता है। यथा —

आकण्ठ कलशे भूमौ निखाय जल सम्भृतम्।
शरावतन्मुखे स्थाप्यो मध्ये छिद्रसमन्वितम्॥
नीरावियोगिनीं तत्राच्छिद्रेकाचविलेपिताम्।
मृन्मूषांस्थापयेत्तस्य चोर्ध्वाधस्तुल्यगन्धकम्॥
रसं निक्षिप्य तस्योर्ध्वं शरावेण विमुद्रयेत्।
वन्योपलाग्नि तस्योर्ध्वं ज्वालयेद्गुरुमार्गतः॥
स्वाङ्गशीतं समुद्धृत्य पुनस्तुर्यांश गन्धकम्।
दत्त्वा पूर्वक्रमेणैव जायते षड्गुणांवलिम्॥
षड्गुणे गन्धके जीर्णे स्याद्रसः सर्वरोगहा। वृ यो त

एक वडे मु ह के घडे को गले तक भूमि में दवा दे उसमे गले तक जल भर दे। एक मिट्टी का शराव जिसके मध्य मे २ सूत का छेद निकाला गया हो उम घडे पर ढक दे उस छेद पर एक काच का टुकडा रख दे और लेप दे। उम शराव पर एक मिट्टी की घरिया मे वलि के मध्य पारा रखकर उसे दूसरे प्याले में ढक दोनो प्यालो का सम्पुट कर सुखाय उनके ऊपर जगली उपलो की अग्नि जलावे। इसी विधि से पारे के वरावर प्रतिवार वलि देकर वलि जारण करे तो यह पड् गुणवलि जारित पारद भस्म समस्त रोगो को मष्ट करे। उक्त ग्रन्थकार ने इस यन्त्र का नाम गडुका यन्त्र दिया है किसी ने इसका कच्छप यन्त्र किसी ने जलयन्त्र नाम दिया है।

(२) सूते गन्धरसैकांश निक्षिप्य मृदु खल्वके।
तावत्संपुटयेत्पिण्ड भवेद्यातान्नपत्रगे।
तत्तुल्य गन्धकं दत्त्वा रुद्ध्वा तल्लोह सम्पुटे।
पुटयेद् भूधरे यन्त्रे यावज्जीर्यति गन्धकः॥
एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावज्जीर्यति षड्गुणः। वृ यो त

पारद के वरावर बीजावोलको ले खरल मे डाल नरम हाथोसे तव तक कूटे व घोटे जव तक दोनो मिलकर एक रूप न हो जाय, फिर पारद के वरावर वलि मिलाय खरलकर लोह के सम्पुट में वन्द कर भूधरयन्त्रमें रख उसके ऊपर वनोपल की आँच जलावे, कमसे कम ४ घटा आच लगे इतनी आच दे। पुन निकाल इसी विधि से ६ वार पड्गुण वलि जारण करे। अन्यच्च —

(३) मृदुमृदारचितामसृणेष्टिका उपरिगर्तवरेण च संयुता।
रस वरं दश शाणमितंहितत्सशुकपिच्छ वरेण निधापयेत्॥
सकल पूर्ण कृतं च सुगर्तकं गलितनिम्वफलोद्भव केन वै।
स्थगय तं च पिधानवरैणवै मृदितया सुमृदापरिमुद्रितम्॥
तदनु कुक्कुट नाम पुटे शृतोह्युपलकेन वनोद्भव केन वै।
विधिविदाभिपजाह्यमुनाकृतो विमल षड्गुणगन्धकमश्नुते॥
र प्र सु

मुलायम मिट्टी की एक ई ट सी वनाकर उसके मध्य एक वडा सा गढ वना दे, उसमे २॥ तो० पारा और २॥तो०वलि डालकर फिर उसमें निम्वू रस भर दे पुन ईंट से ढक कर सम्पुटकर कुक्कुट पुट की आँच दे तो वलि जीर्ण

हो, इसी विधि से ६ बार करे तो षड्गुण जारित पारद सिद्ध हो ।

वक्तव्य—ईंट मे सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आंच देने से वलिजीर्ण नहीं होता, इसमे अधिक आंच देना चाहिये ।

(४) मेघनाद वचाहिंगु लशुनं काकमाचिका ।
धत्तूरो लवण कन्या सर्वसूत विमर्दयेत् ॥
दिनान्ते गोलकं कृत्वा हिङ्गुनावेष्टयेद्वहिः ।
पचेल्लवणयन्त्रस्थं दिनैकं चण्ड वह्निना ॥
ऊर्ध्वलग्नं समादाय दृढं वस्त्रेण गालयेत् ।
काकमाच्या नागनेत्र्या हन्सपाद्या विमर्दयेत् ॥
तंक्षिपेदिष्टिका यन्त्रैः समं गन्धक चूर्णकम् ।
दत्त्वा दत्त्वा पुटेपच्याद्यावज्जीर्यति षड्गुणम् ॥
मृतस्तत्र न सन्देहो सर्व कार्येषु योजयेत् ।

र सागर ,र यो सा.

पारे को चौलाई, वच, हीग, लह्सुन, मकोय, धतूरा, नमक, कुमारी प्रत्येक की १-१ भावना दे सुखाय हीग के नुगदे में रख सम्पुट कर लवण यन्त्र मे दाबू दे एक दिन की तीव्र आंच दे, सम्पुटमें ऊपर लगे पारे को निकाल कपड़े में छान खरलमें डाल मकोय, सर्पाक्षी, हन्सराज, प्रत्येककी १-१ भावना दे टिकिया बनाय इष्टिका यन्त्र में रख बराबर के वलि का दाबू दे सम्पुट कर न० ३ की विधि से आंच दे, इस प्रकार षड्गुण वलि जारण करे ।

(५) सूतप्रमाणे सिकताख्य यन्त्रे दत्त्वावलिंमृद्घटितेऽल्पभाण्डे ॥
तैलावशेषे ऽत्र रसनियुज्यान्मग्नार्ध कायं प्रविलोक्यभूयः ।
आषड्गुण गन्धकमल्पमल्पक्षिपेदसौ जीर्णवलिर्वलीस्यात् ॥
रसेषु सर्वेषुनियोजितोऽयमसंशय हन्तिगद जवेन ॥

वृ यो त

पारे के बराबर वलि ले, वलि को एक लोहे के प्याले या करछे में डाल वालुका यन्त्र पर रख मन्द मन्द आंच पर पिघलावे और उस पर आंच लगाता रहे धीरे धीरे वलिकी द्रवता जाती रहेगी और वह गाढा हो जायगा उसमें पारा डाल कर दोनो को मिलावे जब उसमें वलि का अंश न प्रतीत हो कज्जली बन जाय तो उसमे और पारद के बराबर वलि डाल कर उस वलि का भी इसी

प्रकार जारण करे इस विधिसे षड्गुण वलि जारण करे यह षड्गुण वलि जारित पारद को निकाल रक्खे, इसे समस्त रोगों में संशय रहित होकर उपयोग में लावे ।

(६) रसविदाऽपि रसः परिशोधितो विगतदोष कृतोऽपिहि गन्धक ।
विमल लोहमय कृत खर्परेह्यमलासररजः परिमुच्यताम् ॥
अतिकृशाग्नियुतेद्रवति स्वयं तदनुतत्र रस. परिमुच्यताम् ।
विशद लोह मयेन च दर्विणा विघटयेत्प्रहरत्रयसम्मितम् ॥
तदनु काच घटीं विनिवेश्य वै सिकतयन्त्रवरेणहिपाचिता. ।
द्विदशायाममथः कृतवह्निना भवतिरक्तरसस्तल भस्मसात् ॥
गतवलेन नरेणसुसेवितो भवतिवाजिकरः सुखदः सदा ।
स च वलीपलितानि च नाशयेच्छतशरत्सु निरामय कृत्परम् ॥

र प्र मु, भ भै र

निर्मल पारा और वलि समभाग ले वलि को कढाई मे पिघला कर उस में पारा डाल मन्द मन्द आच पर उसे करछी से चलाता रहे तो तीन प्रहर में वह वलि धीरे धीरे जल जायगा फिर उसे काच कूपी में डाल वालुका यन्त्र में रख १ प्रहर की आच दे तो तललग्न रससिन्दूर बने । इसका नाम ग्रन्थकार ने रक्त रस रखा है । यह वाजिकर है वलि पलित नाशक है । इसे ६ वार उक्त विधि से बनावे तो षड्गुण वलि जीर्ण पारद बने ।

(७) गन्धकं सुदृढंस्थूलं निर्माणंजात्यमद्भुतम् ।
वर्तुलं छिद्रित कृत्वा मध्येशुद्ध रस क्षिपेत् ॥
उपरिष्टात्पुनर्गन्धं डालिका मुखमुद्रणम् ।
अथ शलाकयापश्चात्सर्वशः सन्धिरोधनम् ॥
सूत्रेणावेष्टयेद्गन्धं भिद्यतेन यथाभृशम् ।
दोलासुस्वेदयेद्गन्धं वेदप्रहरमात्रकम् ॥
रसगन्धान्य पाषाणे पुनरेन निधापयेत् ।
एव निष्पद्यतेस्वच्छः पद्मरागनिभप्रभः ॥
अद्भुतः सर्व कार्याणिवांच्छितानि च साधयेत् ॥

र चि, र ज नि

वलि को पिघला कर गोल गेंद के आकार मे ढाल ले फिर उस गोले ।

खोद कर गढा बनावे उसमे पारा भर कर बलि चूर्ण से सम्पुट कर उसे गरम गरम सलाई से बलि चूर्ण को पिघला कर सन्धिवन्द कर एक रूप गोला बनाय उसपर सूत लपेट पानी से भरे देग में लटका कर दोला यन्त्र विधि से उसे ४ प्रहर स्वेदन करे, प्रतिदिन इसी प्रकार पारे को निकाल नये बलि की गेंद में भर कर स्वेदन करता रहे तो ग्रन्थकार कहता है ७ दिन स्वेदन करने पर पारा लाल वर्ण की चमकदार भस्म में परिणत हो जायगा। यह अद्भुत भस्म समस्त इच्छित कार्यों का साधन करेगी।

(८) सूतार्धं गन्धकं दत्त्वा लोह पात्रे विनिक्षिपेत्।
वह्निं प्रज्वालयेन्मन्दं स्नुह्यर्क क्षीरमाहरेत्॥
चालयेत्खदिरदण्डेन क्षीरं दत्त्वा पुनःपुनः।
अग्नियामाष्टकं दद्याज्जायते सूतभस्मकम्॥ नि र,शा नं

पारे से आधा बलि दोनो को कज्जली बनाय लोह पात्र मे डाल थोहर और आक दूध का चोया देता हुआ मन्द मन्द आंच पर पकाता रहे और खैर के डण्डे से हिलाता रहे तो इस विधि से ८ प्रहर करते रहने पर पारद की भस्म बने।

(९) विशद सूत समोपि हि गन्धकस्तदनुखल्वतले सुविमर्दित.।
त्रिदिनमेव हि हंसपदीरसे दिनकरस्य करेण सुशोषितः।
विमललोहमये दृढखर्परे तदनु कज्जलिकां प्रतिमुच्य वै।
करमिता सुकृताऽपि हि चुल्लिका ह्युपरि तत्र निवेश्य च भाजनम्
अमललोहमयेन च दर्विणा रसवर नियतं परिमर्दयेत्।
तदनुवह्निमधः कुरु वै दृढं सततमेव हि यामचतुष्टयम्।
सुपच एप रसो जलदोपमो भवति वल्लमितोमधुना युतः।

र प्र सु, र. च

पारा बलि बराबर ले कज्जली बनाय हन्सराज के रस की भावना दे सुखाय इस कज्जली को कढाई मे रख आंच दे और उस कज्जली के पिघलने पर उसे करछी से घोटता रहे। इस प्रकार ४ प्रहर की आंच दे तो उस पारे की बादल जैसे वर्ण की भस्म बने। इसकी मात्रा ३ रत्ती है। यह शहद के साथ देने पर क्षय को दूर करता है, कामचेष्टा बढाता है। बलि पलित व

कुष्ठ का नाशक है।

(१०) शुद्ध सूतं समं गन्धं वटक्षीरे ¹विमर्दयेत्।
पाचयेन्मृत्तिकापात्रे वटकाष्ठै विघट्टयेत्।
लव्वग्निना दिनं पाच्यं भस्मभूतं भवेद्ध्रुवम्।
द्विगुणं पर्ण खण्डेन पुष्टिमग्निं च वर्धयेत्॥

र. च., यो र, र. त, यो चिं, र रा मु, भा भै र.

१ विचालयेत् योगचिन्तामणौ इति पाठ ।

पारा वलि की कज्जली वनाय वटदुग्ध की १ भावना दे मिट्टी के पात्र में डाल चूल्हे पर चढाय मन्द मन्द आच पर वटजटा के दण्ड से रगडता रहे तो ४ प्रहर इस प्रकार आच देने से ग्रन्थकार कहता है पारद की भस्म वने। इसे पान के पत्ते पर रखकर १–२ रत्ती की मात्रा खाते रहने से भूख वढती है और शरीर पुष्ट होता है।

(११) स्तोक स्तोक गन्धकं सूतराजं दत्त्वा दत्त्वा ताम्रपत्रे निघृष्टम्।
शीघ्रं पिष्टी जायते सद्विगन्धान्मन्दं पच्याद्भूधरे भस्मसूतः

टो, पा. स

तावे के प्याले में पारे को डाल उसमें थोडा थोडा वलि डालता हुआ रगडता रहे तो पारद की शीघ्र पिप्टी वन जाती है। इस प्रकार पारद में दूना वलि देकर पिप्टी वनाय सम्पुट में रख भूधर यन्त्र में दवाय उस पर ४ प्रहर की आच दे तो पारद की भस्म वने।

(१२) पल सूतं पलं गन्धं कृष्णोन्मत्तद्रवै स्त्र्यहम्।
मर्दितं वज्रमूषायां वह्निं कृत्वा तु ध्मापयेत्।
दिनान्ते तं समुद्धृत्य तद्वन्मर्द्य विपाचयेत्।
एवं सप्तदिनं कुर्यान्मृतो भवति हि रस ॥

र. का. धे, र प्र सु

रसप्रकाश सुधाकरे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

पारा वलि ४–४ तो० कज्जली वनाय काले धतूरे के रस में ३ दिन भावना दे सुखाय दृढमूषा में सम्पुट कर धमावे (आच ३५० श से अधिक न लगे) सारे दिन इस तरह आँच देकर शाम को शीतल होने पर अगले दिन उक्त विधि से धतूरा की भावना दे फिर धमावे। इस तरह ७ वार करने पर

पारद की भस्म वने।

(१३) सशुकपिच्छ समोपि हि पारदो भवति खल्वतलेन च कुट्टितः।
दृढतरामुपकल्पय पर्पटीं वसनवद्धकृतामपि पोटलीम्।
उपरि नागरसेन विलेपिता रविकरेण सदापरिशोपिताम्।
कनकपत्ररसेन च सप्तधाऽप्यवनिगर्ततले विनिवेशय।
अवनिगर्त भरीतिक्रमायत द्विदशमङ्गुलमेव सुनिम्नकम्।
सिकतया परिपूर्ण तदर्धकं तदनु तत्र निवेशय पोटलीम्।
उपरि वालुकया परिपूर्य तच्छगणकैश्च पुटं परिदीयताम्।
द्विदश याममथाग्निमहो कुरु भवति तेन महारस पोटली।
इति मया कथिता रसपोटली वलकरा सुकरा सुख सिद्धिदा।

र प्र सु

पारा वलि वरावर कज्जली वनाय पर्पटी वनावे, उस पर्पटी को पीस पोटली वाव उस पर पान के रस का लेप चढाय सुखाय धतूरा पत्र के नुगदे में रख सम्पुट कर १२ अगुल के गहरे गढे में रख मिट्टी या वालू का दावू दे उस पर १२ प्रहर की आच दे तो यह महारस पोटली नामक पारद की भस्म वने।

(१४) निर्गुण्डिकापत्र रसैः पारदं परिमर्दयेत्।
गन्धकेन समे घर्मेतीव्रे यामत्रयं सदा॥
हण्डिकायन्त्र मध्यस्थ विमुञ्चकुशलोनरः।
समुत्थाप्य पुनर्नीत्वा घृतादिपरिमर्दितः॥
धम्यते वह्नियोगेन कीदृग्रूपं रसंभवेत्।
तन्मध्यगं पुनः सूतो [1]सुश्वेत नयति [2]पृथक्॥
पुनर्घृतादिभिर्घृष्ट्वा वह्नियोगेन वध्यते।
अयाति पारदः पुंसामतिवल्लभउत्तमः॥

र चि ,रसे चि ,र का धे र ज.नि

१ श्वेतोऽप्यनीयते पृथक् रसजलनिधि इतिपाठ. २ जायते भृशम् रसेन्द्र-चिन्तामणि इति पाठ।

पारद को सभालू रसकी भावना दे इसी प्रकार पारे के वरावर वलिको भी सभालू रस में ६ घटे खरल कर दोनो की कज्जली वनाय सुखाय सम्पुटकर लवण यन्त्र या वालुका यन्त्र में दावू देकर ४ प्रहर की आँच दे, फिर निकाल

उसे खरल मे डाल घी से घोट टिकिया वनाय मूपा में सम्पुट कर धमावे तो किट्ट रूप पारद मिले । उसे पुन घी मे घोट टिकिया वनाय सम्पुट कर उसी प्रकार धमावे तो पारद भस्म वने ।

(१५) समांशं घोटयेच्छुद्ध पारदंगन्धक तथा ।
नागार्जुनी रसैर्मर्द्य सुरसावाकुचीभवैः ।
मयूरपर्णी कौमारी मधुयष्टी समुत्थितैः ॥
वाराह कर्णी स्वरसैः वहुफल्यास्तथैव च ।
एतासां रसमादाय भावनायां पृथक्पृथक् ।
कुक्कुटाण्डं तत्र घृष्ट्वा छिद्रयुक्तं समाचरेत् ॥
तत्रास्थित च निष्कास्य तत्रभृत्वा महारसम् ।
वस्त्र मृत्तिकयाऽऽलिप्य कौक्कुटं च पुट चरेत् ॥
पक्वं नीतं पुनर्मर्द्य पुनः पक्व पुनस्तथा ।
एवं त्रिवार संस्कारे रसरक्तोऽमृतोपमम् ॥
क्षुधाकरं वीर्यकरं वलवर्णोऽग्नि वधनम् ।

र.रा सु ,र यो सा

निर्मल पारा वलि सम कज्जली वनाय दूधी, तुलसी, वावची, मोरशिखा, कुमारी, मुलहटी, वाराहीकन्द, वहुफली प्रत्येक के रस या क्वाथ की १-१ भावना दे सुखाय मुर्गी केअण्डे को खाली कर उसमे कज्जली भर सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे । पुन निकाल उक्त वनस्पतियो की भावना व इसी विधि से पुट दे, इस तरह ३ वार करे तो यह राक्षस रस नामा पारद की भस्म वने । यह अत्यन्त क्षुधावर्धक वीर्यवर्धक, रक्तवर्धक, अग्निवर्धक है ।

(१६) गोघृतं गन्धके सूत पिष्ट्वापिण्डीं प्रकल्पयेत् ।
कुमारी दल मध्यस्था कृत्वा सूत्रेण वेष्टयेत् ॥
ता कान्ते सम्पुटे रुद्ध्वा त्रिभिर्लघु पुटैः पचेत ।
ततो ध्माते भवेद्भस्म चान्धमूषे. रसोद्भवम् ॥

आ क, र. ज नि

आनन्द कन्देभिन्न पाठ प्रतिपादित ।

पारा वलि सम की कज्जली को गौ के घी में घोट टिकिया वनाय कुमारी के नुगदे मे रख सूत से लपेट लोहे के सम्पुट मे वन्द कर लघुपुट की आच दे

इर्मविधि मे ३ वार करे पुन उसे दृढ मम्पुट मे वन्द कर धमावे तो पारद की भस्म वने।

(१७) रसेन सितवर्षाभ्वा रसं द्विगुण गन्धकम्।
घृष्टं पचेच्च मूषाया द्वौ माषौ तस्य भक्षयेत्॥
गोपाल कर्कटी मूलं कुलत्थोदैः पिबेदनु।
गोकण्टक सदाभद्रा मूलक्वाथ पिबेन्निशि॥
अयपाषाण भिन्नान्ना रस पाषाणभेदकः।

र र स, र यो सा

पारे से दूना वलि मिलाय कज्जली वनाय पुनर्नवा रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे तो पारद भस्मवने। इसकी मात्रा दो माशा है ककडी के मूल क्वाथ से या गोखरू गम्भारी मूल क्वाथ से कुछ दिन निरन्तर सेवन करे तो यह पथरी को तोड कर निकाल देती है इसका नाम पाषाण भेदी रस है।

वक्तव्य—गोपाल कर्कटी लतायाम् इति वैद्यक शब्द सिन्धौ प्रतिपादित। प० हरीप्रपन्नजी ने गोखक्ष कर्कटीको समान अर्थी माना है, वास्तव में गोपाल कर्कटी खाने वाली इसी ककडी को कहते हैं, जिसके मूल और वीज का उपयोग यूनानी में अश्मरी, मूत्रकृच्छ पर होता है।

(१८) अप्रसूतगवा मूत्रैः पेषयेदुक्त मूलिका।
तद्द्रवैर्मर्दयेत्सूतं तुल्यगन्धक सयुतम्॥
तप्तखल्वे चतुर्याममविच्छिन्नं विमर्दयेत्।
तत्पिण्ड पाचये द्यन्त्रे त्रिसंघट्टे महापुटे॥
एवं दशपुटे धार्यं मर्द्य पाच्यं पुनः पुनः।
ततो धृत्वा पुनर्मर्द्य वज्रमूषानिरोधयेत्॥
भूधराख्ये पुटे पाच्यं दशधा भस्मतां व्रजेत्।
द्रवैः पुन पुनर्मर्द्य सिद्धोऽत्रभस्मसूतकैः॥

रसे चि, र. का धे

सिद्धमूली नामक वनस्पति को वछिया के मूत्र में पीसे उसके रसमे पारद वलि की वनी कज्जली को तप्त खरल मे ४ प्रहर मर्दन कर टिकिया वनाय सुखाय दृढ सम्पुट कर वालुका यन्त्र मे रख पुन सम्पुट कर गजपुट की आच

दे। इस प्रकार १० पुट दे। या भूधर यन्त्र मे रख कर पुट दे उक्त विधि से १० पुट दे तो पारद की भस्म वने।

(१६) नियासकौषधैर्मर्द्य चतुर्याम रसेद्दढं।
द्विगुणेगन्धतैले च शनैर्मन्दाग्निना पचेत् ॥
यावद् घोटत्वमाप्नोति तावदेव पचेद्रसम्।
तद् घोट सम्पुटे लोहे क्षिप्त्वा रुद्ध्वा दृढं सुधी. ॥
पथ्या जलै लोंह किट्टं पिष्ट्वा सम्पुट मालिखेत्।
तस्योर्ध्वे आवका काचं कृत्वा नाग विनिक्षिपेत ॥
सनागो द्रवते यावत्तावदेवं भवेत्प्रिये।
यावन्नायाति काठिन्य तावन्नैव धमेत्सुधीः ॥
पुन कठिनतां प्राप्ते धमेत्पूर्वोक्तवन्मुहु.।
त्रियाम धमनादेवं भस्मी भवति पारद. ॥

आ क

नियामक ओषधियो मे ४ प्रहर प्रथम पारद को भावना दे तत्पश्चात् दूना वलि तेल मिलाय मन्द मन्द आच पर पकावे जवतक पारा खोट रूप को प्राप्त न हो तवतक उसे पकाता रहे, फिर उस खोट को लोह सम्पुट मे दृढ वन्द कर उस पर इतनी आच लगावे कि सीसा जिससे पिघल सके इतनी आच में धमावे, वह पारा जवतक वलि से मिल कर कठोरता को प्राप्त न कर ले इसी विधि से पुन पुन. सम्पुट में वन्द कर धमाता रहे। ग्रन्थकार कहता है ६ घटा इस प्रकार धमन करने से पारद भस्म वने।

(२०) रस गन्धक तैलेन द्विगुणेन विमर्दयेत्।
दिनैकं वाऽथ सर्पाक्षी विष्णुक्रान्ताहृभृङ्गजै ॥
त्र्यह विमर्दयेद्रावैस्त्रिसंघट्टे महापुटे।
इत्येव मष्टधा पाच्यं रसोभस्मी भवेद्ध्रुवम् ॥

र र, आ क

आनन्द कन्दे भिन्न पाठ प्रतिपादित।

पारे से दुगना वलि तेल उसमे पारा डाल कर खरल कर सर्पाक्षी (गन्धनाकुली) या भागरा या अपराजिता रस की ३ दिन भावना दे त्रिसघट्ट महापुट (देखो न० १८) मे रख कर पुट दे, इस विधि से ८ पुट दे तो पारद भस्म वने।

(२१) शुद्ध मृतार्धभागेनशुद्ध गन्धेन मर्दयेत्।
मारकौपधजैर्द्रावैर्दिनं मूषागत पचेत्॥
यन्त्रेभूधरकेणैव दिनैनैकेन भस्मांत।

आ क, र म, र.च, र र., र मञ्जरी, र ज नि, ना भे र

अन्य ग्रन्थेषु "कन्यानीरेण समर्द्य" इति पाठ।

पारे से आधा वलि ले मारक औषधियो मे या कुमारी रस में एक दिन खरल कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर भूधर यन्त्र मे रख ८ प्रहर की आँचदे तो पारद भस्म बने।

(२२) [1]तण्डुलीयद्रवैः पिष्ट सूत तुल्य च गन्धकम्।
वज्र मूषागते कृत्वा भूधरे भस्मतां नयेत्॥

र र, र, कौ, नि र, रसा स, र को, वै चि, र चि, र च, भै सा, र स सि., रसा., र.म, र का धे, यो म, व रा, र क ल, टो, र रा मु, र यो सा.

रससिद्धात सग्रहे रसयोग सागरे मर्दयेच्चम्पकद्रवैं इति पाठ।

पारा वलि बराबर कज्जली बनाय काटे वाली चौलाई के रस की भावना दे। रस सिद्धान्त सग्रहमें २००चम्पाके फूलके रसकी भावना दी है—पुन टिकिया बनाय सुखाय दृढ सम्पुट में रख भूधर यन्त्र में ८ प्रहर की आँच दे तो पारद भस्म बने। चम्पा फूलके रसमें भावना देनेपर ग्रन्थकारने उसका नाम चपक पारद रखा है।

(२३) स्नुहीक्षीरेदिनंसूतं मर्दयेत्तदभावतः।
अम्लवल्लीरसैरेवं तं रस गन्धकंसमम्॥
गर्भयन्त्रे विनिक्षिप्य पूर्ववद्विपचेत्पुन।
मृतो भवेद्रसः सोऽयं सर्वरोगहरो भवेत्॥ आ क.

पारा वलि सम कज्जली बनाय थोहर दूध में या अम्लवेत के क्वाथ में १ दिन भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर वालुका यन्त्र में दाबू दे ४ प्रहर की आच दे तो पारद भस्म बने।

(२४) [1]समं गन्ध रस शुद्धं कीट मारिणिका द्रवैः।
अजमार्याऽहि मार्यैवाश्वेताङ्कोल रसेन वा॥
मर्दयेत्त्रिदिनं क्षिप्त्वा मृन्मये सम्पुटेत्ततः।
दिनमेक करीषाग्नौ तुषाग्नौ वा दिन त्रयम्॥

पचेत्ततः सूत भस्म जायते रुग्जरापहम् ।

र र, र त, र ज नि, आ क,

रसरत्नाकरे त्रुटित पाठ[१], घनजीर्णं रसगन्ध आनन्दकन्दे इति पाठभेद ।

पारा वलि सम भाग विडग, अजमारी, अहिमारी या श्वेत अकोलके क्वाथमे कज्जली को तीन दिन भावना दे । आनन्दकन्दकार कहता है पारा अभ्रजीर्ण ले, उसमें वलि मिलाय उक्त वनस्पतियो की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर करीप की अग्नि मे या धान के तुप की अग्नि मं भाण्डपुट मे रखकर ३ दिन की आँच दे तो पारद की भस्म वने ।

(२५) शुद्ध सूत द्विधागन्ध सूततुल्य च सैन्धवम् ।
शमी श्वेता दलद्रावैर्मर्दितं गोलकी कृतम् ॥
नागवल्ली द्रवैर्वेष्ठ्य पाच्यं डमरु यन्त्रके ।
दिनान्तमूर्ध्वं लग्नं तद्ग्राह्यभद्यं त्रिगुञ्जकम् ॥

र र, नि र, रा का धे, र को, रमे र को, र यो मा

पारा नमक १-१ भाग वलि २ भाग जण्ड (छोकर) के कोपलरस की भावना दे टिकिया वनाय पान पत्तो में लपेट डमरु यन्त्र मे रख ४ प्रहर की आँच दे तो ऊपर उडकर रससिन्दूर लगे । मात्रा ३ रत्ती ।

(२६) वलाब्दरवि भूधात्री सस्यघ्नी गोभिकाम्बुभि. ।
मर्दितस्तुर्य भागेन गन्धकेन समन्वित ॥
वेष्टितो हिंगुना फल्गु क्षीरेवाऽर्के दधिस्थजे ।
चूर्ण अभे प्रदेयोऽयमन्तर्लवणमीशजः ॥
अध्मातः शनकैर्वद्धो रसो भवति नान्यथा ।
वक्रस्य वचस. स्थैर्य करोत्यखिलायुजित् ॥

रसे चू, र. का वे.

पारे से चौथाई वजि ले कज्जली वनाय वला, मोथा, आक, भूआवला, शल्लकी, वनगोभी, प्रत्येकके रसकी १-१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय उसपर हीगका लेपकर मुखाय पुन उसपर कठूमरके दूध या आकका दूध जो जम गया हो उस दूधका लेपकर सुखाय कठूमर या आकके सूखे नुगदेमें रख लवण यन्त्रमे दाबू देकर धमावे तो पारा वलि के साथ मिलकर वध जाता है । उस पारे को मुख में रखने से या खाने से समस्त रोग दूर होकर स्वास्थ्य ठीक हो जाता है

और आयु स्थिर हो जाती है ।

(२७) ऊर्ध्वाधस्तात्त्वजीर्णस्य सूतस्य समगन्धकम् ।
निक्षिपेत्सर्वं मूषायां गर्ते द्वाभ्यां चतुर्गुणम् ॥
काकमाची द्रवे दत्त्वा निरुद्धेन क्रमाग्निना ।
[1]पचेत्कन्दुक यन्त्रे च मूषायामचतुष्टयम् ॥
भस्मसाज्जायते सूतो योजयेत्तं रसायने ।

आ क, र मंजरी

रसमजर्याम् भिन्न पाठ प्रतिपादित । [1]पाचयेद्गडुकायन्त्रे रसमजर्यामिति पाठ ।

पारेके वरावर वलि मिलाय उसके नीचे प्रथम वन्हि को जीर्ण कर ले फिर एक मूषा मे डाल दोनो से चौगुना मकोय का रस भर कर सम्पुट कर कन्दुक यन्त्र या हण्डी यन्त्र में रख ४ प्रहर की आच दे तो पारद की भस्म वने ।

(२८) पलमात्रं रस शुद्ध तावन्मानन्तु गन्धकम् ।
विधिवत्कज्जली कृत्वा न्यग्रोधाऽङ्कुर वारिभिः ॥
भावना [1]त्रिदिनं दत्त्वा स्थाली मध्ये निधापयेत् ।
[2]विरच्य कवचा यन्त्रं वालुकाभिः प्रपूरयेत् ॥
दद्यात्तदनु मन्दाग्निं भिषग्यामचतुष्टयम् ।
जायते रस सिन्दूर तरुणादित्य सन्निभम् ॥

रसे सा स, नि र, रमे क, र च, रसे र को, आ प्रा, यो र, यो म, र औ यो, वै वि लघु, र पा, र चि, र का धे, र त, र स क, र र, यो म, र मजरी । [1]त्रितय रस चडाशो रसमजर्यामितिपाठ । [2]विधाय कच्छप यन्त्र रस चण्डाशी इति पाठ ।

पारा वलि ४-४ तो० कज्जली वनाय वटाकुर रस की ३ दिन भावना दे सम्पुट कर वालुका यन्त्र मे दावू दे ४ प्रहर की आच दे या काच कूपी मे भर वालुका यन्त्र में चढाय ४ प्रहर की आच दे तो रससिन्दूर नामा पारद की भस्म वने ।

(२९) धूमसारं रसंतुवरीं गन्धक नवसादरम् ।
यामैक मर्दयेदम्लैर्भागं कृत्वा समं समम् ॥
काचकूप्यां विनिक्षिप्य वालुकायन्त्रगंपचेत् ।

वह्निं द्वादशभिर्यामैर्म्रियते रस उत्तमः ॥

च र. वृ. यो त , आ प्र ,भा प्र ,शा ध , चि र , र मजरी , भा भै र ,

योग तरगिण्या आयुर्वेद प्रकाशे रसामृते धूमसार रहित योग भिन्न पाठ प्रतिपादित , रसमर्जया भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

घर का धुआ (आजकल चिमनी का काजल ले) पारा, फिटकिरी, वलि, नौसादर सब बराबर १ प्रहर निम्बूरस में खरल कर सुखाय काचकूपी में भर वालुका यन्त्र में बिठाय १२ प्रहर की आँच दे तो पारद की रस सिन्दूर नामा भस्म बने । योग तरगिणी, आयुर्वेद प्रकाश और रसामृतकारने भिन्न पाठ दिया है तथा इसमें घर का धुआ नही डाला ।

(३०) गन्धकं धूमसारं च शुद्धसूतं समं समम् ।
यामैक मर्दयेत्खल्वे काचकूप्यां निवेशयेत् ॥
रुद्ध्वा द्वादशयामेषु वालुकायन्त्रगंपचेत् ।
स्फोटयेत्स्वांगशीतं तमूर्ध्वस्थं गन्धकं त्यजेत् ॥
अधस्थंमृतसूतं च सर्वरोगेषुयोजयेत् । र च , र मजरी

वलि, काजल, पारा समभाग एक प्रहर खरल कर काचकूपी मे भर वालुका यन्त्र मे बिठाय १२ प्रहर की आच दे तो गले पर लगा रस सिन्दूर नामा पारद भस्म बने ।

(३१) विगतदोषकृतौ रसगन्धकौ तदनुलुङ्गरसेन परिप्लुतौ ।
प्रहर युग्मसित च शिलातले रविकरेणविमर्द्य विचूर्णितौ ॥
रुचिर काचघटीविनियोजितो सिकतयन्त्र वरेण दिनत्रयम् ।
कुरु भिषग्वर वह्निमधस्ततः स च भवेदरुण कमलच्छविः ।

र र , र मजरी , र च , र प्र सु , र का धे

रसकामधेनौ भिन्न पाठ प्रतिपादित तथा काकमाचीरसेन भावना दत्त्वा इति विशेष । रस मजर्याम्, रस चण्डाशौ भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

पारा वलि बराबर ले कज्जली बनाय बिजौरा रस की भावना दे रस कामधेनुकार १ महीना मकोय रस की भावना दे—भावना धूप मे बैठकर दे, फिर उसे काचकूपी मे भर वालुकायन्त्र मे बिठाय ३ दिन की आच दे, अर्थात् ७२ घण्टे की आच दे, ऐसा कहता है, तब रससिन्दूर बने । रस रत्नाकर तथा रसमजरी और रसचडाशुकार ने सभालू रस की भावना दी है ।

(३२)　जलपिप्पलिकालिङ्गी ताम्बूले च हरिद्रिका ।
श्यामागर्दभमूत्रं च रसमेभिर्विमर्दयेत् ॥
लोहपात्रे तापिते तु ततस्तुर्यांशगन्धकम् ।
दत्त्वा कूप्यांत्रियामतु वह्नौभस्म प्रजायते ॥　र का वे

जल पीपल, शिवलिंगी, पान, हल्दी, तुलसी इनके रस तथा गधे के मूत्र में पारा पारे से चौथाई वलिकी कज्जली को उपरोक्त रसोकी भावना दे इन्हींके रस में पकाय सुखाय काचकूपी मे भर वालुकायन्त्र मे रख ३१वी विधि के अनुसार आच दे तो पारद भस्म वने ।

(३३)　गधक नवसार च शुद्धसूत समत्रयम ।
यामैक चूर्णयेत्खल्वे काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ॥
रुध्वा द्वादश यामान्त वालुका यन्त्रग पचेत् ।
स्फोटयेत्स्वांगशीतं तदूर्ध्वं गन्धकं त्यजेत् ॥
तले भस्म रसो योगवाही स्यात्सर्वरोगहृत् ।

आ वे प्र, रसे.सा स, यो र,-र. चि, र ज नि, र. रा सु, भा भै र
रसचिन्तामणौ भिन्न पाठ प्रतिपादित तथा नागार्जुनी काकमाची रसस्य भावना दत्त्वा इति विशेप । आयुर्वेद प्रकाशे यत्किंचिन्नागदत्त्वा ।

वलि, नौसादर और पारा सवसमभाग १ प्रहर खरल कर काचकूपी में भर वालुकायन्त्र में विठाय १२ प्रहर की आच दे तो रससिन्दूर वने ।

(३४)　भूधात्री हस्तिसुण्डीभ्यां रसं गन्ध च मर्दयेत् ।
काचकूप्या चतुर्यामं पक्वः पीतो भवेद्रसः ॥
अन्यच्च—वटाश्वत्थस्नुह्यर्क काकोदुम्बरिकापयः ।
समगन्धेन सूतस्य मर्दयेत्त्रिदिवासरम् ॥
पूर्वोक्त विधिनादेव भस्मतां यातिनिश्चितम् ।

रसे सा स, पा.स., र सा प, आ वि, र च, र.स क, र. सागर., र रा स,
रससारपद्धति रसेन्द्रसार सग्रहे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

भू आवला, हाथीसुण्डी के रस में पारा वलिकी कज्जली को भावना दे या वट, पीपल, थोहर, आक, कठूमरके रसकी भावनादे काचकूपीमें भर वालुकायन्त्र में चढाय ४ प्रहर की आच दे तो पीतवर्ण की पारद भस्म वने । नोट—पीत

नहीं वनती लाल ही वनती है । इसे क्षुद्वोधी लिखाहै ।

(३५) अपामार्गमथोचिञ्चा जलकुम्भी पुनर्नवा ।
एतैः सम्मर्दयेद्यत्नात्समगन्धक पारदम् ॥
काष्ठोदुम्बरिका दुग्धै· रसमर्द्यंत्रिवासरे ।
काचकूप्या ततः क्षिप्त्वाक्रमवृद्धाग्निनापचेत् ॥
त्रिदिनात्तत्समुद्धृत्य इन्द्रगोप सम प्रभम् । र सागर

अपामार्ग, इमली, सेवार, पुनर्नवा, इनके रस मे पारा वलि की कज्जली को भावना दे पुन ३ दिन कठूमर के रस की भावना दे सुखाय वालुकायन्त्र में भर ३ दिन की क्रम विवर्धित आच दे तो रससिन्दूर नामा पारद की भस्म वने ।

(३६) गन्धकं सूततुल्य च क्षिप्त्वातन्मूलिका रसै· ।
रक्ततण्डुल धत्तूर रसै· सम्मर्द्य निक्षिपेत् ॥
वालुकायन्त्र मार्गेण काचकूप्या च पाचयेत् ।
दिनार्धे नयनानन्द सिन्दूर भवति ध्रुवम् ॥ र. कौ

पारा वलि समभागकी कज्जलीको सिद्ध मूली के रस तथा लाल मडल वाले धतूरा के रस की भावना दे सुखाय काचकूपी में भर वालुकायन्त्र मे विठाय दो प्रहर की आच दे तो रससिन्दूर वने ।

(३७) रसगन्धौ रविक्षीरैस्तिथि वारान्विभावयेत् ।
यामद्वादशक वह्निर्वालुकायन्त्रतो मत ॥
स्वांग शीतं समुद्धृत्य वज्रीक्षीरेण भावयेत् ।
दद्यात्पूर्ववदग्निञ्च ततश्चातिथिभावनाः ॥
भावना· स्युश्च कम्पिल्ल वीज तैलेन चानल· ।
याम पोडशकः सोयं विकरालस्य भैरवः ॥

रसा. ल, टो, र का वे र यो सा, भा भैं र

रसालकारे टोडरानन्दे भिन्न पाठ प्रति पादित । विशेप भावना दत्वा इति विशेप ।

पारा वलि सम भागकी कज्जलीको आक दूधकी १५ भावना दे काचकूपीमें भर वालुका यन्त्र में १२ प्रहर की आच दे । पुन थोहर दूध की १५ भावना दे इतनी ही भावना फिर कवीला वीज तेल की देकर वालुका यन्त्र मे १६ प्रहर की आच दे तो यह विकराल भैरव नामक पारद की भस्म वने । इसके

सेवन से प्रत्येक ज्वर, सन्निपात वात कफ जन्य रोग उदर रोग तथा कुष्ठ दूर हो ।

रसालकार और टोडरानन्द ने कज्जली के साथ मीठातेलिया मिलाय आकदूध की भावना दी है। इसने एक ही वार कूपी पाक कर हुलहुल, मकोय धतूरा, भाँग, चागेरी प्रत्येक के रस की १-१ भावना दी है और इसका नाम ज्वराकुश दिया है लाभ वही जो ऊपर विकराल भैरव का है।

(३८) शुद्धे सूते समगन्ध रक्तोत्पल दल द्रवैः ।
याम मर्द्य पुनर्गन्ध सर्धि तत्र विनिक्षिपेत्त ॥
पूर्व द्रावैर्दिन मर्द्य रसार्धगन्धके पुनः ।
दत्त्वा तद्वदिन मर्द्य काच कूप्यां निरोधयेत् ॥
दिनैकं वालुकायन्त्रे पक्व मुद्धृत्य चूर्णयेत् ।
भूकूष्माण्डी कषायेण भावयेदिन सप्तकम् ॥
छायायां तत्सिना तुल्य निष्कैकं भक्षयेत्सदा ।

रसा ख धन्व, र र, र म, र. कौ, र सा स, रसे क, र सागर, र मृ, रसे र को, र यो सा

पारा वलि सम कज्जली वनाय लाल कमल के रस की भावना दे पुन पारे से आधा वलि और डाल कमल रस की १ भावना दे काचकूपी मे भर वालुका यन्त्र में विठाय ४ प्रहर की आच दे पुन निकाल विदारीकन्द रस की ७ भावना दे छाया मे सुखाय वरावर की खाड मिलाकर ४ माशे नित्य सेवन करे तो यह रस परम वाजीकर वीर्यवर्धक है।

(३९) रसाद्द्विगुणित गन्ध समं वा वालुकायंत्रे ।
जायते रस सिन्दूरोऽग्निना द्वादश यामतः ॥

र मा, र म, नि र, र रा श, र सा प., वै क, आ वि, र र स, र का धे, र क ल, यो चि, यो सा, अनु त, रसे सा स, यो र., यो त, टो, चि र, पा स, र रा सु, र यो सा,

पारे के वरावर या दूना वलि ले कज्जली वनाय काचकूपी मे भर वालुका यन्त्र में विठाय ४ प्रहर या १२ प्रहर की आच दे तो रस सिन्दूर वने। अ त

हिंगुल से रससिन्दूर

(४०) रस गन्धक सम्भूतो हिंगुलः प्रोच्यते बुधैः ।
र द, र का धे

पलोन्मितं तु दरदं शुद्ध गन्धञ्च तत्समम् ।
श्लक्ष्णचूर्णं ततः कृत्वा काचकूप्यां निधापयेत् ॥
रससिन्दूर विधिना वालुकायन्त्रगं पचेत् ।
स्वांग शीतं ततो ज्ञात्वा जपायाः कुसुम प्रभम् ॥ र त.

अन्यच्च—हिंगुलात्शतभागेन वलिं दत्त्वा विमर्दयेत् ।
काचकूप्यां चतुर्याम तरुणारुण सन्निभम् ॥ नू वि.

पारा वलि से हिंगुल वनता है ऐसा विद्वान् कहते हैं । और उसी हिंगुल के वरावर या उसके शतांश वलि मिला कर खरल कर वालुका यन्त्र मे रख पकावे तो रससिन्दूर वने ।

(४१) हिंगुलं कर्षमानं तु मर्दयेत्खल्व सम्यगम् ।
सुवर्णं कर्ष मेकं च तत्समं पारदे क्षिपेत् ॥
मर्दयित्वा क्षिपेत्तत्र गन्धकं कर्प मात्रकम् ।
मर्दयेदर्कजक्षीरै र्वन्धयेत्पट्ट सम्यगे ॥
भूधरे पाचयेद्यन्त्रे कुक्कुटो पुटितेन च ।
पुनर्वस्त्रेण संवेष्ट्य तस्योपरि च गन्धकम ॥
सर्व मेकत्र वध्नीयात्पुनर्वस्त्रेण पूर्ववत् ।
हेमगर्भ रसो नाम तरुणारुण सन्निभम ॥
यो र, भा भै र

हिंगुल सुवर्ण वर्क और पारा १-१ तो० प्रथम पारद सुवर्ण मिश्रण वनाय उसमे १तो०वलि और हिंगुल मिलाय सबको आकदूधमे कई भावना दे गोली सी वनाय सुखाय कपडे को पोटली मे वाध सम्पुट कर भूधर यन्त्र मे रख कुक्कुटपुट की आच दे फिर उस गोली को निकाल उस पर वलिका लेप कर ऊपर से कपडा लपेट उस पर भी वलिका लेप कर सम्पुटकर पुन भूधरयन्त्र मे रख कुक्कुटपुट की आच दे । इस विधि से ३ वार करे तो यह हेमगर्भ पोटली रस वने । यह एक प्रकार का चन्द्रोदय है ।

(४२) सूत तुल्य मृत हेम द्वाभ्यां तुल्य च गन्धकम् ।

रवि क्षीरैर्दिन मर्द्यमुद्रयेद्भूधरे पचेत् ॥
पुटैकेन भवेत्सिद्धि र्मूर्च्छितः सर्वरोगहा । र र, पा स.

पारद के वरावर सुवर्ण की भस्म दोनो के वरावर वलि मिलाय आकदूध की एक दिन भावना दे गोली वनाय ४१ न० की विधि से भूधर यन्त्र मे कुक्कुटपुट की आच दे इस विधि मे तव तक पुटे दे जव तक पारद वलिसे मिल कर चन्द्रोदय न वना ले ।

(४३) पलं मृदु स्वर्णदलं रसेन्द्रात्पलाष्टकं षोडशगन्धकस्य ।
शोणैः सुकर्पासभवैः प्रसूनैः सर्वं विमर्द्याथ कुमारिकाद्भिः ।
तत्काच कुम्भेनिहित सुगाढ मृत्कर्पटैस्तद्दिवसत्रयं च ।
पचेत्क्रमाग्नौ सिकताख्ययन्त्रे ततो रसः पल्लवरागरम्यः ॥

टो, ग को, यो चि, वा क क, व पा म, र रा सु, वृ यो त, यो त., र म, रसे सा स, यो र, र च, र र स, भै र, वै र, र चि, ।
उक्त ग्रन्थेषु कुत्रचित् भिन्न पाठ प्रतिपादित. ।

सोने के वर्क ४ तो० पारा ३२ तो० वलि ६४ तो० पारा वलि की कज्जली कर सुवर्ण वर्क मिलाय लाल कपास के रस और कुमारी रस की ७-७ भावना दे, मुखाय काच कूपी मे भर वालुकायन्त्र मे विठाय ३ दिन की क्रम विवर्द्धित आच दे तो चन्द्रोदय नाम से पारद की भस्म वने ।

(४४) शुद्धसूतं सम स्वर्णं याममम्लै र्विमर्दयेत् ।
प्रक्षाल्य ग्राहयेत्पिष्टी पिष्ट्यार्धं शुद्धगन्धकम् ॥
गन्धार्धं टकणं दत्त्वा सर्वतुल्याहरिद्रकाम् ।
स्त्रीपुष्पेण तु तत्सर्वं मर्द्यं रम्भाद्रवान्वितम् ॥
दिनान्ते गोलकं कृत्वा वालुकायन्त्रग पचेत् ।
दिनं मन्दाग्निना तं वै समुद्धृत्य विचूर्णयेत् ॥
चूर्णांशो गन्धकं दत्त्वा गर्भयन्त्रे त्र्यहं पचेत् ।
तुषाग्निना लघुत्वेन जायते भस्मसूतक. ॥ र र.

पारा सुवर्ण भस्म दोनो की पिष्टी वनाय अम्लरस में घोट धो डाले, फिर पिष्टीका आधा वलि और वलिका आधा सुहागा और सवके वरावर हल्दी खरल कर स्त्री का रज और केले का पानी डाल कर १ दिन खरल कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर वालुका यन्त्र में दावू देकर ४ प्रहर की मन्द आच पर

पाक करे। फिर निकाल उसके बराबर बलि मिलाय सम्पुट कर पुन भस्मयन्त्र मे या वालुका यन्त्र में दाबू देकर तुप की अग्नि की आच दे या भूधर यन्त्र मे करीप अग्नि की आच दे तो पारद की भस्म (रससिन्दूर) बने।

(४५) भागोरसस्य त्रय एव भागा गन्धस्यमाप· पवनाशनस्य।
सम्मर्द्य गाढं सकले सुभाण्डे तां कज्जली काचकृते निदध्यात्॥
[1]सरुध्य मृत्कर्पटकै[2]र्घटीनां मुखे च चूर्णा [3]वटिकां च दत्वा।
क्रमाग्निनात्रीणि दिनानि पक्त्वा तां वालूकायन्त्रगतांततःस्यात्॥
वन्धूक पुष्पारुण मीशजस्य भस्म प्रयोज्यं सकलामयेषु।
र मजरी, वृ यो त, र र प्र, र प्र सु, र रा मु, भा भै र,
रसप्रकाशसुधाकरे रसराज सुन्दरे भिन्न पाठ प्रतिपादित।

१ सवेष्ट्य रसमजर्यामिति पाठ·। २ खटीता रसमजर्यामिति पाठ। ३. खटी च दत्त्वा रसमजर्यामिति पाठ।

पारा १ भाग बलि ३ भाग सीसा पारे का १२ वा भाग। अथवा पारा बलि बराबर सीसा पारे से चौथाई सब को एकत्र कर हाथीसुण्डी, घरका धुआ और हींग प्रत्येक की ३-३ भावना दे, सुखाय काच कूपी में या वालुका यन्त्र मे बिठाय ८ प्रहर या १२ प्रहर की आच दे। बलि के जल जाने पर शीशी का मुख बन्द कर दे तो पारद की भस्म बने।

(४६) सूतार्धं गन्धकं शुद्धं माक्षिकोद्भूत सत्वकम्।
गन्धतुल्य विमर्द्याथ दिनं निर्गुण्डिकाद्रवैः।
स्थापयेद्वालुकायन्त्रे काच कूप्यां विपाचयेत्॥
अन्धमूषागतं वाऽथ [1]गडुका यन्त्रके दिनम्।
पक्वं संजायते भस्म दाडिमी कुसुमोपमम्॥ र च, र म,

१ वालुका रसमजर्यामिति पाठ।

पारे मे आधा बलि और बलि के बराबर माक्षिक सत्त्व सबको लेकर निर्गुण्डी के रस की भावना दे सुखाय कांच कूपी मे भर वालुका यन्त्र मे बिठाय ४ प्रहर की आच दे। या सम्पुट मे बन्द कर वालुका यन्त्र मे दाबू देकर आच दे तो रससिन्दूर बने।

(४७) रसकर्पाश्च चत्वारो जसदं तावदेव तु।
शोधितं चूर्णितं कृत्वा उभे खल्वे तले क्षिपेत्।

द्वयोः सम्मेलने कृत्वा मर्दयेद्यामममात्रकम् ॥
रसाद्द्विगुणित गन्ध रसार्धं नवसादरम् ।
सर्वेषां कज्जलीं कृत्वा मर्द्य जम्बीरवारिणा ॥
दिनैक मर्दने कृत्वा सम्यक् शुष्क समाचरेत् ।
मृत्कर्पटप्रलिप्तायां काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ॥
सिकतायन्त्रके पाच्यं क्रमाद्द्वादशयामकम् ।
स्वागशीत समुद्धृत्य रस चामीकर प्रभम् ॥

वै चि लघु, र यो सा.

पारा जस्ता वरावर, पारे से दूना वलि और पारे से आधा नवसादर प्रथम पिष्टी वनाय फिर वलि मिलाय फिर नवसादर मिलावे। सबको जम्बीरी रस की १ भावना दे सुखाय काच कूपी मे भर वालुका यन्त्र में विठाय १२ प्रहर की आच दे तो लाल रग की पारद भस्म वने।

(४८) शुद्धं सूत सम तुत्थ घनक्वाथेन सप्तधा ।
भावयित्वा न्यसेत्कूप्यां मुखे मुद्रां च कारयेत् ॥
वालुकायन्त्रमध्ये तु यामार्कं ज्वालयेद्ध. ।
रसकर्पूर विख्यात. खोटवद्धो रसोत्तमः ॥

र का वे, यो त, भा भै र.

पारा तुत्थ समभाग ७ भावना मोथा क्वाथ की दे काच कूपी में भर वालुका यन्त्र मे विठाय १२ प्रहर की आच दे तो रस कपूर नामा भस्म वने।

(४९) रसगन्धौ च कर्षांशावर्द्धकर्षंच खर्परम् ।
विमर्द्य सप्तधास्तां च कुमारीरसतो वुधः ॥
वालुकायन्त्रगे पाच्यमष्टप्रहर संख्यया ।
रसकर्पूरनामायं फिरंगादिनिषूदनः ॥ र रा शं.

पारा वलि वरावर पारे से आधा खपरिया सव को कुमारी रस की ७ भावना दे सुखाय काच कूपी में भर वालुका यन्त्र में विठाय ८ प्रहर की आच दे तो रस कपूर नामा पारदकी भस्म वने। यह फिरगरोग को नष्ट करता है।

वक्तव्य—४८–४९ के यह दोनो योग रसकपूर नही वनते प्रत्युत रस सिन्दूर ही वनता है।

पारद की लवणाद्य भस्में

(१) अङ्कोलमज्जा स्वरसै रेरण्ड कदली जलैः ।
मार्कवस्य द्रवै. सूत काकमाची रसैस्तथा ॥
धत्तूरपत्र स्वरसै भेंडापत्री रसैरपि ।
तण्डुलीयक तोयेन कन्यका रसन्दितः ॥
इष्टिका काजिकेनाऽथ त्रिफला क्वाथ मर्दित ।
कण्टालिका रसेनादि देवदाल्या रसेन तम् ॥
चपला रस सम्पिष्ट गोक्षुरद्रव मिश्रितम् ।
चित्रकस्य रसैर्मृष्ट सेहुण्डपयसा तथा ॥
चिञ्चिका द्रव संपिष्टं मूषाकर्णी द्रवैस्तथा ।
आटरुपाम्भसा पिष्ट्वा कलिहारी रसैर्भृशम् ॥
गण्डदूर्वा रसेनामु यामं यामं विमर्द्यतन् ।
पलपट्क प्रमाणं स्यात्पादं निम्बुद्रवै प्लुतम् ॥
वहुशोमर्द्यते तापे भाव्यते च पुनः पुन' ।
अथ तापी द्वय नीत्वा सम च दृढमुत्तमम् ॥
अधस्ताद्भावयेत्ताप्यो. पर्ण चूर्णेन लिप्यते ।
पुन. पञ्चमृदो ग्राह्या मृन्मध्ये लघु गर्तिका ॥
तन्मध्ये शिम्बिका पात्र धत्तूरदल सम्भवम् ।
विरच्य मूषिकां गाढां तस्मिन् गर्ते निवेशयेत् ॥
तस्यां सूतं विनिक्षिप्य शिम्बी पत्र रसो रसे ।
दीयते शेर मात्रोऽस्मिन्सूक्ष्मच्छिद्र शरावके ॥
तत्पार्श्वे खर्परी देया निर्दोपानूतना तथा ।
तापिका मानयेच्चान्यां कन्या द्रव विलेपिताम् ॥
पुनर्नौसादरेणोक्ता मेकतः कुरुतद्वयम् ।
कुरु सन्धेर्निरोधं च पश्चाच्चुल्ल्यु परिक्षियेत् ॥
यथाग्निरुद्भवेच्चारुर्द्धयोस्ताप्यो समंततः ।
याम पोडशकं यावद्वह्निं कुर्यान्निरन्तरम् ॥
तदानिष्पद्यते भस्म सूतकं शृणु यादृशम् ।

हीरकेन च सकाशं प्रमाण हीरकाकृति ॥
क्वचित्पर्पटिकाकारं क्वचित्कर्पूर सन्निभम् ।
पिण्डरूपं क्वचित्साक्षाद्गलद्रूप्य प्रभं क्वचित् ॥
क्वचिच्चन्द्र समं साक्षाद्दृश्यते दृष्टि सौख्यदम् ।

र चि, र ज नि.

२४ तोला पारद को निम्नलिखित वनस्पतियो में १-१ प्रहर धूप मे बैठकर क्रम से मर्दन करे—अकोल, एरण्ड, केला, भागरा मकोय, धतूरा, भिण्डी, चौलाई, कुमारी, ईंट, काजी, त्रिफला, करेला, बन्दाल, पीपल, गोखरू, चित्रक थोहर, इमली, मूसाकन्नी, वासा, लागुली, वडीदूव, निम्बूरस, इनमे घुट जाने के वाद दृढ हण्डी के भीतर ढाक के पतो का लेप करके सुखाय ले फिर ईंट चूरा, गेरू, नमक, राख, वावी की मिट्टी, इन सबको कूट उसकी मूपा वनाय उस मूपा में छोकर पत्र, धतूरा पत्र के नुगदे में पारा डालकर उस मूपा को उन्ही चीजो से वन्द कर उस हण्डी मे रख उसमें छोकर का १ सेर रस भर दे और उस पर नौसादर २० तोला डालकर सम्पुट कर डमरुयन्त्र वनाय सुखाय १६ प्रहर की आच दे तो उस हण्डी मे ऊपर पारद की भस्म कही हीरा सी चमक वाली, कहीं पपडी सी, कही कपूर सी, कही पिण्ड रूप चादी सी मिलेगी उसे खुर्चकर मिलाय पीस ले। मात्रा १ रत्ती। यह पारद की रसकपूर नामा भस्म है। इसे उपदश फिरग में दे।

(२) गण्डदूर्वाभृङ्गराज कुमारी कण्टकारिका ।
त्रिफला काकमाची च कदली वाजिगन्धिका ॥
भार्गव्याश्च रसैरेतैमुसल्या च पुनर्नवैः ।
प्रत्येकं मर्दयेदेतै पारदं प्रतिवासरम् ॥
प्रतिमान प्रतिश्लक्ष्णं गाढ गाढं निरन्तरम् ।
अनन्तरं सैधवेन प्रस्थद्वयमितेन च ॥
एकैकं गैरिकं प्रस्थं खटिकामिष्टकां तथा ।
कन्यकाद्रवमाकृष्य सरसं मर्दयेच्च तत् ॥
दिनत्रयमितश्लक्ष्णं नष्टपिष्टं च खल्वके ।
नलिकायन्त्रमारोप्यमुद्रयेत्तन्मुखं भृशम् ॥
त्रयोदशादिनं यावद्वह्निं कुर्यान्निरन्तरम् ।

यन्त्रमादाय सूतेन्द्रं प्रकुर्यात्तस्य पूजनम् ॥
अर्धगुजा रस दद्याद्दिवसक्रमवर्धितम् ।
रक्तिका क्वाथयेद्धादेनाविका नो कदाचन ॥

र का धे, भा भै र, र यो सा.

४० तो० पारद को जलदूब, भागरा, कुमारी, कटेली, त्रिफला, मकोय, केला, असगन्ध, भारगी, मूसली, पुनर्नवा इनकी १-१ भावना दे सुखाय उसमे नमक १ सेर, गेरु, खडिया मिट्टी, ईंट, प्रत्येक आधा सेर मिलाय कुमारी रस की सबको भावना दे डमरुयन्त्र में रख १३ दिन की मन्द-मन्द आच दे तो ग्रन्थकार कहता है यह पारद भस्म महाकल्पनामकी बने। इसकी मात्रा ½ रत्ती से १ रत्ती तक है।

(३) शुद्ध सूत सम कुर्यात्प्रत्येक गैरिक सुधी ।
इष्टिका खटिका तद्वत्स्फटिका सिन्धुजन्म च ॥
वल्मीकक्षार लवणं भाण्डरञ्जन मृतिका ।
सर्वाण्येतानि सचूर्ण्य निधाय दृढां हण्डिकाम् ॥
पक्त्वा चुल्यां चतुर्याम स्वच्छ कर्पूर सन्निभम् ।

भा प्र, चि. क्र क व, र. र दी., धन्व, रसा स, र. वो, वै द, र सा., आ वे प्र, र सागर, र कौ, र रा सु, वृ र प्र, र यो सा,

पारा गेरू, चूना, ईंट, खडिया, फिटकिरी, सेंधानमक, वावी की मिट्टी, रेहनमक, भाण्डरजन (कोबाल्ट) मिट्टी, सब बराबर लेकर मिलाय एक रूप कर हाण्डी मे भर डमरु यन्त्र बनाय चूल्हे पर चढाय ४ प्रहर की आच दे तो पारद की कपूर सदृश भस्म बने।

(४) शुद्धं सूतं सम सिन्धु सोमल च तदर्धकम् ।
सोमलार्ध विष क्षिप्त्वा हिंगुस्फटिकगैरिकम् ॥
सामुद्र लवणंचैव सर्वतुल्य विनिक्षिपेत् ।
काजिकेन पुटं दद्यात्पुटित्वा चेन्द्रवारुणीम् ॥
स्थाल्यामुत्थापनं कृत्वा अग्निं यामाष्टकं दहेत् ।
स्वागशीतं समुद्धृत्य भस्म सूतोर्ध्वं पातनम् ॥

र रा सु, र ज नि, भा भै र.

पारा, नमक समभाग, सोमल पारे से आधा, मीठा तेलिया चौथाई ले हींग,

फिटकिरी, गेरु, साभर नमक, यह सब पारे के बराबर इन सबको कूट खरल में डाल काजी और इन्द्रायण रस की भावना दे सुखाय डमरुयन्त्र में वन्द कर ८ प्रहर की आच दे तो ऊपर के पात्र में पारद की भस्म लगे।

(५) कासीसखटिका सुवर्ण गिरिमृद्धर्मञ्जिका[1] मृत्तिका।
वल्मीक प्रभवा खटी च लवण सिन्धुः समं हण्डिका॥
[2]मध्येन्यस्य तदूर्ध्वं तश्चविमलं फेनस्य मूषाद्वयम्।
मध्येऽस्मिन् रसराजकं विनिहितं दत्त्वातदूर्ध्वं पुनः॥
मृत्स्नान्तं परितोनिरुध्य विमलं पात्रं मुखेमुद्रितम्।
दद्याद्वासरसप्तक दृढतरं वह्नि[3]क्रमादीर्घजम॥
स्वाङ्गैः शीत तरं विघट्ट वदनं कुन्देन्दु कर्पूरभम्।
ग्राह्य[4]तत्सुख कारणं रस वर दाद्यद्यथा योगतः।
र का धे, र प, र यो सा.

१ द्रञ्जिका इति रसपद्धतौ। २ यामा स्थाप्य इति रसपद्धतौ ३ ततः शीतलम् रसपद्धति इति पाठ, ४ स्फटिक सन्निभम्। रसपद्धति इतिपाठ।

कसीस, खडिया मिट्टी, सोनागेरु, हिरमिजी, वावी की मिट्टी, दूध पथरी, सेंधानमक, और पारा सब बराबर सबको कूट मिलाय उनकी दो मूषा वनाय उसमे पारा रख सम्पुट कर एक हण्डी में भर डमरुयन्त्र वनाय चूल्हे पर चढाय ७ दिन की आँच दे तो ऊपर के पात्र मे पारद को स्फटिकवत् भस्म लगे।

(६) स्फटिका नवसार च कासीस सैंधवं तथा।
सोरक तुत्थक टङ्कं प्रत्येकपल मानकम्॥
दत्त्वा कटाहे मन्देऽग्नौतया दर्व्याप्रचालयेत।
निर्द्रवेतु समुत्तार्य सर्वतुल्य तु पारदम्॥
त्रिकर्ष शुद्ध मल्लं च दत्त्वा सम्यग्विमर्दयेत्।
विपचेद्वालुका यन्त्रे याम द्वादश मात्रकम्॥
कूपी कण्ठ विलग्न स्याद्रस कर्पूर सञ्ज्ञक। रसामृत

फिटकिरी, नौसादर, कसीस, सेंधानमक, सोरा, तुत्थ, सुहागा प्रत्येक ४ तोला सबको कढाईमें डालकर चूल्हेपर चढाय मन्द-मन्द आच दे और करछीसे हिलाता रहे जिब सारी चीजें पिघल कर उनका पानी उड जाय और वह चूर्ण सी हो

जाय उतार उन सबों के बराबर पारा मिलाय उसमे २ तोला सोमल भी पीस कर डाल दें। सबको एक हण्डी मे बन्द कर डमरुयन्त्र बनाय चूल्हे पर चढा कर आंच दे या काचकूपी मे डाल वालुकायन्त्र मे विठाय १२ प्रहर की आंच दे तो कूपीके गलेमें पारा भस्म रस कपूर सज्ञक आकर लगे, उसे निकाल उपयोग मे लावे।

(७) भाग. पट् च रसस्यसिन्धु लवणात्सप्तैव सौराष्ट्रितः।
[1]तद्वृद्ध्या च सुवर्ण गैरिक भवा भागास्तथाविंशति ॥
एकीकृत्य रसेन मर्दितमिद यन्त्रेसुविद्याधरे।
पक्त्वा पोडशयामकै.रसवर फैरगिके योजयेत् ॥
र प, र को वे, र यो सा

१ तद्द्वन्द्व इति रसपद्धति।

पारा ६ भाग, नमक ७ भाग, गोपीचन्दन ८ भाग, सोनागेरू २० भाग सबको घोट मिलाय डमरुयन्त्र में या काचकूपी में भर वालुकायन्त्र मे रख १६ प्रहर की आंच दे तो पारद को रस कपूर नामक भस्म बने। जिसे फिरग रोग में देवे।

(८) विमल सूत वरो हि पलाष्टक तदनु धातु खटी पटु कांक्षिका.।
पृथगिमाश्च चतुष्पल भागिकाः स्फटिक शुद्ध मलाष्टक सम्मिताः॥
सहनलेन विमर्द्य च यामक लवणकाम्ल जलेन विमिश्रिता'।
उदित धातु गणस्य च मूषिकां कुरु विपं विनिवेशय तत्र वै॥
डमरुकाभिध यन्त्र वरेण तद्द्विदशयाम ममु' पच वह्निना। र प्र सु.

पारा ३२ तो० खडिया मिट्टी, नमक, पापडी खार प्रत्येक १६ तोले। फिटकिरी ३२ तो० सबको पीस नमक मिले निम्बूरस की भावना दे सुखाय दृढमूषा मे सम्पुट कर डमरुयन्त्र में बन्द कर १२ प्रहर की आंच दे तो पारद की रसकपूर नामक भस्म बने।

(९) नवभागो भवेत्सूत' स्फटिका दश भागिका।
पटोरेकादश प्रोक्ता. खट्या च द्वादश क्रमात् ॥
सिन्धोस्त्रयोदश भाग जम्बीराम्लेन मर्दयेत्।
पातनायन्त्र योगेन यामकाना चतुष्टयम् ॥
गुंजामात्रं तु दातव्यं लवणाम्ल विवर्जितम्।

सर्ववातोद्भवान्रोगान् व्रण रोगानशेषतः ॥
निहन्ति सप्त रात्रेण योगोऽयममृतोपमः ।
र प, वृ यो त, वा, र र कौ, र यो सा

पारा ९ भाग, फिटकिरी १० भाग, खारा नमक ११ भाग, खड़िया मिट्टी १२ भाग, सेंधा नमक १३ भाग सबको जम्बीरी निम्बू के रस की भावना दे सुखाय डमरूयन्त्र मे रख सम्पुट कर ४ प्रहर की आँच दे, तो पारद की रसकपूर नामक भस्म बने। इसे फिरग, व्रण, भगन्दर, समस्त वात रोगो मे सेवन करावे और लवण अम्ल रहित भोजन दे तो एक सप्ताह ये समस्त रोग दूर हों।

(१०) सैंधवञ्च नवसारं टंकणं स्फटिकेय पिचुना नियोजितम्।
शुद्ध पारद पलैक मात्रक चित्रमूल रस मर्दित दिनम् ॥
पात्र निहितं विधाय बुद्धिमांल्लवण वालुकायन्त्र मध्यगम् ।
पाचयेद्भवति वासरार्धके पूर्णचन्द्र सदृश सुशोभनम् ॥
वृ या त, र यो सा

सेंधानमक,नवसादर,सुहागा,फिटकिरी प्रत्येक १ तोला पारा ४ तोला सबको १ प्रहर चित्रक रस की भावना दे सुखाय काचकूपी में भर वालुकायन्त्र में विठाय २ प्रहर की आच दे तो रसकपूर नामक पारद की भस्म बने।

(११) भागैको नवसार टंकण कणी तुल्यांशिका खर्परी ।
श्वेता गैरिक सम्भव मलयज सर्वै.सम पारदम ॥
आकाशस्थित वल्लिकाद्य सु लता तोयैस्त्रिभि र्मर्दयेत् ।
कूप्यांन्यस्य निरोधयेच्छुभदिनं यन्त्रास्थित पाचयेत् ॥
आदौ कुर्याच्च मन्द तदनु दृढ़तरं वेदसंख्यादिनान्ते ।
पश्चाच्छीत करोतु स्फटिक मणिनिभ जायते सूतभस्म ॥
र का. धे, र यो सा

नौसादर, सुहागा, अफीम, खपरैल, फिटकिरी, गेरू, गोपीचन्दन प्रत्येक १ भाग पारा सबके बराबर, सबको खरल में डाल आकाशवेल की ३ भावना दे। सुखाय काचकूपी में भर वालुकायन्त्र में विठाय ४ प्रहर की क्रम विवर्धन आच दे तो स्फटिक जैसी स्वच्छ रसकपूर नामक पारद की भस्म बने।

(१२) स्फटिका खर्परिकेष्टां वल्मीके गैरिकश्च धूमरजः स्नुक्दन्ती कुष्ठस्वरसै. सूतं दृढं खल्वे सम्मर्द्य घस्रमेकं घर्मे शुष्क विधाय

परिपिष्टम् स्थालीमध्ये चूर्णित सैंधवमध्ये क्षिपेद्द्विगुणे तदपि निरुध्याऽत्युच्चैरत्युच्चैश्चापि पक्व घटे शकलै स्थालीमन्यामूर्ध्व मुखतोरुन्ध्यात् कपर्दभस्म नरै. मृत्कर्पटैश्च लेपः कार्यः स्थाल्यो मुखादितो भूय छाया मध्ये शुष्क पूर्व तीव्रातपे पश्चात्कुरुडमरुक मेतच्चुल्लीस्थ भाण्डमध्यगर्ततम् आगल मस्याः पिठर्याः पूरितमुवालुकापूरैः तदध क्रमाग्निदान कुरुष्व दशपंचयामपर्यन्तम् ऊर्ध्वस्थालीगर्भात् सूतं शीताद्धोच्छ्लनकैः प्रतिवल्लमितं सुरसुमनोभि. रसेश्वरं गृह्णीयात् ।

र का वे, र यो सा

फिटकरी, खपरा, ईट चूरा, वावी की मिट्टी, गेरू, घर का धुआँ, पारा सव वरावर इन्हे थोहर, दन्ती, उसारारेवद क्वाथ की भावना दे, सुखाय एक हण्डी मे नमक डाल उसके मध्य उसे रख नमक से दावू दे सम्पुट कर डमरु यन्त्र वनाय चूल्हे पर चढाय आच दे या इस डमरु को वालुका यन्त्र में दवाकर १५ प्रहर की आच दे तो ऊर्ध्व पात्र में लगे रस कपूर को निकाल कर पीस रखे । मात्रा ३ रत्ती ग्रन्थकार कहता है —

(१३) [1]खटीष्टगेरिका वल्मीकमृत्तिका सैंधवं समम् ।
भाग [2]द्वयमित श्लक्ष्णं [3]रसोभागैक एव सः ॥
सम्मर्द्य चैकत कृत्वा गाढ च रसमौपधम् ।
हण्डिकायां विनिक्षिप्य पार्श्वे पार्श्वे च खर्परम् ॥
[4]अन्या च हण्डिकां दत्वा [5]कृत्वा सन्धिनिरोधनम् ।
[6]चुल्लिकायास्तदादद्यादुपरिष्टाच्च हण्डिकाम् ॥
यामषोडशपर्यन्तमग्निकुर्यादहर्निशाम् ।
अत ऊर्ध्वं रसं तस्माल्लग्नं शीतसमाहरेत् ॥
कपूरपुल्लिकाकारमुज्ज्वलं दृष्टिसौख्यदम् ।

र. म, यो म, टी, र चि, र मजरी, भा प्र, र र प्र, र यो सा, र. ज नि, भा भै र, । १ इष्टिका इति भावप्रकाशे । २ भागत्रय इति भावप्रकाशे । ३ रसभागद्वय स्मृतम् । ३ रसप्रकाश सुधाकर विहाय अन्य ग्रन्थेषु अय पाठ । द्वितीय तथा तृतीय पाद रस प्रकाश सुधाकरे अधिक । ४ दग्ध्वाऽथ रसमजर्यामिति पाठ । ५ द्विरष्ट प्रहर पचेत् इति रसपद्धतौ रसमगले च । षष्ठी पक्त्याभावप्रकाशे अधिक. ।

खडिया मिट्टी, ईंट, गेरू, वावी की मिट्टी, नमक प्रत्येक दो भाग पारा एक भाग सबको कूट मिलाय एक हण्डी में भर किनारे किनारे खपरे के चूरे से दाब देकर डमरू यन्त्र बनाय चूल्हे पर रख १६ प्रहर की आंच दे तो पारे से बना रसकपूर ऊपर जा लगेगा, उसे निकाल खुर्च रखे। भाव प्रकाश ने प्रत्येक चीज दो भाग पारा ३ भाग मिलाया है। रसपद्धतिकार ने १० प्रहर की आंच दी है।

(१४) खटिकास्फटिका लवणं च समं वनमृद्गलदिष्टरजोगिरिजम्।
तलभांडधृतः स्फटिकोदरगोरसराजवरोडमरुपिहित.॥
तलखर्परके पिहितो निहितो विहितः सकलामयनाशकरः।
रतिभोगपुरन्दर सुन्दरमन्दिरमादर कन्दरके मुदितः॥
र का धे र यो. सा

पारा, खडिया, फिटकिरी, लवण, वाबी की मिट्टी, ईंट, गेरू सब समभाग सब को मिलाय फिटकिरी के मध्य एकत्र कर हण्डी में भर खपरे के चूरे से ढक सम्पुट कर डमरु यन्त्र बनाय सुखाय ८ प्रहर की आंच दे तो समस्त रोगों का नाश करने वाली परम सुखदायी पारद की भस्म बने।

(१५) द्विपलौरसकासीसौ ताभ्यां तुल्यं तु सैंधवम।
इष्टिकायाः पले चूर्णं पारावतमलेन च॥
पाचयेदर्कयाम तु कर्पूरं भवति ध्रुवम्।
त्रिवार पुटयेदेवं सर्वरोगेपु योजयेत्॥ र का धे, र यो सा.,

पारा कसीस ८–८ तोला सेंधा नमक १६ तो० ईंट चूरा ४ तोला कबूतर की विष्टा ४ तो० सबको धतूरा, बडहल के रस की १–१ भावना दे सुखाय हण्डी में बन्द कर डमरु यन्त्र बनाय १२ प्रहर की आंच दे तो कपूर के सदृश पारद की भस्म बने। उसे निकाल खुर्च पुन काच कूपी में भर वालुका-यन्त्र मे पाक करे। इस विधि से ३ वार करने पर उत्तम रसकपूर बने।

(१६) सूतस्फटिक सिन्धूत्थ खटिकाक्रमविवर्धिताः।
पक्त्वा चुल्ल्यां चतुर्यामं शुद्धकर्पूरसुन्दरम्॥
र का धे., र यो सा

पारा १–फिटकरी २–नमक ३–खडिया ४ भाग सबको मिलाय काच कूपी में भर वालुका यन्त्रमें रख चूल्हे पर चढाय ४ प्रहर की आंच दे तो कपूर

जैसी सुन्दर पारे की भस्म बने।

(१७) श्यामा कुण्डलिका विरेचनफलै धत्तूरपत्राम्बुना।
खल्वस्थोऽथ सुयन्त्रितोऽपि निहितो मृत्पचकैः पूरयेत्॥
लिप्त्वोर्ध्वं कुकुरन्ध्रकोद्भवरसैः पश्चान्मुखे मुद्रितम्।
रात्र्येक विधृतोऽनलेऽथ निवृतः ससाध्यते मस्तुना॥ र. चि.

तुलसी, कौंच, जैपाल, धतूरा इनके पत्रो को घोटकर नुगदा बनाय पाचो मिट्टी, ईट, गेरु, नमक रेह, बाबी इनकी मूषा बनाकर इनके मध्य मे उक्त नुगदे को जमा कर उसमें पारा रख और नुगदे से टक दूसरी मूषा को कुकरौंधा के रस मे लेपकर उसे प्रथम मूषा पर विठाय सन्धि वन्द कर सुखाय चूल्हे पर रख कर १ दिन रात्रि की आच दे, शीतल होने पर उस पारद को निकाल दही के तोड की भावना दे जल से धो डाले। इसकी मात्रा १ उर्द बराबर पान से खाड से या शहद से दे।

(१८) पारदः स्फटिकाचैव हीराकासीसमेव च।
[1]सैंधवं समभागं वै विंशाशं नवसादरम्॥
खल्वे विमर्द्य सर्वाणि कुमारीरस भावना।
क्रमवृद्ध्याग्निनापक्वो रसः कर्पूरसंज्ञक॥
यो चि, पा स, र रा सु., र औ यो, र यो सा, चि र

रस औपवयोगे रसयोगसागरे भिन्न पाठ प्रतिपादित तस्य पाठे कासीस नास्ति। १ चिकित्सारत्नाभरणे द्वय पादौ योगपूर्ति कृत्वा तत्र द्वितीयपाद निम्नोस्ति—सैंधव क्रमवृद्धोग्निपाक कर्पूरसज्ञक इति रस औपवयोगे नवसार समभाग प्रकल्पित।

पारा, फिटकिरी, कसीस, नमक सब बराबर सबका २० वा भाग नौसादर रसऔपवयोग में बराबर का नौसादर मिलाय कुमारी और तुलसी रस की भावना दे सुखाय हण्डी में भर डमरु यन्त्र बनाय चूल्हे पर रख १० प्रहर की आच दे तो यह रसकपूर नामक पारद की भस्म बने।

(१९) कण्टकारी काकमाची कृष्णधत्तूरकैः रसैः।
दिन रसं विमर्द्याथ नवस्थाल्यां विनिक्षिपेत्॥
पटुनापूर्य तन्मूर्ध्नि कुरु तोयाश्रितां पराम्।
दहेद्दीपाग्निनाधः स्था भस्मस्यात्यूर्ध्वभाण्डके॥ पा स, नि र.

कटेली, मकोय, धतूरा, प्रत्येक की १--१ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय लवण यन्त्र मे दाबू दे डमरु यन्त्र मे रख ४ प्रहर की आच दे तो ऊर्ध्वलग्न पारद भस्म बने ।

(२०) कासीसं खटिका च सिन्धुलवणांक्षुण्णोत्रिभाग रसात्
सर्वं शुष्कमिदंदिन मृदुतर विद्याधरे वह्निना ।
ताम्रेणोर्ध्वविलग्नशङ्ख धवल संगृह्य कूप्यान्यसेत्
यद्धोन्मत्तक काकमाचिक रसैर्यांत्री रसै पूर्ववत्
पाच्यं डामर यन्त्रके लवण युक् कूप्यांचतद्वन्न्यसेत् ।

र प ,र का धे ,र त, र यो सा

रसकामधेनौ त्रुटित पाठ

कसीस,खड़िया, नमक,१-१ भाग पारा ३ भाग सब को सूखा रगड कर डमरु यन्त्र मे बन्द कर ४ प्रहर की आच दे, ऊपर के पात्र मे लगे रस कूपर को निकाल पुन काच कूपी में भर कर वालुका यन्त्र में बिठाय रस कपूर उडावे, पुन उसे खरल मे डाल धतूरा, मकोय, कटेली रस की भावना दे सुखाय बराबर का नमक मिलाय काच कूपी मे भर डमरु यन्त्र मे पाक करे तो उत्तम रसकपूर बने ।

(२१) सैधवंतुवरीसूतं कासीस लकुचद्रवैः ।
विघृष्ट खल्वमध्यस्थं सर्वं श्लक्ष्णंदिनत्रयम् ॥
हण्डिकायातदारोप्य काष्टवह्निः विधीयते ।
दिनत्रये व्यतिक्रान्ते भस्मश्वेत ध्रुवभवेत् ॥

र चि यो म ,रसे चि ,र.का धे ,र.र ,र त ,र.ज नि ,पा स ,र यो सा

रस रत्नाकरे रसतरंगिण्या द्वाभ्यां ग्रन्थे लकुचस्य भावना रहित सकुट्य मूर्छन कुर्यादिति पाठ तेपुग्रन्येपुतुवरीपारदस्यार्ध भाग नियोजित इतिभेद ।

सेंधा नमक, फिटकिरी, पारा, कसीस सब सम भाग, रस रत्नाकर मे फिटकिरी पारे से आधी डाली है । सब को कूट बडहल रस की ३ भावना दे सुखाय हण्डी मे भर डमरु यन्त्र बनाय चूल्हे पर रख ३ दिन की क्रम विवर्धित आँच दे तो सफेद चमकदार पारदकी रस कपूर नामक भस्म बने ।

(२२) सामुद्राद्येकलवणं सूतंविंशातिभागिकम् ।
काजिके मर्दयित्वाऽग्नौपुटताद्भस्मतांव्रजेत् ॥ र स.क

पारा २० भाग साभर नमक १ भाग दोनो को कांजी की भावना दे सुखाय डमरू यन्त्र में रख चूल्हे पर चढाय ४ प्रहर की आंच दे तो पारद की सफेद भस्म बने।

(२३) गैरिक तुवरी खटिका सैंधवगडकज रज कुडवम्प्रत्येकं दृढ हण्ड्यामावायतस्योपरीशाज स्थाप्यः कुडवमितोऽथ तदूर्ध्वं देया हण्डी तदास्यापातमुखी। अथतत्सन्धौ मुद्रांकृत्वातदधोहुताशनो ज्वाल्यः। अर्भण पट्क प्रतितैर्दारुभिरनुनाति दुर्बलस्थूलै' अग्निक्रमेण दद्याद्गुरु दर्शित वर्त्मनाद्युनिशिम्। उत्तार्य च तद्यन्त्रवराद्युक्ता कर्पूरसन्निभसूतम् आदायकाचकुम्भे निधायनवसादरं दद्यात्। समुद्रयचाथ कण्ठैर्घामेण सम्मितै'पचेच्चुल्याम्। चुल्या डमरुकमध्यवितस्ति चतुरगुलावकाश तु। कर्त्तव्य क्रमदहन तदध' प्रज्वालयेन्मध्यम् शशिधवलमुपरिलग्न युक्त्या सगृह्यरत्नयेद्यत्नात्।

आ प्र, पा सं, यो त, वृ यो त, र रा श, र सा प, टो, र रा सु, यो म

योगमहार्णवे भिन्नपाठ प्रतिपादित। १ पचेदम्लम् वृहद्योगतरंगिणीमिति पाठ।

पारा, गेरू, फिटकिरी, खड़िया, नमक, साभरनमक, प्रत्येक ३२ तोला सब को अच्छी तरह मिलाय हण्डी में भर उस पर शराव सम्पुट कर चूल्हे पर रख ; क्रमविवर्धित आंच दे तो चार प्रहर में रस कपूर ऊपर उड कर लगे उसे निकाल उसमे २ तो० नौसादर मिलाय पुन काच कूपी मे भर वालुका-यन्त्र मे विठाय ४ प्रहर की मन्द मन्द आंच दे तो उत्तम रस कपूर नामक पारद भस्म बने।

(२४) यन्त्रेसुसिद्धे डमरू समाख्ये निधायसूतस्य पलाग्निपंच।
वल्मीकमृत्स्नाखटिकेष्टिकानासगैरिकाणा तुवरीयुतानाम्॥
ससैंधवानां समभागिकाना चूर्णाढकं चोपरितो निदध्यात्।
अम्लेनदध्नामहिषीभवेनपिष्ट रसोतस्यशरावमेकम्॥
समक्रमेणात्र निधायखण्डै राच्छादयेत्खर्परजैर्विसन्धि.॥१॥
चूर्णप्रलिप्तो दरमूर्ध्वभाण्डं संस्थाप्यसम्मुद्रय दृढं सुचुल्ल्याम्।
प्रज्ज्वालयेद् वह्निमथ क्रमेणसंस्थाप्ययन्त्रोपरिवस्त्रमार्द्रम्॥
वह्निप्रदद्यादिनपट्कपंचतत्स्वांगशीतंपरिगृह्यबुद्ध्या।

तं द्रोण पुष्पी पयसाप्रपिष्टंकूप्यांविदध्यान्नवसादरं च ॥
कर्षप्रमाणंप्रहरत्रयंच वह्निप्रदद्यादथः शीतलाङ्गम् ।
निष्कास्य कूपींसिकताख्य यन्त्रादास्फोट्य कण्ठस्थममुं प्रगृह्यात् ॥
कर्पूरनामा रसनायकोऽयं वल्ल.पुराणेनगुडेनभक्तः । यो त ,भा भै र

पारा २० तो०, वावी की मिट्टी, खडिया, ईंट, गेरू, फिटकिरी, नमक प्रत्येक पारे के बरावर सब को मिलाय खट्टे दही की व लहसुन रस की भावना दे सुखाय डमरु यन्त्र मे वन्द कर चूल्हे पर चढाय ६ दिन की निरन्तर क्रम-विवर्धित आच दे, ऊपर के पात्र पर गीला कपडा सदा पानीसे तर रखता रहे। पुन उस रस को निकाल १ तो० नवसादर मिलाय गूमा रस की भावना दे सुखाय पुन काच कूपी में भर वालुका यन्त्र में विठाय ३ प्रहर की आच दे तो रस कपूर नामक पारद की भस्म वने।

(२५) शम्याक काञ्चनीधूर्त्त कुमारी कांजिकद्रवै ।
सूर्यभक्ताग्रन्थिविश्वैर्मर्द्यः सूतः पृथक् पृथक् ॥
रसः पलचतुष्क. स्यात्सैंधव द्विगुणं मतत् ॥
पारदार्धंगैरिकंतु तत्समांशुभ्र मृन्मता ।
ऐष्टिकं चूर्णमेकं तु तत्समास्फटिकास्मृता ॥
तद्विभागंतु यवजंमर्द्यंजम्वीर जद्रवैः ।
तत्सर्वं पारदे क्षिप्त्वा भाण्डमध्ये विनिःक्षिपेत् ॥
ऊर्ध्वंडमरुगं सूतं कैतवद्रवलेवितम् ।
मृत्पटेन समाविष्ट्य सप्तधायन्त्रराजकम् ॥
चुल्ल्यांपचेच्चतुर्यामं मृदुनावह्निनाग्रतः ।
यामानष्टौमध्यमेनचतुर्यामं खराग्निना ॥
सिक्तवस्त्रं क्षिपेदूर्ध्वमादौ यामचतुष्टयम् ।
स्वांगशैत्यं यदास्यस्यात्तदा यन्त्रं समुद्घटेत् ॥
तं रसं तु समादाय मर्दयेच्चपुनः पुनः ।
दन्त हर्पणनीरेण सिन्धुवार रसेन च ॥
तच्चूर्णंनिःक्षिपेच्छिक्यपिष्टिकेसमके भिषक् ।
मृत्कर्पटेन सवेष्ट्य सप्तधाचपुनः पुनः ।
वालुका यन्त्र मार्गेण पचेद् द्वादश यामकैः ।

सानुद्रेणापि यन्त्रेण पचेद्वा पूर्ववत् क्रमः।
स्वांगशैत्यं यदा जातं स्वीकृतं चन्द्रनायकम्।

र श्री.यो, र यो सा

पहिले १६ तोले पारे को अमलतास, हल्दी, धतूरा, कुमारी, काजी, हुलहुल पीपरामूल इनके क्वाथ या रस में १-१ दिन भावना दे प्रक्षालन कर उसमे नमक ३२ तो०, गेरु, खडिया ८-८ तो० ईट फिटकिरी ४-४ तोला जवाखार ८ तोला सबको एकत्र कर जम्बीरी निम्बू के रस की भावना दे सुखाय हाण्डी में बन्द कर डमरु यन्त्र बनाय चूल्हे पर चढाय ४ प्रहर की मन्द मन्द आच दे फिर ८ प्रहर की मध्य तथा ४ प्रहर की तीव्र आच दे और डमरु यन्त्र के ऊपर गीला कपडा रखता रहे। फिर उस रस कपूर को निकाल खरल मे डाल जम्बीरी रस, सभालू रस की १-१ भावना दे सुखाय बराबर का नमक मिलाय कांचकूपी में भर १६ प्रहर की पुन क्रमविर्वधित आच दे तो रस कपूर नामक पारद की भस्म बने।

(२६) पिष्टंपांशु पटु प्रगाढ़ममलं वज्र यम्बुनाऽनेकश.।
सूतं धातु [१] युत खटीक वलितं तं सम्पुटेरोधयेत्॥
अन्तस्थं लवणस्यतस्यचतले प्रज्वाल्य वह्नि हठात्।
घस्रं आह्यमथेन्दु कुन्दधवल भस्मोपरिस्थ शनै॥

र च, आ प्र, र र प्र, र. मजरी, यो.र., रसे सा स, रसे क, यो.म, र का धे, र रा सु, भा भै र, । १ गत रस चडाशु इतिपाठ

रेह नमक, पारा इनको थोहर के दूध की भावना दे सुखाय हाण्डी मे भर नमक के बीच मे दाब दे सम्पुट कर चूल्हे पर रख कर २ दिन की आच दे तो रसकपूर नामक पारद की श्वेत भस्म बने।

(२७) शुद्ध सूतंपलैकंतु कुमारी द्रव संयुतम्।
मत्स्याक्षी हन्स पादी च किंशुकद्वय मूलकम्॥
अर्कमूल तु निर्गुण्डी वासा च वज्रवल्लिका।
कर्पास पुष्प तोयं च धत्तूरस्य च मूलिका॥
चित्रकं कासमर्दं च प्रत्येकं च दिनंदिनम्।
मर्दनान्ते च तं सूतं कञ्जिकैः क्षालयेत्पुनः॥
तं रसं पातना यन्त्राद्दिनान्ते च समुद्धरेत्।

भण्ड द्वय तु सम्वृत्य रसेधत्तूरपेपितम् ॥
तद्भाण्डस्य त्रिभागतु सैंधवैश्चप्रपूरितम् ।
एरण्ड पत्र मध्ये तु शुद्धसूतं विनिक्षिपेत् ॥
भाण्डद्वय तु सवृत्य विलेप्याः सप्तमृत्तिकाः ।
पचेद् द्वादशयामास्तु क्रमेणैवभिपग्वरः ॥
स्वांगशीतलमुद् धृत्य रस. कपूरता व्रजेत् । ;र ग्रो यो , र यो सा

४ तोला पारे को प्रथम कुमारी, मुछेछी, हसराज, ढाकमूल, कण्टकढाक, ग्राकमूल, सभालू, वासा, त्रिकाण्डथोहर, कपासमूल, धतूरा, मूली, चित्रक, कसौंदी प्रत्येक के रस या क्वाथ मे १-१ दिन भावना दे कर काजी से पारद को धोता रहे, फिर पारद को डमरु यन्त्र मे रख ऊर्ध्व पातन करे पुन एक दिन धतूरा रस की भावना दे एरण्डपत्र मे लपेट नमक मे दाबू दे डमरु यन्त्र वनाय चूल्हे पर रख १० प्रहर की ग्राच दे तो रसकपूर नामा पारद की भस्म वने ।

(२८) पटुना पूरयेत्स्थालीं तन्मध्ये पटुमूपिकाम् ।
तन्मध्ये रामठीमूपां तन्मध्येसूतक क्षिपेत् ॥
विपंनिवृष्य सूतांशं वारिणाऽऽलोड्य सप्तभि. ।
कृतैलेपैः सम्पुटिते तेन चैवं ददेच्छनैः ॥
वह्नि प्रज्वालयेच्चोग्र हठाद्याम चतुष्टयम् ।
तद्भस्मतिलमात्र तु दद्यात्सर्वेपु पाप्मसु ॥

र चि , रसा स ,यो म ,र,का धे ,र म सि ,वृ यो त ,र ग्री यो ,र रा सु ,र यो सा ।

रस कामधेनौ ग्रपूर्व रस नाम्नेति तथा भिन्नपाठ प्रतिपादितः । तेपु ग्रन्थेपु विपस्थाने क्षार नियोजितम् ।

नमक की मूपा मे हीग की मूपा हीग की मूपा मे पारा विपलिपटा हुग्रा रख सम्पुट कर लवण यन्त्र मे दाबू दे कर चूल्हे पर रख ४ प्रहर की ग्राच दे तो ऊपर के पात्र में रख कपूर लगे । इसने इस का नाम वाडवरस दिया है, रस कामधेनुकारने ग्रपूर्वरस नाम दिया है । उसने विप के स्थान पर क्षार डाला है ।

(२६) सूते खल्वे विमृद्याऽथ लशुनेन दिनाऽष्टकम् ।
शौभाञ्जनरसे तावद्राजिकायां दिनाऽष्टकम् ॥

काकमाची रसैस्ताचल्लोहद्रावे दिनाऽष्टकम् ।
जलयन्त्रेऽग्निना सिद्धो भवेत्षोडशयामतः ॥
रसराक्षस नामाऽयं कुर्याद्बहुतरां क्षुधाम् ।
एतद्रसप्रभावेण राज्यमान्यो भिषग्भवेत् ॥ र न सि, र यो सा

रसयोगसागरे भिन्न पाठ प्रतिपादितः ।

पारे को निम्बूरस, लहसुन, सहजना, राई, मकोय और शम्बद्राव में ८-८ दिन घोटकर प्रक्षालन कर शुद्ध करे फिर जलयन्त्र में रख कर १६ प्रहर की आंच दे तो यह रसराक्षस नामकी पारद भस्म बने। यह अत्यन्त क्षुधा-वर्धक है।

(३०) पलसम्मितं प्रयत्नाद्विमलीकृत रसेशम् ।
सपलार्धक पलैक विमलं च गन्धकाम्लम् ॥
चषकोपमे विशुद्धं निदधीत काचपात्रे ।
विनिधाय काचपात्रं त्वयसस्त्रिपादिकायाम् ॥
ज्वलिते सुराप्रदीपे संशोषयेज्जलांशम् ।
अवशोषिते तु चूर्णे त्ववतार्य वै प्रदीपात् ॥
समभागिक तु दद्याल्लवणं तु सैंधवाख्यम् ।
परिमेल्य चूर्णमेतन्निदधीत काच कुप्याम् ॥
युगसंख्यकैस्तु यामैः सिकताख्य यन्त्र सस्थम् ।
विपचेदिति प्रयत्नाद्रसतन्त्रकर्मविज्ञः ॥
अवबुध्य काचकूपीं स्वत एव शीतलागम् ।
घनसार नामधेयं रसमाहरेद्रसज्ञ ॥ र त, र यो सा

पारा ७ तो० सान्द्रवलिकाम्ल ८ तोना दोनों को अग्नि सह काच कूपी में भर स्टोव पर रख उसे आंच दे, वलिकाम्ल के जल जाने पर पारद की श्वेत कैलोमल नाम की भस्म बन जाती है। इसे निकाल पारद के बराबर सैंधा नमक मिलाय काच कूपी में भर वालुका यन्त्र में बिठाय ४ प्रहर की आंच दे तो रसकपूर नामा पारद की भस्म बने।

(३१) विशुद्धं रसमादाय काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ।
तेजो जलं वलिं गाढं रसाद्द्विगुण निक्षिपेत् ॥
काचकूप्या धमेदग्निं धूमाच्छ्वास च रक्षयेत् ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ॥

पारे को नं० २, [illegible]

[illegible]

जितना नाम की पारद भस्म है।

वक्तव्य—इनमें पारद की [illegible] भस्म की है, [illegible]। पाठक देखेंगे कि प्रारम्भ में इस अनेक भावनाओं द्वारा [illegible] किया [illegible] कर बनाने का प्रयत्न किया गया था। किन्तु धीरे धीरे [illegible] से ज्ञान होता गया कि पारद का स्वयोग [illegible] विद्यमान लवणजनन नामक तत्त्व से होता है और [illegible] बनता है। इसलिये धीरे धीरे अन्य आडम्बर छोड़ कर [illegible] के योग से [illegible] यौगिक निर्माण किया। चाहे जितने आडम्बरपूर्ण विधि से पारद की भस्म बनाई जाय चाहे सरल विधि से बनाई जाय उन दोनों का यौगिक अगर एक ही होगा तो उनके गुणों में जरा भी अन्तर नहीं होगा। रसकपूर जिस किसी भी विधि से बनेगा उनके गुणों में समानता रहेगी। यदि उनके यौगिक में अन्तर हुआ जैसे ३२ की विधि से दारचिकना बन जाता तो वह यौगिक भिन्न होने के कारण इसके गुण धर्म भी भिन्न होंगे।

रस कपूर के गुण—रस कपूर [illegible], आमवात, त्वक् विकार, [illegible], उपदंश, नाडीव्रण, भगन्दर, व्रण, [illegible], [illegible], श्वित्रकुष्ठ आदि रोगों में लाभदायी है। अच्छा कृमिघ्न है, [illegible] है, [illegible]। बहुत थोड़ी मात्रा में देने से लाभ होता है। इसकी मात्रा १ चावल से लेकर १ रत्ती तक है।

रसकपूर पारे की ऐसी भस्म है जो जल में घुल जाती है। खाने पर यदि यह मुंह में इसी तरह जम ली जाय तो मुख की लार में घुल कर मुंह में चारों तरफ फैल जाती है इससे इसका प्रभाव मसूड़ों और दांतों पर बहुत बुरा होता है, मुंह आ जाता है, दांत हिलने लगते हैं, लाला ग्रन्थियों में शोथ हो

जाता है इसी से लार बहने लगती है। इन उपद्रव से बचने के लिये रस कपूर को कैपसूल में डालकर या हलवा या गुड या मुनक्का आदि के भीतर रखकर निगल जाते है ताकि वह मुख मे न लगने पावे।

पारद की ऊष्मिद भस्में

अब हम पारद की वह भस्में दे रहे है जिन्हे वनस्पतियोग से बनाने के विधान है। हमारी तो अपनी निश्चित सम्मति यह है कि निम्न विधियो से पारद की भस्म नही बनती, क्योकि पारद का जो यौगिक ऊष्मिद बनता है वह लाल रग का होता है। वनस्पतियो के योग से प्राय श्वेत भस्म बनने का उल्लेख मिलता है। रसायन शास्त्र के निश्चित सिद्धान्तो द्वारा यह अभी तक जाना नही जा सका कि पारद का कोई ऊष्मिद श्वेत भी बनता है। खैर! हम इन विवाद मे न पड़ कर जो भी रसग्रन्थ इन को बनाने का विधान देते है हम उन्हे पाठको की सेवा में क्रम से रख रहे है। वह स्वत प्रयोग कर इसकी सत्यता को परख लें।

(१) पातितं स्वेदितं सूतं पूर्वोक्तविधिना हरेत्।
खल्वे निक्षिप्य तं सूत पीतवेणीभवैरसैः॥
मर्दयेत्त्रिदिन पश्चाद्यन्त्रे सोमानले क्षिपेत्।
सम्यङ्निरुध्य तद्यन्त्रं चुल्ल्यामारोपयेद्बुध॥
ज्वालयेत्त्रिदिन पश्चात्पुनर्वेणी भवै रसै।
मर्दयेत्सपचेदेव सप्तवारानतन्द्रित॥
निरुत्थ जायते भस्म रसेन्द्रो नाऽत्र सशयः।

ऊर्ध्वपातित स्वेदित सस्कृत पारद को आकाशवेल रस की ३ भावना दे, डमरू यन्त्र में रख ऊर्ध्वपातन करे। ग्रन्थकार कहता है कि पारद को आकाश वेल में भावना देकर तब तक ऊर्ध्वपातन करता रहे जब तक पारद की निरुत्थ भस्म न बन जाय। आगे ग्रन्थकार कहता है कि इस भस्म को धतूरा भाग, मीठा तेलिया, चिरायता प्रत्येक की २५–२५ भावना दे सुखाय प्रयोग में लावे। महान् बलवर्द्धक, वाजीकर, रसायन, वय स्थापक, क्षुधावर्द्धक, स्तम्भक है। मात्रा २ रत्ती।

(२) लम्बितवह्निजरायु रसाभिषेकेन मूर्छित. सूतः।

एकोऽपि हि त्रिदोषजलधिशोषवाडवः ख्यात ॥ र हृ, र र.

रसरत्नाकरे भिन्नपाठ प्रतिपादित ।

अन्बर में पारद को रख मूर्छित करे फिर "नाग्निकाष्ठरस पित्त फेनिल" फिर अग्नि सहयोग से पित्तो में मैनफल रस से भावित कर रख ले । मात्रा सूई की नोक पर जितना आवे इतना दे तो यह सन्निपात ने लाभ करे ।

(३) मूपाद्वयं पृथक्कुर्यादपामार्गस्यवीजकैः ।
तत्र सूत फल्गुदुग्धमिश्रं कृत्वा परिक्षिपेत् ॥
द्रोणपुष्पी प्रसूनानिह्यरिमेदो विडंगक. ।
ऊर्ध्वाधोद्रापयेच्चूर्णं दत्त्वामुद्रां प्रदीपयेत् ॥
कृत्वा मृत्सम्पुटे गोलं कुर्यान्मृद्वस्त्रवेष्टितम् ।
पुटेगजपुटेनैव सूतो यात्येव भस्मताम् ॥

र रहस्य र स क ,व रा ,शा ध ,रसे चि ,र.का धे.,भा प्र ,चिर ,र त ,भा भै र.

वसवराजीये शार्ङ्गधरे भावप्रकाशे एपु ग्रन्थेपु भिन्न पाठ प्रतिपादित । रस तरगिण्या:नव्य पाठ प्रकल्पित । रस सकेत कलिकाया रस रहस्ये रस काम वेनी एपु ग्रन्थेपु आद्या द्वि पादो नास्ति ।

अपामार्ग वीज की दो मूषा वनावे उसमें अरिमेद, विडग और द्रोणपुष्पी का चूर्ण भरदे उसमें कठूमर के दूव में घोटा हुआ पारा रख मूपाका मुह मिलाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो पारेकी भस्म वने । अल की ,पा स.

नोट—गजपुट की आंच में पारा उड जाता है । यह अनेक वार का अनुभव है कुक्कुट पुट की आच में प्राय पारा रह जाता है ।

(४) खरिमजरि वीजान्वित पुष्करवीजैः सुचूर्णितैः कल्कैः ।
कृत्वासूतं पुटेद्दृढ मूषायां भवेद्भस्म ।

र र स ,र ज नि

अपामार्ग वीज कमल गट्टा दोनो के नुगदे में पारद को रख सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे तो पारद भस्म वने ।

(५) अपामार्गस्य वीजानि तथैरण्डस्य चूर्णयेत् ।
तच्चूर्णं पारदे देयं मूपायामधरोत्तरम् ॥
रुद्ध्वा लघु पुटे पच्याच्चतुर्भि. भस्मतानयेत् ।

र र स ,र र ,आ क ,र रा सु ,र ज नि ,भा भै र.

आनन्द कन्दे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

अपामार्ग वीज, एरण्ड वीजो के चूर्ण मे पारद को सम्पुट कर सुखाय लघु पुट की आच दे तो पारद की भस्म वने ।

(६) तुल्यशिखरिजा मूलं वारिणामर्दयेद्दृढम् ।
मृण्मूषां लेपयेन्मध्ये तन्मध्येनिक्षिपेद्रसम् ॥
पञ्चटंक प्रमाणं तु मूषामंगारके क्षिपेत् ।
एवं वद्धो भवेत्सूत. मूषान्त.स्थोदृढोभवेत् ॥

र चि, र ज नि.

५ तोला अपामार्ग मूल का नुगदा वनाय उसमे पारद को रख कर दृढ सम्पुट कर कोयलो की आच दे तो पारद वँध जाता है ।

(७) अपामार्ग समुद्भूता क्षारिका लवणं भवेत् ।
आपूर्यहण्डिकांतेन मध्येगर्तमथो कुरु ॥
तन्मध्ये पारद दत्त्वा भृङ्गराजरसंतथा ।
दत्त्वाऽथ पालिकादध्नस्तत सन्धिविमुद्रयेत् ॥
दीपाग्निः क्रियते तत्र यावच्च प्रहरद्वयम् ।
एवंरसोमृतो भूयात्खोट रूपसितोयथा ॥ र र, र च, र ज नि,

अपामार्ग की भस्भ को हण्डी मे भर उसके मध्य पारे को दाव् देकर पारे पर भागरे का रस डाल पात्र को ढक सम्पुट कर २ प्रहर तक दीवा जितनी आच दे तो पारा खोट रूप श्वेत वर्ण की भस्म वने ।

(८) पारे को अपामार्ग के रस मे ४ प्रहर खरल कर अपामार्ग के नुगदे मे रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे तो पारद की भस्म वने ।

अल की, पा सं

(९) त्रि त्रि कर्षमपामार्ग धूर्तवर्वरिका रसैः ।
सशोध्येशं जातिफलेस्निग्धे निक्षिप्यकोरिते ॥
तद्वृन्तेनैवं समुद्रयह्यहिफेनस्य योगतः ।
वृहतीफलमध्यं तत्तद्धत्तूर फलान्तरे ॥
तद् वृन्ताक फलान्तस्थ प्रत्येकमहिफेनतः ।
तद् वृन्तमुद्रितंलिप्तं दृढमृत्तिकया कृतम् ॥

शुष्कं गतपङ्क् दिनानिवह्निःस्यादुपलैःपुन ।
गर्तं सार्धत्रिहस्तंतु दीर्घंद्विविस्तृतं तथा ॥
मृत्पटाच्छादितं छिद्रद्वययुक्तेच पार्श्वतः ।
इत्याद्यैश्च बहूपायैर्मृति वन्धौषधीद्रवै. ॥
स्वेदमूपापुटाद्यैश्च यन्त्रयोगादि युक्तिभिः ।
युक्तांकार्यं सूतभस्म शक्यं वक्तुं न सर्वतः ॥ र का वे,

अपामार्ग, धतूरा, नगन्द वावरी प्रत्येक ३ तो० इसमें पारद को घोट जायफल और अफीम के नुगदे मे रख उस नुगदे को कटेली फल के नुगदे मे रखै फिर उसे धतूरा फल के नुगदे मे रख फिर उसे वेंगन के भीतर रख दृढ सम्पुट कर सुखाय अर्ध गजपुट के भीतर रख आग दे, उस गढे को भी ऊपर से मिट्टी द्वारा ढक छोटा सा छेद हवा जाने को रहने दे, ऐसी विधि से पुट देने पर पारद की भस्म वननी सम्भव है जो ग्रन्थकार ने कही है ।

(१०) अपामार्गस्य बीजानि चूर्णं मङ्कोल सम्भवम् ।
हय मूत्रे त्रिधापिष्टो ध्मातोऽयं म्रियते रसः ॥ र का धे

अपामार्ग और अंकोल वीज चूर्ण को घोडे के मूत्र में ३ दिन पीस नुगदा वनाय उसमें पारा रख दृढमूपा में वन्द कर धमावे तो पारद की भस्म वने ।

(११) श्वेताङ्कोल जटावारि [1] सूतो मर्द्योदिनत्रयम् ।
[2]पुटयेद्भूधरे यन्त्रे मूषायां भस्मतां व्रजेत् ॥

रसे मं, रसे सा स, र चं, र सागर, आ क, र र, र मजरी, र पा, र र स., पा स, भा भै र,

१ मर्द्य सूतो इति रसचण्डाशौ । [1]पिष्ट्वा खल्वे दिनत्रयम् इति रस सागरे ।
२ पुटितश्चान्ध मूपाया ततो भस्मत्व माप्नुयात् इति रसचडाशौ रससागरेच ।

सफेद अकोल की जड के रस में पारद को ३ दिन खरल कर दृढ सम्पुट कर भूधर यन्त्र मे रख आच दे तो पारद की भस्म वने ।

(१२) श्वेतांघ्र्यायुध भीरुजे मपिनिभेऽङ्कोलं रसं निक्षिपेत् ।
गो दुग्धेन तु मापपिष्ट सहिते नाप्लाव्यतच्छोषयेत् ॥
रुद्ध्वा कर्पट मृत्स्नयात्वहि जया वद्धो गजाख्यंपुटात् ।

'बीजं मुञ्चति नत्यगः कथमसौ जम्भारिगन्धस्रुत. ॥

रसे.चू , र का धे.

अण्डे की सफेदी अकोल का रस इन्हे उर्द के आटे मे मिलाय दूध में गूंथ मूपा बनाय उस मूपा मे पारद डालकर सम्पुट कर सुखाय गजपुट की आच दे तो पारा भस्म बने ।

(१३) पारे को अनार रस की ३ भावना दे टिकिया बनाय करछी में रख महुआ बीज दूधका चोया देता हुआ आच पर रखे तो पारद की भस्म बने । र सि ,

(१४) पारेको अजवायन रसकी भावना दे टिकिया बनाय माजून फिलासफा और गुलकन्द के नुगदे में रख सम्पुट कर भूभुल की आच दे तो पारद की भस्म बने । अल की , पा स

(१५) पारे के बराबर अफीम मिलाय मूली रस की २० भावना दे सुखाय काचकूपी में भर बालुका यन्त्र में बिठाय १२ प्रहर की आच दे इस प्रकार ७ बार पुट दे तो पारद भस्म बने । पा स , र सागर

(१६) पक्वार्क पत्रस्वरसै श्चोवकं प्रहरत्रयम् ।
दीपाग्निना भवेद्भस्म सूतराजस्य चोत्तमम् ॥ नि र ,पा स..

पारे को करछी मे रख आग पर चडाय उस पर पीले आक के पत्तो का चोया देता रहे तो पारद की भस्म बने ।

(१७) श्वेतार्क शिफा वारि घृष्टः खल्वे दिनत्रयम् ।
पुटित. शंख मूपाया सूतो भस्मत्व माप्नुयात ॥

र का धे , पा स .

सफेद आक मूल के रस में ३ दिन पारद को खरल कर टिकिया बनाय शंख के भीतर रख सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे तो पारद की भस्म बने ।

(१८) पारे को आक फूल के रसकी ७ भावना दे टिकिया बनाय नमक मे दाबू दे सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो पारद की भस्म बने ।

अल की , पा स.

(१९) पारा को करछे मे डालकर आक, आकाशबेल, निम्बू, सिलारा प्रत्येक के दो दो सेर रस का चोया देता रहे । पुन टिकिया बनाय सीप के सम्पट में रख मतसम्पट कर २ मन नय की आच दे । पुन निम्ब रस की २१

भावना दे टिकिया वनाय सीप में सम्पुट कर तुप की आंच दे तो पारद की भस्म वने। अ त, मि ख

(२०) पारे को आकदूध, कठूमर दूध में १०-१० भावना दे टिकिया वनाय सुखाय मेंहदी पत्र का नुगदा उक्त दूध में वनाय उसमे पारा रख २० तो० वस्त्र सम्पुट कर ४० तो० तुप की आंच दे तो पारा भस्म वने। अ त

(२१) क्षीरेणोत्तरवारुण्यास्त्रिदिनं शुद्ध पारदम्।
मर्दयेत्तप्त खल्वे तु वज्र मूषान्धितं पुटेत्॥
करीषाग्नौ दिवारात्रौ पचेत्सम्यगतन्द्रितः।
उद्धृत्य च पुनः मर्द्य तद्वद्रुद्ध्वा च पाचयेत्॥
तद्वन्मर्द्य पुनः पाच्यं म्रियते पाण्डुरो रसः। र र., र का धे.

शुद्ध पारदको ३ दिन इन्द्रायण का रस डाल तप्त खरलमे भावना दे गोला वनाय सुखाय दृढ मूषा में वन्द कर भाण्डपुट मे करीप के मध्य रखकर आंच दे, इसी विधि से ३-४ वार पुट देने से पीले वर्ण की पारद भस्म वने।

(२२) कुडुहम्वा कन्दमध्ये कान्त तस्य परिप्लुते।
रसे क्षिप्त्वा मुखेरुद्ध्वा तन्मध्यात्कल्कतः सुधीः॥
तं गोमयं समालिप्य स्वेदयेद्गोमयाग्निना।
एव कृते सप्तवार रसो भस्मत्व माप्नुयात्॥ आ क

वांझककोडे के कन्द में गढा वनाय उसमे पान का रस भर पारा डाल सन्धि वन्द कर गोबर के सम्पुट मे रख भूधर यन्त्र की आंच दे। इस विधि से ७ वार करे तो पारद की भस्म वने।

(२३) उत्तरा वारुणी दुग्धैः सर्पाक्षिज रसैस्तथा।
हसपादी रसैस्तद्वद्व्ज्र्यर्क पयसा तथा॥
ब्रह्ममूल रसैस्तद्वत्कपिकच्छू शिफा रसैः।
विष्णुक्रान्ता विडंगोत्थ रसैः पौनर्नवैस्तथा॥
यवचिञ्चा देवदाली कञ्चुकी पाठिकावरी।
रसैः प्रमर्दयेत्सूतं भिषग्दशदिनावधि॥
तत्कल्क गोलकं कृत्वा यन्त्रे सोमानले पचेत्।
एक विंशद्दिनंयावदग्निं सज्वालयेदधः॥
यत्नादुत्तारयेत्सूतं भस्मीभूत च पाण्डुरम्। रसा.ल, र का धे

इन्द्रायण, गन्धनाकुली, हन्सराज, थोहर, आक, ढाक कौचमूल, कोयल, गोखरू, पुनर्नवा, हिरनखुरी, वन्दाल, सरफोका, जोगक, पाठा, सतावर, प्रत्येक के रस या क्वाथ की १-१ दिन भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सोमानल यन्त्र में दावू दे २१ दिनकी निरन्तर आच दे तो पारद की पीले रग की भस्म वने ।

(२४) कर्कोटी काकमाची च कंचुकी[1] कटु तुम्बिका ।
काकजघा काकतुण्डी काकनी काक मञ्जरी ॥
पिष्ट्वा तान्वज्रमूषान्तर्लेपंकृत्वा रसं क्षिपेत् ।
मर्दितदिनमेकतु तद्[2]वार्द्रोत्थितैः रसैः ॥
रुद्ध्वाऽथ भूधरे[3]पाच्यादष्टवार पुन. पुन ।
मर्दयेत्क्षित[4]मूषायारुद्ध्वा ध्मातो मृतोभवेत् ॥

अ क, र र स, र र, र ज नि.

आनन्दकन्दे रसरत्नसमुच्चये भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

१ काकतुम्बिका इति रसरत्नाकरे। २ रेतैवार्द्रो इति रसरत्नाकरे । ३ पचेदष्ट इति रसजलनिधौ । ४ मूषाता इति रसरत्नाकरे ।

ककोडा कन्द, मकोय, जोगक, कडवी तुम्बी, काकजघा, कौआठोढी, गुजा, व्याघ्रनखी, इनके रस या क्वाथ में पारद को १-१ दिन खरल कर टिकिया वनाय सुखाय मूषा मे इन्ही वनस्पतियो के कल्क का लेप करे और पारे के साथ इन्ही वनस्पतियो का रस भर कर सम्पुट कर भूधर यन्त्र मे दावू दे १ दिनकी आँच दे, इस विधिमे ८ वार पुट दे और फिर मूपामे वन्द करके धमावे तो पारे की भस्म वने ।

(२५) कटु तुम्ब्युद्भवे कन्दे गर्भेनारिपय. लुप्ते ।
सप्तधा स्वेदित. सूतो म्रियते गोमयाग्निना ॥

र,र,र र स, र ज नि.

कडवी तुम्बी के कन्द में कोर कर उसमे स्त्री का दूध भर उस मे पारा डाल मुख वन्द कर सम्पुट कर भूधर यन्त्र मे आँच दे । इस विधि मे ७ वार पुट दे तो पारद की भस्म वने ।

(२६) सफेद कनेर मूल के १० तोला रस मे पारे को सम्पुट कर दो सेर उपलो की आच दे, इस प्रकार ३ पुट दे तो पारद भस्म वने । मि ख

(२७) ककट पलाशकी लकडीको कोरके उसमें पारा रख कर डाट लगाय सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आच दे तो पारद भस्म वने। पा म.

(२८) काकोदुम्बरिका दुग्धं रसं किंचिद्विमर्दयेत्।
तद्दुग्धघृष्ट हिंगोश्च मूषा युग्मं प्रकल्पयेत्।
क्षिप्त्वा तत्सम्पुटे सूतं तत्र मुद्राप्रदापयेत्।
धृत्वा तद्गोलकं आज्ञो मृण्मूषासम्पुटेऽधिके॥
[1]पचेद्गजपुटेनैव सूतकं याति भस्मताम्।

र च, रसे चि, र का धे, भा प्र, शा ध, र चि, र र म, व रा, चि र, र त, वै द, वृ र प्र, र ज.नि, र रा सु., भा भै र। १ पचेल्लघु रसतरगिण्यामितिपाठ।

रस चण्डाशी, रसचिन्तामणौ रस जलनिधौ रसेन्द्रचिन्तामणौ रसकाम वेनी रस रत्नसमुच्चये एपु ग्रन्थेपु भिन्न पाठ प्रतिपादित।

कठूमर के दूध में हीग को घोट कर उसकी दो मूषा वनावे फिर पारेको कठूमर दूध में घोट उस मूषा में वन्द कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे। रस तरगिणी कारने लघुपुट की आच दी है। इस तरहसे पाराकी एकही पुटमें भस्म वने।

(२९) काष्ठोदुम्बरिजै· क्षीरैः सितं हिंगु विभावयेत्
सप्तवारं प्रयत्नेन शोष्य पेष्यं पुनः पुनः॥
काष्ठोदुम्वर पञ्चाङ्गैः कपाय पोडशांशकम्।
दत्वा तेनपुनर्मर्द्य हिंगुदेय रसेश्वरम्॥
क्षिप्त्वा निरुध्य मूषायां भूधराख्ये पुटे पचेत्।
अष्टधा म्रियते सूतो देयं हिंगु पुटे पुटे॥

आ क, र र रसे चि, र.का धे, पा स.

अनन्द कन्दे भिन्नपाठ प्रकटित।

हीगको कठूमर दूधकी ७ भावना देकर फिर मूषा वनावे कठूमर के क्वाथमें पारा और हीग डाल कर खरल कर टिकिया वनाय उन मूषा मे रख सम्पुट कर भूधर यन्त्र में विठाय आँच दे इस प्रकार ८ पुट दे तो पारद भस्म वने।

(३०) कलिहारी कन्द रस तथा श्वेतपुनर्नवा।
देववाली रस नीत्वा देवेद्रु वज्रकन्दक॥
पाठा जपारसं नीत्वा त्रिदिनं मर्दितो रसः।

यास पोडशक सम्यक् पात्र मध्ये विधारयेत् ॥
अग्निं च कुरुतेगाढं म्रियते ऽरुण सन्निभम् ।
रसे चिं ,र का वे ,र चिं ,र ज नि

लांगुली, श्वेतसाठी, देवदाली, देवदारु, वज्रकन्द, पारा और अरणी इन के रस या क्वाथ में पारद को ३ दिन खरल कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १६ प्रहर तुपाग्नि की आच दे तो पारद की लाल रग की भस्म वने ।

(३१) तोलकद्वयमादाय पारदं शुद्धमुत्तमम् ।
घृतकौमारिकाद्रावै स्तोलक द्वयसम्मितै· ॥
मर्दयेत्खल्वकेयावच्छुष्कतायातिपारद : ।
पुनर्देयंपुनर्मर्द्यः शुष्कपातेपुनस्तथा ॥
एवंपष्टि पुटैः सम्यग्मर्दयित्वा ततः परम् ।
काचकुप्या विनिक्षिप्य तत्सर्वं तु विचक्षणः ॥
मुखे रुद्ध्वा ततोधीमान्वालुका यन्त्र मध्यतः ।
क्षिप्त्वार्क प्रहरैःपाच्यैः खर मध्याल्प वह्निकैः ॥
भस्मंतज्जायतेसूत देहलोहानिवेधयेत् ॥ का च त ,पा स ,

पारे को कुमारी रस की ६० भावना दे । प्रति वार के भावना रसको पूरी तरह सुखा कर पुन दूसरी भावना दे, तत्पश्चात् काचकूपी में भर वालुका यन्त्र में विठाय १२ प्रहर की क्रम विवर्धित आच दे तो पारद की भस्म वने ।

(३२) गुलावासी के रस में या चागेरी के रस में पारद को खरल कर के केलाकन्द में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे । कु ह ,पा स ,मि ख

(३३) पारद को करेला रस की भावना दे अपामार्ग के नुगदे में रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे तो पारद की भस्म वने । पा स

(३४) पके हुए करेला फल में पारद को सम्पुटकर उसे गोवर के मध्य पाथ कर सुखाय १-२ उपलो की आच दे । कु ह ,पा स.

(३५) कुम्भीं समूलमुद्धृत्य गोमूत्रेण सुपेपयेत् ।
तद्द्रवैर्मर्दयेत्सूत दिनैक कान्त सम्पुटे ॥
लेप्यानियामकोदेया चोर्ध्वरचाधस्तदन्तरे ।
मृद्वग्निना दिनैकं तु पक्वचुल्याम्रतोभवेत् ॥ र र ,पा स ,र ज नि

खुम्म (कुक्कर मुत्ता) को गोमूत्र में पीस इसमे पारदको खरलकर

लोह सम्पुट में नियामक औषधियो का लेप कर उस मे पारद डाल सम्पुट कर वालुका यन्त्र में दाबू दे चूल्हे पर चढाय ४ प्रहर की आँच दे तो पारद की भस्म वने ।

(३६) [1]टंकणमधुलाक्षा च ऊर्णा गुञ्जा गुडोरसः ।
[2]मर्दयेद्भृंगजद्रावै र्दिनैकञ्च [3]धमेत्पुनः ॥
ध्मातो भस्मत्वमाप्नोति शुद्धः कर्पूर सन्निभः ।
गुरुमार्गेण संसेव्यः फिरंगान्तकरो रसः ॥ र कौ ,रसे सा स , र म ,यो म ,ना वि ,र च ,र मजरी , रसे चि ,र चि ,र का धे ,र ज नि ,र यो सा.

१ मध्वाज्य टङ्कणोपेतो ध्मात शुद्धोभवत्यपि इति रसे चिं ,र चिन्तामणौ ।

२ मर्दितो इति रसचण्डाशौ । ३ चालयेत र स चण्डाशु इति पाठ रस काभधेनौ, रस जलनिधौ अय पाठ प्रतिपादित ।

सुहागा, शहद, लाख, ऊन, गुंजा, गुड और पारे को एकत्र कर भगरा रस की एक भावना दे कुठाली में रख कर धमावे तो पारद की रस कपूर जैसी भस्म वने। कुछ ग्रन्थ कारो ने कहा है कि शहद घी सुहागा मे धमावे तो पारा शुद्ध हो फिर भंगरा रस का चोया देकर हिलाता रहे तो पारद की भस्म वने ।

नोट—उक्त चीजें तो भस्मो की निस्त्य परीक्षा में व्यवहृत हुई हैं ।

(३७) शुद्ध सूतं सम गुञ्जा [1]लाक्षोर्णा मधुटंकणम् ।
मर्दितो भृङ्गजद्रावैर्दिनं सम्पुटमागतम् ॥
ध्मातो भस्मत्वमाप्नोति सूतकर्पूरसन्निभम् ॥
र र ,आ क, रसे सा स ,र च ,र ,मजरी , भा भै र.

१ मधु टकण पावकै इति आनन्दकन्दे ।

रसचण्डाशु रस मजर्याम् भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

शुद्ध पारा गुजा, लाख, ऊन, शहद, सुहागा सब बराबर भागरे के रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर कुठाली मे रख कर धमन करे तो रसकपूर जैसी श्वेत भस्म वने आनन्दकन्द ने लाख, ऊन के स्थान पर चित्रक डाला है ।

(३८) खजीर्णे सूत तुल्यांशं लाक्षोर्णा मधु टंकणम् ।
गुंजाभृङ्गरसैः सर्वं दिनमेकं विमर्दयेत् ॥

अन्धितंवज्र मूषायां धमेद्भस्मनिपारदे ॥ अ क

इस पाठ मे इतनी विशेषता वतलाई है कि जो पारद पहिले अभ्रक जीर्ण हुआ हो उस पारद के साथ उक्त चीजो को भगरा रस मे खरल कर वज्र मूषा में रख धमन करे तो पारद भस्म वने ।

(३९) पारे को गूलर के दूध मे घोट टिकिया वनाय लाजवन्ती के नुगदेमे रख पुन उसे पीपल की लकडी मे भर डाट दे सम्पुटकर गजपुटकी आँच दे तो पारद की भस्म वने । अल की पा स

(४०) पारे को गूलर दूध मे घोट टिकिया वनाय भाँग के नुगदे में रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो पारद भस्म वने । अल की ,पा स.

(४१) पूर्वोक्तशुद्धमादाय पतिते स्वेदिते रसम् ।
खल्व मध्येविनिक्षिप्य मर्दयेदौषधद्रवैः ॥
तुरुटदुग्धैः शाखोट दुग्धै रर्कतरुद्रवैः ।
चन्द्रवल्ली चाऽऽखुकर्णी कृष्णधत्तूरकद्रवैः ॥
एतैः समस्तैर्व्यस्तैश्च मर्दयेत्तंदिन त्रयम् ।
ततश्च पीतवेणीजैश्चन्द्रवल्ली रसेन च ॥
एवमेतैश्चसम्मर्द्य नष्टपिष्टिं रसे चरेत् ।
दिनषट्कमम्मृद्यैवं यन्त्रे सोमानलेक्षिपेत् ॥
त्रिदिनं पाचयेद्यन्त्रे पुनरुद्धृत्य मर्दयेत् ।
पातनं मर्दनं त्वेवयावद्व्रजाति भस्मताम् ॥
तावदेव चरेद्धीमान्निरुत्थं भस्म जायते । रसा. ल , र यो सा

शुद्ध पारद को घण्टापाटला, सिहोडा, आक, सोमलता, मूषाकर्णी, धतूरा, इन सबो के रस में ३ दिन मर्दन करे फिर आकाशवेल और सोमलता के रस में ६ दिन मर्दन करे, जव पारा उन रसोमे मर्दनसे मिल कर नष्ट पिष्टी वन जाय टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर सोमानल यन्त्रमे विठाय ३ दिनकी आचदे, पुन. निकाल उक्त विधि से भावना दे पुट देता रहे, जव तक पारद की भस्म न वन जाय ।

(४२) पारेको करछीमे डाल मन्द आचपर रख चागेरी और वावचीके अर्क का चोया ४ प्रहर तक दे तो पारद भस्म वने । अल. की , पा स.

(४३) पारे को चवेली रसकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर

२-३ उपलो की आच दे तो भस्म बने। मु. फि., मा. अ' मि स

(४४) छोटे चिमगादड के पेट में पारा भर उसे फिटकिरी के चूरे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो पारे की भस्म बने। मु फि, पा. म

नोट—यह पारे की भस्म नही फिटकिरी की गील ही पल्ले पडती है।

(४५) पञ्चांग वर्वरीलिङ्गी द्रवेवस्त्रत्रयंरसः।
मर्दितः पुटितो भस्म स्वर्ण वर्ण प्रजायते॥
र. का धे, र. रा. सु., र ज नि.

पारे को नगन्दवावरी शिवलिंगी और चित्रक के रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुटकी आच दे तो सोनेके रगकी पारद भस्म बने।

(४६) छागमूत्रे घटेसूतं कर्षमात्रं तुषाग्निना।
शोषितं खाद्रेणाथ दारुणा घट्टयेत्पचेत्॥
सभस्मभाव माप्नोति सर्व योगोपकारकम्। नि र, पा.स.

एक घडे में पारा रख कर बकरे का मूत्र भर दे और मन्द मन्द आच दे मूत्र सूखनेपर खैर की लकडी से चलाता रहे तो पारद की भस्म बने।

(४७) पारद प्रयमत सूरणकन्द रसेन यामचतुष्टय मर्दनीय पश्चात्सूरण-कन्द गर्ते स्थापनीय नकछिक्कणीमुपर्यधोदत्वा तदनन्तरं गजपुटे मध्याग्निनाऽरण्य गोमयै पाचयेत्। सिद्ध्यति। का. चं. तं., पा स.

पारद को जिमीकन्द रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय जिमीकन्द के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो पारद की भस्म बने।

(४८) पारे को तुलसी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय साप के मुख में बन्द कर ऊपर से मृतसपुटकर के ५ सेर तुष की आच दे तो पारद भस्म बने। कु ह, पा स

(४९) श्यामाकुण्डलिकाविरेचनफलै र्धत्तूर पत्राम्बुना।
खल्वस्थोऽथसुयन्त्रितोऽपिनिहितो मृत्पञ्चकैः पूरयेत्॥
लिप्त्वोर्ध्वं कुकुरन्ध्रकोद्भव रसैः पश्चान्मुखे मुद्रितम्।
रात्र्यैकं विधृतोऽनलेऽथनिवृत. संसाध्यते मस्तुना॥
र. चि., र. ज. नि

तुलसी, कौंच, जैपाल और धतूरा रसमें पारदको भिन्न भिन्न भावना दे टिकिया बनाय सुखाय मूषा में रख उस मूषा में कुकरौंधा का रस भर

सम्पुट कर भूधर यन्त्रमें रख आंच दे पुन निकाल दही के तोड की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय एक पुट और दे तो भस्म वने।

इस भस्म के सेवन से तन्द्रा, मूर्छा, जडता, कम्प, छर्दि, अतिसार, स्वरभग, अम्लपित्त, मुखारोग, नेत्र रोग, प्रमेह, मेद वृद्धि क्षत क्षय आदि रोग दूर होते हैं। मात्रा १ रत्ती।

(५०) पारद को थोहर के दूध मे या तिधारा थोहर के दूध मे खरल कर टिकिया वनाय सुखाय थोहर के नुगदे में या घी कुमारीके गूदे मे रख सम्पुट कर ३-४ सेर उपलो की आंच दे तो पारद की भस्म वने। पा स., र. ति ,मि ख.

(५१) देवदाली हन्सपदी यवतिक्ता पुनर्नवा।
ताभिः सूतो विघृष्टव्यो म्रियते नात्र सशयः॥
रसे चि, र का धे, र चि, र ज नि, भा भै र

घघरवेल, हन्सराज, हिरनखुरी, पुनर्नवा इनके रस में पारद को कई भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आंच दे तो पारद की भस्म वने।

(५२) नागार्जुनीभ्यां सपत्राभ्यां गुटिकां सम्पाद्य, लोहसम्पुटे ससंभ्रिकार्गलफणिका फलमध्ये निहितगुटिकां दत्त्वा हस्तपुटं दद्यात् सिद्धि रसभस्म भवति। पा सं

नागार्जुनी दूधी के रस का चोया देकर पारे की गोली वनावे या इसके रस की भावना दे गोली वनाय सुखाय नागफनी फल के नुगदे में रख सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आंच दे तो पारद की भस्म वने।

(५३) ५ तोला पारे को ७–७ दिन छोटी दूधी, वडी दूधी, नकछिकनी के रस से घोट, टिकिया वनाय वन करेले की जड की नुगदी आध सेर में रख कपडे मे लपेट हडी में भर कपरौटी करके गजपुट की आंच दे तो उत्तम भस्म हो। अल की

(५४) देवदाली हरिक्रान्ता मारनालेन पेषयेत्।
तद्द्रवैः सप्तधासूतं कुर्यान्मर्दित [1]मूर्च्छितम्॥
तत्सूतं खर्परे दद्यादत्त्वा दत्त्वा तु तद्रसम।
चुल्ल्योपरि पचेद्याह्नि भस्म स्याल्लवणोपमम्॥
र र स, र ज नि, भा भै र

१ मुत्थिम् इति रसजलनिधौ ।

वन्दाल, कोयल दोनो को काजी में पीस छान इस रस में पारद को ७ भावना दे करछी मे रख इसी रस का चोया देता रहे तो नमक जैसी आकृति की पारद भस्म बने ।

(५५) एकविंशतिपलं सूत शुद्धं खल्वे विनिक्षिपेत् ।
मर्दयेत्कनकतैलेनएकविंशद्दिनावधि ॥
देवदाली रसेनैव भावनार्धशतानि च ।
क्षिप्त्वा विषपल तत्र दृढहस्तै विमर्दयेत् ॥
धारयेड्डमरु यन्त्रे लोहे कवच शेखरे ।
मासार्धं ज्वालयेद्वह्नि मूर्ध्वस्थं वारिशीतलम् ॥
ऊर्ध्वलग्नं मृते सूतं स्वागशीतं समुद्धरेत् ।
वल्लमात्रमिद देय जरामृत्यु लिहन्हरेत् ॥ नि र, पा स.

एक सेर पारद को धतूरे के तेल मे २१ दिन मर्दन करे फिर ५० भावना वन्दाल के रस की देकर फिर उसमे ४ तोला मीठा तेलिया चूर्ण डाल खूब खरल कर डमरु यन्त्र में रख १५ दिन की आँच दे । ऊपर के पात्र पर गीला कपडा रखता रहे । पश्चात् ऊपर लगे पारद को निकाल रखे, इसे ग्रन्थकार कहता है कि वह भस्म होगी । मात्रा ३ रत्ती ।

(५६) कृष्णधत्तूरतैलेन सूतो मर्द्यो नियामकैः ।
दिनैकं तत्पचेद्यन्त्रे कच्छपाख्ये न सशयः ॥
मृतः सूतो भवेत्सद्यः सर्वयोगेषु योजयेत् ।
आ क, पा सं, र ज नि, र रा सु, भा भैं र

आनन्द कन्दे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

पारे को काले धतूरा बीज के तेल मे तथा नियामक ओषधियो मे खरल करके सम्पुट कर भूधर यन्त्र में आच दे, इस तरह कई वार पुट देने पर पारद को भस्म बने ।

(५७) पारा २ तोला, नकछिकनी का रस डाल खरल करते करते सुखा कर टिकिया वनाय नकछिकनी के नुगदे में रख सम्पुट कर ५ सेर एरने उपलो की अग्नि दे तो पारद भस्म बने । र सि, अल की, पा स

(५८) २ तोले पारा को काटेदार पत्ते वाले थूहर (छित्तर थोहर) के

१०० फूलो मे ४० दिन घोट, टिकिया बनाय सुखाय सराव में डाल सम्पुट कर १ मन उपलो की आंच दे, तो पारद की सफेद भस्म बने, खुराक १ चावल। आतशक आदि रोगों को दूर करे। मु फि, पा स

(५९) पारे को करछी में रख आग पर रखे और वसमा (नील पत्र) का रस निकाल कर उसका चोया दे, १ सेर रस समाप्त होने पर उतार इस के नुगदे में रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आंच दे तो पारे की भस्म बने। अ. त, अल की, पा स

(६०) निर्गुण्डी रससंयुक्तं चपलेन समन्वितम्।
रक्तवर्णं भवेद्रसस्य दाडिमी कुसुमोपमम् ॥ र स क

पारा और चपल दोनो समभाग निर्गुण्डी रस की भावना दे, इसीके नुगदे में रख सम्पुट कर लघुपुट की आंच दे तो पारद की लाल भस्म बने।

नोट—इस योग में चपल की भस्म बनती है, पारद उड जाता है।

(६१) निर्गुण्डी नीलिका वज्री ब्रह्मदण्डी त्रिदण्डिका।
शतपुष्पा मुद्गपर्णी श्वेतार्को वानरीजया ॥
पेटारी कृष्णधत्तूरो विजया क्षीरकन्दकम्।
एतैः समस्तैर्व्यस्तैर्वा द्रव्यैर्मर्द्यं दिनत्रयम् ॥
शुद्धसूतं तप्तखल्वे तत्कल्क क्षीर कन्दके।
वज्रकन्देऽथवा रुद्ध्वा तन्मज्जाभिर्मृदा पुनः ॥
त वज्रं वज्रमूषाया रुद्ध्वा लघुपुटे पचेत्।
पुनर्मर्द्यं पुन. पाच्यमित्येवं सप्तधा क्रमात् ॥
रस कक्षपुटो नाम गुंजैक मधुनालिहेत्।
दीर्घायुरमितोजाः स्याद्वली पलित वर्जित ॥

र स क., रसा ख, र यो सा

पारे को तप्त खरल में डाल निर्गुण्डी, थोहर, ब्रह्मदण्डी, त्रिकाडथोहर, सौंफ, मुद्गपर्णी, आक, कौच अरणी, कघी, धतूरा, विदारीकन्द प्रत्येक के रस की १ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आंच दे, इसी विधि से ७ पुट देने पर कक्षपुट नाम की पारद भस्म बने। इसकी मात्रा १ रत्ती है। शहद से १ वर्ष तक सेवन करने पर आयु, ओज, बल की वृद्धि हो बाल काले हो।

(६२) निम्बूरसेन संमिश्र्य[1] मीनाक्षीरस संयुतम् ।
पारदं खल्वके कृत्वा सौभाग्यं च तदर्धिकम् ॥
मर्दयेत्सर्वमेकत्र दिनपञ्चावधिस्तथा ।
माषप्रमाणवटिका कर्तव्याः शुष्कता नयेत् ॥
काष्ठभाजनमध्यस्था माषचूर्णेन वेष्टिताः ।
इष्टीचूर्णेन संलेप्य पुनः शोष्या खरातपे ॥
मूषामध्ये विनिक्षिप्य पुनरंगारकेषु च ।
मूषां वटीयुतां क्षिप्त्वा धम्यमानं शनैः शनैः ॥
अनेन विधिना सूतो ध्मातोभस्मत्व माप्नुयात् ।
निःसृत्य वटिकाभ्योऽसौ भवत्यतिसितप्रभः ॥

र स चि, र से चि, र का धे, र ज नि.

१ एणखुर्यारसेन च इति रसचिन्तामणौ ।

पारे से आधा सुहागा मिलाकर निम्बू, मछेछी या हिरनखुरी के रस में उसे ५ दिन खरल कर उर्द बराबर गोली बनाय सुखाय उन गोलियों को कठौता में रख उन्हे उर्द के आटे मे दबा कर उस पर ईंट पीस कर लेप कर दे और धूप में सूखने के लिये धर दे फिर दृढ मूषा में उन गोलियो को रख कर सम्पुट कर मन्द मन्द आंच पर धमावे तो पारद की भस्म बने । यह सफेद रग की भस्म होगी ।

(६३) पलाशबीजकैरक्त जम्बीराम्लेन सूतकम् ।
सजीवं मर्दित यन्त्रे पाचिते म्रियते ध्रुवम् ॥ पा स, र सि.

पलाश पापडा और जीवक चूर्ण को पारद के साथ मिलाय जम्बीरी निम्बू के रस में खरल कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर वालुका यन्त्र मे या भूधर यन्त्र मे रख आंच दे तो पारे की भस्म बने ।

(६४) शुद्धसूतं चतुः सख्या पले खर्परके दृढे ।
क्षिप्त्वा तत् खर्परकयुक्त्या चुल्ल्यामारोप्य पाचयेत् ॥
पुनर्नवामूलरसं क्षिप्त्वा क्षिप्त्वा क्रमाग्निना ।
तावत्प्रमाण स्वरसो देयो मज्जति पारदः ॥
एव तावद्रसो देयो यावत्तद्भस्मतां व्रजेत् ।
हठाग्निनैव कुर्वीत भिषग् रसविचक्षण. ॥

एव सिद्धो भवेद्रम्यो रसः कुन्देन्दुसन्निभः ।

यो. म, र यो सा

१६ तोला पारे को करछी में रख आग पर रखे और उस पर पुनर्नवा रस का चोया देता रहे, यह क्रिया तब तक चलती रहे जब तक पारद की भस्म न बन जाय । ग्रन्यकार कहता है कि इस प्रकार चोया देते रहने पर पारे की सफेद भस्म बन जाती है ।

(६५) नागवल्ली रसै घृष्ट' कर्कोटीकन्द गर्भित ।
मृण्मूषा सम्पुटे पक्व सूतो यात्येव भस्मताम् ॥

र मं, र मजरी, चि र., भा प्र, शा ध, र च, आ क, रसे चि, र.का धे, र त, रसा.स, र ज नि, र रा सु, भा भै र,

पान के रस मे पारे को घोट टिकिया बनाय ककोडा कन्द के नुगदे में रख सम्पुटकर लघु पुट की आच दे तो पारद की भस्म बने ।

(६६) कोरटकाम्बु सयोगा दातपे मर्दयेद्रसम् ।
म्रियतेऽसौतदा सूतः सर्वकर्माणि साधयेत् ॥

र ज नि, र रहस्य, र का धे, र रा सु,

धूप मे बैठकर पियावांसा के रस में पारद को कई भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे तो पारद की भस्म बने ।

(६७) प्रोत्तान खर्परे चुल्ल्यां स्फटिकीलेपितेत्क्षिपेत् ।
पुनर्नवा रसे पक्वो मर्दनान्म्रियते रसः ॥

र स क, र रहस्य, र का.धे.,

ठीकरे में फिटकिरी का लेप लगा कर उसमे पारा डाल आग पर रख पुनर्नवा रस का चोया देता रहे और पुनर्नवामूल से रगडता रहे तो पारद की भस्म बने ।

(६८) पारे को बास की कोपल के रस मे इतनी भावना दे कि वह उसमे तद्रूप हो जाय, फिर टिकिया बनाय सुखाय कैथा के फल मे रख सम्पुटकर अर्ध गजपुट की आच दे तो पारे की भस्म बने । अ त,

(६९) बिच्छू बूटी के रस का चोया पारे पर देता रहे जब खगर हो जाय शराब का चोया दे तो पारे की भस्म बने । अल की, पा स

(७०) शुद्ध सूत पलान्यष्टौ वत्सनाभ तदर्धकम् ।

मर्दयेत्स्वर्णं तैलेन रक्त कर्पासक द्रवैः ॥
भाव्यं मारक गणेन गोलकं कारयेद्बुधः ।
निक्षिपेड्डमरुयन्त्रे मासार्धं परिपाचयेत् ॥
सोमनाथ रसं बद्ध स्वागर्शान समुद्धरेन । नि र, पा र,

पारा ३२ तो० मीठा तेलिया १६ तो० दोनों को पारा तेल में मर्दन कर पुन लालकपास के रस में पुन मारक औषधियों के रस में मर्दन कर टिकिया बनाय सुखाय डमरयन्त्र में बन्द कर ५ दिन की आग दे तो सोमनाथ रस नामक पारद की भस्म बने ।

(७१) आखुकर्णी रसैः पचदिनानि परिमर्दयेत ।
पारद खल्वके गाढ रससूक्ष्म न दृश्यते ॥
यथा तथा भृशाकुर्याद्गतरूप समन्तत ।
पुनरुत्थापितः सूतो हण्डिका यन्त्र मध्यत. ॥
पुनःखर्परके कृत्वा मण्डूकीरसे भावयेत ।
यामद्वयं त्रयं यावदाखुकर्णी रसै भृशम् ॥
एव सूतो भवेद्बद्ध शुभ्र. शुद्धः सुधामय ।
खोट पाटश्च जायेत टंकणाज्य मधुप्लुत. ॥
वली पलित नाशार्थं समर्थो.विद्यते रस. ।
मुखस्थागुटिका कार्यकल्पजीवी न संशयः ॥
र चि, रसे चि, र का घे, र ज. नि

प्रथम पारद को मूसा कन्नी के रस में ५ दिन घोट कर डमरु में रख ऊर्ध्वपातन करे, फिर एक करछे में डाल आग पर रख ब्राह्मी रस का चोया दे फिर मूसाकन्नी के रस का चोया दे २-३ प्रहर चोया देने पर पारा गाढा होकर गोली रूप बन जाता है उसे धोकर गोली बना कर मुख में धारण करने पर यह वली पलित को दूर करता है और वय स्थापक है ।

(७२) आखु कर्णी समगा च गुञ्जा सर्वं समांशिकम् ।
पेषयित्वारसो नेयो बद्ध्वावस्त्रेण स्रावितम् ॥
पारदं मर्दयेत्पश्चाद्दिनैकं खल्वयोगत ।
पातयेत्सप्त रात्रं तं पश्चाद्याम द्वय तथा ॥
ओषधीभ्या च तं ताभ्यां मर्दयेत्तदनु स्फुटम् ।

हरिडका लेपयेदूर्ध्वे ताभ्यामेव सम रसम् ॥
अधोदत्त्वा च मतिमान्दृढ सन्धि निरोधयेत् ।
द्वादश प्रहरान् यावन् नीचैर्नात्युच्चकै र्भवेत् ॥
वह्नि शीतल मादाय परीक्षेत परीक्षक' ।
अरुणदित्य सकाशं सुन्दर भस्म जायते ॥

र चि.,र ज नि

मूमाकन्नी, लाजवन्ती और गुजा सब बराबर ले कूट इनका रस निकाल इसमें पारद को एक दिन खरल करे और फिर ऊर्ध्वपातन करे, इस प्रकार ७ वार करे, फिर उक्त वनस्पतियो के रस में १ दिन घोट इन्ही वनस्पतियो का हाडी मे लेप कर उस में वह घुटा हुआ पारा रख सम्पुट कर १२ प्रहर की आंच दे तो लाल रग की पारे की भस्म बने ।

(७३) शुद्ध पारा ४ तोला गोरख मुण्डी बूटीका रस ४ तोला तुलसीपत्र चूर्ण २ तोला, एक केले का मूल जो एक फुट वर्ग का हो बीच से खाली करके उसमे तुलसीपत्र चूर्ण भर कर उस पर पारा रख दे ऊपर से बाकी चूर्ण भर कर उसमें मुण्डी का रस डाल केले के गूदे से भर कपरोटी कर २० सेर एरने उपलो की अग्नि दे तो पारे की भस्म बने । र सि.

(७४) शुद्ध पारे को मेंढक के मुख में धर कर, मुख बन्द कर, हडी मे रख कपरोटी कर, चूल्हे पर चढाय ३ पहरकी अग्नि दे तो पारे कीभस्म बने ।र सि

(७५) पारा २ तो० रामपत्री १ तो० कपूर ३ मा० सब को घोटने से पारा राम पत्री में मिलकर कज्जली बना लेता है, इसकी पानी से टिकिया बनाय सुखाय केलाकन्द में रख सम्पुट कर १५ सेर उपलो की आच दे तो पारद की भस्म बने । अ हि, मि ख

(७६) पारे के बराबर रामपत्री मिलाय खरल कर पानीसे टिकिया बनाय उस पर जावत्री का लेप चढाय सुखाय माई के चूर्ण मे रख सम्पुट कर ३ सेर उपलो की आँच दे तो पारद की भस्म बने । अ त.

(७७) रामपत्री और हन्सराज के नुगदे मे पारा रख सम्पुट कर २ उपलो की आँच दे तो पारद भस्म बने । कु ह, पा स

(७८) रेवँदचीनी को तुलसी रस मे पीस नुगदा बनाय उसमे पारा रख सम्पुट कर लावक पुट की आच दे तो पारद की भस्म बने । र सि

(७९) रेवदचीनी को गोजिह्वा के रस में नुगदा वनाय उसमे पारा रख सम्पुट कर लावक पुट की आच दे तो पारद की भस्म वने । पा. स

(८०) रतनजोत वूटी के रस मे पारद को घोट टिकिया वनाय इसके नुगदे मे रख सम्पुट कर लावक पुट की आच दे तो पारद की भस्म वने ।

कु ह, पा. न, मि ख.

(८१) पारे को लाणा, हुब्बुल्लास, असगन्ध, और आकदूवकी ७-७ भावना दे टिकिया वनाय उक्त वूटी के नुगदे में रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो पारे की भस्म वने । मि ख.

(८२) नव प्रसूता सुरभी जरायु मिश्रितोद्भवम् ।
अन्धमूषा गतोध्मातो म्रियतेपारदस्तराम ॥

रसे. चि, र. का धे., र चि, र रा सु, र ज नि, भा भै र

वियाई हुई वछियाकी जेरमें पारा रख अन्ध मूषामे वन्द कर धमन करनेसे पारद की भस्म वने ।

(८३) शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध वग १ तोला वग को गलाकर उसमें पारा डाल दे और ठण्डा करले, गोली वन जायगी, फिर १०तोला पत्र हुब्बुल्लास (मोरिद) को पीस कर उसे एक कपडे की पोटलीमे वांध ले और उस पोटली के वीच मे उस पारे की डली को रख कर उस पर १ सेर कपडे की लीरे कस कर लपेट दे फिर उसे एकान्त निर्वात स्थान में रख कर अग्नि लगा दे या दो पाथियो की अग्नि दे दे । लेखक कहता है कभी दोनो ही भस्म हो जाती है, कभी कली नीचे वैठ जाती है और पारे की सफेद भस्म हो जाती है । मि ख.

(८४) शुद्ध पारा, शुद्ध वग तोला तोला भर वग को गला कर पारा डाल गोली वना ले, फिर १० तोला वथुआ को सुखा कर उसके वीच में रख कर उपरोक्त विधि से अग्नि दे, तो पारद की भस्म वने । मि. ख.

(८५) उपरोक्त डली को तेजवल के छिलके के चूर्ण मे रख कर उपरोक्त विधि से कपडे में लपेट अग्नि दें तो पारद की भस्म वने ।

मि ख, पा स., मु फि.

(८६) लज्जालु रस सपिष्टो [१] रसं हिंग्वतसी रसैः ।
खल्व मध्ये विघृष्टव्यो मषामध्ये विनिक्षियेत् ॥

र चि, रसे चि, र का धे, र ज ति, र रा सु

१ हिंग वर्बरिका इति रसचिन्तामणौ ।

पारेको लाजवन्ती, ग्रलसी के या लाजवन्ती, नगन्ददावरी के रस मे घोटकर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर मन्द मन्द ऑच पर धमावे तो पारद की भस्म वने ।

(८७) लज्जालु रस सपिष्टो निवद्ध पारदो भवेत् ॥
नष्टपिष्टो विधातव्यो मूषिकामध्य सस्थित. ।
तद्रसैश्चपुन. सम्यक् म्रियते पुटपाकत । र चि ,र ज ति.

पारे को लाजवन्ती के रस में इतना घोटे कि मिल जाय उसकी टिकिया वनाय कुल्हड में रख उसे लाजवन्ती रस से भर कर सम्पुट कर पुट पाक करे तो पारद की भस्म वने ।

(८८) सूतमभ्र वटक्षीरै. त्रियामं मर्दयेत्प्रिये ।
मूषागर्भे विनिक्षिप्य करीषाग्नौ तु दिन पचेत् ॥
भस्मी भवति राजेन्द्र. शुभ्र सर्वार्ति नाशन । ग्रा कं

पारे के वरावर ग्रभ्रक चूर्णमिलाय वटदुग्ध की ३ दिन भावना दे सम्पुट में रख करीष की ग्राच दे तो पारे की भस्म वने ।

(८६) वटक्षीरेण सूताभ्रौ मर्दयेत्प्रहरत्रयम् ।
पचेत्तेन काष्ठेन भस्मी भवति पारदः ॥
र ज नि ,र र स ,र रा.श ,र सा प , र रा मु , भा भै र.

पारा ग्रौर ग्रभ्रक को वटदुग्ध की ३ प्रहर भावना दे सम्पुट मे रख वट की लकडी की ग्राच दे तो पारद भस्म वने ।

(६०) वाराहीकन्द संयुक्तं रसकेन समन्वितम् ।
श्यामवर्ण भवेद्भस्म वलीपलित नाशनम् । र स क.

पारा खपरिया दोनो को वाराहीकन्द रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लावक पुट की ऑच दे तो श्यामवर्ण की पारद भस्म वने ।

(६१) विष्णुक्रान्तामपामार्ग[१]महिफनेन्द्रवारुणी ।
सर्वेषा च रसै पिष्टो म्रियते सूतक. पुटात् ॥
र चि ,रसे चि , र का धे ,र ज नि , भा भै.र.

१ महि चक्रेन्द्र इति रसेन्द्र चिन्तामणौ ।

कोयल, अपामार्ग, ग्रफीम ग्रौर इन्द्रायण इन सवो के रसो मे पारद

को घोट टिकिया बनाय सुखाय लावक पुट की आँच दे तो पारद की भस्म बने।

(९२) पारे को सहदेवी रस का चोया दे जब खगर हो जाय इसीके नुगदे में रख सम्पुट कर लावक पुटकी आँच दे तो पारद भस्म बने। अल.की, पा स

(९३) विष्णुक्रान्ता वेणिका च कांजिकेन विमर्दयेत्।
तत्कल्के तु रसोमर्द्य सप्तधामूर्छितोऽधिकम्॥
तं रसं श्रावके क्षिप्त्वा सेचयेत्तद्द्रवैर्मुहुः।
दीपाग्निनादिनं पच्यात्भस्मस्याल्लवणाकृति.॥ आ क, र त,

रस तरगिण्या भिन्नपाठ प्रतिपादित।

कोयल और आकाशवेल दोनो को काँजी मे घोट रस निकाल उस रस मे पारद को मर्दन कर ऊर्ध्वपातन करे, इस प्रकार ७ वार करे, पुन करछे में पारा रख दीपाग्नि पर चढाय उक्त रसोका चोया देता रहे तो दिनभर चोया देते रहने से पारा नमक जैसा बन जाता है।

(९४) व्यालस्य गरले सूतं मर्दयेत्सप्तवासरम्।
शम्भुनाल कृते यन्त्रे तन्मध्ये तद्रसंक्षिपेत्॥
वह्निप्रज्वालयेद्गाढं वारिणाचोर्ध्वे शीतलम्।
यामद्वादशकं चैव सुसिद्धो जायते रस.॥
तिलमात्र प्रदातव्य सर्वरोगनियच्छति। नि र, र रा सु, र ज नि.,

पारे को साप के विप मे ७ दिन खरल कर डमरु यन्त्र में रख १२ प्रहर की आच दे तो पारद भस्म बने। ऊपर के पात्र को सदा शीतल रखे।

(९५) साप के मुख मे पारा रख कर सम्पुट कर उसे गोवर के ढेर मे दवा दे चतुर्मास वाद निकालकर गजपुटकी आच दे तो पारा भस्म हो। पा स.

(९६) सिद्धि मूलिका नामाख्य मूलिका स्वरसेन च।
सूत त्रिवारं सम्मर्द्यानिक्षिपेल्लोह पात्रके॥
ध्माते तु सुलभ भस्म जायते घटिकार्धकम्। र.कौ

सिद्ध मूली के रस की पारद को ३ भावना दे करछी मे रख धमन करे तो आसानी से पारद की भस्म बने।

(९७) पारे को १ सेर मूली रस की भावना दे करछी मे रख उस पर निम्बू रस का चोया दे तो पारे की भस्म बने। अ ति, मि ख

(६८) मूली रस की भावना दे मूली के नुगदे मे रख सम्पुट कर भूभुल की आच दे तो पारे की भस्म वने। कु र, पा.स

(६९) पारे को करछी में रख आग पर चढाय मूली रस का चोया देता रहे तो पारे की भस्म वने। स अ

(१००) तन्मूलिका रसेनैव नीलशृंगी रसेन च।
कृष्णवर्णत्वमायाति सूतं जम्बूफलोपमम् ॥ र कौ

सिद्ध मूली रस और मीठा तेलिया रस का पारद पर चोया देता रहे तो पारे की जामुन जैसे रग की भस्म वने।

(१०१) तन्मूलिका रसेनैव वासाया. स्वरसेन च।
पीत वर्णं भवेद्भस्म यामार्धं सुमनोहरम् ॥ र कौ.

सिद्ध मूली रस और वासा रसका चोया पारद पर ६ घटा देता रहे तो पीले रग की पारद भस्म वने।

(१०२) तन्मूलिका रसेनैव कृष्णोन्मत्त रसेन च।
श्यामवर्णं भवेद्भस्म यामार्धं सुमनोहरम् ॥ र कौ.

सिद्ध मूली और काले धतूरे के रस का पारद पर ६ घटा चोया देता रहे तो श्यामवर्ण की पारद भस्म वने।

(१०३) तन्मूलिका रसेनैव जम्बू फल रसेन च।
मर्दयेत्सूतराजेन्द्रं कर्बुरं भवति क्षणात् ॥ र कौ.

सिद्ध मूली रस और जामुन फल रस की पारद को भावना दे पुन करछी में रख उक्त रस का चोया देता रहे तो पारद भस्म वने।

(१०४) पारा को सीप जीव के साथ खरल कर चूना के मध्य दाबू दे सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच देतो पारा भस्म वने। र सि

(१०५) ४० तो० सिरस रस मे पारद को खरल कर टिकिया वनाय सुखाय सिरस के नुगदे मे रख सम्पुट कर ६ सेर उपलो की आँच दे तो पारे की भस्म वने। अ त

(१०६) पारे को सिरस रस नकछिकनी की भावना दे रीठा के नुगदे में रख सम्पुट कर ६ सेर उपलोकी आच दे तो पारद भस्म वने। जौ हि, मि ख.

(१०७) किसी करछी मे अग्नि स्थायी सोरा के मध्य पारे को दाबू देकर प्याले से ढक २ घटा आच पर रखे तो पारे की भस्म वने। कु ह

(१०८) सोरा को चाय के क्वाथ में पीस नुगदा वनाय उसमे पारा रख सम्पुट कर २ उपलो की ग्राच दे तो पारा भस्म वने। मि ख

(१०९) हल्दी के नुगदे मे पारा रख सुखाय २॥ सेर वस्त्र सम्पुट में रख आग लगा दे तो पारा की भस्म वने। र ति.,मि.ख.,

(११०) पारा, हीग वरावर थोहर दूव में घोट टिकिया वनाय सुखाय थोहर के नुगदे मे रख सम्पुट कर १० उपलो की ग्राच दे तो पारे की भस्म वने। र सि

(१११) शाक वृक्षस्य पक्वानि फलान्यादाय शोषयेत्।
पेपयेद्रविदुग्धेन तेनमूपां प्रलेपयेत् ॥
आदि प्रसूत गोजात जरायुश्चूर्णपूरितः।
तन्मध्ये सूतको रुद्धा ध्मातोभस्मत्व माप्नुयात् ॥
आ क ,र र ,पा म ,र ज नि

सगुन के पक्के फलो को सुखाकर चूर्ण वनाय आक दूव की भावना दे नुगदा वनाय उसमें वछिया की जेर भर उसमे पारा रख सम्पुट कर कोयलो की ग्राच मे धमावे तो पारद भस्म हो।

(११२) हिंगुना मुसलीकन्द लाङ्गली रक्तचित्रकै.।
मूपा लेपय यन्त्रेण रसोभवति कुंकुमम् ॥ र रहस्य ,र का धे.

हीग, मूसली, कलिहारी, लाल चित्रक इनको पीस नुगदा वनाय उसमें पारा रख सम्पुट कर लवण यन्त्र में दावू दे ४ प्रहर की ग्राच दे तो पारद भस्म वने।

शुद्ध पारद के योग

१० तो० पारे को अत्यन्त गाढे कपडे की पोटली में वाध कर पीने वाले दूव मे वरावर का पानी मिलाय उसमें वह पोटली डाल कर दूध को उवाला दे। पानी जल जाने पर पोटली निकाल ले और पारे को धोकर रख ले। उस दूव को खाड डाल कर नित्य पीवे तो कुछ दिन मे क्षुधा वृद्धि होती है, वीर्य गाढा होकर स्तम्भन शक्ति वढती है। मस्तिष्क व हृदय को इसके सेवन से वल मिलता है। नू वि ,मि ख

(२) पारेके वरावर जावत्री या रामपत्री या जायफल किसीमें मिला कर खूव खरल करे। जावत्री से काली और रामपत्री व जायफल चूर्णसे मिलाकर पारे को घोटने से पीले रग की कज्जली वनती है। जव पारा विलकुल मिलकर

कज्जली रूप को प्राप्त होजाय निकाल शीशी में डाल ले। मात्रा दो रत्ती है शहद से मक्खन से दूध से सेवन करने पर शक्तिवर्धक, वीर्यवर्धक, स्तम्भक है आमाशय को पुष्ट करता और क्षुधा बढाता है। नू वि ,श्र स

(३) पारा एक तो० मिश्री २ तो० दोनो को घोट कज्जली बनावे, मात्रा १ रत्ती। शक्तिवर्धक, स्तम्भक है। नजला, न्यूमोनिया में लाभदायी है। मखजन

पारद भस्मानुपान

अथ शुद्धस्य सूतस्य मृतस्य मूर्छितस्य च।
धवला पिप्पली धात्री रुद्राक्षघृतमाक्षिकैः॥
पाप रोगान्तको रोग पृथिव्यामेव दुर्लभः।
वल्लश्चास्य प्रयोक्तव्यो वाकुची क्वाथसयुतः॥

र चि, रसा स, र र, र च, र सि स, र कौ, यो म, र का धे, रसे सा स, र रा नु, र यो सा,

पारे की कज्जली या जावत्री रामपत्री की बनी कज्जली या मिश्री द्वारा बनी कज्जली या रससिन्दूर या चन्द्रोदय या रसकपूर कोई हो उस में धवर बरुआ, पीपर, आवला, रुद्राक्ष प्रत्येक समभाग कूट चूर्ण बनाय ३ रत्ती की गोली बना कर रख ले। जिन वालको को छोटी या बडी मसूरिका, माता निकल रही हो उसे ३ माशे वावची को कूट क्वाथ बनाकर उसके साथ दोनो समय सेवन करावे तो मसूरिका का उग्रवेग शान्त हो जाता है। यह अनुभूत है।

कज्जली अनुपान—वरना, गुलावासी, सहजनाछाल, जैत, मेढासिंगी, लताकरज, मूर्वा, अरणी, पियावासा, कुन्दरुमूल, मौलश्रीछाल, अपामार्ग, चित्रक, सतावर, विल्वछाल, दूधी, कुशा, कटेली दोनो सव समभाग चूर्ण बना कर रख ले। इसमें से २ तोला नित्य क्वाथ बनाकर छान उसमे शहद मिलाय १ माशा कज्जली १ तो० शहद से चाटकर ऊपर से काढा पीवे। इस प्रकार १ मास करने पर अपक्व विद्रधि, पेट के भीतर का फोडा, गुल्म सव नष्ट होते है।

कज्जली को शहद मिलाकर चाटे ऊपर से तक्र पीवे, तक्र पर ही रहे त पुरानीसे पुरानी सग्रहणी दूर हो जाती है। सग्रहणीमें कज्जलीका प्रयोग एक तो क्रमविर्वद्धित होता है अर्थात् १ रत्ती से आरम्भ कर २१ रत्ती तक मात्रा बढावे

और फिर घटाकर १ रत्ती तक आ जाय। दूसरे ४ रत्ती से १ माशा तक नित्य सेवन करता रहे। दोनो विधियो मे लाभ होता है।

रससिन्दूर चन्द्रोदय अनुपान—कपूर, जायफल, लौंग, इलायची, कस्तूरी और रससिन्दूर या चन्द्रोदय सब बराबर पान के रस में घोट ३ रत्ती की गोली बना कर रख ले, दोनो समय दूध से मक्खन मलाई से सेवन करने पर वीर्य गाढा होता है। विषयेच्छा बढती है स्तम्भन शक्ति में वृद्धि होती है, शरीर हृष्ट पुष्ट हो जाता है। इसके सेवन से प्रमेह, पाण्डु, सग्रहणी, जीर्ण-ज्वर, उन्माद, धनुर्वात, हिस्टीरिया में लाभ होता है।

पारद भस्म के अन्य अनुपान—वासा पत्र रस से रक्त पित्त में, दश-मूल क्वाथ से २ रत्ती पीपल चूर्ण युक्त प्रसूता ज्वर में, सन्निपात में, ऊष्ण जल शहद से मेद वृद्धि मे, हींग, सोठ, नमक, यवक्षार से मन्दाग्नि में, पक्तिशूल, अन्नद्रव शूल मे, शखपुष्पी, वच, ब्राह्मी, कुठ चूर्ण से अपस्मार, हिस्टीरिया में, समाकदाना, मिर्च, जीरा, नमक चूर्ण से अरुचि में, पीपल शहद से मूर्च्छा में, अजवायन गुड से शीतपित्त में, बिजौरा रस शहद से हिचकी में, शहद मिश्री लाजामण्ड से वमन में, दाह में, हीग पीपर शहद से अतिसार विशूचिका में, कुटकी क्वाथ से पित्ताश्मरी मे, तक्र से पाण्डु मे, ग्रहणी में, कुटज, भिलावा चूर्ण से अर्श में, खदिर क्वाथ से कुष्ठ में, एरण्ड तेल शतावर. क्वाथ से वात रोगो में, पाषाणभेद कुलथी क्वाथ से अश्मरी मे, शिलाजीत से भगन्दर में, ऊटनी दूध से उदररोगो में, अम्बर कस्तूरी से धनुर्वात में पारद भस्म को देने से लाभ होता है। इसकी मात्रा १–२ रत्ती तक है।

पित्तल भस्म

(१) निम्बूरस शिलागन्धे पेष्टिता पुटिता[1]ऽष्टधा।
रीति रायाति भस्मत्वं [2]ततो योज्या यथायथम्॥
र र स., र त सा, र त, र सा, रसामृत, र ज नि.

१ त्रिधा इति रसामृते २ ताम्रवद्वाऽथ मारयेत् इति रसामृते।

रसतरगिण्या निम्बू स्थाने कुमारिका भावना नियोजितम्।

मैनसिल और बलि दोनो को निम्बूरस में पीसकर पीतल के पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। रसतरगिणीकार ने निम्बूरस की जगह कुमारी रस की भावना दी है और मैनसिल, बलि को पीस कर

पत्रो पर लेप करे ऐसा लिखा है इसमें कोई अन्तर नहीं पडता। उक्त विधि से रसामृतकार कहता है तीन पुट में ही भस्म हो जाती है। अन्य ग्रन्य आठ पुट देने का आदेश देते है।

(२) ताम्रवन्मारणं तस्य कृत्वा सर्वत्र योजयेत् ।

(३) मृतारकूटक कान्तं व्योमसत्वं च मारितम् ।

(४) म्रियते गन्धतालाभ्यां युक्ता वा पुटपाकतः। र र स, र त, र ज नि.

रसतरंगिण्या तृतीय विधि अधिक ।

पीतल को उन्ही विधियो से भस्म करे जिनसे ताम्र की बताई है। अथवा मृत कासा कान्त लोह और अभ्रक सत्व से इसकी भस्म बनावे। अथवा वलि हरिताल दोनो के योग से पित्तल की भस्म बनावे।

(५) [1]अर्कक्षीरेण सपिष्टो गन्धकस्तेन लेपयेत् ।
समेनारस्य पत्राणि शुद्धान्यम्लद्रवै मुहु ॥
ततो भूपापुटे धृत्वा पुटेद्गजपुटेन च ।
एवं पुटद्वयेनैव भस्मारं भवति ध्रुवम् ॥ र प्र, र त, र ज नि

उक्त पाठस्थाने रसजलनिधौ अय पाठोऽधिक ।

अर्क क्षीर वटक्षीर [1]निर्गुण्डी क्षीरक तथा ।

[1] क्षार निर्गुण्डिज तथा इति रसकामधेनौ ।

काजी में प्रथम पित्तल के पत्रो को शुद्ध करके पुन आक के दूध मे गन्धक को पीस कर पित्तल के पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुटकर गजपुट की आच दे, इस विधि से दो पुट दे तो पित्तल की भस्म बने। रसजलनिधिकार ने आक, वट और सभालु के रस में विना गन्धक योग के पित्तल मारने का विधान दिया है। रसकामधेनुकार सभालू क्षार को आक और वट दुग्ध मे खरल कर इसका पित्तल पर लेप लगाकर सुखाय भस्म बनाने का विधान देता है। बिना वलि के पित्तल की शीघ्र भस्म नही बनती यह बात ध्यान में रखनी चाहिये।

(५) पित्तल या कासा के पत्र बनाकर शुद्ध करे पुन मैनसिल और वलि दोनो पित्तल पत्रोसे अष्टमाश लेकर निम्बूरसमें घोट कल्क बनाय पत्रो पर लेप कर सुखाय वासा, आह्मी चूर्ण के लुगदे में रख कुक्कुट पुट की आच दे, इस विधि से ३-४ पुट दे। पश्चात् जब पिस जाय तो उसमें उसी तरह मैनसिल, वलि मिलाय चौलाईके रस में घोट टिकिया बनाय सुखाय उक्त चूर्णो के साथ

सम्पुट कर कुक्कुट पुट से कुछ अधिक आच दे, १५-१६ पुट देने के वाद फिर वनस्पति चूर्ण देने की आवश्यवता नही। केवल चौलाई रस मे घोट टिकिया वनाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इस विधि से ३० आच देने पर सुन्दर भस्म वने। —रसयोगसागर

पिरोजा भस्म

पिरोजा को कूट कर चूर्ण करे फिर खरल में डाल कर कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो एक ही पुट मे पिरोजा की भस्म वने। रसा सा, स र, त सा

(२) पिरोजा के दानो को छाट ले, उसमें तगे पत्थर को घिस कर निकाल दे, साफ हरे रग के दानो को कुठाली मे डाल कर अगीठी में रख कर धमन करे, धमन करने से पूर्व कुठाली को टीन के पत्रे से ढँक दे, नहीं तो तीव्र आच लगते ही पिरोजा चटख चटख कर कुठाली से वाहर गिरने लगता है, फिर उसे तीव्र आच दे कर लाल करे, लाल हो जाने पर उसे केवडा या गुलाव जल—जो एक प्यालेमे १०-१५ तोला रखा हो उस—में शीघ्र डाल दे। इस विधि से ३-४ वार वुझाने से पिरोजा हल्का सफेद मट मैला वर्ण का भगुर हो जाता है उसे पीस कर गुलाव जल की भावना दे कर रख ले। स्वानुभूत विधि है।

पिरोजा भस्म के गुण

शरीर पर जव विस्फोट रूप के व्रण निकला करते है जिन मे पानी सा तरल निकलता है इसके सेवन से वह कुछ दिनमें जाते रहते है। शरीर मे किसी प्रकार का विप बिकार रह गया हो और उससे कोई कष्ट वना रहता हो तो ऐसी दशामे पिरोजा भस्म के सेवन से लाभ होता है। यह उत्तम अगद है। इसे अगद के योगो में डाला जाय तो यह अगद नाशक औपधियो के गुण को वढा देता है मात्रा १-२ रत्ती। शहद के साथ सेवन करावे।

पुष्पराग (पुखराज) भस्म

पुखराज को कूट कर चूर्ण वनावे फिर उसके वरावर वलि और हरिताल का चूर्ण मिलाय कुमारी रस में एक दिन खरल कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ८ पुट देने पर पुखराज की

भस्म बने । रसायन सार सग्रह

(२) पुखराज को ७ दिन बकरी के दूध मे भिगो रखे । दूध नित्य बदलता रहे, फिर निकाल साफ कर जगली गुलाब के फूल (सेवती) में रख सम्पुट कर सुखाय सम्पुट को कुम्हार के आवे में रख दे तो पुखराज भस्म हो । मि स

(३) पुखराज एक कठोर रत्न है इसलिये इसे कुठाली में रख कर खूब लाल करे और उसे गुलाब जल व केवडा के जल मे बुझाता रहे २१ वार बुझाने पर पुखराज भगुर हो जाता है, फिर उसे गुलाबजल में दो तीन दिन पीस कर सुखाय ले उत्तम सफेद भस्म बनेगी । स्वानुभूत ।

पुखराज भस्म के गुण

यह भस्म विष बाधा, वमन, कफविकार, वात विकार, मन्दाग्नि, दाद,कुष्ठ अर्श मे लाभकारी है । दीपन है पाचन है । मात्रा ½ रत्ती से १ रत्ती तक ।

बेरपत्थर भस्म

बेरपत्थर क्या है ?—फारसी में इसे सग यहूद अरबी में हजरुल यहूद कहते है । हमारे देश की यह चीज नही है, इसलिये रस ग्रन्थो में इसका कही उल्लेख नहीं मिलता । यूनानी चिकित्सा के ग्रन्थो मे इसका प्रयोग प्राय अश्मरी रोग में आया है ।

यह पेवदी बेर जैसी आकृतिका इंच सवा इच लम्बाई में बेर जैसा पत्थर का बना हुआ होता है, जिस का बाहर से मटियाला रग होता है, जिसपर आड़ी समानान्तर झुरियां या धारियां पडी होती है और बीचमें कुछ ऊचे नीचे उभार भी बने होते है तोडने पर यह परत के रूप में चिटक कर टूटता है और इसका तोड अन्दर से साफ चिकना हरापन लिये भूरा सफेद होता है । यह स्वाद रहित मुलायम पत्थर है जो पानी डाल कर घिसने से घिस जाता है ।

प्रकृति में इस की रचना उन प्राचीन क्षुद्र जीवो के अवशेष से—जो भूमि मे दबकर प्रस्तूरी भूत हो चुके थे उनसे—हुई है । यह उसी प्रकार का चूनजम यौगिक है जैसा चूने का ककड, किन्तु हमारे देश में यह नही पाया जाता । यह सीरियाके बैरूत पर्वत माला व मक्का मदीना (अरब) में पाया जाता है, वहीं से आता है । प्राणियो के अस्थिपञ्जरो का प्रस्तरी भूत होने से इसे अगरेजी मे Fossil Encrinite कहते है, यह वास्तव में चूनकज्जलेत का ही एक

यौगिक है। जैसा कि चूना का पत्थर या चूना का कंकड या घोंघा, मूंगा आदि।

वेरपत्थर भस्म विधि—वेरपत्थर १० तो० को कूट कर चूर्ण करे बारीक करके खरल मे डाल मूली के रस की भावना दे, ३ सेर मूली का पानी भावना में खर्च कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलों की आच दे। इस विधि से तीन पुट दे। चा. चि, न. ग्र

(२) वेरपत्थर को कूट कर बारीक चूर्ण वनाय मूली रस की १ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय चौगुने सोरे के मध्य रख कर सम्पुट कर ८ सेर उपलों की पुट दे, इस विधि से ४ पुट दे तो वेर पत्थर भस्म बने। न ग्र, मा.ग्र

(३) वेरपत्थर को चौगुने धमासे के नुगदे में रख कर शराव सम्पुट कर गजपुट की आच दे फिर मूली के रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो वेर पत्थर की भस्म बने। र त. मा

(४) वेरपत्थर को कुठाली मे रख करके तपावे और कुलथी के क्वाथ में बुझाता रहे ७ बार बुझावे फिर पीस कर दुगना सोरा मिलाय मूली रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो वेरपत्थर की एक ही आच में भस्म बने। यू. सि यो. स, स ग्र

(५) १० तो० वेरपत्थर को चूर्ण करके मूली के रस की ७ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय मूली के या कुलथी के नुगदे के मध्य रख कर सम्पुट कर ७ सेर उपलो की आच दे तो भस्म बने। यू सि. यो सं, अ.स

(६) वेरपत्थर २ तो० विच्छू काले ५-७ दोनों को सम्पुट में बन्द कर ५ सेर उपलो की आच दे तो भस्म बने, सबको निकाल विच्छू सहित पीस कर रखे। यू सि यो स., अ स.

(७) वेरपत्थर १० तो० को कूट कर मूली के रस से टिकिया वनाय सुखाय सोसन, प्याज, मूली, विल्व पत्र, कुलथी, बिनौला, गोखरू, कुसुम्भ बीज इन के नुगदे मे रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो वेरपत्थर भस्म बने। न. वि.

वेरपत्थर भस्म के गुण—वेरपत्थर भस्म का उपयोग यूनानी चिकित्सा में अश्मरी भेदन के लिये हुआ है। कहते हैं पथरी चाहे वृक्क (गुर्दे) मे हो या वस्ति में इस के सेवनसे टूट कर या घुल कर निकल जाती है। इससे भिन्न इसे मूत्र कृच्छ्र और सुजाक में भी देते है।

वहुत से यूनानी चिकित्सक वेरपत्थर को विना भस्म किये इसी तरह उसे पानी में घिस कर अश्मरी रोगी को पिलाते हैं। वहुत से भस्म वना कर भी देते हैं। मात्रा ४ रत्ती से लेकर १ माशा तक है। अनुपान-कुलथी का क्वाथ, गोखरू क्वाथ, या सोरा कद्दूके वीज और गोखरू को पीस कर इनका पानी (हिम) निकाल कर उसके साथ सेवन कराते हैं।

भाण्डरञ्जन (कोबाल्ट) भस्म

भाण्डरञ्जन ५ तो० को अग्नि में तपा तपा कर कुमारी रस में ७ वार वुझावे फिर कूट कर सिरसके पत्तोंके रसमें खरल कर टिकिया वनाय हाथीसुण्डी के नुगदे मे रख सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आंच दे। यदि एक आंच में रंग न आवे तो उक्त विधिसे एक आंच और दे तो भस्म हो। मात्रा ½ रत्ती। त्वग्ग्रहण रक्तक्षय, पाण्डु में विशेष लाभदायी है। तृ वि

मण्डूर क्या है ?

मण्डूर क्या चीज है ? इस के सम्बन्ध में हमारे ग्रन्थो में लिखा है।

ध्मायमान लोहस्य मलं मण्डूरमुच्यते।

र र स, र सा प.

प्राचीनकाल में लोह खनिज से जव धमन विधि द्वारा लोह निकालते थे तो उस समय जो उस खनिज का मैल रहता था उस को लोह किट्ट या मण्डूर कहते थे।

इस लोह किट्ट में कौन कौन से पार्थिव अंश मिले रहते है ? या यह वास्तव मे लोह का ही किट्ट रूप पदार्थ है ? इस का विवेचन हमारे ग्रन्थकारो ने नहीं किया, इस का विशेष ज्ञान अब विश्लेषण द्वारा हुआ है। इस मण्डूर में तीन प्रकार के मिश्रित पदार्थ पाये जाते है।

(१) उस लोह खनिज के अवशिष्ट द्रव्य जो लोह को निकाल लेने के वाद वच रहते है।

(२) ईंधन के पदार्थों की राख जो लोह खनिज को गलाते समय उस मे मिलती रहती है।

(३) वह खनिज का द्रावक पदार्थ जो खनिज को गलाते समय उस में मिलाया जाता है और जो लोह को खनिज से भिन्न कर देने के वाद उस द्रव

लोहे पर तैरता रहता है ।

लोह खनिज को खाली अग्नि पर रख कर धमन किया जाय तो उससे लोह भिन्न नही होता, प्रत्युत लोह खनिज के साथ चूने के पत्थर को मिलाकर जब धमाया जाता है तो यह चूने का पत्थर द्रावक का काम करता है,इसी के प्रभाव मे लोह खनिज (कान्त पाषाण या कठिन गेरू पत्थर) से ही लोह निकाला जाता है। कान्त पाषाणमें ७२ ४ प्रतिशत और कठिन गैरिक पाषाणमे ७० प्रति शत लोह का अश होता है, बाकी अन्य द्रव्य मैगनेसियम, स्फटिकम, शैलिका आदि होते है। जब लोहा गलता है तो यह खनिज यौगिक उस द्रव के ऊपर आ जाते है।

चूने का पत्थर जिसका अधिक भाग चून कज्जलेत होता है, यह जब लोह खनिजो के साथ मिला कर धमाया जाता है तो लोह खनिज का ऊष्मजन चूनकज्जलेतके यौगिक से कज्जलको छीनलेता है औरवह ऊष्मजन उसके कज्जल से मिल कर कज्जल ऊष्मिद यौगिकमें परिणत हो जाता है,इस यौगिक परिर्वतन के समय उस भट्टीका उत्ताप इस प्रक्रिया मे और बढता है, इस बढेहुए उताप मे लोहा पिघल कर नीचे की ओर जाता है । उस समय जो चूनजम धातु कज्जल से युक्त होती है वह स्वतन्त्र तो रह नही सकती, इसी लिये वह वही कुछ बलिसे मिलकर बलिकाइद में कुछ ऊष्मजनसे मिलकर ऊष्मिदमे बदलती है इस रासायनिक परिवर्तन से भी उत्ताप की मात्रा और बढती है। लोह खनिज, और द्रावकमें जो मिट्टीका अश होता है उसमें जो स्फटिकम्, मैग्नेसियम, मैगनीज शैलिका आदि होते है वह सबभी ऊष्मिदमें बदलते है यथा (स्फ^{२}ऊ^{३}) (मै ऊ) (शै ऊ^{२}) (चू शै) (मैग ऊ) (चू ब)यह समस्त यौगिक बनते समय उस खनिज का और उत्ताप बढ़ाते है और लोहा पिघलता हुआ नीचे चला जाता है यह सब यौगिक उस लोह पर तैरते रहते है । इस ऊपर के भाग में लोह का अश ४-५ प्रतिशत से अधिक नही रहता। इस समय की नव्य भट्टियो मे तो एक प्रतिशत भी लोह नही रहने पाता, इसीलिये इस समयका लोह अवशिष्ट औषध के लिये उपयोजित नही करते। अभी तक तो बहुत पुराना लोह किट्ट जहाँ कहींसे प्राप्त हो जाता है उस प्राचीन लोह किट्टमें लोहा४-५ प्रतिशत तथा उसमें स्फटिकम ऊष्मिद, मैग्नेशियम ऊष्मिद, चूनजम ऊष्मिद, चूनशैलेत,मैगनीज ऊष्मिद, चून बलिकेत आदि ही होते है। भट्टीमेंइस लोह किट्टको द्रवलोह के ऊपरसे जब

उतारते हैं इसमे काफी ऊष्मजन मिला होता है इसी लिये यह जब कुठाली बाहर कर दिया जाता है तो ठण्डा होने पर उसका ऊष्मजन उसमे से निकलत है तभी तो खाली स्थान उस किट्ट भाग मे पोला रह जाता है इसीलि लोह किट्ट प्राय झावादार होता है। यह है मण्डूर की यौगिक स्थिति।

मण्डूर शोधन—जब हम मण्डूर को पुन. अग्नि में लाल करवे गोमूत्र आदि पदार्थ मे बुझाते है तो उक्त ऊष्मिद व वलिकेत यौगिको में पुन रासायनिक परिवर्तन होता है। साधारण ऊष्मिद फिर उच्च ऊष्मिद मे बदलते हैं इसलिये तो लोह किट्ट और अधिक भगुर हो जाता है, जिसे कूट पीस कर फिर आगे भस्म बनाते है।

मण्डूर भस्म

अक्षाङ्गारै र्धमेत्किट्टं लोहजं तद्गवां जले.।
सेचयेत्तप्ततप्तं तत्सप्तवार पुनः पुनः॥
चूर्णयित्वा ततः क्वाथैर्द्विगुणैस्त्रिफलाभवैः।
[1]आलोड्य भर्जयेद्वह्नौ मण्डूर जायते वरम्॥
यो चि, यो र, र र स, र रा सु, भा भै र

१ पचेत्ततश्चार्कदुग्धै इति योगचिन्तामणौ।

बहेडे के कोयलो में मण्डूर को तपा तपाकर गोमूत्र में बुझाता रहे। जब चूरा चूरा हो जाय कूटकर चूर्ण बनाय त्रिफला क्वाथ में घोट टिकिया बनाय सुखाय आग में भून ले, लाल होने पर निकाल पीस धरे। योगचिन्तामणिकार ने आक दूध में पकावे और आँच दे ऐसा कहा है।

(२) गोमूत्र त्रिफला गुञ्जा निर्गुण्डी तुम्बरुस्तथा।
गान्धारी शिग्रु मार्जारी कुमार्याश्च पुनर्नवा॥
दुग्धी नीलाद्रि पाषाणभिद्भृंग्य तुलसी तथा।
वज्रीरास्नातण्डुलीय मूर्वा नाकुलि चिल्लिका॥
जालन्धरी च गोरक्षी कारजी बर्बरी पुनः।
अपामार्गार्क मजिष्ठा कर्पासी पूतनाभिधाः॥
एषा रसै र्यथालाभं भावना सप्त सप्त च।
अर्धगन्धस्य पादांश रसस्यायोमलस्य च॥
चूर्णं पुटाश्च प्रत्येक लशुनद्रवभावितम्।

सप्तधा च पुटं भूयो दत्त्वा च प्रहराष्टकम् ॥
सिद्धमेवं हि मण्डूरं सर्वरोगहरं परम् । र का धे

गोमूत्र, त्रिफला, गु जा, सभालू, जरिश्क, बमासा, सहजना, दोनामरवा, कुमारी, साठी, दूर्वी, मछेछी, पापाणभेद, भाग, तुलसी, थोहर, रास्ना, चौलाई, मूर्वा, नाई, चिलारी, कटुतोरी, गोरखपान, करज, नगन्दवावरी, अपामार्ग, आक, मजीठ, कपास, जटामासी इनमे से जो भी वनस्पति मिल सके उन प्रत्येक की ७--७ भावना मन्डूर को दे, फिर मण्डूरसे आधा वलि और चोथाई पारा मिलाय लहसुन रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो सर्वरोगहर मण्डूर भस्म वने ।

(३) त्रिफला रसे विपक्वं द्विगुणगुणं लोहज किट्टम् ।
भुक्तं जयति च शूल चिरजं हृद्रोगजं सपदि ॥
च द, रस ओ यो, र. त, र. यो सा.

मण्डूर चूर्ण को दूने त्रिफला रस में पकाय गोली वना कर रख ले । इसके सेवन से जीर्णशूल व हृदशूल नष्ट होते हैं । रसतरगिणीकार ने त्रिफला की ३० भावना व ३० पुट देने का विधान दिया है ।

(४) दग्ध्वाक्षकाष्ठै र्मलमायसन्तु गोमूत्र निर्वापितमष्टवारान् ।
विचूर्ण्य लीढमधुनाऽचिरेण कुम्भाह्वयं पाण्डुगद निहन्ति ॥
रसामृत, रसे सा स, ग नि, भा प्र, सु स, वृ मा, भा भै र.

मण्डूर को वहेडे की लकडी में तपा कर गोमूत्र में वुझावे ८--१० वार वुझाने पर चूर्ण हो जायगा, पीसकर सूक्ष्म रज वनाय शहदसे सेवन करे । मात्रा ३ माशे । आचार्य जी ने इसे पुन गजपुट की आच दी है। सिद्धयोग सग्रह मे तो आपने गोमूत्र, त्रिफला और कुमारी की ७--७ पुटे दी हैं । सि योग सग्रह

(५) गोमूत्रसिद्धमाण्डूरं त्रिफलाचूर्णसंयुतम् ।
विलीढं मधुसर्पिभ्यां शूलं हन्त्यम्लजित्परम् ॥
र र, भै र, धन्व, र क ल, च द, वै चि, टो, वृ नि र, र चि, व रा, नि र, र यो सा

अग्नि मे तपा तपा कर गोमूत्र मे वुझाया हुआ तथा गोमूत्र से भावित मण्डूर को पुट दे । ऐसे सिद्ध मण्डूर के वरावर त्रिफला चूर्ण मिला कर ६ माशे मधु शहद से चाटने पर अम्लपित्त और शूल को नष्ट करता है ।

(६) वशाकुरोत्पन्न रसेन दद्यात्पुटानि मण्डूररसे शतं चेत्।
लोहस्य भस्माऽप्यधरी करोति लोहे तु तान्येव विलक्षणानि ॥
रसा सा

वाँस के अकुरो को कूट रस निकाल उसमे मण्डूर चूर्ण को घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इस विधि से १०० पुट दे तो अधिक गुणदायी मण्डूर भस्म वने। इसी प्रकार लोह भस्म भी वनावे।

(७) मण्डूर को कूटकर चूर्ण वनावे फिर उसे ८ गुने गोमूत्र मे पकावे मूत्र के जल जाने पर निकाल उसे एक चीनी के वडे प्याले मे भरकर उस पर निम्बू का रस डालकर तर कर दे और १४ दिन धूप मे रखा रहने दे, रस सूखने पर निम्बू रस डालता रहे १५ वें दिन खरल में डाल खूब पीस टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आँच दे, इस विधि से निम्बूरस की भावना दे मण्डूर को सात पुट दे तो उत्तम भस्म वने। मि. ख

(८) मण्डूर के टुकडो को दही मे सान कर धूप में रख दे दही सूख जाने पर उन्हे सम्पुट में रख सुखाय २५—३० उपलो की पुट दे तो एक ही पुट मे भस्म वने। मा अ, चा चि

(९) मण्डूर की डलियो को तपा तपाकर जामुन के सिरके मे वुझावे, २५ वार तपाकर वुझावे। फिर जामुन की लकडी का ऐसा हिस्सा ले जिसमे कोर के गडा वनाकर उसमे मण्डूर भरा जा सके। उस मण्डूर को उस ठूठे मे भर दे और ऊपर से जामुन का गुदा भर सम्पुट कर १० सेर उपलो की पुट दे पुन कूट चूर्ण वनाय कुमारीरस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर एक और आच दे तो मण्डूर की उत्तम भस्म वने। र.सि. सं.

(१०) मण्डूर को तपा तपाकर ७ वार गोमूत्र में वुझावे फिर कूट चूर्ण कर खरल मे डाल एक भावना अर्क दुग्ध की एक भावना कुमारीरस की देकर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे। इस विधि से सात पुट दे तो मण्डूर की उत्तम भस्म वने। मा अ, चा चि

(११) मण्डूर को तपाकर गोमूत्र और तक्र मे ६—६ वार वुझावे पुन. सुखाय चूर्ण करके मुण्डी, त्रिफला, निम्बू, अनार, हाथी सुण्डी प्रत्येक की एक एक भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर कुम्हार के आवे मे सम्पुट को रख आवे या गजपुट की आच दे। पुन दूसरी वार उक्त विधि से भावना दे

एक पुट ग्रौर दे तो उत्तम भस्म वने। यू मि यो सं,

(१२) मण्डूर १ सेर का चूर्ण बनाकर कुमारीरस ४० तो० की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलो की ग्राच दे। इस विधि से ७ पुट दे तो उत्तम भस्म वने। प्र ग्री नि

(१३) शुद्ध मण्डूर चूर्ण २०तो०को १ भावना दहीकी देकर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३० सेर उपलो की ग्राच दे इस विधि से ३ पुट दे, पुन उस मण्डूर में १ तो० सिंगरफ मिला कर कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३० सेर उपलो की ग्राच दे। इस विधि से ३ पुट दे, फिर निकाल विना सिंगरफ मिलाये ही एक भावना कुमारी रस की देकर एक पुट ग्रौर दे तो ७ पुट में उत्तम भस्म वने। न ग्र

मण्डूर भस्म अनुपान

इमली १ माशा, पीपर चूर्ण ४ रत्ती, मन्डूर भस्म १ माशा मिला कर तक्र के साथ सेवन कराने पर कामला, पाण्डु, शोथ रोग में लाभ होता है। अथवा केवल मण्डूर भस्म को १½ माशा शहद में मिलाकर चाटे ग्रौर ऊपर से तक्र या दही पीवे तो पाण्डु, रक्ताल्पता, शोथ में लाभ होता है। अथवा गोमूत्र क्षार १½ माशा त्रिफला चूर्ण १½ माशा के साथ मिलाकर तक्र से सेवन करे तो पाण्डु रोग में त्वरित लाभ होता है।

मात्रा—२ रत्ती से लेकर १½ माशे तक है।

माणिक्य भस्म

(१) विमलीकृत्य यत्यर्थं माणिक्यं सुविचूर्णितम्।
शिलालगन्धैः विमलैः पृथक् तु समभागकैः॥
निम्बूकस्वरसेनैव पेपयेद्दिन सप्तकम्।
विन्यसेत्सम्पुटे घर्मे विशुष्कं कृत चक्रिकाम्॥
ततस्तु पुटयेद्धीमान्पुटेवारण संज्ञके।
रीत्यानया सुपुटितमष्टवार प्रयत्नतः॥
माणिक्य म्रियते भस्म जायते पाण्डुर प्रभम्।
पिष्टं तु लकुचद्रावै. पुटेदेव यथाविधि॥ र.त.

माणिक्य को कूट पीस उस में हरिताल मैनसिल ग्रोर वलि वरावर का

मिला कर निम्बू रस में घोट टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से ८ पुट दे तो माणिक्य की भस्म बने।

(२) माणिक्य या चूनी को कुठाली मे रख कर धमावे लाल अगार वर्ण का होने पर उसे अर्क गुलाब या अर्क केवडा या अर्क वेद मुश्क आदि में बुझावे, इस विधि से तब तक करता रहे जब तक माणिक्य चूरा चूरा न हो जाय, जब कूटने के योग्य हो जाय कूट पीस कर अर्क गुलाब, अर्क केवडा की कई भावना दे सुखाय रख ले।

(३) कुछ व्यक्ति इस की टिकिया बनाय सुखाय गुलाब के सूखे फूलो में मे या फिन्दक में रख सम्पुट कर गजपुटकी आच दे देते हैं, इससे और भी अच्छी भस्म बन जाती है। नू वि

मोर पंख भस्म

(४) शिखिपिच्छभस्म कृष्णाचूर्णं मधुमिश्रितमुहुर्लीढम्।
हिक्काहरति प्रवला श्वासं चैवातिदुस्तरच्छर्दिम्॥

यो र, यो त, वृ यो त, भा भै र.

मोर पख को काट कर एक हण्डी में भर कर सम्पुट कर ५-७ सेर उपलो की आच दे तो मोर पख भस्म बने। इसे निकाल पीस ले इसके बराबर पीपर का चूर्ण मिलाय एक दो दिन खरल करके रख ले। इसकी मात्रा ४ रत्ती है। शहद के साथ चाटने पर हिचकी, श्वास, और वमन मे शीघ्र लाभ होता है।

(२) मोर पख का चदोआ निकाल कर तथा डण्डी में लगे हुए बाल भी निकाल कर सब को एक हण्डी में भर कर सम्पुट कर ५-४ सेर उपलो की आच दे तो काली भस्म बने। अ त

यह काली खासी, कुत्ता खासी, सूखी खासी में विशेष लाभदायी है।

नोट—मोर पख की सारी डण्डी चन्दोआ सब की भस्म एक जैसी ही लाभ दायी है।

मृद्दारश्रृंग

मुर्दा सग सीसा का विशेष ऊज्मिद है। यह भारत वर्ष मे दो स्थानो पर बनता है, एक अम्बाला जिला के जगाधरी मे, दूसरा सूरत मे। इसके बनाने की निम्न विधि है।

सीसा को पिघला कर हवा में भूनते है इससे वह पीले रग की भस्म मे वदल जाता है, फिर उस मे वरावर की ईंट का चूरा मिला कर कुठाली में रख कर गलाते है सीसा ईंट में विद्यमान शैलिका, मैग्नीशियम, स्फटिकम् आदि से मिल कर द्रव हो जाता है, उसे घडे के अर्ध भाग के पानी मे डाल देते है यह मुर्दासिग वन जाता है।

मृदारश्रृंग भस्म

(१) कन्या द्रावेण कुर्वर्ती चक्रीर्मल्लिकसम्पुटे ।
कुक्कुटेपुटनाद्भस्म जायते पट गालितम् ॥ रसा सा

मुर्दा सग को कूट कर कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे तो मुर्दासिग की भस्म वने।

(२) खण्ड मृदार शृङ्गस्य निक्षिपेन्निम्बुजेत्र्यहम् ।
शराव सम्पुटे न्यस्य पुट दद्यात्प्रयत्नतः ॥
जायते शोभनं भस्म भावयेत्त्रिफलाऽम्बुभिः ।
कुमारी मूत्र जम्वीरै स्त्रयैकैकत्रिःक्रमेण वै ॥
सिद्धं भस्मततो जात योज्य मेहोपदशयो. ।
हरिद्रामधुसयुक्तं मेहे गुंजा मितलिहेत् ॥ रसा. स, र यो सा

मुर्दा सग के टुकडो को १ दिन निम्बू रस मे भिगो कर निकाल सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो भस्म वने। फिर इसे त्रिफला, कुमारी, गोमूत्र जम्वीरी रस की एक एक भावना दे सुखाय रख लें। इसे हल्दी शहद मिला कर सेवन करने पर प्रमेहमे लाभ होता है । लौंग, मिर्च, घृत से सेवन करने पर उपदशमें लाभ होता है । मात्रा इसकी १-२ रत्ती है ।

माक्षिक भस्म

इसकी रचना उपोद्धात पृष्ठ १५७ पर देखे। यह खनिज है, कोई विशेष धातु नही है । ताम्र लोह का यौगिक है, जिसकी रचना भूगर्भ मे अन्य खनिजो वत् हुई है । जो माक्षिक वाजार में मिलता है प्राय उसमे पत्थर आदि अपद्रव्य मिले होते है, माक्षिक मे से वे सव अपद्रव्य तोड़ कर निकाल देना चाहिये, यही इसकी वास्तविक शोधन की विधि है ।

ग्रन्थो मे जो शोधन विधि दी है वह वास्तव में शोधन नही, भस्म का

ही प्रकार है यथा—

(१) क्षाराम्ल लवणैरण्ड तैलसर्पिसमन्वितम् ।
पुट त्रयं प्रदातव्य तद्वयं शोधनं भवेत् ॥ रा का वे

सज्जीखार, यवक्षार, निम्बू, जम्बीरी रस, एरण्ड तेल, घृत के साथ माक्षिक या विमल चूर्ण की भावना दे टिकिया बनाय सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आंच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो ग्रन्थकार कहता है कि माक्षिक या विमल शुद्ध हो जाते हैं।

(२) सिन्धूद्भवस्य भागैक त्रिभाग माक्षिकस्य च ।
मातुलुङ्ग रसैर्वाऽपि जम्बीरस्य रसेन वा ॥
कृत्वा तदायसे पात्रे लोह दर्व्या प्रचालयेत् ।
सिन्दूराभं भवेद्यावत्तावन्मृद्वग्निनापचेत् ॥
सशुद्ध माक्षिकं विद्यात्सर्व रोगेषु योजयेत ।

र. का धे, रस मजरी, वै द, वृ र प्र,

नमक १ भाग, माक्षिक ३ भाग दोनों का चूर्ण करके कढाई में डाल चूल्हे पर रखकर जम्बीरी या बिजौराका रस उसमे डालकर भूने, उसे तबतक भूनता रहे जब तक यह लाल वर्ण की न हो जाय, भूनने के समय करछी से चलाता रहे। इस तरह जब लाल हो जाय तब उसे शुद्ध हुई जान उतार ले और पीस कर योगो में डाले ।

आगे कुछ विधिया ग्रन्थकारो ने जो भस्म के नामसे दी हैं इसमे और उनमे क्या अन्तर है पाठक देखें।

(३) एरण्डस्नेहगव्याज्यै मातुलुङ्ग रसेन वा ।
खर्परस्थं दृढं पक्वं जायते धातु सन्निभम् ॥
एवं मृतं रसै योज्यं रसायनविधावपि ।

र च, रसे चू, र र म, र रा सु

माक्षिक चूर्ण को एक तवे या कटाई मे या ठीकरे में डाल कर उसे चूल्हे पर रखे और आग जलावे, जब माक्षिक लाल हो जाय उसमे एरण्ड तेल या घृत और बिजौरा निम्बू का रस डालकर रगडे । जब माक्षिक की भस्म रगडते रगडते लाल रग की हो जाय, उतार ले और पीस कर व्यवहार में लावे।

(४) पिष्ट्वा कुलित्थस्य कषायकेण तक्रेण वाजस्याहि मूत्रकेण ।

सचालयेद्दैत्यपतिः क्रमात्तन्मृतिं व्रजेत् सुन्दरि हेममाक्षिकम् ॥

आ. वे प्र, शा ध, वृ यो त, यो चि, यो र, रच, भा प्र., र. रा-सु, र प्र, र ल, चि र, एपु ग्रन्थेपु भिन्न पाठ प्रदर्शित। भा भै. र.

माक्षिक चूर्ण को कढाई में डाल आग पर रख आच दे लाल होने पर कुलथी का काढा, तक्र और बकरी का मूत्र क्रमश डाले और करछी से हिलाता रहे, लाल रग की होने पर उतार कर पीस ले।

(५) अथवा केवलेनाऽपि निम्बूनीरेण भावितम्।
सप्तधा पुटनात्ताप्यं म्रियते रक्तवर्णवत् ॥

रसा सा, र त

अथवा केवल माक्षिक चूर्ण को निम्बूरस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आच दे तो भस्म बने। कई कहते हैं इस विधि से ७ पुट दे तो उत्तम भस्म बने। रसायनसार के कर्ता ने इसे कूपीपाक करके भस्म बनाई है।

(६) तैलेनैरण्डजे नादौ याममात्रं विमर्दयेत्।
सच्छिद्रे सम्पुटे धृत्वा पचेत्त्रिंशद्वनोपलै र रा सु, वै. द

माक्षिक चूर्ण को एरण्ड तेल में एक प्रहर घोट टिकिया बनाय छेद किये सम्पुट मे रख ३० वनोपल की आच दे तो माक्षिक भस्म बने।

(७) मातुलुङ्गाम्बुगन्धाभ्या पिष्टं मूषोदरे स्थितम्।
पंचक्रोड पुटैर्दग्ध म्रियते माक्षिक खलु ॥

रसे चू, र त, र र स, र प्र सु, भा भै र

रसप्रकाग सुधाकरे भिन्न पाठ प्रतिपादित।

माक्षिक चूर्ण मे बलि मिलाय विजौरा रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर बारह पुट की आच दे। इस विधि से ५ पुट दे तो माक्षिक की भस्म बने।

(८) माक्षिकस्य चतुर्थांशं गन्धं दत्त्वा विमर्दयेत।
[1]उरुवकस्यतैलेन ततः कुर्यात्सुचक्रिकाम् ॥
शराव सम्पुटे धृत्वा पुटेद्गजपुटेन च।
सिन्दूराभं भवेद्भस्म माक्षिकस्य न संशयः ॥

वृ र प्र, वै द., र म, र का धे, आ वे प्र, र मजरी, यो र,

वृ यो त, रसे सा न, रसामृत, भा मै र, सि यो स,

१ कुमारी स्वरसेन च इति रसामृते।

वैद्यदर्पणे वृहद् रसप्रदीपे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

माक्षिक चूर्ण का चौथाई वलि मिलाय एरण्ड तेल में या कुमारी रस में खरल कर टिकिया वनाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो लाल रग की माक्षिक भस्म वने। इस प्रकार १० पुट दे।

(६) किमत्र चित्रं कदली रसेन सुपाचित सूरणकन्द सम्पुटे।
वातारि तैलेन पुटेन ताप्य पुटेन दग्ध वरपुष्टिमेति। र रा सु

माक्षिक को केला रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय जिमीकन्द के नुगदे में सम्पुट कर एरण्ड तेल में पकावे तो सुवर्ण माक्षिक भस्म वने।

(१०) देवदाली हन्सपदी वटार्के च स्नुहीपयः।
पुनर्मर्द्य पुनः पाच्यं भूधरे च त्रिधा त्रिधा॥
म्रियते नात्र सदेहो सत्यं गुरुवचो यथा। वै द., र रा. सु

माक्षिक चूर्ण को वन्दाली, हन्सराज, वट, आक, थोहर, दूध प्रत्येक की भिन्न भिन्न भावना व पुट देता रहे। इस प्रकार ६ पुट दे तो माक्षिक की भस्म वने।

(११) ततः परं पुट देय कुमारी रसमर्दितम्।
कृत्वा सुचक्रिका शुष्कां कुक्कुटाख्ये पुटे पचेत्॥
सप्तविंशति संख्यास्ति तत' स्यादमृतोपमम्। र रा सु.

माक्षिक चूर्ण को कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे। इस विधि से २७ पुट दे तो माक्षिक भस्म वने।

(१२) पक्वा वा घटिकाद्वयेन कदली कर्कोटिका कन्दयो-
र्दग्धाः कूर्मपुटैस्त्रिभिः पटुतरं लुङ्गाम्बुगन्धप्लुताः।
स्युर्भस्मानि जघन्यमध्य सुभगास्तेव्युत्क्रमेणोदिता-
वृष्या. पाण्डु पटीयसोवलकरा योगोपयोज्यो पुन.॥
र प, र का धे

माक्षिक चूर्ण को केला, ककोडा के रस में दो घडी पका कर फिर वलि मिलाय विजौरा रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर कूर्म पुट की आच दे इस प्रकार ३ पुट दे तो माक्षिक भस्म वने। यह भस्म वीर्यवर्द्धक

है, पाण्डु नाशक है, वलवर्द्धक है। इसे प्रत्येक योगो मे डाले। इसी को अन्य ग्रन्थकारो ने १० पुटे और भी दी है।

(१३) सुचूर्णिते तु माक्षिके विशोधितं तु हिंगुलम।
क्षिपेत्तदष्टमाक्षिकं ततस्तु निम्बुनाम्बुना॥
सुपेष्य सम्पुटीकृतं पचेद् दीर्व चक्रिकाम्।
विपक्वमष्टधैव वै प्रकीर्तितेन वर्त्मना।
प्रयाति पञ्चतापरं जवेन हेममाक्षिकम्॥
क्षिपेत्तु हिंगुले पुनः पुनर्निरुक्तमानत। र. त.

माक्षिक चूर्ण का आठवा भाग हिंगुल मिलाय निम्बू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट का आच दे। इस विधि से ८ पुट दे तो माक्षिक की भस्म वने। प्रत्येक पुट मे हिंगुल मिलाता रहे।

(१४) माक्षिक चूर्ण में तिहाई नमक मिलाय एक प्याले मे रख उसे निम्बूरस से तर कर दे और धूप मे रख दे, सूखने पर कढाई मे डाल कर भूने और रगडता रहे जब लाल हो जाय उतार खरलमे डालकर रगडकर ५ ७ वार पानी से धो डाले। फिर कुमारी रस मे घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो माक्षिक भस्म वने। अ त

(१५) माक्षिक चूर्ण को मेहदी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय मेंहदी के नुगदे मे रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो माक्षिक की लाल भस्म वने। अ त.

माक्षिक भस्म के गुण—अर्श, कुष्ठ, पाण्डु, प्रमेह, खासी, वमन, नेत्ररोग, कामला, शोथ, उदर विकारमे लाभकारी है। इसकी मात्रा १-२ रत्ती तक है।

मुक्ता भस्म

(१) कुमारीतन्दुलीयेन स्तन्येन च विपाचयेत्।
प्रत्येकंसप्तवारंच तप्ततप्तानि कृत्स्नश॥ र च, र रा सु.

मोती को तपा तपाकर स्त्री दूध, कुमारी रस, चौलाई रस मे ७–७ वार वुझावे तो मोती भस्म वने।

(२) तत्र क्षिप्त्वान्धमूषायां पुटेल्लघुपुटेन च।
एव भस्मत्वमायाति मौक्तिकं पुट योगत॥ र का धे.

मोतियो को सम्पुट कर लघुपुट की आच दे तो भस्म वने।

(३) गन्धपारदयोरैक्य मौक्तिकानि विमर्दयेत् ।
भावयेद्दुग्ध योगेन शराव सम्पुटे क्षिपेत् ॥
वस्त्रमृत्तिकयो लेपाज्ज्वालयेद्ध स्तिजे पुटे ।
स्वागशीतलमुद्धृत्य चूर्णं भाण्डे निधापयेत् ॥ र रा सु

मोती के बराबर कज्जली मिलाय दूध की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय गजपुट की आंच दे तो मोती भस्म बने ।

(४) गन्धाश्मासूतमुक्ता फलमखिलसिद्धबीजपूराम्बुमर्द्य
याम गोलविपाच्य लवणमुपगत चीरमृद्भ्या प्रपेष्टव्य ।
भिद्धस्यान्मृतराजा निखिलगद हर क्षौद्र कृष्णा समेदो
यक्ष्माश पाडु गुदजान् श्वास कासा नहृद्व्याधिवातान्निहन्ति ।
र यो मा , र दी , र च , र म , रसावतार

रस दीपिका रस चडाशी रस मगल मे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

मोती पारा वलि तीनो को बिजोरा निम्बू के रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लवण यन्त्र में दाबू दे ४ प्रहर की आंच दे तो मोती भस्म बने । इसे पीपल शहद मे सेवन करने पर क्षय, पाडु, अर्श, श्वास, कास, हृदरोग और वातरोग में लाभ होता है ।

(५) विमल मौक्तिक गवां पयसा परिपेषितम् ।
त्रिधा लघु पुटे पक्व मृतं स्याच्छशि सुन्दरम् ॥ र त.

मोतियो को दूध में पीस टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आंच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो मोती भस्म बने ।

(६) मुक्ताफलन्तु तरुणी परिस्रु त जलान्वितम् ।
पिष्टं त्रिवार पुटितं मृतिमाप्नोति ह्युत्तमम् ॥ र त.

मोतियो को गुलाब जल की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आंच दे । इस विधि ३ पुट दे तो भस्म बने ।

(७) मोतियो को चमेली रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की आंच दे तो भस्म बने । अ त.

(८) मोतियो को गुलाब फूल मे सम्पुट कर १०-१२ सेर उपलो की आंच दे तो भस्म बने, फिर इसे निम्बू रस की भावना दे । अ त.

(९) मोतियो को केवडा अर्क की भावना दे टिकिया बनाय गावजवा

के नुगदे मे रख १० सेर की ग्राच दे तो भस्म वने। स.ग्र.

(१०) मोतियो को नीम्वू रस में भिगो कर धूप में रख दे, रस सूखने पर और रस डालता रहे, १५ दिन में स्वत भस्म हो जाती है। ग्र.की स ग्र

(११) मोती चूर्ण को निम्वू रस ग्रर्क गुलाव चन्दनादि ग्रर्क की १-१ भावना दे सुखाकर रख ले यह चन्द्रपुटी भस्म है। सि यो स.

(१२) मोतियो को गो दूध मे पीस टिकिया वनाय सुखाय गायजवा या गुलगावजवा या गोजिह्वा के नुगदे में रख सम्पुट कर ८-१० सेर उपलो का ग्राच दे तो भस्म वने। मखजन, म ग्र ,चा.चि.,मा ग्र.,मि ख

मुक्ताभस्म के गुण—मोती भस्म श्लेष्मविकार, क्षय, कास, श्वास, मन्दाग्नि, हृदयोद्वेग, हृदयरोग, प्रमेह, प्रदर, ग्रर्श मे लाभदायी है। दुग्धवर्धक, वलवर्धक है। मात्रा १ से २ रत्ती तक।

याकूत (चूनियां) भस्म

ग्रायुर्वेद ग्रन्थो में याकूत या चूनी भस्मका उपयोग नही है। यूनानी ग्रन्थो में इसका उपयोग ग्रधिक पाया जाता है। चूनिया भी माणिका का भेद है ग्रौर उस जैसी ही रचना का रत्न है।

(१) याकूत को कुमारी के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की ग्राच दे तो भस्म वने। इसे फिर गुलाव जल में पीस कर रख ले। स ग्र.

(२) याकूत को चूर्ण कर दही में पीस टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की ग्राच दे। इस विधि से ३ पुट दे तो भस्म वने। स ग्र

(३) याकूत को खरैंटी के रस में तपा तपा कर वुझावे, भुर भुरा होने पर इसी के रस में पीस टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की ग्राच दे तो भस्म वने। ग्र त

(४) याकूत चूर्ण को ग्रर्क गुलाव ग्रौर शराव की १-१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की ग्राच दे तो भस्म वने। म ग्र ,मि ख

(५) याकूत को तपा तपा कर सिरका में वुझावे फिर चूर्ण कर इसी में टिकिया वनाय सुखाय दोखीहीरा, वारतग के नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की ग्राच दे तो भस्म वने। म ग्र ,मि ख

याकूत भस्म के गुण—मृगी, वहम, मनोलिया, हृदयोद्वेग, हिस्टीरिया,

रक्तचापवृद्धि, हृदयनिर्बलता में लाभकारी है। हृदय को अल्हादित करता है, बल देता है, मस्तिष्क को स्थिर करता है, बुद्धि वर्धक है। १-२ रत्ती तक।

अनुपान—मुरब्बा सेब, मुरब्बा आवला, मुरब्बा गाजर आदि के साथ चादी के २-४ वर्क लगा कर दोनो समय सेवन कराते है।

रत्न भस्म

(१) गरुड़ गन्धकभिन्धाद्वद्र्या वन्ध्यया तथा।
अश्वत्थेन च सम्भाव्य पुटेत् पिण्डं सरत्नकम् ॥
म्रियते तेन योगेन ब्रह्म रत्नानि तत्वतः। र का धे

माक्षिक, वलि, बेर जगली, ककोडाकन्द, पीपल वृक्ष इन सबो को पीस कल्क बनावे और इस कल्क का लेप रत्नो के दानो पर करके सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो उक्त योग से ब्राह्मण जातिके रत्नो की भस्म बने।

(२) स्नुह्यर्क करवीराणि भूनांग दरदं वटम्।
गन्धाश्मान शिलाताल गरुडं गन्धटंकणम् ॥
मेषशृंगं समाक्षीक नारीपुष्प पयः प्लुतम्।
एभिर्विलिप्त मूषायां धमनाद्रत्न मारणम् ॥ र.का धे.

थोहर, आक, कनेर, केंचुआ, हिंगुल, वट वृक्ष, वलि, मैनसिल, हरिताल, माक्षिक इनके योग से अथवा, वलि, सुहागा, मेढासिगी माक्षिक, स्त्रीरज, स्त्री दुग्ध इनके योग से उक्त दोनो योगो में से किसी योग का कल्क बना कर उस कल्क का लेप रत्नो पर करके कुठाली में रत्नो को रख कर धमन करे तो धमन विधि से उन रत्नों की भस्म बने।

(३) गन्धक कूर्मपृष्ठं च वलात्रय मुदुम्बरम्।
उत्तरावारुणी क्षीरं रत्नानां मारणं पुटे. ॥ र का धे

वलि, कछुआकी पीठ, वला, नागवला, अतिवला, गूलर, इन्द्रायण इनका लुगदा बना कर उसमें रत्नो को रखकर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो रत्नो की भस्म बने।

(४) द्रेचकान्ते स्नुहीक्षीरे नारीपुष्प पय. प्लुतम।
एभिर्विलिप्त मूपायां धमनाद्रत्नमारणम ॥ र.सा ,र का धे

दारुहल्दी, हल्दी, थोहरदूध, ऋतु-रक्त, स्त्रीदुग्ध इनमें रत्नोको लेपित कर वारम्बार धमन कर ने से रत्नो की भस्म बने।

(५) रस हसं शिलातालं गरुड गन्धटकणम ।
भूनाग विमलं वंगं मेपशृङ्ग स चुम्वकम् ॥
शुक्रशोणित सयुक्तं स्वेदनोपधिभावितम ।
मूपालेप प्रयोगेण रत्नानां मारण परम् ॥ र सा , र का धे

पारा, हिंगुल, मेनसिल, हरिताल, माक्षिक, वलि, सुहागा, केचुआ, विमल, वग, मेढासिगी, चुम्वकपत्थर इनको रक्त और शुक्र में घोट मूपामे लेप कर उस मूपा मे रख कर धमन करने से और स्वेदन ओपधियो में रक्त तप्त रत्नो को वुझाने से ऐसा कुछ वार करने से रत्नो की भस्म वन जाती है ।

(६) लकुचद्रव.सम्पिष्टै. शिलागन्धक तालकै. ॥
वज्रं विनाऽन्यरत्नानि म्रियन्तेऽष्ट पुटै.खलु: ॥

र प्र सु , र च , रसे चिं , र का धे , र र स , भा,भै र , र रा सु , र.ज नि
रस प्रकाश सुधा करे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

मैनसिल, वलि और हरिताल को बडहल के रस में पीस इनके नुगदे में कोई रत्न रख कर सम्पुट कर गजपुट की पुट दे इस प्रकार पुट देने पर वज्र को छोड कर समस्त रत्नो की भस्म वन जाती है ।

(७) गन्धतालशिला हंस माक्षिकं विमल समम् ।
मारणौपधिभिर्योज्य तेनरत्नानि वेष्टयेत् ॥
म्रियन्ते सर्व रत्नानि पुटैर्द्वादशभिर्दृढै. । र स , र का धे.

वलि, हरिताल, मैनसिल, हिंगुल, माक्षिक, विमल, इनको मारणौपधियो में घोट रत्नो पर उसका लेप करके सम्पुट कर गजपुट की पुट दे इस विधि से १२ पुट देने पर समस्त रत्नो की भस्म वने ।

नीलिकाशखचूर्णं च शिला भूनाग शूरणम् ।
वटवज्रलता पेपं रत्नाना मारण पुटै ॥ र का धे.

नील, शख चूर्ण, मैनसिल, केचुआ, जिमीकन्द, वटवृक्ष, स्नुही काण्ड वल्ली सवको पीस नुगदा वनाय उसमे रत्नो को रख कर गजपुट की आच दे तो रत्नो की भस्म हो ।

(८) किसी भी रत्न को कुठाली मे रख कर धमन विधि द्वारा रक्त तप्त कर आवले के रस या चन्दनादि अर्क में ५० से १०० वार तक वुझाने से वे रत्न नरम होकर भुरभुरे पीसक वन जाते है । उन्हे फिर कूट पीस कर आवला

के रन की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आंच दे इस प्रकार ३० पुट दे तो उत्तम भस्म बने। इस भस्म को पुन चन्दनादि अर्क की ३ भावना देवे। सिद्धयोग संग्रह

रजत

भौतिक गुण—चादी श्वेत चमकीली धातु है, जिस पर जलवायु का कोई प्रभाव नहीं होता। जितनी भी ज्ञात धातुएं है उन सब से यह अच्छी ताप और विद्युत धारा की वाहक सिद्ध हुई है और यह सोने जैसी घनवर्धनीय तथा उत्तम-तान्तवीय है। इसके वर्कों के मध्य से सूर्य की ओर देखा जाय तो उसमें से नीली ज्योति की झलक दिखाई देती है इसकी परमाणु मात्रा १०७८ तथा घनत्ता १०५ है। इसका द्रवाक ९६३ श. और क्वथनाक १९५५ श है। यह जब कुठाली में अपने द्रवाक पर काफी देर तक द्रव अवस्था में रखी रहती है तो उस द्रवावस्था मे यह हवा से ऊष्मजन का आचूपण करने लगती है और यह उस समय काफी ऊष्मजन अपने भीतर कर लेती है। जब कुठाली को आग से निकाल कर ठण्डा होने के लिये रख देते है और उस द्रव चादी पर जब जमाव की पपडी जमने लगती है तो उस समय वह पिया हुआ ऊष्मजन त्यागती है इससे ऊपर का वह जमता हुआ स्तर फट जाता है और अन्दर से दबा हुआ ऊष्मजन जब निकलता है तो चादी उबल पड़ती है और वह उसे इधर उधर बिखेरती हुई निकल जाती है। चादी को जब क्वथनाक के उत्ताप पर लाया जाय तो यह वाष्पीभूत होने लगती है उस समय यह नीली ज्वाला देकर जलती हुई दिखाई देती है। इसकी युयुक्षा १ और ३ है इसके अणु की रचना में १६ परमाणुओ का सगठन होता है, जिसकी आणविक गठन अन्य धातुओ से मिलती है। चादी कठिनता में सुवर्ण से कुछ अधिक कठोर होती है। इसीलिये इसके आभूषण स्वर्ण की अपेक्षा देर मे घिसते है। किन्तु जब इसमें तावा, जस्ता आदि का कुछ और मेल मिला दिया जाय तो इस संकरीकरण से इसमे अधिक कठोरता आ जाती है।

रासायनिक गुण—चादी धनात्मक प्रकृति की धातु है। इतना होने पर भी द्रवावस्था में ऊष्मजन को पीकर उससे संयुक्त नहीं होती। हा उत्प्रेरक की सहायता या तीव्राम्लो के घोल में जब यह घुलती है उस समय विनिमय के समय ऊष्मजन से सयुक्त हो जाती है। यह दो प्रकार के ऊष्मिद यौगिक निर्माण

करती है एक रजतक ऊष्मद (र ऊ) दूसरा रजतस ऊष्मिद ($र_2$ ऊ)। रजतक ऊष्मिद काला भूरा होता है और रजतस ऊष्मिद सफेद रग का होता है। यह जल मे बहुत कम घुलता है। हमारी चादी की श्वेत भस्में प्राय' रजतम ऊष्मिद ही होती है। यह रजतस ऊष्मिद कुछ वनस्पतियो में विद्यमान उत्प्रेरक की सहायता से जब बनती है तो बहुत ही थोडे उत्ताप पर बन जाती है, अधिक उत्ताप पर नही बनती। इसीलिये इसे तुषाग्नि की पुट या लावक पुट, कपोतपुट की हो आँच देनी चाहिये।

रजतवलिकाइद्—चादी को वलि के साथ मिला कर २०० श० तक गरम किया जाय तो चाँदी वलिकाइद ($र_2$व) में परिणत हो जाती है। यह चादी का यौगिक प्राकृतिक रूप मे खनिजो मे भी मिलता है।

रजतवलिकेत—चाँदी को सान्द्र वलिकाम्ल मे डाल कर गरम करने से चाँदी वलिकेत ($र_2$व $ऊ_4$) मे परिणत हो जाती है यह उस वलिकाम्ल में घुली होती है। यदि उस घोल मे थोडा थोडा कसीस डाला जाय तो वह उसमें घुलता चला जाता है और चाँदीका यौगिक तहनशीन हो जाता है, जिसे निकाल कर साफ कर लेते है। यह श्वेत वर्ण की चतुर्भुजीय रवो के रूप में चादी की भस्म बनती है। जो १० तोला जल में १ तोला घुल जाती है।

रजत लवणाइद्—रजत पवनेत के घोल मे यदि हल्का लवणाम्ल का घोल डाला जाय तो दोनो घोलो के यौगिको मे रासायनिक विनिमय होता है एक ओर रजत पवनेत का यौगिक टूट कर रजत लवणाइद बनता है दूसरी ओर लवणाम्ल का यौगिक टूट कर उदपवनेत नामक वायु का उद्भव होता है। रजत लवणाइद (र ल) को ही अग्रेजी में सिलवर क्लोराइड कहते है। इसी से फोटोग्राफी की प्लेटो का प्रतिबिम्ब लेने के अर्थ उस पर बिठाते है जो प्रकाश से प्रभावित होता है। इसे ही प्रकाश से बचाकर कैमरे में बिठा कर प्रतिबिम्ब लेते है जिसे अधेरे में मसालो से धोकर स्थिर कर लेते है। इस प्रकार चादी के अनेक यौगिक बनते है।

हमारे रसाचार्यो ने इसकी दो ही प्रकार की भस्में या यौगिक बनाये थे। एक ऊष्मिद दूसरा वलिकाइद। हरिताल मैनसिल आदि के योग से भी जो चाँदी की भस्म बनती है वह भी वलिकाइद ही होती है। इनके बनाने की निम्न विधियाँ ग्रन्थो में है। यथा—

(एक पुटी) तार पत्राणि सूक्ष्माणि कृत्वा, संशोध्य पूर्ववत् ।
तत्समौ सूतगंधौ च काञ्जिकेन विलेपयेत् ॥
स्थाल्यां पचेद्दिनं रुध्वा भस्म स्यात्तीक्ष्णवह्निना ।

अनु. त, र त, भा भैं र

रसतरंगिणीकारेण कुमारी रसे भावनादत्वा तथा करीपाग्नौ पुट प्रदीयतामिति ।

चाँदी के पत्रो पर काजी में घुटी हुई कज्जली का लेप कर सुखाय सम्पुट कर वालूका यन्त्र में दावू दे ४ प्रहर की आच दे तो चादी को भस्म वने । रस तरंगिणीकार ने कज्जली को कुमारी रस मे घोटा है और सम्पुट को करीपाग्नि मे रख कर आच दी है ।

(२) स्वर्ण माक्षिक गंधस्य सम भागतु कारयेत् ।
अर्क क्षीरेण सपिष्ट तारपत्रं प्रलिप्य च ॥
पुटेन जारयेत्तारं मृत भवति निश्चितम ॥

र र स, र का. धे, र म, र र, भा. भैं र, रसे. चू, र च,

रसेन्द्रचूणामणौ,रसकामधेनौ, सुधाक्षीरे निम्बू रसे भावनादत्वा, रस सारे अम्लरसेन भावना दत्वा । रस चण्डाशौ स्नुह्यर्कक्षीरेण भावना दत्वा इति अन्तर स्यात् । रसरत्न समुच्चयेभिन्न पाठ प्रतिपादित ।

सुवर्ण माक्षिक और वलि समभाग आकदूध या निम्बू रस या थोहर दूध को भावना दे उस कल्क का लेप चादी पत्रो पर कर सुखाय सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आच दे तो चादी की भस्म वने ।

(३) पारदं [1]चन्द्रिका चूर्णं समं शुद्धं विमर्दयेत् ।
गोलकृत्वा च संस्थाप्य दिनमेक करण्डके ॥
द्वितीये दिवसेऽङ्गारे लोह पात्रे विनिक्षिपेत् ।
लोहदण्डेन सघर्ष्य शुभ्रं भस्मं च कारयेत् ॥

१ रजत इति रस चण्डाशौ । र च., भा भैं. र, र यो सा.

पारा और रजतरेत दोनो को खरल कर गोला बनाय एक शीशी में रख दे दूसरे दिन उसे कडाई मे डाल अग्नि पर चढा कर लोह दण्ड से रगडता रहे तो रजत की श्वेत भस्म वन जाती है ।

(४) [1]कुनटी मुनिपुष्पोत्थ सलिलैः संप्रमर्दयेत् ।
तारपत्राणि लिप्त्वा [2]ऽथ पुटयेच्च वनोपलै. ॥

म्रियते नात्र सदेहो [2]लिप्तो वा रसभस्मना ।
अम्लवर्गप्रपिष्टेन पूर्ववत्पुट योगतः ॥
म्रियते तालकमृतं वङ्गमम्लेन पपयेत् ।
तारपत्राणि संलिप्य पुटित्वा भस्मता नयेन ॥
म्रियते गन्धयोगाद्वा वैष्णवेन विपद्यते । र ता ग्र ग

१ कुरण्ट इति ग्रानन्द कन्दे । २ तिप्ता नि इति ग्रानन्द कन्द ।

मैनसिल को ग्रगस्ति पुष्प के रस मे पीस चादी के पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की पुट दे तो चादी भस्म हो । अथवा हिंगुल को निम्बू रस मे घोट चादीके पत्रोपर लेपकर सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुटमें ग्राच दे तो चादी भस्म हो। अथवा हरिताल वगभस्म को निम्बूरस मे घोट चादी पत्रोपर लेप कर सुखाय सम्पुटकर कुक्कुट पुट की ग्राच दे तो चादी भस्म हो । अथवा वलि को निम्बूरस मे घोट चाँदी के पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की ग्राँच दे तो चादी की भस्म हो । यह ग्रन्थकारने चार विधिया वतलाई है ।

(५) सेटार्धमात्रं दरद गृहीत्त्वा सम्मर्द्य नैम्बूक रसेन तेन ।
प्रलिप्य तारस्य दलान्तदर्द्धान्खट्वाङ्गयन्त्रे निदधीत शुष्कान् ॥
क्रमेण वह्नि प्रददीतयाम चतुष्टयं शीतमथोद्धरेत्तत् ।
स्याद्दूर्ध्व हण्डीस्थविशुद्धसूतस्ताराादि भस्मापि भवेदध. स्थम् ॥
रसा सा, र त

ग्रावा सेर हिंगुल को निम्बूरस में घोट २० तो० चादी के पतले पत्र वना कर उस पर लेपन कर सुखाय डमरुयन्त्र मे रखकर ४ प्रहर की ग्राच देने पर नीचे चादी की भस्म वनी मिलेगी और ऊपर की हण्डी में पारा लगा हुग्रा मिलेगा । रसतरगिणीकार ने लिखा है कि उक्त विधि से कई वार पुट दे ।

(६) निम्बूद्रवेऽम्वुन्यवपात्यतारं त्रिषष्टिवारान्परितप्ततप्तम् ।
जातञ्चजातं भसितं द्वितीये पात्रे निदध्यात्परिवापसख्याः ॥
समाप्नुवन्तीत्यथ सर्व भस्मतदम्वुयोगात्परिमर्द्य चक्रीः ।
करोत्वथो सम्पुटगाश्च सर्वावराह संज्ञे च पुटे पुटेत्ताः ॥
रसा सा.

चादी के पत्रो को ग्रग्नि में तपा तपा कर निम्बूरस में ६३ वार वुझावे ।

इस बुझाने मे भस्म होती जायगी, यदि झडती दिखाई दे तो कुठाली में रख कर तपावे और बुझावे, इतनी वार मे समस्त चादी पत्र जल जायेंगे, फिर सब को खरल में डाल निम्बूरस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर वराह पुट की आच दे तो एक ही आच में चादी भस्म वने ।

(७) १ तो० चाँदी पत्र पर २३ तो० हरिताल को चागेरी के रस में पीस कर लेप कर सुखाय सम्पुट में रख लघुपुट की आच दे तो चादी भस्म वने । र सि.

(८) १ तो० चादी चूर्ण, १ तो० पारा मिश्रण करे फिर १ तो० हरिताल, १ तो० मैनसिल, १ तो० सोनल सवको आक के दूध में पीस टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट (लावक पुट)की आँच दे तो चादी भस्म वने । र सि.

(९) १ तो० चादी चूर्ण १ तो० पारा मिश्रण करे १ तो० वलि, १ तो० हरिताल, १ तो० माक्षिक सवको कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लावक पुट की आच दे तो चादी की भस्म वने । र सि

(१०) १ तो० चादी चूर्ण, १ तो० पारा मिश्रण करे इसे मेंहदी रस, निम्बूरस की १--१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय २० तो० नकछिकनी के नुगदे मे रख सम्पुट कर २ सेर वनोपलकी आच दे तो चादी भस्म वने । मा अ

(११) १ तो० चादी वर्क, सोरा ३ माशे, मिश्री ६ माशे सवको वट दुग्ध ५ तो०मे खरल कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर वनोपल की आच दे तो चादी भस्म हो । अ. त.

(१२) १ तो० चादी पत्र पर सोमल, रस कपूर, दार चिकना, सुहागा, लोटासज्जी, फिटकिरी, प्रत्येक तोला सोरा २ तो० सवको पीसकर एक मिट्टी के छोटे वर्तन मे वन्द कर ३ घटा मन्द मन्द आच पर पकावें । इसमे से ३माशे का लेप चादी पत्र पर कर सम्पुट मे रख २ सेर उपलो की आँच दे तो चाँदी भस्म हो । अ. स., मि ख.

(१३) १ तो० चादी पत्र, १ तो० सज्जीखार मे १ माशा हरिताल चूर्ण मिलाकर इसका लेप चाँदी के पत्रो पर कर सम्पुट मे रख २ उपलो की आँच दे तो चादी की भस्म वने । अ स , मि ख.

(१४) १ तो० चादी पत्र पर हिंगुल को वन तम्बाकू के रस में पीस लेप

करे फिर १० तो० वन तम्बाकू के नुगदे में रख ३ सेर के वस्त्र सम्पुट मे लपेट आँचदे तो चाँदी भस्म हो। इस भस्म को २० तो० दूध की मलाई मे मिलाकर पकावे जब मलाई जल जाय उतार पीस रखे। धा. वि., मि. ख.

(१५) १ तो० चाँदी पत्र पर २ तो० माक्षिक चूर्ण नीचे ऊपर बिछा कर सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आँच दे तो चादी भस्म हो। मा. अ., मि ख.

(१६) १ तो० चादी का एक पत्र बनाकर अपामार्ग राख के मध्य भस्म यन्त्र में पत्र को दाबू देकर ४ प्रहर की आच दे, यदि सीक चुभाकर देखने पर सीक आर पार हो जाय तो आच देना बन्द करदे, भस्म हो। अ. स.,मि ख

(१७) १ तो०चाँदीको गलाकर १ तोला पारे में डालदे उस चादी पर ४ तोला तेल भी डाले और जला दे, इस प्रकार १० बार करे। १० वीं बार के बाद उसे फर्श पर फैला कर पत्रा बना दे और २० तो० सरनाय पत्र २० तो० आकास बेल के चूर्ण मे लपेट २ सेरका टाट सम्पुट कर आग लगा दे तो चादी की भस्म हो। मना, मि. ख.

(१८) थोहर के डण्डे मे १ चाँदी का रुपया रख कर उस पर आक का दूध भर कर सुखावे फिर उस पर सुहागा १ तो० पीस कर भर दे और सम्पुट कर ८ सेर उपलो की आँच दें तो रुपया फूल जायगा। सि. औ प्र.

(१९) १ तो० चादी पत्र को बन तम्बाकू रस मे १४ बार बुझावे फिर १२ तो० बन तम्बाकू के नुगदेमें रख ३ सेर के कपड सम्पुटमे रख आग लगा दे तो चाँदी भस्म हो। मा अ

(२०) १ तो० चाँदी पत्र पर १ तो० हरिताल पीस कर लेप कर सुखाय सम्पुट में रख १० सेर बनोपल की आच दे तो चादी भस्म हो। मा अ

(२१) १ तो० चादी चूर्णको थोहर, दूधी, सेवती के रसोकी १-१ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दें तो चादी भस्म हो। अ ति

(२२) १ तो० चादी चूर्ण को खट्टे मीठे दोनो अनार के २० तो० रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय २० तो० बबूल पत्र के नुगदे मे रख सम्पुट कर ३ सेर उपलो की आच दे तो चादी भस्म हो। जा अ

(२३) १ तो० चादी चूर्ण २ तो० अभ्रक चूर्ण दोनो को निम्बू रस की ३-३ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आँच दे तो

चादी भस्म हो । जा. प्र.

(२४) १ तो० चांदी पत्र को २० तो० कटेली के नुगदे में लपेट एक हण्डी में रख उसमें १ सेर कटेली का रस भरकर चूल्हेपर चढाय रस को गाढा करे जब रस गाढा हो जाय सम्पुट कर अर्ध गजपुटकी आच दे तो चादी भस्म हो । मि ख, मना.

(२५) १ तो० चादी चूर्ण, १ तो० पारा, मेहदी व निम्बू रस में घोट टिकिया बनाय १० तो० नकछिकनी के नुगदे में रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे तो चादी भस्म हो । मु. फि., पा स.

(२६) १ तो० चादी वर्क को शहद में खरल करे जब वर्क तद्रूप हो जाय पानी से धोकर शहद निकाल दे फिर उक्त वनस्पितियो मे से किसी वनस्पति के १५-२० तो० नुगदे मे रख सम्पुट कर ३-४ उपलो की आँच दे तो चादी भस्म हो । अल की ,पा स.

(२७) १ तो० चादी पत्र, गुजा चूर्ण ६ मा०, भागरा १० तो०, सुहागा १$\frac{१}{२}$ माशा, भागरे का नुगदा बनावे उस पर गुजा चूर्ण आधा बिछावे उस पर सुहागा पीस कर आधा फैला दे फिर चादी पत्र उस पर रख यथा क्रम सारी चीजें बिछाकर सम्पुट कर २० सेर वनोपल की आच दे तो चादी भस्म हो र सि.। नोट—२० सेर की आच ज्यादा है, ३ सेर की होनी चाहिए ।

(२८) चादी पत्र को पनवाड बीज २ तो० के मध्य रख उस पर २० तोला आकासवेल का नुगदा लपेट सम्पुट कर १० सेर वनोपल की आच दे पत्रे फूल कर सफेद भस्म बन जायगी । अ त.

(२९) १ तो० चादी पत्र, १ तो०वलि, १ तो०सोमल। गन्धक और सोमल को पीस उसके मध्य चांदी पत्र रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो चादी भस्म हो । अ त

(३०) १ तो० चादी पत्र, १ तो० हरिताल को पानी मे पीस चादी पत्र पर लेप कर सम्पुट में रख १० सेर उपलो की आच दे तो मटियाले रग की भस्म हो । अ यो मा

(३१) १ तो० चादी चूर्ण, १ तो० पारा मिश्रण करे १० तो० काटे वाली चौलाई के रस में खरल कर टिकिया बनाय सुखाय कटेली के नुगदे में रख दो सेर उपल सम्पुट में बन्द कर आच दे तो चादी भस्म हो । अ त

चांदी मारक वनस्पतियां

निम्नलिखित वनस्पतियो में ग्रन्थकारो ने चादी भस्म करने की और भी विधियावतलाई है। प्राय चादी एक तोला या चादीका रुपया ले और वनस्पतियो का नुगदा ८-१० तो० से १५-२० तोला तक लेकर उसमें चादी पत्र रख सम्पुट कर २ उपलो की आच या १॥-२ सेर उपलो की आच दे तो चादी भस्म हो।

वनस्पतियां—हल्दी चूर्ण थोहर दूधमें भिगोया हो, तितली, मीठातेलिया, केसर, नकछिकनी, पनवाड वीज, सफेद कनेरफूल, करीरफूल, अर्कदुग्धमें भिगोया गुजा, अनार का छिलका, काटे वाली चौलाई, वाझककोडा, अजवायन, अजमोद दोनो, चारो अजवायन, ववूलपत्र, करजगिरी दोनो दूधी, दन्तीपत्र और लाजवन्ती दोनो में, एलवालुक, करीरफल, बनतम्वाकू, वटजटा और सनाय पत्र दोनो मे, पीपलछाल, ववूलफली, निम्वपुष्प, सोहजनामूल, सत्यानासी, पुनर्नवा को आक थोहर दूध में भावना दे, गावजवा को दूध के पानी से नुगदा वनावे, गन्दना, भूफली, इमली के वीज, हसनधूप, रतनजोत वूटी, अनारपत्र, पीपरामूल, अपामार्ग, दारचीनी का लेप कर वहेडा चूर्ण मे सम्पुट करे, झाड सगाडा। इनमे से किसी वनस्पति के नुगदेमें चादी रख सम्पुट कर आच दे तो एक पुट में भस्म वने। र मि ,पा स ,दे उ ,मा अ ,मि ख ,स अ ,अल की ,यो स , सि औ प्र ,सि भै म ,मख ,स अ ,अ त ,र ति

नोट—झाडसगडा वूटी पजावी नाम है यह वूटी गन्ना, ईख के खेतो मे उसके किनारे मेडो पर वोई जाती है। किन्तु यह जगली भी होती है। जगल लेनी चाहिए। गन्दना (प्याजी) गेहू के खेतो मे प्याज के से पत्तो वाली। एलवालुक इसे पजाव मे आलवालू कहते है और इसके हरे फलो को गिलास कहते है जो सुखा कर आलूवालू के नाम से वेचे जाते है।

निम्नलिखित ग्रन्थो म चादी पत्रो को ११ से २१ वार तक या इससे भी अधिक वार वनस्पतियो के रस में वुझाकर फिर उसी वनस्पति के या दूसरी वनस्पतिके नुगदेमे रखकर सम्पुट कर २ सेर से ४-५ सेर उपलो की आँच दे तो एकपुट मे चादी भस्म हो।

वनस्पतिया—जलधनिया, अजवायन पत्र, मिर्चलाल, लहसुन, थोहरदूध और उसी का नुगदा, सूरजमुखी पुष्प, अर्कदुग्ध और उसी का नुगदा, अनार पत्ररस, सोयापत्र, त्रिफला, दूवी, कुकरौंधा, कुँदरूपत्र, हाथीसुण्डी। सिरका मे

चादीपत्र वुझावे अनारपत्र नुगदामे रखे, निम्बूरसमें वुझावे कवूतरकी विष्टामें रखे,सफेद प्याजके रसमे वुझावे नकछिकनी और कवूतर विष्टामें रखे, फिटकरी के पानी में वुझावे नकछिकनी या शरपुंखाके नुगदेमें रखे, या इमली छालके चूर्ण मे रखे, कुन्दरूरस और चिमगादड के गोरवे मे वुझावे और चिमगादड के मास में रखे, निम्बू रस मे वुझावे और जामुन की अन्तर्छाल के गूदा मे रखे, चारो अजवायन क्वाथ में वुझावे और गुलाव पुष्प मे रखे, वन तम्वाकू पत्र रस मे वुझा कर चादी पत्र पर सिंगरफ लेप कर के फिर वन तम्वाकू के नुगदेमें रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे। सि.औ. प्र., मना., मि. ख .र ति ,र.सि ,स अ. ।

(दो पुटी) तार पत्राणि सूक्ष्माणि कृत्वा तत्तुल्यययो पृथक्।
सूतगंधकयोस्तुल्य तालयो: खल्वसंस्थयो: ॥
कल्कं कृत्वा कुमार्यांद्भिस्तेन तानि प्रलेपयेत्।
शराव संपुटे रुध्वा त्रिंशद्वन्योपलै पुटेत् ॥
एवं रजतमाप्नोति मृतिं वारद्वयेन च। वृ यो त, भा भै र.

कज्जली और हरिताल वरावर ले कुमारीरस में खरल कर कल्क वनाय उसे चादी के पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर ३० वनोपल की आच दे। इस विधि से दो पुट दे तो चादी की भस्म वने।

(२) रजतानि विशुद्धानि पत्राणीह समाहरेत्।
रसेश्वरं समंदत्त्वा पिष्टिकां कारयेत्तत: ॥
गौरीपाषाण चूर्णं च समंनिक्षिप्य मर्दयेत्।
आतपे चाथ संशोष्य शुष्क चूर्णं च कारयेत् ॥
सम्पुटस्थ तत: कृत्वा पुटेद्गजपुटेन तु।
पुटमेक प्रदायाथ खल्वे सचूर्णयेत्तत ॥
हिंगुल विमलं चैव तत्तुल्ये मेलयेद्बुध:।
एव पुटद्वयं दद्याद्रसतन्त्रविचक्षण: ॥
एवं पुट त्रयेणैव रजत मृतिमाप्नुयात्।
एवं मृतं तु रजत वीतशंक प्रयोजयेत् ॥ र त

चादी और पारे की पिष्टी वनावे फिर इसमें चादी के वरावर सोमल मिलाय सम्पुट कर गजपुट की पुट दे। फिर निकाल चादी के वरावर हिंगुल मिलाय सम्पुट कर पुट दे। इसी विधि से दो पुट दे तो चादी की भस्म वने।

(३) चादी चूर्ण को गुलाव के ताजे रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय ५ तो० मूखे गुलाव पुष्प के नुगदे मे रख मम्पुट कर ३-४ उपलो की आच दे, इस विधि से दो पुट दे तो चादी की भस्म वने। मा. अ., मि ख

(४) चादी पत्रो को दूधी के रस में १०१ वार वुझावे, फिर इमी के १० तो० नुगदे में रख सम्पुट कर ८ सेर उपलो की पुट दे इस विधि से एक और पुट दे तो दो पुट मे चादी भस्म हो। मा अ

(५) १ तो० चादी पत्र को २१ वार अर्क दुग्ध मे वुझावे, उन पत्रो पर २ तो० अकरकरा चूर्ण का लेप कर २० तो० आक की जड के नुगदे मे रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की पुट दे, पुन इमली छाल के नुगदेमें रख सम्पुटकर एकपुट और दे तो दो पुट मे चादी भस्म हो। मा अ

(६) १ तो० चादी चूर्ण को गुलाव पुष्परस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय ५ तो० गुलाव के नुगदे में रख सम्पुट कर ५—६ सेर उपलो की आच दे, इस विधि मे दो पुट दे तो चादी की भस्म हो। मा अ.

नोट—लेखक ने गजपुट की आच दी है किन्तु इतनी आचमें चादी पिघल जाती है भस्म नही वनती।

(७) १ तो० चादी चूर्ण को अर्क दुग्ध की १ भावना दे टिकिया वनाय आक की कोपल के ५ तो० नुगदे मे रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे इस प्रकार दो पुट दे तो चादी की भस्म हो। चा. चि, मा अ.

(८) ५ तो० चादी वुरादा को निम्वूरस की ३ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो की पुट दे फिर १ वोतल शराव में भावना दे दूसरी पुट दे तो चादी भस्म हो। स अ

(९) १ तो चादी पत्रपर ३ माशे सोमलका लेप करे, फिर वड़े गोखरूके चूर्ण को अर्क दुग्ध में नुगदा वनाय उसमें चादी रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे, इस विधि से दो पुट दे तो चादी भस्म हो। अ स, मि ख.

(१०) १ तो० चादी पत्र पर नौसादर, फिटकिरी, नमक, सोमल, सुहागा इन सवो का जौहर उडा कर ६ माशे जोहर का लेप पत्रो पर कर सम्पुट में रख ४ सेर उपलो की आच दे, इम विधिसे दो पुट दे तो चादी भस्म हो। मख मि ख

(३ पुटी) तारपत्रं चतुर्भाग भागैकं शुद्धतालकम्।

[1]एतज्जम्बीरजद्रावै कल्की कृत्यालकं भिपक् ॥
एतेन तारपत्राणि लेपयेच्छोषयेत्ततः ।
शराव सम्पुटे तेषामूर्ध्वाधो गधकं क्षिपेत् ॥
तारतुल्यं तु तांस्तानि रुध्वा गजपुटे पचेत् ।
त्रिंशद्वनोपलैरेवं स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥

र. च, र मजरी, वृ यो. त, र त, भा भै र

१ मर्द्य इति रसमजर्यां रसचडाशौच ।
रसतरगिण्या वलिस्थाने हरिताल नियोजित । पुटानि त्रिभि दत्त्वा ।

चादी पत्र ४ भाग पर एक भाग हरिताल को निम्बूरस में कल्क वनाय पत्रो पर लेप कर मुखाय प्रथम नीचे ऊपर उन पत्रोके वलि चूर्ण विछाय सम्पुट कर ३० वनोपल की आच दे । फिर निकाल इसी विधि से ३ पुट दे तो चादी की भस्म वने । रसतरगिणीकार ने वलि के स्थान पर हरिताल चूर्ण ही विछाया है ।

(२) तारपत्रचतुर्भाग भागैक शुद्धतालकम् ।
मर्द्य जम्बीरजद्रावैस्तारपत्राणि लेपयेत् ॥
रुध्वा त्रिभिः पुटैः पाच्यं पञ्चविंशद्वनोपलैः ।
म्रियते नात्र सन्देहो गन्धो देयः पुनः पुनः ॥ र. च.

हरिताल चादी पत्र से चौथाई लेकर जम्वीरी रस की भावना दे कल्क वनाय पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर २५ वनोपल की आच दे । उक्त विधि से दो पुट और दे किन्तु प्रत्येक पुट में वलि का लेप करता रहे ।

(३) शुकप्रिया पीतक पत्र कल्के चतुर्गुणे तारकमेव रुध्वा ।
शरावके सपुटके पुटेच्च त्रिभिपुटैरेव वराहसज्ञैः ॥

भा भै र, अनु त

चादी के पत्रो को चौगुने दाडिम और ववूल के पत्तो की नुगदी में रख सम्पुट कर वराह पुट की आच दे तो इस प्रकार तीन वार पुट दे तो चादी भस्म हो ।

(४) तालगन्धं रौप्यपत्र मर्दयेन्निम्बुकद्रवैः ।
त्रिपुटैश्च भवेद्भस्म योजयेत्तद्रसादिषु ॥ र च, आ क

हरिताल और वलि समभाग को निम्बूरस में कल्क वनाय चादी के पत्रो

पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर वराह पुट की आंच दे। इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म बने।

(५) भागैकं तु मृत वङ्गं भागैक शुद्धगन्धकम्।
निम्बूनीरेण सम्मर्द्य तारपत्राणि लेपयेत्॥
चतुर्भागाणि मूषायां रुध्वा पचेत् पुटैस्त्रिभिः।
गन्धं पुनः पुनर्दत्त्वा पचविंशद्वनोपलैः॥
रजतं मरण याति द्विजद्विड्मानवो यथा।

आ क, र र, वै. क. त, र का. धे

आनन्दकन्दे रसरत्नाकरे भिन्न पाठ प्रतिपादित।

वग भस्म बलि समभाग निम्बूरस से कल्क बनाय चौगुने चादी के पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर २५ वनोपल की आच दे, इस विधि से बलि देकर ३ पुट दे तो चादी की भस्म बने।

(६) दशटङ्को रसः शुद्धस्तालसत्वं तथा दश।
विधाय पिष्टिं सूतेन रजतस्याथ मेलयेत्॥
तालगन्धसमं [1]शुद्धं तन्मर्द्य निम्बुकद्रवैः।
गोलकीकृत्य [2]संरुद्ध मूषायां स्वर्णवद् दृढम्॥
[3]द्वित्रिः पुटैर्भवेद्भस्म योजये त्तद्रसादिषु।

रसामृत, र सा प., पा स, र त, भा भै. र, र त सा, रसे चि, र. का धे, र म., र र प्र., वृ यो त, यो त,

रसमजर्यां रसप्रदीपे तृतीयपादो नास्ति। रसेन्द्रचिन्तामणौ रसकामधेनौ रसमगले प्रथम पादो अधिक। तथा चतुर्थपादो नास्ति।

१ पश्चान्मर्दयेत् रसमजर्यामिति पाठ।

२. सशुष्क रुध्वा लघुपुटे पचेत् रसामृते इति पाठ।

३ भवेत् सप्तपुटैर्भस्म रसामृते इति पाठ.।

चादी, पारा, बलि, हरिताल प्रत्येक २॥ तो० पिष्टी बनाय सबको एकत्र कर निम्बूरस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर ३० वनोपल की आच दे। इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म बने।

(७) भागैक क्षारराजेन द्रावितं शुद्धतारकम्।
तस्य पत्रचतुर्भागं भागैकं शुद्धतालकम्॥

मर्द्यं जम्बीरजद्रावैस्तारपत्राणि लेपयेत् ।
रुद्ध्वा त्रिभि· पुटैः पाच्यं पञ्चविंशद्वनोपलै· ॥
म्रियते नात्र सदेहो गन्धो देयो पुन· पुनः । र का धे, र म

सुहागा की चुटकी देकर चादी को गलाय पत्र वनाय उन पत्रो से चौथाई हरिताल को जम्बीरी रस मे कल्क वनाय पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर २५ वनोपल की ग्राच दे, इस विधि से प्रत्येक पुट में वलि देकर ३ पुट दे तो चादी भस्म वने ।

(८) चादी वुरादा को थोहर दूध की कई भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १०–१२ सेर वनोपल की ग्राच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म वने । यू सि यो स

(९) चादी वुरादा को ग्रदरक रस की ७ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३–४ सेर उपलो की ग्राच दे । इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म वने । मा ग्र

(१०) चादी पत्रो को तपा तपाकर ब्रह्मदण्डी रस में १२ वार वुझावे फिर १० तो० तितनी (वर्गसदाव) के नुगदे में रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की ग्राच दे । इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म वने । र ति, मि ख

(११) चादी वुरादा हरताल वरावर निम्बूरस में घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३ सेर उपलो की ग्राच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म वने । मा ग्र, मि ख.

(१२) चादी वुरादा १ तोला गुजाचूर्ण १० तोला दोनो को ग्राकदूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय ग्राक के नुगदे में रख सपुट कर १० सेर उपलो की ग्राच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो चाँदी भस्म वने । मि ख.

(१३) चादी पत्रो को तपा-तपा कर नागफनी रस, हरमल रस में ७-७ वार वुझावे फिर हरमल पत्र ग्रौर खुरासानी ग्रजवायन के नुगदे में रख सपुट कर ४ सेर उपलो की ग्राच दे इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म वने ।
र ति, मि ख

(१४) चादी पत्र से दूने हिंगुल को तम्वाकू रस में कल्क वनाय पत्रोपर लेप कर सुखाय तम्वाकू के नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर वनोपल की ग्राच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म वने ।

(१५) चादीपत्रो को तपा-तपा कर सफेद प्याज रस मे २१ वार वुझावे फिर कवूतर विष्ठा को प्याज रस में घोट नुगदा वनाय उस मे रख सम्पुट कर ६ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म वने। मा. अ.

(१६) चादी पत्रो को कुठ और गोरखमुण्डी के नुगदे में रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आँच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म वने।

अ स.,मि ख

(१७) चादी पत्रो को तपा तपा कर हाथी मुण्डी के रसमे २१ वार वुझावे फिर इसी के नुगदे में रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो चादी की भस्म वने। अ त.

(४ पुटी) चतुर्गुणं च रौप्येभ्य माक्षिक च सुमेलयेत्।
अपामार्गस्य सौरस्ये खरली कृत्य सम्पुटेत् ॥
पञ्चघण्टक तीक्ष्णाग्नौ एतत्भस्मं तु सम्भवम्।
चतुर्वार समाज्वाल्य मात्रा कुर्याद्द्विरक्तिकाम् ॥ रसा स ,व रा.

वसवराजीये भिन्न पाठ प्रतिपादित तथा स्त्रि दुग्धेन भावना दत्वा इतिविशेप

चादी वुरादा से चौगुना माक्षिक ले अपामार्ग रस की या स्त्रिदुग्ध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर वालुका यत्र में दावू दे कर, ५ घटे की आच दे, इस विधि से ४ पुट दे अथवा सम्पुट कर गर्वगजपुट की आच दे इस विधि से ४ पुट दे तो चादी भस्म वने।

(२) चाँदी पत्रो पर निम्बू रस में घोटी हरिताल का लेप कर उन पत्रो को तपावे, ७ वार इस तरह करे चादी चूर्ण हो जायगी उसके वरावर हरिताल मिलाय निम्बू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ८ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ४ पुट दे तो चादी भस्म वने। सि औ प्र

(३) चादी पत्रो को चारो अजवायन के नुगदे में रख सम्पुट कर ८ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ४ पुट दे तो चादी भस्म वने। मि ख ,म अ

(४) चादी पत्रो को तपा तपा कर कच्चे आमके रसमे वुझावे, फिर हल्दीके नुगदे मे रख उस पर अजवायन का नुगदा चढाय सम्पुट कर ६ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ४ पुट दे तो चादी भस्म वने। र ति ,मि ख

(५) चादी पत्रो को तपा तपा कर ब्रह्मदण्डी रस मे १०१ वार वुझावे

फिर तितली के नुगदे में रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे इस विवि से ४ पुट दे तो चांदी की भस्म वने । मा अ

(६) चाँदी वुगदे को चौलाई के रस मे घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ४ पुट दे तो चादी भस्म वने । मा अ

(७) चादी पत्रो को तपा तपा कर अनार रस मे २१ वार वुझावे, फिर अनार के नुगदे में रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आच दे, इस विवि से ४ पुट दे तो चादी भस्म वने । स अ

(८) चादी पत्रो को तपा तपा कर २१ वार निम्बू रस मे वुझावे फिर लोवान चूर्ण के मध्य रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आंच दे तो चाँदी भस्म वने । स अ

(५ पुटी) लोधपठानी को असगन्ध रस में घोट नुगदा वनाय उसमें चादी पत्र रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे इस विवि से ३ पुट दे, पुन नकछिकनी के नुगदे में रख उक्त विधि से दो पुट दे तो चादी भस्म वने। अ स, मि ख

(२) १ तो० चादीपत्र पर ५ माशे रसकपूर का लेप कर सुखाय पुनर्नवा के नुगदे में रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ५ पुट दे तो चादी भस्म वने । स अ,

(७ पुटी) भूधात्री माक्षिक तुल्यं पिप्पली सैंधवाम्लकैः ।
लिप्त्वा तारस्य पत्राणि रुद्ध्वासप्तपुटेपचेत् ॥
द्रवैः पुन. पुन. पिष्ट्वा म्रियते नात्र सशय ॥

ऋद्धिखण्डे भिन्न पाठ प्रतिपादित । आ क, र र, ऋ ख

भूआवला, माक्षिक, पीपर, सेंधानमक, वरावर इनको निम्बू रस मे घोट कल्क वनाय चादी पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर अर्धगजपुट की आँच दे, इस विवि से ७ पुट दे तो चाँदी भस्म वने ।

(२) चादी पत्रो को दूधी के नुगदे में रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चाँदी भस्म वने । सि.औ प्र

(३) चाँदी के पत्रो को जल निम्व और सत्यानासी के नुगदे में रख सम्पुट कर २ सेर उपलोकी आँच दे इस विधिसे ७ पुट दे तो चाँदी भस्म वने । स अ

(४) पारा चादी की पिष्टी वनाय ४ भावना चागेरी रस की दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आँच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चाँदी भस्म वने । मा अ ,जा अ

(५) चाँदी वुरादा सोमल वरावर निम्बू रस में घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चाँदी भस्म वने। जा अ.

(६) चाँदी पारा की पिष्टी वनाय जामुन के नुगदे में रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आँच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चाँदी भस्म वने। वै उ

(७) चाँदी पत्रो को तपा तपा कर २१ वार अद्रक रस मे वुझावे फिर मीठातेलिया जामुन की छाल दोनो का नुगदा वनाय उसमें पत्रे रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आँच दे इस विधि से ७ पुट दे तो चांदी भस्म वने। र सि

(८) चाँदी वुरादा को अजवायन ववूलपत्र क्वाथ की ७-७ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चाँदी भस्म वने। सि औ प्र

(९) चादी वुरादा को तुलसी रस की ७ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २ सेर उपलो की आँच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चाँदी भस्म वने। मा. अ

(१०) १ तो० चादी पत्र को २१ वार अनारपत्र रसमें वुझावे फिर लोघ-चूर्ण के मध्य रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की पुट दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चादी भस्म हो। मा अ

नोट—लेखक ने लोधचूर्ण के दो सेर के उपले वना कर उसमें आच देना लिखा है, मै इसे विडम्वना समझता हूं। यदि लोधचूर्ण में चादी ने भस्म होना है तो १० तो० चूर्ण के नुगदे में भी हो जायगी।

(११) १ तो० चादी पत्र को अर्कदुग्ध में ७ वार वुझावे फिर इसे मीठा तेलिया के नुगदे में रख सम्पुटकर ५ सेर उपलोकी आँच दे, इस विधिसे ७ पुट दे तो चादी भस्म वने। मा अ.

(१२) १ तो० चादी पत्र को २१ वार अनारपत्र रस में वुझावे फिर चारो अजवायन के नुगदे में रख सम्पुट कर ३-४ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चादी भस्म वने। —मा अ

(१३) चादी पत्र को अनार रस में २१ वार वुझाकर त्रिफला के नुगदे मे रख ७ पुट दे, तो चादी भस्म हो। मा अ

(१४) चादी पत्र को उक्त विधि से वुझाकर पीपलकी अन्तर्छालके नुगदे में रख पुट दे इस विधि से ७ पुट दे, तो चादी भस्म हो। मा अ

(१५) १ तो० चादीपत्र को दूवी के नुगदे में रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आंच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चादी भस्म हो। मा अ

(१६) १ तो० चादी पत्र को गुलनारके फूल और अनार के नुगदे में रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चादी भस्म हो। मा अ

(१७) चादी चूर्ण १ तो० को तुलसी रस की ३ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे। इस विधिसे ७ पुट दे तो चादी भस्म हो। मा अ

(१८) चादी पत्र को पीपरामूल चूर्ण मे रख दो सेर उपलोके सम्पुटमें आच दे, इस विधिसे ७ पुट दे। किसी और लेखक ने पीपरामूल और नकछिकनी चूर्ण मिलाकर पुट दी है। एक ने मैदा लकडी चूर्ण मिला कर पुट देना वताया है। म ख, मि ख

(१९) १ तो० चाँदी चूर्ण को काँटे वाली चौलाई के रस मे टिकिया वनाय इसके नुगदे में रख ४ सेर उपलोकी आच दे, इस विधिसे ७ पुट दे तो चादी भस्म हो। अ त

(२०) १ तो० चाँदी वुरादा को जगली गुलावपुष्प के रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३ सेर उपलो की आँच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो चादी भस्म हो। अल को,

(२१) १ तो० चादी वुरादा, १ तो० पारा मिश्रण कर चाँगेरी रस की ३ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३ सेर उपलो की आच दे, इस विधिसे ७ पुट दे तो चादी भस्म हो। पारा प्रतिपुट में मिलावे। मु फि, पा स

(२२) १ तो०चादी चूर्णको अद्रकरस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पट कर २ सेर उपलो की आच दे, इसी विधि से ७ पुट दे तो चादी भस्म हो। स अ

(११ पुटी) कण्टक वेध्ये तारपत्रे [१] दत्त्वा द्विगुणहिंगुलम्।

पातयन्त्रे रसोग्राह्यो [2]चूर्णाभ रजत भवेत् ॥
तच्चूर्ण कनकक्षीरीरसै मर्द्यदिनावधि ।
शतपुष्पी पुष्परसै मर्दयेद्वा दिनावधि ॥
कृत्वा तु चक्रिका शुष्कां दद्याल्लघुपुट भिषक् ।
एकादशपुटे रैव तारभस्म प्रजायते ॥ रसामृत, र.च.

रस चण्डाशौ त्रुटित पाठ ।
[1]लिप्त्वा इति रसामृते । [2] रजत मृतमुच्यते इति रसचण्डाशौ ।

(२) कण्टक वेधी चादी के पत्र बनाकर उनसे दुगुना हिंगुल ले निम्बूरस मे घोट उन पत्रो पर लेप लगाय सुखाय डमरु यन्त्र में बन्दकर आच दे तो चादी चूर्ण रूप में नीचे और पारा ऊपर के पात्र में उड कर लग जाता है, दोनो को अलहदा अलहदा निकाल ले । पारा तो अन्य योगो मे डाले, चादी चूर्ण को पुन सत्यानासी के रस मे या सेवती पुष्प के रस में दो दिन खरल कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २०-२४ बनोपल की पुट दे, इस प्रकार ११ पुट दे तो चादी की उत्तम भस्म बने ।

आचार्य श्री यादव जी त्रीकम जी ने उक्त विधि में निम्न परिवर्तन किया है —चादीचूर्ण को डमरु यन्त्र मे हिंगुल मिलाकर दो बार पाक क्रिया है, फिर आपने सत्यानासी रस की भावना देकर २० बार पुट दी है और गुलाब फूल रस की भावना देकर ३ पुट देनी बताई है, इस प्रकार २३ पुट में चादी भस्म बनाने का विधान दिया है । सिद्ध योग सग्रह

(३) १ तो० चादी पत्रो को ४७ बार निम्बु रस मे बुझावे फिर १० तो० अजवायन ५ तो० कबूतर की विष्टा के नुगदे में रख २ सेर बनोपल के सम्पुट मे रख आच दे, फिर प्रतिवार चादी पर १ माशा पारा चढाकर उक्त विधि से ११ पुट दे तो चादी भस्म हो । र ति.

(४) चाँदी चूर्ण को २१ दिन दूधी में और २१ दिन गिलोय रस में भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे इस विधि से ११ पुट दे तो उत्तम चादी की भस्म बने । अ त.

(१२ पुटी) लकुचद्रवसूताभ्यां तारपिष्टीं प्रलेपयेत् ।
ऊर्ध्वाधो गन्धक दत्त्वामूषामध्ये निरुध्य च ॥
स्वेदयेद्वालुकायन्त्रे दिनमेकं दृढाग्निना ।

स्वाङ्गशीताञ्च ता पिष्टा साम्लतालेन मर्दिताम् ॥
पुटेद्द्वादशवाराणि भस्मीभवति रूप्यकम् ।

र र स ,यो त ,पा स ,रसे चू ,र ज नि ,भा भै.र

चादी बुरादा और पारा सम मिलाकर बड़हल के रस में घोट पिष्टी बनाय पतली-पतली टिकिया बनाय सुखाय नीचे ऊपर बलि दे सम्पुट कर वालुका यन्त्र में दाबू दे ४ प्रहर की आच दे, इसी विधि से १२ पुट दे तो चादी भस्म बने ।

(२) भागैक तु रजत सूतभाग चतुष्टयम् ।
मर्दयेद्दिनमेक तु सततंनिम्बुवारिणा ॥
पेषणाज्जायते पिष्टि दिनैकेन तु निश्चितम् ।
मूषामध्येतु ता पक्त्वाह्यधोर्ध्वे गन्धक न्यसेत् ॥
वालुकायन्त्र मध्यस्थ दिनैक तु दृढाग्निना ।
पाचितातु प्रयत्नेन स्वाङ्गशीतलतागतम् ॥
तालेनाम्लेनसहिता मर्दितहि शिलातले ।
ततो द्वादशवाराणि पुटान्यत्र प्रदापयेत् ॥
अनेन विधिना सम्यग्रजतम्रियते ध्रुवम् । र प्र सु ,भा भै रे

चादी बुरादा १ भाग, पारा ४ भाग पिष्टी बनाय उक्त विधि से नीचे ऊपर बलि दे सम्पुटकर वालुका यन्त्र में दाबू दे ४ प्रहर की आच दे, इस विधि से १२ पुट दे तो चादी भस्म बने ।

(३) चादी पत्रो के बराबर सोमल को पानी मे पीस कल्क बनाय पत्रो पर लेपकर सुखाय नारियल के खोल में रख सम्पुट कर ४ सेर बनोपल की आच दे, इस विधि से १२ पुट दे तो चादी भस्म बने । मु ख

(१४ पुटी) भागैक तालक मर्द्य याममम्लेन केनचित् ।
तेनभागत्रय तार पत्राणि परिलेपयेत् ॥
धृत्वा मूषा पुटे रुद्ध्वा पुटेत्त्रिशद्वनोपलैः ।
समुद्धृत्य पुनस्तालं दत्त्वा रुध्वा पुटे पचेत् ॥
एवं चतुर्दश पुटैस्तारं भस्म प्रजायते ।

र र स, रसमजरी, र र, वै द, वृ र. प्र, र सा प, चि र, शा व, अनु त, भा. प्र, भा भै र, पा स, र रा सु,

रसमजर्याम् रसरत्नाकरे रसराजसुन्दरे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

१ भाग हरिताल को निम्बूरस में घोट कल्क बनाय उसका लेप तिगुन चादी के पत्रो पर सुखाय सम्पुट कर ३० सेर वनोपल की आच दे, इन विधि से १४ पुट दे तो चादी भस्म बने ।

(२) स्नुहीक्षीरेण सम्पिष्टं माक्षिक तेन लेपयेत् ।
तालकस्य प्रकारेण तारपत्राणि बुद्धिमान् ॥
पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तार भस्म प्रजायते ।
र त, चि र, र प्र, रसे. चू, र र स, शा ध, भा. प्र. भा भै. र

रसतरंगिण्या रजतस्य अर्धभाग माक्षिक नियोजित. ।

चादी के पत्रो पर थोहर के दूध में घोटी हुई माक्षिकके.कल्क का लेप कर सुखाय सपुट कर ३० वनोपल की आच दे, इसी प्रकार १४ पुट दे तो चादी की भस्म बने । रसतरंगिणीकार ने बतलाया है कि चादी से आधा माक्षिक लिया करे ।

(३) तारपत्रैस्त्रिभिर्भागो भागैकं शुद्धमाक्षिकम् ।
मर्द्य जम्बीरजैर्द्रावैस्तार पत्राणि लेपयेत् ॥
शोषयेद्न्धयेत्तञ्च त्रिंशद्वनोपलैः पचेत् ।
चतुर्दशपुटेनैव निरुत्थं म्रियते ध्रुवम् ॥ र. र

एक भाग माक्षिक चूर्ण को जबीरी रस मे घोट कल्क बनाय ३ भाग चादी पत्रो पर लेप कर सुखाय सपुट कर ३० वनोपल की आच दे, इन विधि से १४ पुट दे तो चादी भस्म बने ।

(४) तार त्रिवारं निक्षिप्त तैले ज्योतिष्मती भवेत् ।
स्नुक्क्षीरैः पेषयेत्ताल तारपत्राणि लेपयेत् ॥
रुद्ध्वा गजपुटे पश्चात्पूर्वोक्तै. पेषयेत्पुन' ।
पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तारं भस्म प्रजायते ॥ र र.

चादी के पत्रो को तपा तपाकर मालकागनी के तेल में बुझावे, फिर हरिताल को थोहर दूध मे घोट कल्क बनाय तार पत्रो पर लेप कर सुखाय सपुट कर ३० वनोपल की आच दे, इस विधि से १४ पुट दे तो चांदी भस्म बने ।

(५) हिङ्गुलेन च माक्षिकेण वलिना तुल्येन जम्भाम्भसा ।
लिप्तं रौप्यदलं पुटेन पुटनात्स्याद्भस्म मूपास्थितम् ॥
र त, र. प, र, का धे

हिंगुल, माक्षिक, वलि तीनो बरावर जवीरीरस में घोट कल्क वनाय चादी पत्रो पर लेप कर सुखाय सपुट कर कुक्कुट पुट की आच दे, इस विधि से आगे थोहर आक दूध में कल्क वनाय १४ पुट दे तो चादी भस्म बने । मि ख.

(६) चादी पत्रो को टोटकवूटी के नुगदे मे रख सपुट कर ७ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से १४ पुट दे तो चादी भस्म बने । मि ख

(७) चादी के पत्रो को चीनी के प्याले मे रख उस पर वलिकाम्ल या पवनाम्ल डाल प्याले को आग पर रखे धुआ से बचा कर चलाता रहे, आध घटे मे भस्म बन जायगी । उसे निकाल धोकर उससे १२ वा भाग हरिताल मिलाय कुमारी रस से टिकिया वनाय सुखाय सपुट कर ५ सेर उपलो की आच दे । इस प्रकार १० पुट दे फिर केवल कुमारी रस में घोट टिकिया वनाय सुखाय सपुट कर ३ पुट और दे तो १४ पुट में चादी भस्म बने । र त सा.

(२० पुटी) रसगन्धौ समौ कृत्वा काकतुण्डस्य मूलकम् ।
मर्दयेन्महिषीक्षीरैः पिष्ट्वा न क्षालयेज्जले ॥
हरिद्रागोलके क्षिप्त्वा गाले हयपुरीषके ।
[1]क्षिप्त्वा दिनैकं विंशन्तं तद्गोलमुद्धरेत्पुनः ॥
तत्पिष्टतारपत्राणि लेप्यान्यम्लेन केनचित् ।
[2]पुटै विंशतिभिर्भस्म जायते नात्र संशय ॥ र र, र ज. नि.

१ त गोलमुद्धरेत् क्षिप्त्वा दिवसानेकविंशति रसजलनिधौ इति पाठ ।

२ विंशत्याचपुटै रसजलनिधौ इति पाठ ।

पारा वलि वरावर कज्जली वनाय कौआठोडी को भैंस के दूधमे घोट कल्क वनाय हल्दी के नुगदे में रख उस गोले को घोडे की लीद मे दवा दे, २१ दिन के वाद निकाल उसका निवूरस से कल्क वनाय चादी पत्रो पर लेप कर ३० वनोपल की आच दे, इस विधि से २० पुट दे तो चादी भस्म बने ।

(२१ पुटी) चादी पत्रो को मूसली चूर्ण के मध्य उपल सपुट मे रख आच दे, इस विधि से २१ वार करे तो चादी का पत्रा फूलकर सफेद हो जायगा । स.अ

(२) चादी के पत्रो को तपा-तपा कर जगती गुलाव रस मे २१ वार वुझावे फिर पिपरामूल के नुगदे मे रख सपुट कर १० सेर उपलो की आच दे इस विधि से २१ पुट दे तो चादी भस्म बने । अ त

(२५ पुटी) चादी पत्र को कुठ, गोरखमुडी, वटजटा सरनाय पत्र इन चारो

के मिश्रित नुगदे में रख उपल सपुट मे बन्द कर आच दे, इस विधि से २५ पुट दे तो चादी भस्म बने। अ स ,मि ख.

(३० पुटी) तारमाक्षिकयोश्चूर्णमम्लेन सहमर्दयेत्।
त्रिंशत्पुटेन तत्तार भूति भवति निश्चितम्॥
र प्र सु ,आ क ,र र स ,रसे चू ,र सागर,व रा ,पा न ,ना मे र

बसवराजीये भिन्न पाठ प्रतिपादित।

आनन्द कन्दे रससागरे स्नुही क्षीरात् विमल माक्षिक भावना दत्वा चत्वारिंशत्पुट प्रदीयतामिति।

चादी चूर्ण और विमल को अम्ल रस मे या थोहर दूध में घोट टिकिया बनाय सुखाय सपुट कर ३० उपलो को आच दे। इस विधि से ३ पुट दे तो चादी भस्म बने।

(२) चादी और पारे की पिष्टी बनाय चादी के बराबर बलि और इतना ही हरिताल मिलाय निंबू रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सपुट कर ५ सेर उपलो की आच दे फिर प्रतिवार चादी से १० वा भाग हरिताल मिलाय निंबू रस मे घोट उक्त विधि से ३० पुट दे तो चादी भस्म बने। र त सा

(४१ पुटी) चांदी पत्रो को कुठचूरा में बिछाय उपल सम्पुट में रख आच दे, इसी विधि से ४१ पुट दे तो चादी भस्म बने। अ स मिख.

(२) चादी पारा सम भाग पिष्टी बनाय अजवायन चारोके नुगदेमें रख सम्पुट कर २ सेर उपलों की आच दे इस विधि से ४१ पुट दे तो चादी भस्म बने। मि ख ,म अ

(१०० पुटी) चादी बुरादा को करेला रस की सात भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ५ पुट दे फिर २½ सेर उपलो की २० पुट दे फिर ५ सेर उपलो की १५ पुट दे फिर २० सेर उपलो से १० पुट दे। इसके बाद उक्त विधि से करेले की भावना दे गजपुट की आच देता रहे तो १०० पुट में चादी की उत्तम भस्म बने। र यो सा

चांदी भस्म के गुण :—

रूप्यं विपाकमधुरं तु वराम्लसारं शीतेसरं परम लेखनकच रुच्यम्।

स्निग्धं च वात कफजिज्जठराग्नि दीपी वल्य परं स्थिर वय करणं च मेध्यम ।

रौप्यशीत कपायाम्लस्निग्ध वात हरं गुरु ।
रसायन विधानेन सर्वरोगान्तु हारकम् ॥ र र स.

चांदी परिपाक मे मीठी अन्दर से खट्टे रस वाली, ठण्डी, दस्तावर और लेखन है, भूख बढाती है, रुचि उत्पन्न करती है, स्निग्ध है, वात कफको जीतने वाली है, आयु को स्थिर करती है। यह ठण्डी, कसैली, खट्टी, वातहर और भारी है, रसायन विधि से सेवन करने पर अनेक रोगो को नाश करती है।

राजावर्त भस्म

(१) [1]लुङ्गाम्बु गन्धकोपेतो राजावर्तो विचूर्णितः ।
पुटनात्सप्तवारेण राजावर्तो मृतो भवेत् ॥
रसे चू.,र प्र सु,र.र.स,पा स,आ भे र,र ज.नि.

१ भृङ्गाम्भो रसेन्द्र चूडामणी इति पाठ । रस प्रकाश सुधाकरे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

राजावर्त (लाजवर्द) चूर्ण से चौथाई गन्धक लेकर दोनो को खरल में डाल बिजौरा रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे इस विधि से ७ पुट दे तो राजावर्त की भस्म बने।

(२) चूर्णितं शुकपिच्छेन भृङ्गराज रसेन वै ।
सप्तवारेण पुटतो राजावर्तो मरिष्यति ॥ र प्र सु.

न० १ न० २ की दोनो विधि एक ही है केवल पाठ भेद है।

राजावर्त के गुण

प्रमेह क्षयदुर्नाम पाण्डुश्लेष्मा निलापहः ।
दीपनं पाचनं वृष्यो राजावर्तो रसायनः ॥ र र स.,पा स

राजावर्त प्रमेह, क्षय, अर्श, पाण्डु, कफविकार, वातविकार को नष्ट करने वाला है और दीपन व पाचन तथा वृष्य व रसायन है।

लोह

भौतिक गुण—लोह धनात्मक प्रकृति का तत्व है, किन्तु आवर्त के अष्टम स्थान में होने से कही-कही ऋणात्मक प्रकृति का भी आचरण करता है।

विशुद्ध लोह श्वेत वगवत् आभा प्रभावान् ताम्रवत् नरम धातु है। यह दृढता, कठोरता, घनवर्धनीयता, स्थिति स्थापकता चीमडता और तन्त्वनाके गुणो मे युक्त है, जिसकी तुलना कोई धातु नही करती, और यह ताप विद्युत का वाहक तथा चुम्बकत्व शक्ति का प्रवल धारक है। विद्युत शक्ति के प्रभाव से यह उसकी ओर आकर्पित होता है और उसके द्वारा आकर्पित हो चुम्बत्व गुणो से युक्त हो जाता है। यह गुण जबतक तपाया नही जाता बना रहता है जो लोहा विद्युत प्रभावमे चुम्बकत्व गुण युक्त हो जाता है वह अन्य लोह को अपनी ओर खीचने मे समर्थ होजाता है। यह गुण उस मे काफी समयतक बना रहता है। इसकी परमाणु मात्रा ५५·८ घनता ७ ८ और द्रवाक १५२० श० तथा क्वथनाक ३४५० श० है, इसकी युयुक्षाशक्ति २ और ३ है।

रासायनिक गुण—लोहमे अन्य तत्वोसे मिल जाने और तद्रूप हो जानेकी इतनी प्रबल युयुक्षा होती है जिसके कारण इसे विशुद्ध रूपमे प्राप्त करना बहुत कठिन होता है। देखा गया है कि रासायनिक कार्यो मे व्यवहार के लिये जब इसके ऊष्मिद यौगिक को उदजन प्रवाह में रख कर स्फटिकम् चूर्णके सयोग से साधारण तापक्रम पर उसका ऊष्मजन शोपित करते है तो उस समय उसका काला चूर्ण प्राप्त होता है। यह लोह चूर्ण हवा मे लाते ही एक दम गरम होकर फिर ऊष्मिद मे परिणित होने पर जल उठता है।

लोह के सकर—पूर्व काल के लोह मे अधातुओ की अशुद्धियां अधिक होती थी। इस समय उन अशुद्धियो को अधिक से अधिक कम करने की चेष्टा की गई है। देखा गया है कि लोह को अधातुओ से शुद्ध करके यदि इसमे अन्य धातुए मिला दी जाँय तो इस धातु सकरमे अनेको यान्त्रिक व व्यावहारिक ऐसी विशेपताए आ जाती हे जो अन्य धातु मिश्रण मे नही आती। प्रयोग कर्ताओ ने भिन्न-भिन्न अनुपातो मे लोह से मैगनीज, निकिल, क्रोमियम, टगस्टन, मालिब्डिनियम, वनाडियम, शेलिका लेन्थेन आदि को मिलाकर उनकी जाँच की है, इस जाच से ज्ञात हुआ कि धातु सकरो से लोह मे अनेक विशेपताए आ जाती हे। यथा-८२ प्रतिशत लोह में यदि १८ प्रतिशत क्रोमियम मिला दिया जाय तो यह ऐसा श्वेत कठोर चमकदार लोह का सकर वन जाता हे जिस पर जग नही लगता, न इसके वर्तन जल्दी घिसते है, न खटाईका इसपर असर होता है। यदि ८२ भाग लोहमे १८भाग टगस्टन मिला दिया जाय

तो यह अत्यन्त कठोर वज्र लोह (हवाई इस्पात) बन जाता है। यदि लोह में ३½ - ४ प्रतिशत शैलिका मिला दें तो इस लोहमें उच्च चुम्बकत्व वारक गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है यदि लोह में ३-४ प्रतिशत लेन्थेनम धातु मिला दी जाय तो इस सकर को किसी खुरदरी चीज पर झिठकेसे घर्षण देने से अग्नि की चिनगारियाँ निकलने लगती है जिससे सिगरेट वगैरह सुलगाये जा सकते है, या बिना दियासलाई आग जलाई जा सकती है। इस तरह यान्त्रिक उपयोग के लिये तो इन धातु सकरो के अनेक उपयोगी सकर बना कर व्यवहार मे लाये जा रहे हैं जिन के वर्णन का हमारी भस्मो से कोई सम्बन्ध नही।

पूर्व काल मे जब लोह खनिजो से लोह प्राप्त किया जाता था तो उसको लकडी के कोयलो मे तपा कर घरिया में गलाया जाता था और पीट-पीट कर शुद्ध करते थे। यह अपनी युयुक्षा के कारण कज्जल, बलि, शैलिका, फास्फुरिका, मैगनीज आदि के साथ खनिज रूप में मिला होता था। इस समय लोह शोधन के अनेक वैज्ञानिक विधानो से लोह को शुद्ध किया जाता है फिर भी उसमे निम्न मात्रा मे निम्न अशुद्धिया विद्यमान रहती है।

मुण्ड लोह

कज्जलिका	० ४	प्रतिशत
फास्फुरिका	० ६	" "
मैगनीज	८ ०५	" "
शैलिका	० ०८	" "
बलिका	० ०४	" "
अन्य धातु सकर	१ ५	" "

इस समय जो भी मुण्ड लोह वज्र या तीक्ष्ण लोह टाटा या विलायती या स्वीडिनका आता है उन मे निम्न लिखित अशुद्धिया रहती है।

मुण्ड लोह	क०	मैं०	शै०	ब०	फा०
१ टाटा	० ०५	० ०५	० ०५	० ०१	० ०१
२ इगलिश	० ११	० ०७	०.२३	० ०४	० २३
३ स्वीडिन	० ०५	० ०५	० ०७	० ०१	० ०१
वज्र लोह मे	० ७५	० ५०	० ०८	०.७५	० ०५
तीक्ष्ण लोह में	१ २५	०.५०	० १०	०.०३	० ०५

उक्त अशुद्धियो पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि कज्जल और मैगनीज की मात्रा जब लोह मे बढ जाती है तो वह लोह कठोर हो जाता है और तलवार आदि बनाने वाले लोह मे उसकी मात्रा १.५ प्रतिशत या इससे भी अधिक होनी है। लोह मे यह विशेषता है कि जब वह लकडी के कोयले में रखकर खनिज से भिन्न किया जाता है या खनिज से भिन्न हुए लोहे को लकडी के कोयले मे खूब तपाया जाता है तो वह कोयले का अभिशोषण करता है इससे उसमे कज्जल की मात्रा बढ जाती है।

हम भस्म के लिये पूर्वकाल मे जो लोह प्रयुक्त करते थे उस समय के लोह मे प्राय उक्त अनिवार्य अशुद्धियाँ अवश्य ही न्यूनाधिक मात्रा में रहती थी जिन्हे न तो हम अपनी शोधन विधि से दूर कर सकते थे, न यह किसी प्रकार दूर हो सकती थी। हा भस्म रूप मे आने पर अवश्य ही इनके यौगिक बदल जाते थे।

कान्त लोह और उसके भेद

हम रसायन वाद के आरम्भ काल से भस्म के लिये खनिज रूप से कान्त, मुण्ड और तीक्ष्ण नाम से जो लोहे के भेद लेते चले आये थे, वास्तव मे वे एक भी शुद्ध लोह के रूप मे नही थे। कान्त लोह तो हमारा वह लोह का प्रकृति मे मिलने वाला ऐसा ऊष्मिद था जिसमें चुम्बकत्व का गुण उसे प्रकृति रूप में प्राप्त हुआ था। हमने इसमे लोहाकर्षण की भिन्न-भिन्न क्रियाएं देख कर इसके पाच भेद मान लिये थे यथा—

भ्रामक चुम्बक चैव कर्षकं द्रावकं तथा।
एव चतुर्विधकान्त रोमाख्य तु पचमम्॥ रसार्णव

घुमाने वाला, खीचने वाला, या आकर्षक, गलाने वाला और रोयेंवाला इस प्रकार पाच भेद का कान्त लोह देखा जाता है। चुम्बक और आकर्षक समानार्थी है। द्रावक से शास्त्र ने कौन से गुण की ओर सकेत किया है? ज्ञात नही होता। पूर्व काल मे शुद्ध लोह को चुम्बक के गुण से युक्त करने का साधन ज्ञात हो तो इसका प्रमाण नही मिलता। किन्तु प्रकृति रूप मे लोह का यह खनिज कात पाषाण के रूप मे काफी प्राप्त होता था। इस के पाषाण खण्डो मे यह गुण देखा जाता है कि एक थाली मे सूई रख दें और उस थाली के नीचे कान्त पाषाण के टुकडे को इधर उधर करे तो थाली में रखी हुई

सूई अपने आप हिलती है इसी कारण से इसको भ्रामक कहा गया और सूई इस चुम्बक पाषाण से खिच कर उनकी ओर आती है और चिपक जाती है इसलिये इसे चुम्बक व आकर्षक कहा गया। कुछ कान्त पाषाण के किनारो पर कान्त पाषाण का बारीक चूरा उसमें चिपक कर बाल जैसा आकार बना लेता है वह चूर्ण लोम जैसा लम्बाई में बन जाता है इसीलिये उसे रोमक कहा गया। यह भेद वास्तव मे भेद नही माना जा सकता। यह तो आकर्षण गुणका रूपान्तर मात्र है जो उसी आकर्षण के कारण है। कान्त पाषाण वास्तव में ऊष्मजन से मिलकर प्रकृति में बनने वाला लोहसोलोहक ऊष्मिद (लो$_3$ ऊ$_4$) है। जिसे हम जब भस्म में परिणत करते है तो वह पुट काल मे दो ऊष्मिदो मे लोह से ऊष्मिद (लो ऊ) और लोहक ऊष्मिद (लो$_2$ ऊ$_3$) में बदल जाता है। प्रकृति रूपने मिलनेवाला गेरू यथा है, यह भी लोहक ऊष्मिद (लो$_2$ ऊ$_3$) ही है। किन्तु आरम्भ मे हम इसके वास्तविक रूप को नहीं जान पाये थे इसीलिये हमने इसे एक भिन्न वस्तु समझ कर उन रसोमे इसे स्थान दिया। भूरागेरू या रामरज आदि इसी लोह का यौगिक है जिसमे जलके अणुओ और कुछ जस्ताके अणुओ की विद्यमानता से वह भुरभुरे मिट्टी तद्वत् रूप का होता है।

रौप्य माक्षिक—लोह का एक और यौगिक विमल के नाम से महा रसो में आया है, यह वास्तव में लोह से वलिकाका वलिकाइद (लो$_2$ व$_3$) है जिसको शुद्ध करने या भस्म बनाने के समय उसके वलि को उडा देते है वह फिर सरल वलिकाइद (लो व) के यौगिक में बदल जाता है।

स्वयम् अग्नि लोह—स्वयमग्नि लोह भी तो हमारा वास्तव मे लोह का वलिकाइद (लो$_2$व$_3$) ही है। जिसमे पारद वलिकाइद(पा व)का यौगिक भी मिला रहता है। हम अपने ग्रन्थो की विधियो से दो ही प्रकार के लोह यौगिक निर्माण करते है किन्तु इस समय के रसायन शास्त्री लोह के अनेको ही यौगिक निर्माण करने में समर्थ हो गये है जिसका सम्बन्ध हमारी भस्मो से नही, तभी हम यहा उनका उल्लेख नहीं कर रहे।

हमारे रस ग्रन्थो में देहवाद के लिये लोह के कौन कौन से यौगिक व्यवहार में लाये गए थे हम अब उनका क्रमश उल्लेख करेंगे।

लोह भस्म

(अपुटी) एकभाग लोहचूर्णं तत्समं नवसादरम् ।

किञ्चित्तप्तोतक ग्राह्यं सर्ववस्त्रे निवध्य च ॥
यामान्तं घर्षयेत्पाणौ सद्यो वारितरं भवेत् ।
योजयेत्सर्वरोगेषु सर्वरोगानुपत्तये ॥ यो र., भा.मै र

लोहचूर्ण नवसादर सम मिलाय थोडा गर्म पानी डाल गीला कर पोटली मे बाँध हथेली पर रगडे तो १ प्रहर रगड़ने से लोह नौसादर और जल के संयोगमे यौगिक में बदल जाता है और वह सूखने पर या घोटने पर वारितर बन जाता है। इसे समस्त रोगो में दे।

रफीक उलातिब्बा ने नवसादर को कुमारी रस में भिगो लोह चूर्ण डाल धूप में रखना लिखा है। र. ति.

(२) शुद्ध लोहभवंचूर्णं सहदेव्या रसेन च ।
खल्वे सन्मर्द्य च ततः शोषयेदथ मर्दयेत् ॥
एवं त्रिसप्तपुटितं सम्यग्वारितरं भवेत् ।
अग्निविनाप्ययं योगो ज्वालामुख्याऽथवाभवेत् ॥
तावल्लोहस्य चेद्वैद्यो यावत्तिष्ठो जलोपरि ।
अन्तिमो लघु भावेन जले तरति हंसवत् ॥ चि र

शुद्ध लोहचूर्ण को सहदेवी रस की या ज्वालामुखी रस की १० भावना दे तो यह लोह वारितर बन जाता है। ग्रन्थकार कहता है यह योग बिना अग्नि स्पर्श के लोह की भस्म बना देता है।

(३) लोहचूर्ण से तिगुना त्रिफलाचूर्ण चौथाई सौंफ और सोया चूर्ण मिलाय एक चीनी के प्याले में डाल उसे गो दुग्ध से तर करके धूप में धर दे। सूखने पर और दूध डाल दे, इस तरह ४ सेर दूध खपा दे फिर कढाई में डाल रगड़ कर गोली बना ले। अथवा उक्त चीजों को ४ सेर दूध में डाल दही जमाय उक्त दही को कढाई में चढाय रगडकर बेर बराबर गोली बनाले। काममे लावे लाभदायी है। अ स.

(४) लोहचूर्ण मे चौगुना नकछिकनी चूर्ण १६ गुने दही मे भिगोकर धूप में रख दे, उसे कभी कभी हिलाता रहे, कुछ दिन मे जब सूख जाय पीसकर रख ले। बलवर्धक, क्षुधावर्धक है। अ.स, मि ख.

(५) लोहचूर्ण ३ तो०,पारा, हरिताल, हिंगुल,सोमल प्रत्येक १तोला सबको खब घोट एक पोटली में बांध एक हण्डी में रख उसमें कुमारी रस, शराब,

दही, प्याज रस, आकद्रूव प्रत्येक २० तो० डाल सम्पुटकर धान्यराशि मे दबा दे। ४० दिन बाद निकाल खरलकर एक बडी सी टिकिया बनाय सुखाय आटे की रोटी मे उस टिकिया को रख घी मे उसे तल ले। आटे के लाल होने पर निकाल पुन दूसरी रोटी मे भर कर तले। इस प्रकार ४० बार तले तो लोह भस्म बने। अत्यन्त बलवर्धक, शक्तिवर्धक है। मा अ.

(६) लोह बुरादे को खट्टे अनार के पानी में भिगोकर धूप मे रख दे सूखने पर सिरका मे भिगो दे इसके सूखने पर जामुन के रस से तर करे और धूप में पड़ा रहने दे तो सूखने पर लोह भस्म होगी, उसे पीस ले। अ.स.

(७) मुण्डवज्रादि लोहाना मादायान्यतमं शुभम्।
कृत्वा निर्मल मादौ तु कुनट्या माक्षिकेण च ॥
वक्तुर मूलकल्केन लिम्पेद्रस युतेन च।
वह्नौ निक्षिप्य विधिवत्साराङ्गारेण निर्धमेत् ॥
ज्वाला च तस्यरोर्द्धव्या त्रिफलाया रसेन च।
तयो विज्ञाय गलितं शंकुजीर्णं समुच्छ्रयेत् ॥
त्रिफलाया रसेपूते तदाकृष्य तु निर्धमेत्।
सम्यग्गालित यत्तुतत्तेनैव विधिना पुन ॥
ध्मात निर्वापयेत्तस्मिल्लोह तत्त्रिफला रसे।
यल्लोहेन मृत तत्र पाच्य भूयोऽपि पूर्ववत् ॥
मारणान्न मृतं यच्च तत्त्यक्तव्यमलोहवत्।
तत. सशोष्य विधि वच्चूर्णयेल्लोह भाजने ॥
लोहेन च तथा पिष्याद् दृषदा सूक्ष्म चूर्णितम्।
कृत्वा लोहमये पात्रे मृतिका लिप्त रन्ध्रके ॥
रसैः पङ्कमयं कृत्वा तं पचेद्गोमयाग्निना।
पुटानि क्रमशोदेयात्पृथगेभिर्विधानतः ॥
त्रिफलार्द्रक भृङ्गाणा केशराजस्य बुद्धिमान्।
मानकन्दक मल्लात वह्नीना सूरणस्य च ॥
हस्तिकर्ण पलाशस्य कुलिशस्य तथैव च।
पुटे पुटे चूर्णयित्वा लोहात्षोडशिके पलम् ॥
तन्मात्र त्रिफलायाश्च पलेनाधिकमाहरेत्।

अष्ट भागावशेषेतु रसेतस्या पचेद्बुध: ॥
अष्टौ पलानि दत्वा च सर्पिषो लोह भाजने ।
ताम्रेवालोह दर्व्यातु चालयेद्विधि पूर्वकम् ॥
ततः पाक विधानज्ञः स्वच्छे चोर्ध्वे च सर्पिपी ।
मृदु मध्याग्नि भेदेन गृह्णीयात्पाक मन्यतः ॥

भा प्र , व से , भा भै र , र ज नि

मुण्ड वज्र या कोई भी हो अच्छा लोहा देखकर उसे साफ करके पत्र वनावे, इन पत्रो से अष्टभाग मैनसिल माक्षिक चूर्णको पोई साग के मूल रसमे छोड इन पत्रो पर उस का लेप करे और खदिर के कोयलो के मध्य उन पत्रो को रख कर तपावे, जव पत्रे लाल हो जाय, लोहे से लाल ज्वाला निकलने लगे उन्हे निकाल कर त्रिफला क्वाथ जल मे वुझावे। उन्हे निकाल पुन मैनसिल और माक्षिक चूर्ण का लेप कर उसी प्रकार तपावे और त्रिफला क्वाथ मे वुझाता रहे। यह क्रिया तव तक करे जव तक समस्त लोह पत्र चूर्ण-विचूर्ण न हो जाय। ग्रन्थकार कहता है जो लोह पत्र अन्त तक चूरा न हो उन्हे त्याग दे। फिर उस चूर्ण को सुखाकर लोहे के खरल मे इतना घोटे कि वह अत्यन्त सूक्ष्म सुरमा सा वारीक हो जाय। फिर उस लोह भस्म को कढाई मे डाल कर उस कढाई को चूल्हे पर चढा दे और नीचे उपलो की आच लगावे और उसमे क्रम से निम्न लिखित वनस्पतियो का रस उस लोह-भस्म से १६ गुना डाल-डाल कर पकाता रहे। एक वनस्पति का रस पूरी तरह सूख जाने पर दूसरी वनस्पति का रस डाले।

भावना की वनस्पतिया—त्रिफला क्वाथ, अद्रकरस, भारगीरस, भाँगरा रस मानकन्द क्वाथ, भिलावा क्वाथ, चित्रकरस या क्वाथ,जिमीकन्द रस,हस्तिकर्णपलाश,हडसहारी रस या क्वाथ। इन वनस्पतियोकी भावनाए जव पूरी हो जाय तो उस लोह भस्म में ४० तोला घृत डाल कर पकावे और करछी से चलाता रहे, और जव घी पकते २ मन्द मध्य पाक होजाय उसके वाद उसे कढाईमे ४ घटा और पकाकर छोड दे। जव शीतल होनेपर घी ऊपर आ जाय और लोह भस्म नीचे वैठ जाय घृत को निकाल कर भिन्न कर ले और लोह भस्म को भिन्न करके रखले। कोई कोई उस रहे हुए स्नेह को तीव्र अग्नि देकर जला डालते है ऐसा किसी ग्रन्थ का अभिमत नही। यह शकर नामका लोह वनता है। जिसके

गुणो की महिमा वहुत ही गाई गई है।

(तपन पुटी) जम्बीररस संयुक्ते दरदे तप्तमायसम्।
वहुवारनिनिक्षिप्तं म्रियते नात्र संशयः ॥
र र स, पा स, भा भै

हिंगुल को जम्बीरी रस मे पीस लोह पत्रो पर उसका लेप कर उन्हे अ
म लाल कर पानी में वुझाता रहे तो लोह की भस्म बने। इसे पीस ले।

(२) आलिप्यतापीकरवीरकाभ्यां वैश्वानरे प्रज्वलिते निधाय।
तप्तं सुतप्त विनियोज्य तक्रे निर्वाप्य वारान्बहुशः सुलोहम् ॥
एभि. प्रकारै. सुमृताश्च लोहा च्चूर्णीकृता च्चापितथैव योज्यम्
र का धे, भा भै

माक्षिक चूर्णको कनैरके रसमें घोट लोह पत्रोपर लेपकर उन्हे तपावे लाल
होनेपर तक्रमें वुझावे, इस तरह वहुत वार वुझानेपर लोह चूर्ण चूर्ण हो जाता है
उसे पीस कर काम में लावे।

(३) तदनुकुठार छिन्ना त्रिफला गिरिकर्णिकास्थि संहारै.।
करि कर्णच्छद मूलक शतावरी केशराजाख्यै ॥
शीलञ्चमूल काशमूल प्रावृद्ध जभृङ्गराजैश्च।
लिप्त्वादग्धव्यं तद्दृष्ट क्रिय लोह मारणम् ॥ च द

गिलोय, त्रिफला, कोयल, हडजोडी, काटे वाला ढाक, शतावर, भागरा,
शालिशाक,कास इन सबोको काजी या निम्बूरस मे घोट करके वनाय उसका लेप
लोह पत्रो पर कर उन पत्रो को अगारो में तपावे और पानी में वुझाता रहे जव
इस तरह सारा लोह चूर्ण रूप हो जाय पीस कर व्यवहार में लावे।

(४) निर्वाप्य त्रिफला क्वाथे लोह पत्राण्यनेकशः।
तद्रजो मधु सर्पिभ्या लीढ जीवित वर्धनम् ॥ ग नि, र यो. सा

लोह पत्रो को तपा तपा कर त्रिफला क्वाथ मे वुझाता रहे जव वह बिल-
कुल चूरा हो जाय पीस ले और शहद घी से सेवन करे तो आयु वृद्धि हो, इसका
नाम जीववर्धन लोह है।

(५) त्रिफलायारसे मूत्रे गवांक्षारे च लावणे।
क्रमेण चेङ्गुदीक्षारे किंशुकक्षार एव च ॥
तीक्ष्णायसस्य पत्राणि वह्निवर्णानिवारयेत्।

चतुरङ्गुलदीर्घाणि तिलोत्सेधतनूनि च ॥
ज्ञात्वा तान्यञ्जनाभानि सूक्ष्म चूर्णानि कारयेत् ।
तानि चूर्णानि मधुना रसेनामलकस्य च ॥
युक्तानि लोह वत्कुम्भे स्थितानि घृतभाविते ।
सम्वत्सर निधेयानि यव पल्ल तथैव च ॥
दद्यादालोडकं मासे सर्वत्रालोडयन् बुधः ।
सम्वत्सरात्ययंतस्य प्रयोगोमधुसर्पिभ्याम ॥

रसा. मा, च म, ग नि, भा भं र

लोह पत्रो को तपा तपा कर त्रिफला, गोमूत्र, जवाखार, नमक, हिंगोट के खारो के पानी मे तव तक वुझाता रहे जव तक वह चूरा चूरा न हो जाय फिर उसे पीस आवला रस की ३ भावना दे शहद मिलाय अवलेह वनाले चिकने पात्र मे भर सम्पुट कर धान्य राशि में दवा दे १ वर्ष के वाद निकाल सेवन करे। इसका नाम लोह रसायन है।

(६) शिला हिंगुल माक्षिकैः सर्वैरेकैकशोद्विशः ।
जम्वीरद्रव सम्पिष्टैः सैधवेन समैः पुनः ॥
प्रलिप्तमायसं पत्रं त्रिफलापिण्ड मध्यगम् ।
विद्रुतु पूर्ववद्धीमा स्त्रिफलाम्भसिनिक्षिपेत् ॥
एवं हि म्रियतेलोहं सर्वथैव नसशयः ।

लो प, र का. धे

मैनसिल, हिंगुल, माक्षिक सव एक-एक भाग सैंधा नमक दो भाग को जम्वीरी रस में पीसें और उसका नुगदा वनावे और सव के वरावर लोह पत्र लेकर उन पत्रो पर इसका लेप लगा कर सुखाले फिर इन्हे त्रिफला के नुगदे में रख उन पत्रो का नुगदा सहित कुठाली मे रख कर धमावे जव लोह पत्र लाल हो जाय उन्हें त्रिफला जल मे वुझावे। इस प्रकार कई वार करने पर लोह भस्म वने।

(७) सुरदाली भस्मगलितं त्रिसप्त कृत्वोऽथ गोजलशुष्ककम्
तापेन सलिलसदृश करोतिमूपागतंतीक्ष्णम्
एतत्स्याद पुनर्भवहिभसित लोहस्यादिव्यामृतम्

र. र स.

तीक्ष्ण लोह को मूषा में रख उसके साथ वन्दाल पचाग की भस्म मिलाय लोह को तीव्र आच पर धमन करे और लोह को पानी जैसा कर दे फिर उसे

गोमूत्र मे बुझावे इस प्रकार १० बार करे तो लोह भस्म हो।

(८) तनूनि लोहपत्राणि तिलोत्सेधसमानि च।
काञ्जिकाम्लकल्केन सम्लिप्य सर्पपेण वा
विशोष्य सूर्य किरणै पुनरेवावलेपयेत्।
त्रिफलायाजले ध्मातं वापयेच्च पुन. पुन ॥
ततः संचूर्णितं कृत्वा कर्पटेन तु छानयेत्।
भक्षयेन्मधुसर्पिभ्या यथाग्नितत्प्रयोजयेत्॥
पक्ति शूलाग्निहन्त्येतन्मासे नैकेन निश्चितम्। च द., भा भै र.

लोह पत्रो पर आक मूल छाल सरसो को काजी मे पीस कर लेप कर धूप मे सुखाय अग्नि मे तपा कर त्रिफला क्वाथ मे बुझावे। इस विधि से प्रतिवार तब तक बुझावे जब तक लोह चूर्ण रूप मे न आजाय, फिर उसे पीस कर कपड़े मे छान ले। इसे १ से ४ माशे तक शहद घी से मिलाकर चाटने से १ मास मे पक्ति शूल नष्ट हो।

(६) तीक्ष्णलोहपत्राणि तनूनि लवणवर्गप्रदग्धानि गोमयाग्नि प्रतप्तानि त्रिफलासालसारादि कषायेण निर्वापयेत् पोडशवारान्। ततः खदिराङ्गारतप्तानि उपशान्त पात्रानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेद्गाढतान्तवपरिस्रावितानि; ततो यथा वलं मात्रा सर्पिमधुभ्या सलीढ्योपभुञ्जीत। जीर्णे यथा व्याव्यनम्ललवणमाहार कुर्वीत। एव तुलामुपभुज्य कुष्ठमेह-मेदः श्वयथु पाण्डुरोगान्मदापस्मारानपहत्य वर्षशतं जीवति, तुलाया वर्षशतगुणोत्कर्ष, एतेन सर्व लोहेषु अयस्कृतो व्याख्याताः।
सु स, चि अ., रसा सा.

लोह के पत्र बनाकर पाचो नमक को काजी मे पीस पत्रो पर लेप कर उपलो में तपा तपाकर त्रिफला और साल सारादिगण के क्वाथ मे तब तक बुझाता रहे जब तक सारे लोह के पत्र चूर्ण विचूर्ण न हो जाय। फिर पाचो नमक का प्रतिवार तपाने से पूर्व लेप लगा कर तपावे। इस लोह चूर्ण को एकत्र कर सुखाय खरल मे पीस मोटे कपड़े मे छान ले। आजकल तो छानने की आवश्यकता नही होती, घुटाई से ही श्लक्ष्ण चूर्ण हो जाता है। फिर इसे शहद और घी से सेवन करे और खटाई, नमक इत्यादि से परहेज करे तो कुष्ठ, प्रमेह, मोटापा, शोथ, पाण्डु, कामला, उन्माद, अपस्मार आदि रोगो से मुक्त हो,

१०० वर्ष तक मनुष्य जीवित रहता है।

साल सारादि गण—साल, खैर, सुगन्धित खैर, तेन्दु, सुपारी, भोजपत्र, मेढासिगी, जगली हल्दी, चन्दन दोनो, सीसम, सिरस, अरिमेद, धव, अर्जुन, ताड, सागौन, करज, लताकरज, मांजू, अगर, महुआ, तिन यह साल सारादि-गण हैं। इस योग का नाम अयस्कृति है।

(भानुपुटी) अर्जुनस्य त्वचा पेष्या [1]कांजिकेनातिलोडिता।
तन्मध्ये लोहचूर्णं च कांस्यपात्रे विनिक्षिपेत॥
[2]ततोऽय धार्यते घर्म्मे द्रवैः पूर्य पुनः पुनः।
अर्जुनस्यारनालैर्वा [3]लोहमेवं विमारयेत्॥

आ क, र र, र. ज नि

१ लोहिता इति रसरत्नाकरे।

२ दिनैक भावयेत् इति रसरत्नाकरे तथा दिनैक धारयेद् इति आनन्द कन्दे।

३ त्रिविध मारयेदय इति रसरत्नाकरे आनदकन्दे च।

अर्जुन छाल चूर्ण को कार्जा मे पीस कर उसके कल्क में लोह चूर्ण मिलाय कासी के कटोरे मे डाल धूप में रखे जैसे जैसे रस सूखता जाय अर्जुन छाल चूर्ण को काजी मे घोल कर उस पर डालता रहे और हिलाता रहे तो कुछ दिन में लोह की भस्म बने।

(२) चिञ्चापत्रनिभ लोहपत्रं दन्तीद्रवे क्षिपेत्।
घर्मे धृत्वा रसो देयो मृतं यावद्भवेच्च तत्॥

आ क, र र, र. च, र स क, र का धे.

रसरत्नाकरे आनन्द कन्दे भिन्न पाठ प्रतिपादित।

लोहको इमलीपत्र सदृश बारीक पत्रे बनाकर दन्ती पत्र रसके द्रवमें भिगो कर १ महीना धूप में रखे, जैसे जैसे रस सूखता जाय और रस डालता रहे। जब लोह कण गल जाय सुखाय पीस रखे।

(३) मत्स्याक्षीरसमध्यस्थं लोहपत्रं विनिक्षिपेत्।
त्रिंशद्दिनान्यर्ककरे ततो वारितरं भवेत्॥ र स, क, र का धे

लोहचूर्ण को मछेछी के रस मे भिगो कर धूप मे रख दे, १ महीना धूप में रखे, रस जब जब सूखे डालता रहे और हिलाता रहे तो एक मास में लोह गल कर भस्म बन जाता है। सुखाय पीसकर काम मे लावे।

दन्ती और मत्स्याक्षी के दोनो योग ग्रन्थकारो ने एक मे ही दिये थे मैंने इन्हे भिन्न कर दिया है।

(४) अथवा शोधित लोहं रेतितं [1]कांजिकाम्भसा।
प्लुत सूर्यांशुतप्तं तन्मारयेत्कतिभिर्दिनैः॥ र का धे.

१ कटुकाम्भसा क्वचित् ग्रन्थे इति पाठ ।

शुद्ध लोह चूर्ण को किसी पात्र मे डाल उस पर काजी इतनी डाल दे कि लोह चूर्ण तर हो जाय उसे धूप में रख दे, काजी के सूखने पर और डाल दे। कुछ दिन के बाद उसे घोटे और धूप मे रखे तो लोह की भस्म बने। दूसरा ग्रन्थकार लिखता है काजी नही कुटकी के काढे मे लोह चूर्ण को भिगोकर धूप मे रखे और घोटता रहे तो लोह भस्म बन जाती है।

(५) अथवा रेतित लोह घटस्थ त्रिफलाम्भसि।
क्षिप्तमागारगर्भस्थ वर्षेण सुमृत भवेत्॥ र का धे, रसा सा

अथवा लोहचूर्ण को त्रिफला के जल में भिगोकर उस पात्र को धूप में रखे तो कुछ काल में लोह मृत हो जाता है। धातुविधाप्रकाश ने त्रिफला को तक्र में भिगोया है। धा वि प्र

रसायनसार कर्ता ने लोह चूर्णको त्रिफला क्वाथमें भिगो भानुपुट दे कर लोह चूर्ण के गलने पर अग्नि की पुट देने का विधान दिया है। वह कहता है कि त्रिफला क्वाथ में घोट टिकिया बनाय गजपुट की आच दे तो लोह भस्म बने।

(६) जम्बूत्वचा रसेतिन्द्वो[1] मार्कवस्य रसे तथा।
त्रिसप्तधाऽऽतपे शोष्यं [2]लोह वारितरं भवेत्॥
र स क, र का. धे

१ मार्कण्डफलजेऽथवा इति रससकेतकलिकाया।
२ पेष्य रससकेतकलिकायामिति पाठ ।

जामुन, तेन्दु और आक का रस निकाल इस के रस में भिगो कर ७-७ दिन धूप में रखे तो २१ दिन के भानुताप से लोह की भस्म बने। म अ, अ.त.

(७) लोहबुरादा को हाथी सुण्डी के रस में भिगोय धूप में धरे रस सूखने पर और रस डालता रहे। ५ दिन में लोह भस्म बने। म अ, अ त

(८) लोहचूर्ण पर जगली जामुन फल का रस डाल धूप में धरे, रस

सूखने पर और डाले, ३–४ बार ऐसा करने पर भस्म बने । चा चि, अ म

(९) लोहचूर्ण को कुकरौंधा रस मे भिगो कर धूप में रख दे, २० दिन तक धूप मे रखे, रस सूखने पर और रस डालता रहे तो भस्म बने । स अ

(१०) लोहचूर्ण को इसी तरह बथुआ रस मे भानुपाक करे भस्म होनेपर पास धरे । र. सि.

(११) लोह चूर्ण को इसी तरह मूलीरस में भानुपाक करे और भस्म बनने पर पीस धरे । र सि

(स्वयमग्नि) शुद्धस्य सूतराजस्य भागो भागद्वयं बले· ।
द्वयोः समं [1]सारचूर्णं मर्दयेत्कन्यकाम्बुना ॥
यामद्वयं [2]तस्य गोल संवेष्ठ्यैरण्डजैर्दलै· ।
ततः सूत्रेण सबध्य स्थापयेत्ताम्रसंपुटे ॥
समुद्र्य वदनं तस्य मृदा संशोष्य तत्पुनः ।
त्रिदिनं धान्यराशिस्थ ततः उद्धृत्य मर्दयेत् ॥
रजस्तद्वस्त्रगलितं नीरे तरति हसवत् ।
सोमामृताभिधमिदं लोहभस्म प्रकीर्तितम् ॥

भा भै र, यो र, र सा स, आ वे प्र, शा. ध, भा प्र, र चि, वृ यो त, वै द, वै के, नि र, व रा, र प्र, भै सा स, रसा स, र ख, र को, र वो च, र का धे, वै चि, र क. ल, र रा शि, र र, र-की, रसा., र सि स, र ज नि, रसा सा, रसे चि, वृ र प्र, रसामृत, र र स, र सा. प, पा स, र म, र मृ, ।

१ तीक्ष्ण चूर्ण क्वचित् ग्रन्थे इति पाठ ।

२ ततो इति रसरत्न प्रदीपे ।

यामद्वयं ततो गोल स्थापये[3]त्ताम्र भाजने ।
आच्छाद्यैरण्डजैः पात्रैरूष्णोयामद्वयाद्भवेत् ॥

रसमजर्याम् रसप्रदीपे द्वितीय तृतीय पादस्थाने इति पाठ भेद दृश्यते ।

३ कास्य भाजने रसप्रदीपे इति पठ्यते । तीक्ष्ण मुण्ड कान्तलोह निरुत्थ जायते मृतिम् रसमजर्यामिति पाठो अधिक ।

आनन्दकन्दे, वैद्यदर्पणे, रसप्रदीपे, रसचण्डाशौ, चिकित्सा रत्नाभरणे एषु ग्रन्थेषु भिन्नपाठ प्रतिपादित ।

१ भाग शुद्ध पारा, २ भाग गन्धक, ३ भाग लोहचूर्ण, २ प्रहरतक कुमारी के रसमे घोट, गोलेको एरण्डपत्रो में लपेट, डोरे मे खूब बाध ताम्रसम्पुटमे बन्द कर मिट्टी का लेप कर सुखा ले, फिर उसे अनाज के ढेर मे दबा दे। ३ दिन के बाद निकाल पीस कपडछान कर ले, रुई की तरह पानी पर तैरेगी। इसका नाम 'सोमामृत लोह' है। कुछ ग्रन्थो मे रसयनाग्नि, कुछ ग्रन्थो मे लोह रसायन नाम दिया है।

नोट—श्यामसुन्दराचार्य ने उक्त भस्म को पुन अर्क दुग्ध की भावना दे दमन्यन्त्र में गज आंच दी है, इस विधि से ३ पुट दी है। रसायनसार

(२) शाणोद्धान्तमयस्तु कान्तमथवाक्षिप्त्वाऽर्धतैलीतकम्।
दत्त्वाऽभ्रं यंश रसं विमर्द्यसलिलै भृङ्गाद्रिकर्णी रसै. ॥
पक्व सूर्यपुटैश्चतुर्दशदिनै रेरण्डपत्रावृतम्।
भस्मस्याद्गृहधूसधूसर रुचिप्राग्धान्य राशिस्थितम् ॥

र प ,र का धे.

लोह चूर्ण से चौथाई पारा लोह से आधा बलि प्रथम कज्जली बनाय लोह चूर्ण मिलाय भागरा, कोयल रस की धूप म बैठ कर भावना दे, जब लोह चूर्ण गरम हो जाय गोला बनाय एरण्ड पत्रो मे लपेट धूप मे धर दे फिर अगले दिन उक्त रसो की ८-७ भावना दे तो धुआँ के रग की लोह भस्म बने। इसे ताम्र सम्पुट में रख ४० दिन धान्य राशि मे दबा कर पुन काम मे लावे।

(३) तीक्ष्णस्य चूर्णं सरसं सगध रसेनसमर्द्यभृशकुमार्या।
पाकी कृत कांस्य पुटान्तरस्थ सूर्यातपेमृत्युमुपैतियुक्तम् ॥

रसे चू ,र च ,र प्र सु ,र ज नि ,भा भै र ,र रा सु.

भिन्न-भिन्न ग्रन्थे भिन्न-भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

लोह चूर्ण कज्जली समभाग को कुमारी रस में घोटे, घोटते-घोटते जब खूब गरम हो जाय तो उसका गोला बनाय कास्य पात्र मे रख धूपमे रख दे तो लोह की भस्म बने।

(अनिर्दिष्टपुटी) धात्रीरसैर्वापुटयेद्वन्सपादीरसेन वा।
मत्स्याक्षीनीरतो वापि भृङ्गराजरसैस्तथा ॥
त्रिपयः पिष्टदरदलिप्तं वा भस्मतां नयेत ।

यद्वामाक्षिकयोगेन वलिनावाऽस्ति मारणम् ॥
रसायनेषु सर्वेषु त्रिफलाहतमुत्तमम् ।
धात्रीरस हत वाऽथ माक्षीक निहित तथा ॥
रसभस्म हत वाऽपि योजयेत्तु गुणावहम् । र ल

आँवला रस मे या हमराज रस मे या भांगरा रस मे, या स्निदुग्ध में हिंगुल को घोट लोह पत्रो पर लेप करे अथवा माक्षिक का लेप करे या वलि का लेप कर सुखाय सम्पुटकर भस्म वनावे या त्रिफला क्वाथ में या आंवला रस माक्षिक में लोह चूर्ण को घोट कर पुट दे या हिंगुल योग से लोह की भस्म वनावे ।

(२) मृतसूतस्य पादेन प्रलिप्तानि पुटानले ।
पचेत्तुल्येन वाताप्य गन्धाश्महरतेजसा ॥ र ज नि

या तो लोह मे चौथाई हिंगुलका लेप कर सम्पुट मे रख पुट दे या माक्षिक का लेप कर सम्पुट में रख पुट दे या कज्जली के योग से लोह की भस्म वनावे ।

(३) लोहपत्रमतीव तप्तमसकृत्क्वाथे क्षिपेत्त्रैफले ।
चूर्णीभूतमिदपुनस्त्रिफलजे क्वाथेपचेद्गोजले ॥
मत्स्याक्षी त्रिफला रसेनपुटयेद्यावन्निरुत्थभवेत् ।
पश्चादाज्य मधुप्लुत सुपुटित सिद्धं भवेदायसम् ॥

र मजरी ,वृ यो त ,रसे चि ,

लोह पत्रो को तपा-तपा कर त्रिफला क्वाथमें बुझाय चूर्ण वनावे पुन लोह चूर्णसे त्रिफला क्वाथ और गोमूत्र चौगुने ले उसमें पकाय मछेछी त्रिफला रसकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे । इस तरह कुछ पुटें दे कर उस मे घी शहद मिलाय पुन अन्त की पुट दे तो यह सिद्ध लोह नामक भस्म वने ।

(४) शालवीत च शास्त्रेषु लोकेषु छिलहण्टिका ।
गरुडीति पराख्याता पातालस्य महोषधी ॥
तज्जले केवले नीत्वा समहिंगुलना भवेत् ।
तेन लोहस्य जातस्य चूर्णसमिश्रित भवेत् ॥
खल्वितं पुत्यते पश्चाद्धृत्वा धृत्वाशरावके ।

एतैर्बहुपुटैर्लोहं रक्तवर्णं शुभंभवेत् ॥ र चि

छिलहिंटा के पत्तो के रस मे लोह चूर्ण और हिंगुल को मिलाय खरल कर सम्पुट में रख कर गजपुट की आँच दे, इस विधि से कई पुटे देने पर लोह की लालवर्ण की भस्म बन जाती है ।

(५) श्वेता पुनर्नवा दन्ती वाजिगन्धात्रिक त्रयै. ।
शतमूली बलायुक्तैरेभिर्लोहं प्रसाधितम् ॥
हिनस्तिनिहत कार्श्यमपि भृङ्गरसै' सह ।
नास्त्यनेन सम लोहंसर्व रोगान्तकं मतम् ॥
र यो सा ,र रा सु ,रसे सा स ,भा भै र

भागरा, कोयल, साठी, दन्ती, असगन्ध, त्रिकटु, त्रिफला, त्रिमद (विडग चित्रक, मोथा) सतावर, खरेटी प्रत्येक की भावना और पुटे देता रहे तो सर्व रोगान्तक नाम की लोह भस्म बने, इसके तुल्य और भस्म नही बनती। इस का नाम कुछ ग्रन्थो ने कार्श्य हर लोह भी दिया है ।

(६) लोह चूर्णं शिलातुल्य खल्वमध्ये विनिक्षिपेत् ।
शालिमूल रसै पिष्ट्वा पुटेद्गजपुटे ततः ॥
त्रिफलार्द्रकाग्निभृङ्ग द्वय हस्तिकर्णकानाम् ।
कुलिशास्य सूरणस्य स्वरसेन चाग्नि मुख्याः ॥
स्वरसैः पुनर्नवाया पुटयेच्च भूरिवारम् ।
पुटितन्तु लोहमेवं मृतिमेतिनिर्विशेषम् ॥ र त.

लोह चूर्ण मैनसिल सम भाग मिलाय पान मूल क्वाथ की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे, पुन त्रिफला, अद्रक,चित्रक,भाँगरा काटेवालाढाक, थोहर, जिमीकन्द, भिलावा, पुनर्नवा प्रत्येक की भावना व पुट देता रहे तो लोह की उत्तम भस्म बने ।

(७) अहिमार्योऽहिदमनी वासावज्रलतार्जुनै ।
स्त्रिस्तन्ये हिंगुलेनाय पचेल्लिप्त्वा पुटेऽनले ॥ र ज नि

सूक्ष्म लोह पत्रो पर स्त्रिदुग्ध मे घोटा हिंगुल का लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे पुन अरिमेद, नागदमनी, वासा, थोहर, अर्जुन प्रत्येक की भावना व पुटे देता रहे तो लोह की उत्तम भस्म बने ।

(८) अथ लोहं समादाय कृतचूर्णंविशुद्धिमत ।

चांगेरिकासमापत्रैः सुच्छिन्नेत्यभिर्धीयते ॥
तत्पत्राम्बुभिरालोड्यवह्निमध्येपुटेत्पुनः ।
एवं पुन: पुनर्लेप वार वारं करोत्यद. ॥
भृङ्गराज पुटादेयात्तथा शेफालिका रसैः ।
आमलक्याश्च केतक्या चणपत्र रसैर्भृशन् ॥
ज्वालामुखी पुटान् दद्याद्ब्रह्मदण्डी रसैर्भृशम् ।
चित्रकस्य पुटान्दद्याद्गण्डदूर्वा रसैस्तथा ॥
काकमाची रसैर्दद्याद्रसैर्पौनर्नवैर्भृशम ।
एव सिद्धसमादाय भक्षयेत्त्रिफलाम्बुभिः ॥
कास क्षयमहाघोरं श्वासंसन्तापकारकम् ।
पलितं नाशयत्याशु खालित्य च विशेषतः ॥ र चि, र का धे

लोह चूर्ण को चागेरी, गिलोय की १-१ भावना दे सम्पुट कर गजपुट की पुट दे, इस प्रकार तब तक भावना व पुट देता रहे जब तक लोह भस्म न बन जाय। फिर भागरा, सिओलि, आमला, रुद्रवन्ती, कलिहारी, ब्रह्मदण्डी, चित्रक, वडीदूद, गण्डारी, मकोय, पुनर्नवा, इन प्रत्येक वनस्पतियो की भावना देकर रख ले, यह सिद्ध लोह कास, क्षय, घोरश्वास, वलीपलित, बुढापा आदि रोगो को दूर करे।

(६) रसैः कुठारछिन्नायाः पातालगरुड़ी रसै ।
[1]स्तन्येन चार्कदुग्धेन तीक्ष्णस्यैवं मृतिभवेत् ॥
चि. र, र का धे, र प्र

१ ततस्त्वर्करसै पिष्ट्वा इति चिकित्सारत्नाभरणे।

गिलोय, छिलहिटा, स्त्रिदुग्ध, आकदूध इनमें क्रम से लोहचूर्ण को भावित कर पुट देता रहे तो लोह की भस्म बने।

(एक पुटी) लोहस्यनीरस भस्म कन्यानीरेण मर्दयेत्।
तृतीयांश रसेनैव गन्धेन द्विगुणेन च ॥
एव यामद्वय कुर्यात्ततो देयो पुटो लघु।
स्वांगशीत समुद्धार्य सिद्धभस्म सुधासमम् ॥ र ज नि

लोहचूर्ण मे हिंगुल मिलाय कुमारीरस की भावना दे उसमे तीसरा भाग पारा और दुगना वलि मिलाय एक दिन कुमारी रस की भावना दे टिकिया

वनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आंच दे तो लोह भस्म वने ।

(२) गन्धक चोत्थितं लोहं तुल्यं खल्वे विमर्दयेत् ।
दिनैक कन्यकाद्रावे रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ॥
एतत्सर्वं लोहभस्म भिन्नपचकसंयुतम् ।
ध्मात सर्वं निरुत्थ स्यात्सेनलीयं न चान्यथा ॥ र का धे

लोह चूर्ण के वरावर दलि मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो लोह भस्म वने ।

(३) स्त्रिदुग्धदरदाभ्या च तीक्ष्णलोहस्य मारणम् ।
एतत्स्याल्लोहजां भस्म गन्धमाक्षिकपारदै. ॥
सखल्लमल्लयोगेन अग्निपक्वं मृतं भवेत् ।
लोहताम्रं रसस्त्वेव पुटैके भस्म जायते ॥ र सागर.

लोह पत्रो पर स्त्रिदुग्ध मे घोटा हिंगुल का लेप कर सम्पुट मे धर पुट दे या वलि माक्षिक योग मे, या पारद वलि की कज्जली से या सोमल के योग से लोहचूर्ण की भस्म वनावे तो एक ही पुट में भस्म वने ।

(४) निम्बूफलस्य पानीयै सकासीसै प्रपूरिते ।
कांस्यपात्रे क्षिपेत्खड्ग खण्डाश्चण्डातपे स्थितै ॥
दिनैकेन स्फुटन्त्येते दिनान्ते तास्तु पेषयेत् ।
त्रिफला क्वाथपिष्टं तच्चूर्णं गजपुटे पचेत् ॥
पुनः पिष्टेन यावत्स्यात्ताद्वारितरमुत्तमम् । वृ यो त, भा.भै र

लोहचूर्ण मे ८ वा भाग कसीस मिलाय एक प्याले मे डाल उसे निम्बूरस से तर कर धूप में रख दे जव लोह चूर्ण गल जाय और निम्बूरस सूख जाय उसे त्रिफला क्वाथ की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय मम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो लोह भस्म वने ।

(५) तत. पारदगन्धाभ्या तत्समाभ्या सम्मर्दयेत् ।
पूर्व वद्धान्यराशिस्थ तीक्ष्ण सर्वोत्तमं भवेत् ॥
वृ यो त, भा भै र

लोहचूर्ण के वरावर कज्जली मिलाय खरल करे जव तप्त हो उठे गोला वनाय धान्यराशि मे दवा दे । १ सप्ताह वाद निकाले तो लोह भस्म वने ।

(६) लोहचूर्णं पलं खल्वे सोरकस्य पल तथा ।

अश्मगन्धापलं चापि सर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
कुमार्याद्भिर्दिनं पश्चाद्गोलकं रवुपत्रकै. ।
संवेष्ट्य च मृदालिप्त्वा पुटेद्गजपुटे भिपक् ॥
स्वांगशीत समुद्धृत्य सिन्दूराभ मयोरजः ।
मृत वारितरं ग्राह्यं सर्वकार्यकरं परम् ॥

आ वे प्र, वृ यो त, यो र, पा स, र ज नि, भा. भैं र

योगरत्नाकरे आयुर्वेदप्रकाशे त्रुटित पाठ ।

लोह चूर्ण सोरा और वलि सम भाग कुमारी रस मे खूब घोटे गरम हो जाने पर गोला वनाय एरण्ड पत्रो मे लपेट सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो लाल रग की लोह भस्म वने ।

(७) सम्मर्द्यलोहं नवसादरेण त्रिवापचेत्तानिचचुल्लिकायाम् ।
क्षारोप्यपेद्यो यदि नालियन्त्रे खट्वांगसञ्ज्ञे प्रपचेत् वैद्य. ॥
त्रिगन्धसूतोद्भवकज्जलेन सम्मर्द्य कन्याम्वुयुतेन लोहम् ।
विधाय चक्रीमथ पूर्वयुक्ते दिनद्वय चापि पचेत यन्त्रे ॥
स्वांगे च शीतं भसित सुशुद्ध गृह्णातु चोर्द्धस्थरसं विचित्रम् ।

रसा सा.

लोह चूर्ण और नौसादर वरावर मिलाय सम्पुट कर अगारो पर रख कर आँच दे, इस प्रकार ३ पुट दे । फिर उस लोह के वरावर वलि, मैनसिल, हरिताल पारा मिला कर कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय डमरु यन्त्र मे रख दो दिन की आँच दे तो नीचे लोह की भस्म और ऊपर ताल सिन्दूर प्राप्त हो ।

(८) लोहपत्र गन्धलिप्तं वह्नीतप्त पुनः पुन ।
क्षिपेन्मीनाक्षिजेनीरे यावत्तत्रैव शीर्यते ॥
रसहिंगुलगन्धेन तत्तुल्यं मर्दयेद्दृढम् ।
निर्गुण्डीपत्र मत्स्याक्षी रसाद्गजपुटान्मृतिः ॥

र स क, र का धे.

लोह पत्रो पर वलि का लेप कर उन्हे तपा-तपा कर मछेछी के रस मे वुझाता रहे जव लोह पत्र चूरा-चूरा हो जाय तो उन्हे पीस वरावर की कज्जली और हिंगुल मिलाय सभालू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय

सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो लोह भस्म बने।

(९) माक्षिकं च शिला ह्यम्लैर्हरिद्रा मरिचा[1]नि च।
पिष्ट्वा[2]तस्मिन्नयः पत्रं तप्तं तप्त निषेचयेत्॥
सप्तधा त्रिफला क्वाथे जलेन क्षालयेत्पुन.।
कुट्टयेल्लोह दण्डेन पेषयेत् त्रिफला जलैः॥
षोडशांशेन लोहस्य दातव्य माक्षिक शिला।
अम्लेन[3]लोडित रुद्ध्वा[4]गजान्धक पुटे पचेत्॥
निरुत्थं जायते भस्म कान्तं तीक्ष्णं च मुण्डकम्।

र का धे, वै क, र च, र र, आ क, र ज नि

वैद्यकल्पतरौ, रस कामधेनौ भिन्न पाठ प्रतिपादित।

रस जलनिधौ 'षोडशांशेन लोहेन' अयपाद अन्तमे स्थापित।

१ चाम्ल इति आनन्दकन्दे। २ मर्दं लोह इति रस रत्नाकरे। ३ मर्दित आनन्दकन्दे इतिपाठ ४ गजाख्यैक इति आनन्दकन्दे।

माक्षिक और मैनसिल, हल्दी और मिर्च इनको निम्बू के रस में घोट लोह पत्र पर इन का लेप करे उन पत्रो को फिर तपावे और लाल कर के त्रिफला क्वाथ में वुझावे, फिर इन पत्रो को कूटे जो चूर्ण होकर झडे उन्हे भिन्न कर ले वाकी लोह को पुन तपा कर इसी प्रकार चूर्ण वनाले, तत्पश्चात् उस लोह चूर्ण का सोलहवा भाग माक्षिक और मैनसिल मिला कर निम्बू रस से घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो कात, तीक्ष्ण और मुण्ड प्रत्येक लोह की निरुत्थ भस्म वने।

(१०) अथवा सैंधवोपेतै र्जम्बीरी द्रवपेषितैः।
पूर्ववत्त्रिभिरेवैतैर्मिश्रतं तत्सुरेतितम्॥
मारयेत्पुटपाकेन भूयसा गोमयाग्निना।

लो प, र का धे

तपन पुटी चौथी विधि मे जहाँ लोह पत्र लिये गये है उसके स्थान पर लोह चूर्ण ले और नमक मैनसिल हिंगुल मिलाय जम्वीरी रस की भावना दे पूर्व विधि के अनुसार गजपुट की आँच दे तो लोह की भस्म वने।

(११) लोह चूर्ण हिंगुल, नोसादर सव सम कुमारी रस की २१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे तो लोह

भस्म वने। मा. अ

(१२) लोह चूर्ण, तुत्थ, पारा वरावर निम्बू रस की २१ भावना दे फिर त्रिफला की ७ भावना दे हल्दी क्वाथ से टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो लोह भस्म वने। मा अ

(१३) लोह चूर्ण को जामुनफल रस मे भिगोय भानुपाक करे, कुछ दिन मे भस्म वन जानेपर चौगुना दही डाल पकावे गाढा होनेपर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आँच दे तो भस्म वने। मा अ

(१४) लोह चूर्ण से चोगुना सोठ चूर्ण मिलाय निम्बू रससे तर कर भानुपाक करे २१ दिनके वाद चौगुने दही मे पकाय टिकिया वनाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आँच दे तो भस्म वने। म अ

(१५) लोह चूर्ण, पारा वलि वरावर अफीम के पानी मे खरल कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३ सेर उपलो की आँच दे तो भस्म वने। अ स

(१६) लोह चूर्ण १० तो० गुग्गुल, वलि नौसादर प्रत्येक २॥ तोला सव को सिरका और जामुन रस की ३-३ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की आँच दे तो लोह भस्म वने। मि ख ,का अ

(१७) लोह चूर्ण को आक के दूध से तरकर भानुपाक करे ७ दिन करे फिर आक के पत्तो के नुगदे मे रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आंच दे तो भस्म वने। स क

(१८) लोह चूर्ण १० तो०, पारा २ तो०, वलि ३ तो०, नौसादर ३ तो० कज्जली वनाय सव का एकत्र कर सिरका जामुन मे खरल करे फिर ३ भावना कुमारी रस की दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ३० सेर उपलो की आँच दे तो लोह भस्म वने। स अ

(१९) लोह चूर्ण को सिरका, आक दूध, निम्बू रस की ७-७ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आँच दे तो लोह भस्म वने। अ त

(२०) लोह चूर्ण २० तो०, मँजीठ १ सेर कासनी रस से नुगदा वनाय सव को तरवूज मे भर सम्पुट कर धूप मे धर दे, १ महीना वाद गजपुट की आँच दे तो लोह भस्म वने। अ त.

(२१) लोह चूर्ण २० तो०, गोखरु रस, दही ४०-४० तोला एकमे मिलाय धूपमें रख भानुपाक करे, पश्चात् टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो भस्म वने । र सि

(दो पुटी) तिन्दुकफलस्यमज्जाभि[1]र्लिप्त्वा लोह खरातये ।
धारयेत्कांस्य पात्रस्थं दिनान्तं तत्पुटे[2]न्निशा ॥
(लेप्यंपुनः पुनः कुर्याद्दिनान्तन्तं[3]प्रलेपयेत् ।)
त्रिफला क्वाथ संयुक्तं[4]कुर्यादेवं पुन. पुनः ॥
५ अनेनम्रियते लोहमचिराद्धि न सशय. ।
र म, र का. धे, र र, रस मजरी, र ज नि

१ स्याच्छा इति रस चण्डाशौ । २ पुटेत्पलम् इति रसरत्नाकरे । ३ तत्प्रपेशयेत् रस चडाशौ इति पाठ । ४ दिनैकेन मृतभवेत् रस मजर्यामिति पाठ ।

रस रत्नाकरे रसमञ्जर्याम् पञ्चमोपादो नास्ति तस्यस्थाने तृतीय पादो दीयताम् । कुत्रचित् प्रथमपादे पाठभेदो दृश्यते ।

तेंदुफल की गिरी निकाल पानी मे पीस कर लोह के पतले पत्रो पर लेप लगा कर किसी कास्य पात्रमे रख धूप में रख दे, सारा दिन धूपमे रहने दे, जब लेप सूखे उन पत्रो पर और लेप लगाता रहे, रात्रिको सम्पुट में रख गजपुट की आच दे, अगले दिन उन पत्रो पर त्रिफला क्वाथ का गाढा लेप लगाकर धूप मे रखे जैसे जैसे त्रिफला लेप सूखता जाय उन पत्रो पर और लेप लगाता रहे और रात को सम्पुट मे वन्द करके गजपुट की आच देता रहे तो इस विधि से शीघ्र लोह की भस्म वन जाती है ।

(२) मृदुलोहस्य चूर्णन्तु नीत्वानिम्बुरसे क्षिपेत् ।
दिनद्वये समानीते तद्दले च सुघोटयेत् ॥
त्रिआपिकवटीं कृत्वा घण्टा पटकपुटेज्वलेत ।
भृङ्गामलकयोरस्य क्षिप्त्वाऽथभाजनेधरेत् ॥
घर्मे च शोषयित्वातु सिंगरफेन मेलयेत् ।
घण्टाषटक तीक्ष्णाग्नौ फूत्कारं तत्र कारयेत् ॥
गुञ्जा मितांवटीं कृत्वा भार्गी रसेनखादयेत् ।
कामलांपाण्डु रोगं च प्लीहादिक च सहरेत् । रना मा

लोह चूर्णको निम्बू रसमे तर करके भानुपाक करे, फिर निम्बू रस मे घोट

टिकिया वनाय सुखाय कुठालीमे रख ६ घटाकी आँचदे, पुन भागरा, आवला रस मे तर कर भानुपाक करे और पुन उक्त विधिसे कुठाली मे आच दे और पखा करता रहे तो लोह भस्म वने,इसे भारगी क्वाथसे सेवन करनेपर पाण्डु, कामला, प्लीहा वृद्धि में लाभ हो।

(३) दाडमी पत्रजरसै र्लोहचूर्णं च भावितम्।
आतपे सप्तधातेन पुनर्गजपुट द्वयम्॥
इत्थं कृते च तद्भस्म शुद्ध वारितर भवेत्।

यो र, र का. धे, भा. भै र, र ज नि

रसकामधेनौ भिन्न पाठ प्रतिपादित।

अनार के पत्तो का रस निकाल उस मे लोह चूर्ण को भिगो कर धूप में रख दे, जैसे जैसे रस सूखता जाय उस में और रस डालता रहे तथा हिलाता रहे तो ७ दिन ऐसा करने से लोह गलकर एक रूप हो जाता है उसको फिर घोटकर छोटी छोटी टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस प्रकार दो पुट दे। रसकामधेनुकार ने त्रिफला की भावना देकर दूसरी पुट दी है।

(४) लोह चूर्ण को सिरका मे तर कर भानुपाक करे, लोह के गल जाने पर कुमारी रस से घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलो की आच दे। पुन आठवाँ भाग वलि मिलाय कुमारी रस से टिकिया वनाय एक पुट और दे तो भस्म वने। चा. चि

(५) लोह चूर्ण को थोहर दूध की भावना दे वकरे की मोटी नली मे भर सम्पुट कर १२ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से दो पुट दे तो लोह भस्म वने। मा अ

(६) लोह चूर्ण पर २० गुना वलिकाम्ल डाल आगपर पकावे वलिकाम्ल थोडा थोडा डाले। फिर निकाल सिरकामे घोट टिकिया वनाय सम्पुटकर ५ सेर उपलो की आच दे पुन लोह से आधा हिंगुल मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलोकी आच दे तो लोह भस्म वने। अ त

(२ पुटी) गृहीत्वा तीक्ष्णजं चूर्णं तथैव च गवादधि।
एकत्र कारयेद् भाडे यावच्छोपत्व माप्नुयात्॥

उद्धृत्य गालयेदग्नौ त्रिफलाया. पुटत्रयम् ।
देयं वारितरं सद्यो जायते नात्र सशय. ॥

र र स, यो र, पा स, भा भै र.

रसरत्नसमुच्चये तन्दुलभक्तस्य टिक्कडिका कृत्वा पचपुट पदीयतामिति ।

लोह चूर्ण और दही को मिलाय भानुपाक करे पुन त्रिफला क्वाथ की ३ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो लोह भस्म वने। रसरत्नसमुच्चय कारने भात से लोह की टिकिया वनाय सम्पुट कर ५ पुट देने का विधान दिया है ।

(२) लोह चूर्ण १२तो० पारा, हिंगुल, सोमल प्रत्येक तोला हाथी सुण्डी के रस मे घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो भस्म वने । अ त.

(३) लोह चूर्ण २० तो०, हिंगुल २॥ तो० कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो लोह भस्म वने । र सि

(४) लोह चूर्ण पारा सम भाग निम्बू रस मे तर कर के भानुपाक करे पुन टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो लोह भस्म वने । र सि.

(४ पुटी) लोह चूर्णं घृताक्तंहि क्षिप्त्वा लोहस्य खर्परे ।
अग्निवर्णं युत यावत्तावद्दर्व्या प्रचालयेत् ॥
खल्वे पिष्ट्वा च विपचेत् पचवार मतः परम ।
वरोदकै. पुटेल्लोह चतुर्वार मिदं खलु ॥
सुपेपित वारितरं जायते नात्र सशय ।

र प्र सु, र र स, पा स, भा भै र

रसेन्द्र चूडामणौ भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

लोह चूर्ण को घी से सान कढाई मे भूने, लाल करे फिर निकाल इसी विधि से ५ वार करे, फिर त्रिफला क्वाथ की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से ४ पुटदे तो लोह भस्म वने ।

(२) धात्रीफल रसै र्यद्वा त्रिफला क्वाथतोदकैः ।
पुटेल्लोह चतुर्वारंभवेद्वारितरं खलु । र र स.

आवले के रस मे या त्रिफला के क्वाथ में लोह चूर्ण को कई बार भावित कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ४ पुट दे तो लोह भस्म वने।

(३) लोहं चूर्णं कन्यकानीय घृष्टं खल्वेकृत्वा ह्यच्छिलां चापिदत्त्वा।
घृष्ट्वा सूक्ष्मापोलिकां कारयित्वा दद्याद्गाढ खर्परे सन्धिरोधम
कुर्याद्वह्निं वाढमत्यर्थ मेतत्सिद्ध सर्वं सम्पुटैस्तच्चतुर्भिः
एवंलोह जायते राज्य योग्य निर्दोषस्याद्योगयुक्तस्यतस्य।
र. चि, र का. धे

लोह चूर्ण मे चौथाई मैनसिल मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आन्च दे, इस प्रकार ४ पुट दे तो राजाओ के सेवन योग्य लोह भस्म वने।

(४) लोह चूर्ण को आक दूध, थोहर दूध, कुमारी रस त्रिफला की १-१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ४ पुट दे तो लोह भस्म वने। चा चि., अ स.

(पाच पुटी) ततो भस्मविधिं वक्ष्ये तल्लोहं मर्दयेत्पुनः।
जम्वूत्वचो द्रवैर्मर्द्य पाचित तद्रसेन च ॥
ततश्चामलकीद्रावैस्तिन्तडीदलजैरपि।
शिग्रुत्वच रसैर्वापि गवांमूत्रे मुहुर्मुहु ॥
पाचित मर्दित लोह रुध्वा गजपुटेन च।
भस्मी भवति तल्लोहं रसयोगेषु योजयेत् ॥ व रा

लोह चूर्ण को जामुन छाल रस, आवला, इमली पत्र, सोहजना छाल इनके रस तथा गोमूत्र की १-१ भावना देकर उक्त रसो मे लोह चूर्ण को कढाई मे डाल कर पुन १-१ भावना और दे पश्चात् उसकी टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इस तरह से पाचो वनस्पतियो की एक एक भावना १-१ पुट दे तो लोह भस्म वने।

(२) यद्वातीक्ष्णदलोद्भूत [1]रजश्च त्रिफलाजलैः।
पिष्ट्वा दत्वोदनं किंचिच्चक्रीकां प्रविधाय च ॥
शोषयित्वाऽतियत्नेन प्रपचेत्पञ्चभिः पुटैः।
रक्तवर्णं हितद्भस्म योजनीय यथातथम् ॥
रसे चू., र र स, र ज नि, भा भै र

१ स्तत् इति रसेन्द्र चूर्णौ ।

लोह चूर्ण को त्रिफला क्वाथ की कई भावना दे पश्चात् कुछ भात मिला-कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे, इस विधि से ५ पुट दे तो लोह की भस्म बने ।

नोट—चावल का भात इसलिये मिलाते है कि लोह चूर्ण की टिकिया बन जाय, यदि त्रिफला की अधिक भावना दी जाय तो लोह गल जाता है फिर भात मिलाने की जरूरत नहीं होती ।

(३) विमलं कान्तलोहं तु पलपञ्चक सन्निभम् ।
पादिके मृतमाक्षिकं दत्वानिम्बुकवारिणा ॥
सम्पेषयेत्प्रयत्नेन शुष्कचूर्णं च कारयेत् ।
सम्पुटस्थं तत कृत्वा पुटेद्गजपुटे तत. ॥
स्वांगशीतं ततो ज्ञात्वा वस्त्रपूतं च कारयेत् ।
एव पुटत्रयं दद्याद्रसतन्त्रविचक्षणः ॥
मात्रिकं च प्रतिपुटमवश्य दापयेत्ततः ।
स्थूलावशिष्टं लोहं च पुटे देयं प्रयत्नत. ॥
रक्तपित्तघ्न भेषज्यं यथालाभमथापि वा ।
धात्री रसेन पुटयेद्यावन्मृतिमवाप्नुयात् ॥ र त.

लोह चूर्ण २० तो०, माक्षिक चूर्ण ५ तो० दोनो को निम्बू रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे, इस विधि से ३ पुट दे, पश्चात् पित्त नाशक वनस्पतियो की और आंवला रस की १-१ भावना व १-१ पुट दे तो लोह की उत्तम भस्म बने ।

(४) लोह चूर्णको जामुन छाल चूर्ण का सिरकेसे लुगदा बनाय उसमे लोह को रख सम्पुट कर ५-६ सेर उपलो की आंच दे, इस विधि से ५ पुट दे तो लोह की भस्म बने । र सि

(७ पुटी) द्वादशांशेन दरदं तीक्ष्णचूर्णेन मेलयेत् ।
कन्यानीरेण सम्मर्द्य यामयुग्मं तु तत्पुनः ॥
शराव सम्पुटे कृत्वा पुटेद्गजपुटेन वै ।
सप्तधैवं कृत लोहं रजो वारितरो भवेत् ॥

र. म, रसे मा स, आ वे प्र, शा ध, भा प्र, वृ यो त, वृ र प्र

र च, वै द, र का धे, र त, र प्र, र ज नि, भा भै र

रसतरगिण्यां भिन्नपाठ प्रतिपादित तथा विंशभाग हिंगुल नियोजित ।

लोह चूर्ण का नवा भाग हिंगुल मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो लोह भस्म वने । रसतरगिणीकार ने लोह से २०वा भाग हिंगुल डालना लिखा है ।

(२) शुद्धलोहभवं चूर्णं पातालगरुडी रसैः ।
गोमूत्रैस्त्रिफलाक्वाथैर्मर्दयित्वाग्निना पचेत् ॥
अर्कदुग्धैः पुनः पिष्ट्वा पचेद्यामचतुष्टयम् ।
पुनः कन्यारसैः पिष्ट्वा पचेद्गजपुटेन तु ॥
पुटत्रयं कुमार्याश्च रविदुग्धैः पुटत्रयम् ।
एवं सप्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवाप्नुयात् ॥

लोह चूर्ण को छिलहण्टा, गोमूत्र, त्रिफला, प्रत्येक की १-१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, फिर आक दूव और कुमारी रस की ३-३ पुट दे तो लोह भस्म वने ।

(३) स्नेहरक्तं लोहरजो मूत्रे स्वरसेऽपि रात्रि धात्रीणाम् ।
पृथगेयं सप्तकृतो भर्जितमखिलामये योज्यम् ॥

र र. स, र ह, पा म

चारपुटी लोह भस्म की विधि के अनुसार प्रथम चार पुट लोह को घृतकी दे पुन गोमूत्र, आवला रस, हल्दी रस मे लोह चूर्णको कढाईमें पकावे और भूने इस तरह ७ वार करे, फिर उस लोह को उपयोग मे लावे ।

(४) लोह चूर्ण को गोमूत्र की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे, इस प्रकार ७ पुट दे तो लोह की भस्म वने ।

प्र औ नि

(५) लोह चूर्ण को आक दूव की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो लोह भस्म वने ।

मा अ

(६) लोहचूर्ण कज्जली समभाग कुमारी रसकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो लोह वने ।

अ स

(७) लोह चूर्णको जामुन फल रसमे तर करके धूपमे रख दे, इस तरह १५ दिन भानुपाक करे,फिर लोहका २०वा भाग हिंगुल मिलाय कुमारी रसकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १२ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो लोह भस्म वने । का अ

(८) लोहपत्रो को तपा तपा कर गोमूत्रमे वुझाय चूर्ण करे, फिर आकदूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलोकी आच दे, इस विधि से ३ पुट दे फिर कुमारी रस की ३ पुट दे फिर घी की एक पुट दे इस तरह ७ पुट मे भस्म वने । मि ख, अ स

(८ पुटी) स्तन्येन हिंगुलस्याथ पेषयेत्पल पञ्चकम् ।
तेनैव पत्रकातस्यालिम्पेत्पञ्चपलान्वितम् ॥
रुद्ध्वागजपुटे पाच्यंकषायैस्त्रैफले पुन. ।
जम्बीरैरारनालैर्वाविंशत्यशेन हिंगुलम् ॥
पिष्ट्वालिप्त्वापुटेरुद्ध्वा तल्लोहे पाचयेत्पुन. ।
रुद्ध्वापुटेपचेद्रात्रौ प्रातर्द्रावैश्चभावयेत् ॥
एवमष्टदिनं कुर्यात्त्रिविधम्रियतेह्यय. । आ क

स्त्रिदुग्धमे घुटे हिंगुल का लोह पत्रोपर लेपकर सुखाय सम्पुटकर गजपुटकी आच दे, फिर त्रिफला को निम्बूरस मे घोट कल्क वनाय पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर पुट दे, फिर इसी विधि से फालसा, गम्भारी की १-१ पुट दे, प्रत्येक पुट में लोह का १२ वा भाग हिंगुल मिलाता रहे, इस विधि से ८ पुट दे तो लोह भस्म वने ।

(२) लोहचूर्ण को कुमारी रस मे घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुटकर १५ सेर उपलोकी आँच दे, इस विधि से ७ पुट दे, फिर वरावर का वलि मिलाय जायफल, तज, तालमखाना के रसमे घोट टिकिया वनाय सुखाय १ पुट और दे तो लोह भस्म वने । मा अ

(३) लोहचूर्ण को दही मे तर कर के धूप मे ७ दिन रखे फिर सम्पुट कर १० सेर उपलोकी आच दे, फिर १२वा भाग हिंगुल मिलाय कुमारी रसकी भावना दे सम्पुट कर आच दे, इस विधिसे ८ पुट दे तो लोह भस्म वने । मा अ

(१० पुटी) श्वेतापुनर्नवापत्रतोयेनदशसंख्यया ।
पुटास्तत्रप्रदेयाश्चसिन्दूराभंप्रजायते ॥ र प्र सु

सफेद साठीपत्र रस मे लोहचूर्णको भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से १० पुट दे तो लोह की भस्म बने ।

(१२ पुटी) शुद्ध लोहमय चूर्णं पातालगरुडी रसैः ।
मर्दयित्वा पुटेद्वह्नौ दद्यादेव पुटत्रयम् ॥
पुटत्रय कुमार्याश्च कुठारछिन्नका रसै. ।
पुटपट्क ततोदद्यादेव तीक्ष्णं मृतिर्भवेत् ॥ र रा सु, भा भैं र

लोह चूर्ण को छिरहण्टा रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय, सपुट कर गजपुट की आन्च दे, इस विधि से ३ पुट देकर ३ पुट कुमारीकी और ६ पुट गिलोय की दे तो लोह भस्म बने ।

(२) तीक्ष्ण वा कान्तलोह वा सूक्ष्मंकृत्वा विचक्षणः ।
पादांश गन्ध सयुक्तं त्रिफला क्वाथ भावितम् ॥
पुटानिलघु दीयन्ते सप्त वारं पुनः पुनः ।
जायते मृत लोह च पुटैर्द्वादशभि र्दृढै ॥ र सा

लोह चूर्ण का चौथाई वलि मिलाय त्रिफला क्वाथ की भावना दे टिकिया बनाय मुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे इस विधि से ७ पुट दे, तथा ५ पुटे गजपुट के आच की दे तो लोह भस्म बने ।

(३) लोह चूर्ण १० तो० सोमल, हरिताल हिंगुल प्रत्येक ३ माशा कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर ८ सेर उपलो की आँच दे, इस विधि से १२ पुट दे तो लोह भस्म बने । अ स, मख

(४) लोह चूर्ण १० तो०, कज्जली २॥ तो० कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय मम्पुट कर २॥ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे, फिर ६ माशा सोमल मिलाय आक दूध की भावना देकर ३ पुट दे, फिर हरिताल ६ माशे मिलाय आकदूध की भावना देकर ३ पुट दे, फिर इसी तरह हिंगुल ६ माशे प्रतिवार मिलाय ३ पुट दे तो १२ पुटमे लोहकी भस्म बने । अ हि

(५) लोह चूर्ण ५ तो०, द्विगुण वलि की कज्जली ५ तो०, सोमल २½ तो० अनार रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ९ पुट दे, फिर विना सोमल कज्जली मिलाये केवल कुमारी रस की ३ पुट दे तो लोह भस्म बने । स अ

(१४ पुटी) काकोदुम्बरिकानीरैर्लोहपत्राणि सेचयेत् ।
वह्नितप्तानि पट्वारं कुट्टयेत्तदुलूखले ॥
तत्पञ्चमांशं दरदंक्षिप्त्वा सर्वंविमर्दयेत् ।
कुमारीनीरतः श्लक्ष्णं पुटेद्गजपुटेनतु ॥
एव चतुर्दशपुटैर्लोह वारितरं भवेत् ।

वृ यो त ,र का ध ,रसे सा स ,आ वे प्र.,र मजरी

१ तप्त तप्तानिपड्वार रसमजर्यामिति पाठ ।

त्रिवारं त्रिफला क्वाथैःतत्संख्यैरपितत्ववित् ।
निरुत्थं जायते लोहंत्रिधाऽप्यत्र न सशयः ॥

रसमजर्यामिति पाठोऽधिक ।

लोह पत्रो को तपा तपा कर कठूमर के रस में वुझाता रहे जव लोह चूर्ण हो जाय उसका पाचवा भाग हिंगुल मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस प्रकार १४ पुट दे रस मजरीकार कहता है कि इसमें ३ पुट त्रिफला क्वाथ की और देवे तो लोह भस्म वने ।

(१५ पुटी) गोमूत्रेण दिनंमर्द्यं तीक्ष्णचूर्णं प्रयत्नतः ।
विधायचक्रिकां शुष्कांततोगजपुटे पचेत् ॥
दद्यात्त्रीणि पुटान्येवं तथैव त्रिफला शृतैः ।
कुमारी स्वरसैस्तद्वद्वर्षाभूस्वरसेन च ॥
त्रयोदशं पुटं दत्त्वादरद द्वादशांशतः ।
अर्क क्षीरेण सम्मर्द्य ह्यर्धभाख्ये पुटेपचेत् ॥
एवं पुटत्रयंदद्याल्लोह भस्म प्रजायते । रसामृत

लोह चूर्ण में १२ वा भाग हिंगुल मिलाय गोमूत्र की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस प्रकार ३ पुटदे, फिर त्रिफला, कुमारी, पुनर्नवा प्रत्येक की ३-३ पुट दे, फिर आक दूध मे ३ पुट दे प्रत्येक पुट मे हिंगुल मिलावे । अन्तिम ३ पुट अर्धगजपुट की दे तो लोह भस्म वने ।

श्री यादव जी त्रिकम जी आचार्य ने अपने सिद्ध योग सग्रह नामक ग्रन्थ में लोह चूर्ण से १२ वा भाग हिंगुल मिलाय कुमारी रस से ७ पुट, गोमूत्र से ७पुट, त्रिफलासे ७ पुट, इस तरह २१ पुटी इसे वना दी है और आपने लिखा है कि हिंगुल के स्थान पर मैंनसिलका उपयोग किया जाय तो भस्म अच्छी वनती है ।

(२० पुटी) लोहचूर्णं पलद्वन्द्वंगुडगन्धौ समांशकौ ।
खल्वेविमर्द्य नितरां पुटेद्विंशति वारकम् ॥
पेपणातु प्रकर्तव्य पुटः पश्चात्प्रदीयते ।
अनेनविधिना सम्यग्भस्मी भवति निश्चितम् ॥
र प्र सु, र ज नि., भा भै र

लोह चूर्ण के वरावर गुड और वलि मिलाय टिकिया वनाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधिसे २० पुट दे तो लोह की भस्म वने । रस जलनिधिकार कहता है कि पुट देने के वाद लोहको खूव घोट कर वारीक कर के पुन आगे पुट दे ।

(२) तीक्ष्णलोहस्य पत्राणिनिर्दलानि[1] दृढेऽनले ।
ध्मात्वा[2]क्षिपेज्जले सद्यः पाषाणे लुखलोदरे ॥
खण्डयेद्गाढनिर्घातैः स्थूलया लौहपारया ।
तन्मध्ये स्थूलखण्डानि रुद्ध्वामल्लद्वयान्तरे ॥
ध्मात्वा[3]क्षिप्त्वाजले सम्यग्पूर्ववत्कण्डयेत्खलु ।
तच्चूर्णं[4]सूतगन्धाभ्यां पुटेद्विंशतिवारकम् ॥
पुटे पुटे विधातव्यं पेषण दृढवत्तरम् ।
एवं भस्मीकृतं लोहं तत्तद्रोगेषु योजयेत् ॥ र र स, रसे.चू., र ज.नि.

१ दृढा, २ क्षिप्त्वा, ३ सिक्त्वा, ४ गुड इति रसेन्द्र चूडामणौ ।

लोह पत्रो को अगारो में तपा-तपा कर पानी में वुझाता रहे जव लोह चूरा-चूरा हो जाय कूट कपडछान कर वरावर की कज्जली मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से २० पुट दे। रसेन्द्रचूडामणिकार ने पारे के स्थान पर गुड और वलि मिला कर २० पुट दी है ।

वक्तव्य—ग्रन्थकार ने लोह पत्रोको वुझा-वुझा कर चूर्ण वनाने का वडा लम्वा चौडा विवान दिया है और जो लोह पत्र चूर्ण न वने उसपर सोमलका लेपकर तपावे तव वुझावे तव वह चूरा हो जायगा ऐसा कहा है। आजकल लोह ऐसा खराव नही मिलता जो उसे इतने परिश्रमसे वनाना पड़े, इसलिये उक्त लम्वे झझट की अव जरूरत नही है ।

(३) मत्स्याक्षी गंधवाह्लीकैर्लकुच द्रवपेषितैः ।

विलिप्य सकलं लोह मत्स्याक्षी कल्क पेपितम् ॥
भस्त्रायां सुदृढध्मात्वा त्रिशूली निर्गमावधि ।
अयोद्धृत्य क्षिपेत्क्वाथे त्रिफला गोजलात्मके ॥
तस्मादाहृत्य सताड्य मृतमादाय लोहकम् ।
पुनश्च पूर्ववद् ध्मात्वा मारयेदखिलायसम् ॥
खण्डयित्वा सतोगर्धं गुड त्रिफलया सह ।
पुटाद्विंशति[1] वाराणि निरुत्थं भस्म जायते ॥
रसे चू, र र स, पा स, र ज नि

[1]तिवारेण इति रसेन्द्र चूडामणौ ।

मछेछी, हींग समान भाग ले कर वडहल के रस में घोट लोह पत्रो पर लेप करे और इन पत्रो को भट्ठी में रख कर खूब धमावे जव पत्र लाल हो जाय तो गोमूत्र त्रिफला क्वाथ के मिश्रित जलमें इन्हें वुझावे और जो पपडी ऊपर लोह पत्र पर जल जाने से पडे उसे कूट कर छुडाता जाय और पत्र को उक्त विधि से लेप करके वारम्वार धमाता व वुझाता रहे, जव तक सारे लोह पत्र भस्म न वन जाय इसी तरह करे । पुन उक्त लोह चूर्ण को एकत्रकर वलि, गुड, त्रिफला मिला कर घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से २० पुट दे तो उत्तम लोह भस्म वने ।

(२१ पुटी) दाडिमस्य पलं पिष्ट्वा तच्चतुर्गुणवारिणा ।
तद्रसेनायसं चूर्णं प्लावयेत्तु सुशोभितम ।
आतपे शोपयेत्तच्च पुटा देया पुनः पुन. ।
एकविंशतिवारांस्तन्म्रियते नात्र संशयः ॥ रस. चि., र ज नि.

लोह चूर्ण को अनार पत्रो के रस में तर करके भानुपाक करे और फिर सम्पुट कर गजपुट की आँच दे इस प्रकार २१ पुट दे तो लोह की भस्म वने ।

(२) सुशुद्धे लोहचूर्णे तु पलपंचकसम्मितम् ।
शाणमाण रसविधुं कर्पकं शुद्धगन्धकम् ॥
दत्वा कुमारी स्वरसै दिनमेक विमर्दयेत् ।
विधाय चक्रिकांशुष्कां दशप्रस्थवनोपलैः ॥
पुटदेयं चतुर्वारं पुटा देया प्रयत्नतः ।
दरदस्य च मल्लस्य हरितालस्य योगतः ॥

चतुर्वार पुटान्दद्याद्रसतन्त्रविशारदः ।
समभागेन्द्रगोपैस्तु मर्दयित्वा दिनावधि ॥
ततोऽग्नौ मर्दयेत्किंचिद्भस्म वारितरं भवेत् ।
गुञ्जामात्रं तु मधुना भस्मदुग्धानुपानतः ॥
भक्षितं बृंहणं बल्यं परं वाजिकरं भवेत् । रसामृत

लोह चूर्ण २० तो०, बलि १ तो०, पारा ३ मा०, सबको कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आंच दे इस प्रकार ४ पुट दे, पुन बलि, हिंगुल, सोमल और हरिताल प्रत्येक १ तोला मिलाय कुमारी रस की भावना दे, क्रम से ४-४ पुट दे, इस प्रकार २० पुट दे, फिर उस भस्म को कढाई मे डाल उसके बराबर वीरबहूटी मिलाय मन्द मन्द आंच पर घोटता रहे जब वीरबहूटी जल जाय उतार घोट कर रख ले । मात्रा १ रत्ती । शहद से चाट कर ऊपर दूध पीवे तो बल, वीर्य और काम वृद्धि करे ।

(३) लोह चूर्ण का चौथाई सोमल मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय भाग के नुगदे में रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आंच दे, इस विधि से ५ पुट दे फिर चौथाई बलि मिलाय उक्त रस में घोट ५ पुट दे फिर इसी प्रकार हरीताल और हिंगुल की ५-५ पुट दे, अन्तिम पुट में पारा मिलाय कुमारी रस की भावना दे सम्पुट कर १½ सेर उपलो की आंच दे तो २१ पुट में लोह भस्म बने । अ स

(४) गोमूत्रमृतकुम्भेन पेषयेत् त्रिफलासमम् ।
एकसप्ताहपर्यन्तं मर्दयेत्सुन्दरं शनैः ॥
रेतितं कान्तचूर्णस्य मणैकं सूक्ष्मचूर्णितम् ।
त्रिफलामूत्रसंक्षुण्णं शरावेषु परिक्षिपेत् ॥
गर्तं हस्तप्रमाणस्य वनजैश्छाणकै भृता ।
तत्र गर्तपुटं दत्वा ह्यग्नि प्रज्वालयेत्तत ॥
स्वांगशीतलता प्राप्तं चूर्णं संपेषयेत्पुन. ।
क्षुण्णं तेनैव मूत्रेण शरावे च क्षिपेत्पुटेत् ॥
एकविंशतिवारांश्चदेयो युक्त्यानया पुट. ।
सूक्ष्म चूर्णं मुहु. कार्यं मूत्रे क्षुण्णे पुटे पुटे ॥
वस्त्रमृतिकयोपेतं गर्तगर्भे क्षिपेन्मुहु. ।

चूर्णकान्ताय सजात सिन्दूराभ पयस्तरम् ॥
गद्याणैकोऽस्य चूर्णस्य सर्वरोगेपुदीयताम् ।
उचित यच्चरोगाणामनुपान च दीयते ॥

र क, र त्रि, र त, रसा सा, र ज नि, र यो सा, भा भै र

रस जलनिधौ त्रिफला मध्ये गोमूत्र मत्स्याक्षिरस सम्मेलित इति विशेष

एक घडे में चार मन गोमूत्र डाल उस गोमूत्र में १ मन त्रिफला चूर्ण भिगो दे एक सप्ताह तक पडा रहने दे फिर मलकर गोमूत्र छान ले उस छने हुए गोमूत्र में एक मन लोह चूर्ण भिगो दे और एक सप्ताह धूप मे पडा रहने दे लोह चूर्ण गल जायगा। लोह को घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इस विधि मे लोह को उक्त गोमूत्र मे घोट घोट कर टिकिया वनाय सम्पुट कर २१ पुट दे तो लोह की जलपर तैरने वाली सिन्दूर सदृश भस्म वने। इसे समस्त रोगो मे उचित अनुपान से दे। मात्रा एक गद्याण अर्थात ६ माशे लिखी है। रस जलनिधिकार ने उक्त त्रिफला वाले गोमूत्र में मछेछी रस भी मिला ले ऐसा पाठ दिया है।

नोट—हम तो उक्त लोह चूर्ण की टिकियो को टीन के वडे वडे सम्पुटो मे वन्द कर आँच देते है तभी एक मन लोह को गजपुट मे पूरी आच लगती है। शरावो में तो एक मन लोह वनता ही नही।

(५) कान्तं तीक्ष्ण तथा मुण्ड [1]पत्री कृतं विशोधयेत्।
[2]चूर्णितं भावयेत्तत्तु [3]त्रिवा मत्स्याक्षिजद्रवैः ॥
त्रिकण्टकद्रवैस्त्र्यह सहदेव्या[4]तथैव च।
गोमूत्रैस्त्रिफलाक्वाथैः [5]भावयेच्च त्र्यह त्र्यहम् ॥
धातक्याश्च ततो मद्यं क्रमादेयं पुटं पुटम्।
रुध्वा गजपुटेनैव मृतं योगेपु योजयेत् ॥
तत्पिण्डं त्रिफलातोयैः पिष्ट्वा रुध्वा पुटे पचेत्।
एव त्रिवा प्रकर्तव्यं स्थालीपाकं पुटान्तकम् ॥

र र, आ. क, र ज नि

१ चूर्ण मत्स्याक्षिजैर्द्रवे इति आनन्दकन्दे रसरत्नाकरे च। २ आतपेत्रिदिन भाव्य इति आनन्दकन्दे रसरत्नाकरे च। ३त्रिदिनचित्रक द्रावै इति आनन्दकन्दे।

४ द्रवैर्दिनम् इति आनन्दकन्दे । ५ दिनैक लोह चूर्णकम् इति आनन्दकन्दे ।

कान्त, तीक्ष्ण, या मुण्ड किसी लोह का पत्र या चूर्ण बनाकर मछेछी के रस मे भिगो कर ३ दिन धूप में रखे, अर्थात् तीन भावना दे, फिर ३ दिन चित्रक रस मे भानुपाक करे। इसी प्रकार गोखरू, सहदेवी, गोमूत्र, त्रिफलाकी भावना दे फिर आवला की भावना दे सम्पुटकर गजपुट की आच दे। ग्रन्थकार कहता है कि प्रत्येक वनस्पत्ति की भानु पुट मे अर्थात् धूप में भावना दे और भावना के बाद गजपुट की पुट दे इस तरह यह क्रम से देवे।

आनन्दकन्द का कर्ता कहता है कि जिस विधि से शकर लोह बनाया गया है उस विधि से कढाई मे पकावे फिर भावना दे और अन्त में पुट देता रहे।

(६) द्रवै. कुरण्टपत्रोत्थैर्लोहचूर्णं विमर्दयेत्।
दिनैकमातपे तीव्रे तथाद्रवै [1]स्त्रिकण्टजैः॥
वन्ध्याभृङ्गी पुनर्नव्यो गोमूत्रैश्च दिनं [2]दिनम्।
गोमूत्रैस्त्रिफलाक्वाथ्यात्तत्कषायेण भावयेत्॥
त्रिसप्ताहं प्रयत्नेन दिनैक मर्दयेत्ततः।
रुद्ध्वा गजपुटे पाचेद्दिन क्वाथेन मर्दयेत्॥
दिवामर्द्य पुटेत् रात्रावेकविंशदिनानि वै।
एकविंशद्दिनेनैव म्रियते त्रिविध ह्ययः॥

१ मर्द्यं रसरत्नाकरे इति पाठ। र र, र ज नि, र र. स.
२ पुन रसरत्नाकरे इतिपाठ। रसरत्न समुच्चये त्रुटित पाठ।

लोह चूर्णको पीली कढसरया, गोखरू, ककोडा, भागरा, साठी, इन सबोके रस तथा गोमूत्र मे १-१ भावना दे भानुपाक करता रहे इस प्रकार २१ दिन भानुपाक द्वारा भावना दे भावना के बाद पुटे देता रहे तो २१ पुट मे लोह भस्म बने।

(७) लोह चूर्ण को अण्डे की जर्दी मे भावना दे टिकिया बनाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे, इस विधि से २० पुट दे फिर एक पुट कुमारी रस की दे कर इन टिकियो को अलसी के तेल मे पकावे जब अलसी का तेल गाढा हो जाय निकाल सुखाय पीस ले। मा अ.

(२४ पुटी) नारीस्तन्येन सयुक्तं हिंगुलं पलपञ्चकम्।

तेनलोहस्यपत्राणि लेपयेत्पलपञ्चकम् ॥
ततो गजपुटेपक्त्वा कषायैस्त्रिफलेऽपि च ।
जम्बीरैरारनालैर्वा विंशांशदरदेन वा ॥
पिष्ट्वा रुद्ध्वा पचेल्लोहं तद्वत्पाच्य पुनः पुनः ।
चत्वारिंशत्पुटैरेव तीक्ष्णं कान्तं च मुण्डकम् ॥
म्रियते नात्र संदेहो दत्वा दत्वैव हिंगुलम् ।

र र, र. का धे, ऋ ख, र त

ऋद्धि खण्डे अन्तिम पाद. अधिक

हिंगुल को स्त्रिदुग्ध में घोट लोह पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे फिर त्रिफला को निम्बूरस या काजी में घोट २० वा भाग हिंगुल मिलाय उक्त विधि से पुट दे, इस प्रकार प्रत्येक पुट में हिंगुल देकर २४ पुट दे तो लोह भस्म वने। नोट—८ पुटी लोह भस्म और यह एक है केवल दोनो में पुट सख्या का ही अन्तर है।

(३० पुटी) अथ पूर्वोदितं तीक्ष्णं वसु मल्लक वासयोः ।
पुटितं पत्रतोयेन त्रिंशद्वाराणि यत्नतः ॥
शोणितं जायते भस्म कृत सिन्दूर सन्निभम् ।

रसे चू, र र स, पा सं, भा भै. र.

उपरोक्त २४ पुटी के अनुसार हिंगुल को मौलस्त्री, भिलावा और वासा रस मे घोट कल्क वनाय इस कल्क का लेप लोह पत्रो पर कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इस प्रकार मौलस्त्री भिलावा और वांसा की १०-१० पुटें दे तो ३० पुट में सिन्दूरवत् लालवर्ण की लोह भस्म वने।

(२) शाणाकृष्ट मयोरजस्त्रिदिवसं पिष्टं वरावारिणा ।
यद्वा रक्त पुनर्णवा दल रसै यद्वाऽद्रिकर्णी रसैः ॥
चांगेरी सलिलैस्तथैव सलिलैर्वानीरवानीरजै ।
स्त्रिंशद्दन्ति पुटैर्वरंजलतरं स्याद्भस्म जम्बूप्रभम् ॥

र प, र. का धे., र सा प, पा स

लोह चूर्ण को त्रिफला, साठी,, कोयल, चांगेरी, जलवेतस और दन्ती इन छ वनस्पतियो में प्रत्येक की ५-५ भावना व पुट देता रहे तो ३० पुट मे जामुन रग की लोह भस्म वने।

(३) लोह चूर्ण को गोमूत्र में पकावे फिर कुमारी रस की भावनादे सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से १० पुट तथा १० पुट आक दूध और १० पुट थोहर दूध की दे तो ३० पुट में लोह भस्म बने। मि ख

(३२ पुटी) कान्तं च रेतितं कृत्वा जम्बू वृक्ष रजेक्षिपेत्।
दशांश हिंगुलोपेत स्थापयेत्प्रखरातपे ॥
पश्चाद्गजपुटान्दद्याद्द्वात्रिंशत्सख्यया ऽन्वितम्।
सिन्दूरं जायते तद्वदुदितार्कसमप्रभम् ॥ दे या, र का वे.

लोह चूर्ण मे दसवा भाग हिंगुल मिलाय जामुन रस मे तर कर के भानुपाक करे लोह के गल जाने पर सम्पुट में रख गजपुट की आच दे इस प्रकार ३२ पुट दे तो सिन्दूर रग की लोह भस्म बने।

(४० पुटी) हिंगुलस्य पलान् पञ्च नारीस्तन्येन पेपयेत्।
तेन लोहस्य पत्राणि लेपयेत्पल पञ्चकम् ॥
रुध्वा गजपुटे पच्यात्कपायैस्त्रैफलै. पुनः।
जम्बीरै रारनालैर्वा विंशत्यंशेन हिंगुलम् ॥
पिष्ट्वा रुध्वा पचेल्लोहं तद्द्रवैः पाचयेत्पुनः।
चत्वारिंशत्पुटै रेवं कान्त तीक्ष्णं च मुण्डकम्।
म्रियते नात्र संदेहो दत्वा दत्वेव हिंगुलम्।
र र, र ज. नि, र र स, पू ख. ग्र., पा स, भा भै र

यह तथा ८ पुटी और २४ पुटी लोह भस्म का पाठ तथा विधि एक ही है वही ऊपर देखो।

(२) लोह चूर्ण को निम्बू रस की भावना दे मूली के नुगदे मे रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे इस विधि से ४० पुट दे तो लोह भस्म बने। चा चि, ग्र स, यू सि यो स.

(४२ पुटी) स्थाल्या वा लोह पात्रे वा लोह दर्व्या विलोडयेत्।
पाचयेत्त्रिफला क्वाथे दिनैक लोह चूर्णकम् ॥
तत्पिण्डं त्रिफला तोयैः पिष्ट्वा रुद्ध्वा पुटे पचेत्।
षोडशांशेन मूषायां निर्वाते ह्यर्निशोपचेत् ॥
एवं त्रिधा प्रकर्तव्यंस्थाली पाक पुटान्तराम्।
भृङ्गयार्द्रक तालमूलीहस्तिकर्णस्य मूलकम्।

शतावरी विदार्याश्च मूल क्वाथे च त्रैफले ।
पिष्ट्वा तत्पूर्व वत्स्थाल्यां पाच्यं पेष्यं त्रिधा पुटैः ॥
ततः पुनर्नवा तोयैर्दशमूल कषायकैः ।
बृहत्यश्च कषायैर्वा वीजपूरस्य तोयत. ॥
अजवीज रसै. शिग्रु क्वाथे गोपयसापि च ।
प्रत्येकेन प्रपेष्यादौ पूर्व गर्भ पुटे पचेत् ॥
भावयेतु द्रवेणैव पुटान्ते याम मात्रकम् ।
प्रत्येकेन क्रमादेव पिष्ट्वा पुटैश्च भावयेत् ॥
म्रियते नात्र सन्देहो कान्त तीक्ष्ण च मुंडकम ।   र र, श्रा क.

आनन्द कन्दे त्रुटित पाठ ।

लोह चूर्ण को सारे दिन त्रिफला क्वाथ में पकावे फिर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इसी प्रकार भारगी, आक, मूसली हस्तिकर्णढाक, सतावर, विदारीकन्द, त्रिफला, साठी, दशमूल, वडीकटेरी, विजौरा पलाशवीज, सोहँजना, गोदुग्ध इन सवो की उक्त विधि से ३-३ पुट दे तो लोह की भस्म वने ।

(५० पुटी) विमल लोहचूर्णन्तु निम्बुकोत्थेनवारिणा ।
म्रियते नात्र सन्देहो कान्तं तीक्ष्ण च मुण्डकम् ॥
सम्पुटस्थ ततः कृत्वा पुटेद्गजपुटेन तु ।
पञ्चाशद्भि पुटैरेव लोह सु मृतिमाप्नुयात ॥   र त.

लोह चूर्ण को निम्बू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ५० पुट दे तो लोह भस्म वने ।

(६४ पुटी) त्रिफलै स्वरसै पिष्ट्वा पुटयेद्वनजोपलै. ॥
चतु.षष्टि तथा वारान् म्रियते तीक्ष्णमुत्तमम् ॥

रस सकेतकलिकाया भिन्न पाठ प्रतिपादित ।   र ल, र स क.

लोह चूर्ण को त्रिफला की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस प्रकार ६४ पुट दे तो लोह भस्म वने ।

(१००पुटी) विशोधित कान्तलोह धात्री स्वरस पेषितम् ।
पुटेद्गजपुटेनैव शतधाकृत चक्रिकाम ॥
शतधापुटेत्त कान्तं यात्येवं मृतिमुत्तमम् ।   र त.

लोह चूर्ण को आवला रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से १०० पुट दे तो लोह की उत्तम भस्म वने ।

(२) शुद्धस्य लोहस्य रजो विमर्द्य पादांश मल्ले च सहैव सम्यक् ।
मर्द्येन चक्रीं च विधाय हण्ड्याः पुटेत्पुटे कुक्कुटनामधेये ॥
एवं शतार्द्धिषु पुटेपु तत्र जातेपु भूयोदरदेषु दद्यात् ।
लोहस्य भस्ममति तीव्र वीर्य मृत समुत्थापयतीति शीघ्रम् ॥

रसा सा

लोहचूर्ण से चौथाई सोमल मिलाय शरावसे घोट टिकिया वनाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे इस प्रकार ५० पुट दे, फिर इसी विधिमे हिंगुल मिलाय ५० पुट दे तो १०० पुटी लोह भस्म वने । अन्तिम पुट केवल कुमारी रस की भावना देकर गजपुट की आच दे ।

(३) विशोधितमयश्चूर्णं गोमूत्रेण विमर्दयेत् ।
शतशस्तं पुटेद्वह्नौ मृत मेवं भवेद्ध्रुवम् ॥

र का. धे, र ज. नि.

लोहचूर्ण को गोमूत्र की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से १०० पुट दे तो लोह भस्म वने ।

(४) लोह चूर्ण १२ तो०, पारा १०तो०, शराव में खरलकर सम्पुट कर लावक पुट की आच दें इस विधि से ८० पुट दे, फिर ६ माशे सोमल मिलाय उक्त विधि से भावना दे २० पुट दे तो लोहकी उत्तम भस्म वने । मि.ख ,मा.अ

(५) लोह चूर्ण १० तो०,पारा ६ मा०,हिंगुल ६ मा०अण्डोके तेल मे खरल कर ताम्र कटोरी में सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे,ताम्र कटोरी जल जाय तो दूसरी लगावे इस प्रकार १०० पुट दे तो लोह भस्म वने । मा अ

नोट—ताम्र कटोरीके विना प्याले के सम्पुटमें भी ठीक वनता है ।

(२७५ पुटी) आदौ लोह विचूर्णित तदनुगोतोये विभाव्य दिनं ।
रात्रौ चैव पुटाञ्च विंशति मितः कूर्माख्ययंत्रे शुभे ॥
सर्वे वै त्रिफलाजलस्य कथिता भावाश्चषष्टि. पुटा. ।
कन्याया रस भावनाश्च कथिताश्चाष्टौ च वैद्यै. पुटाः ॥
वज्रार्को हलिनी गुदी द्विरजनी गुञ्जा तुरङ्गी घना ।

निर्गुण्डी गरुडी कुठेर कनके वह्निश्चमत्स्यालता ॥
हैमी हन्सपदी तथा मृतलता भृङ्गेन्द्र वृद्धेर्दिने ।
रात्रौतद्रसकं पृथक् पृथगहो सप्तैव भावाः पुटा. ॥
रार्जातक्र युतं सुखल्वक तले पिष्ट्वादिनैकं दृढम् ।
भावाश्चैव पुटाश्च सप्तकथिता सर्वैश्चवैद्याधिपै ॥
भावायै कथिता नगा दिनदिने नित्यं पुनः सूरभि ।
रात्रौ सप्त पुटाश्च सन्निगदिता यन्त्रे च कूर्म्माभिधं ॥
पश्चाद्भाव पुटश्च पञ्च सतत पञ्चामृतानां पुन ।
स्तच्चूर्णं च दशांशार्कसदरद भुक्त्वाथक्षीरेस्त्रिया ।
गोदुग्धे यदि वा त्रयेपि सतत पिष्ट्वा च भावा पुटेत् ॥
पश्चादर्द्ध सुपारदेन शुचिना गन्धेन कन्या रसे. ।
तच्चूर्णं परिमर्दयेद्दृढतरं सम्पाचयेत्संपुटे ॥
पश्चात्केवल कन्यकां शुचिरसैर्भस्मत्रिशः पाचयेत् ।
पश्चात् कज्जलि सन्निभं जलतरं शुद्धे च लोहे पचेत् ।
एवं प्रोक्त वला जलैः परिहितं तल्लोहमुक्तं शुभम् ॥

र ज नि, र रा. सु.

रस राजसुन्दरे त्रुटित. पाठ ।

लोह चूर्ण की गोमूत्र में भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर अर्ध गजपुटकी आंच दे, इस प्रकार २०पुटदे । पुन त्रिफला, थोहर, आक, कलिहारी, गोदी, हल्दी, दारुहल्दी, छिलहण्टा, गुजा, असगन्ध, मोथा, सभालू, तुलसी, धतूरा चित्रक, कुटकी, कगुनी, मछेछी, सोनाजुही, हन्सराज, गिलोय, भागरा और कुटज इन २३ वनस्पतियो की ७७ भावना व पुट दे, फिर तक्र की ७ पुट दे फिर पचामृत की ५ पुट दे फिर लोह भस्म का १० वां भाग हिंगुल मिलाय दुग्ध मे घोट ३ पुट दे, फिर कज्जली मिलाय कुमारी रस में घोट वाकी कज्जली की पुटें गजपुट की दे तो लोह की उत्तम भस्म वने ।

(सहस्त्र पुटी) अव्यवहृत पूर्वस्य गुल्मतृण वनस्पतेः ।
रसेन दिवसे लोहं मर्दयित्वा निशा पुटेत् ॥
द्वादश वर्षे कालेहि नित्यमेव समाचरेत् ।
अव्यवहृतपूर्वाहि रसं नित्यं प्रयोजयेत् ॥

पूर्वं सम्मर्दितं येन तद्रसेन पुनर्ददेत् ।
एतस्य सुधालोहस्य यव मात्रं प्रदापयेत् ॥
वृद्धमेवजराजीर्णं यतः स तरुणायते ।
दन्तानामुद्गमो पुनः शुक्ल केशस्य कृष्णताम् ॥
र. ज नि , रसा सा.

जिन वनस्पतियोको हम जानते है या नही भी जानते है उन्हे लाकर उनका रस निकाल उस रस की लोह चूर्ण को भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे । इस विधि से नित्य एक पुट १२ वर्ष तक देता रहे तो यह सुधा सागर नामक लोहकी भस्म वने, इस की मात्रा १ यव है । इस के सेवनसे वुड्ढा जवान वन जाता है. नये दात निकल आते है, वाल काले हो जाते है यह भस्म कायाकल्प कर देती है ।

लोह भस्म के गुण—लोह तिक्तं सरंशीतं मधुरं तुवरं गुरु ।
सूक्ष्मं वयस्थं चाक्षुष्य लेखनं वातल च यत् ॥
पित्तं कफं गरे शूल शोथार्शः प्लीहपाण्डुताम् ।
मेहो मेदं क्रमि कुष्ठं तत्किट्टं तद्गुणोस्मृतम ॥
र सा प., पा स.

लोह भस्म चरपरी, सारक, ठण्ढी, मधुर, रूखी, कसैली, भारी होती है आयु को वढाने वाली, नेत्र रोगो मे हितकर कोष्ठ शोधक और वातल है । कफ, पित्त, विप, शूल, शोथ, अर्श, यकृत-प्लीहावृद्धि, पाण्डु, प्रमेह, उदर क्रिमि, कुष्ठमें लाभ कारी है ।

लोह भस्मानुपान—मोथा चूर्ण १½ मा० खैरछाल ६ मा० के क्वाथ से या त्रिफला,कुटकी चूर्ण ३ मा० युक्त शहद से, त्रिफला क्वाथ गोमूत्र से कामला, पाण्डु, प्लीहा वृद्धि में, त्रिफला चूर्ण से या हीग, घृत से शूल मे गुल्म में, शिलाजीत त्रिफला चूर्ण से या गिलोय सत्व मिश्री से मूत्रकृच्छ, प्रमेह मे, कण्ठमाला में, लहसुन या त्रिकटु शहद से या मिर्च शहद से श्लेष्म ज्वर मे, जीर्णज्वर सन्निपात ज्वर मे, खाँसी मे, पानसे या पीपर चूर्ण शहद से अग्नि माद्य, अरुचिमे,विदारीकन्द चूर्णमे खाड मिलाकर यो असगन्ध,विधारा चूर्ण से नामर्दी में, पितपापडा से, या धनिया चन्दन चूर्ण से पैत्तिक रोगो में, कुटज छाल क्वाथ से या मोथा, गिलोय, अतीस चूर्ण और खाड से अतिसारमे, मूलहठी चूर्ण शहद से या वासा रस शहदसे, कास, श्वासमें,मूसली चूर्णसे अर्श मे,अर्जुन

वाथ से हृदरोग मे सभालू रस शहद से या पान शहद से शीतांग में, निसोत वाथ से उदावर्त में, ब्रह्मी रस शहद से स्वर भग में, असगन्ध चूर्ण से क्षय में लोह भस्म को मिला कर देवे। मात्रा इनकी १ से ३ रत्ती तक है।

वंग भस्म

भौतिक गुण—यह चादीवत् श्वेत चमकीली बहुत कुछ मणिभ आकृति की धातु है। यद्यपि ऊष्मजन से कुछ प्रभावित होती है तथापि हवा में खुली रहने पर जल्दी चमक नहीं जाती। यह घनवर्धनीय तो अच्छी है इसी लिये इस के वर्क तो पतले से पतले बन जाते है पर तार नही बनती, काठिन्यता मे सीसा से कुछ अधिक कठोर है। इसे २०० श० तक गरम करके एक दम ठण्डा कर दें और १७·श० के नीचे उत्ताप पर पड़ी रहने दे तो यह भगुर हो जाता है इस दशा में इसे आमानी से पीसा जा सकता है, उस समय यह अमणिभ हो जाती है। यह २३२ श० पर पिघलती है और २२७० श० के उत्ताप पर वाष्प बन कर उडने लगती है। इसकी परमाणु मात्रा ११८.७ घनता ७-२९। अर्थात् चादी से भारी और घनता मे उस से कम है। इसकी युयुक्षा २-और ४ है। यह और सीसा दोनो ही सविभाग सारणी के मध्य स्थित होने से न तो प्रवल धनात्मक है, न ऋणात्मक।

रसायनिक गुण—यह उष्मजन, पवन, लवणजन, नोनजन तथा वलि, सोमल, सुहागा आदि से मिल कर कई प्रकार के यौगिक निर्माण करता है किन्तु हमारे रस ग्रन्थो में इसकी जो भस्में बनाई गई है वह दो प्रकार की यौगिक होती है (१) ऊष्मिद और (२) वलिकाइद।

जितनी भी भस्मे हम वनस्पति योग से वनाते है वह सब की सब प्राय ऊष्मिद होती है, वह रसायनिक दृष्टि से वगक ऊष्मिद (व ऊ$_2$) होती है इनका वर्ण सफेद होता है। एक दूसरा ऊष्मिद (व ऊ) जिसका यौगिक प्राय अस्थाई होता है वह हमारी भस्म प्रक्रिया से नही बनता।

(२) वलिकाइद—वलि या हरिताल योग से जो वग की भस्म हम बनाते है वह प्रायः वगस वलिकाइद (व व) होती है, इसका वर्ण गुलावी, रामरज मिट्टी जैसा होता है। यदि वग मे नौसादर या पवनिया और कज्जली मिला कर कूपी पाक करें तो पारद और नौसादर की उत्प्रेरक शक्ति से वलि के दो परमाणु वग से सयुक्त होकर वगक वलिकाइद (व व$_2$) का यौगिक

निर्माण कर लेते ह। हमारी भस्में वस इन्ही दो रूपो की होती है।

वङ्ग की ऊष्मिद भस्में

(१) [१]विशुद्धवङ्गपत्राणि द्रावयेद्धण्डिकान्तरे।
[२]अपामार्गोद्भव चूर्ण तत्तुल्यं तत्र मेलयेत्॥
स्थूलाग्रयालोहदर्व्याशनैस्तदीय [४]मर्दयेत्।
यावद्भस्मत्व [५]माप्नोति तावन्मर्द्यन्तु पूर्ववत्॥
[६]ततस्त्वेकीकृत चूर्णं कृत्वाचाङ्गारवर्जितम्।
नूतनेन शरावेण रोधये[७]च्च भिषग्वर:॥
पश्चात्तीव्राग्निना पक्वं वङ्गभस्म भवेद्ध्रुवम्॥

र त, र मजरी, र का. धे, रसे. सा स, भा भै र, र ज नि, र च, रसा. ल।

१ आभीर शोधयेदादौ रसचण्डाशौ रसमजर्यामिति पाठ। २ अपामार्गे चतुर्थांश चूर्णित मेलयेत्तत . रसचण्डाशौ रसमजर्यामिति पाठ. । ४ चालयेत् र च रसमजर्यामिति पाठ। ५ मायाति र च रसमजर्यामिति पाठ। ६ तत एकीकृत सर्वं भवेदङ्गारवर्णकम् र च, रस म मिति पाठ। ७ दम्वरे भिषक् र च, र. मजर्यामिति पाठ।

वग को हण्डी के खपरे में पिघला कर अपामार्ग के चूर्ण की चुटकी देकर करछी से रगडता हुआ वग की भस्म वनावे। कुछ ग्रन्थकार अपामार्ग चूर्ण चौथाई और कुछ ग्रथकार वगके वरावर देकर भस्म वनाने का विधान वताते है। जव चौथाई चूर्णसे ही वगकी भस्म हो जाय नो ज्यादा डालने की जरूरत क्या? जव भस्म वन जाय सवको एकत्र कर दूसरे प्याले से ढक दे और इसके वाद ३-४ घटे की और तीव्र आँच दे तो रही सही कच्ची वग भी भस्म मे परिणत हो जाती है। शीतल होने पर निकाल खूव पीस ले। अ त

अलतवीव का लेखक कहता है—उक्त भस्म को कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय गजपुट की आच दे तो यह वग भस्म और भी अच्छी वन जाती है।

(२) काटाहिकाया युतमृत्तिकाया: कुण्डे द्रुतं वङ्गमय: खजेन।
निम्बूस्य दण्डेन यवानिकाया. दत्वाऽल्पभागं परिमर्दयेत॥

रसा. सा.

वग को पिघलाकर अजवायन की चुटकी देकर निम्ब दण्ड से घर्षण विधि द्वारा भस्म वनावे । पश्चात् ३ घटा की और आच दे तो वग भस्म वने ।

(३) चिञ्चाऽश्वत्थत्वचा [1]क्षारं वङ्गपादांशयोजितम् ।
चिंचादण्डेन संचाल्यं वंगभस्म प्रजायते ॥

[1] चूर्णं रसतरगिण्यामिति पाठ । र सागर, र. त , रसा सा

इमली, पीपल छाल का चूर्ण या भस्म की चुटकी दे इमली के डडे से चलाता हुआ घर्षण विधि से भस्म वनावे । भस्म को निकाल खरल में घोट पानी से धो डाले ऐसा रसतरगिणी कार का आदेश है । मेरा अनुभव है कि विना धोये भी वैसा ही लाभ करती है ।इसका उपयोग करे ।

(४) वगं खर्परके कृत्वा चुल्ल्यां सस्थापयेत्सुधीः ।
द्रवीभूते पुनस्तस्मिन्चूर्णान्येतानि दापयेत् ॥
प्रथमे रजनीचूर्णं द्वितीये च यवानिका ।
तृतीये जीरकञ्चैव ततश्चिञ्चात्वगुद्भवम् ॥
अश्वत्थ वल्कलोत्थञ्च चूर्णं तत्र विनिक्षिपेत् ।
एवं विधानतो वंगं म्रियते नात्र सशयः ॥

र च., रसा. स , रसे. सा. स , र ज नि , भा भै. र.

कढाई में वग को पिघला कर हल्दी, अजवायन, जीरा, इमली छाल, पीपल छाल चूर्ण की चुटकी दे घर्षण विधि द्वारा भस्म वनावे । भस्म वन जाने पर भी ३-४ घटा उसे एकत्र कर और आच दे तो उत्तम वग भस्म वने ।

(५) मृतपात्रे द्राविते वगे क्षिपेत्तत्र सुवर्चिकाम् ।
घर्षयेल्लोह दर्व्या तु यावत्तस्मात्तनूनपात् ॥
निःसृत्य प्रदहेत् सर्वं स्वांगशीतं समुद्धरेत् ।
सुवर्चिकापनोदार्थं सलिलैः क्षालयेन्मुहुः ॥
ततो ऽतिनिर्मल ग्राह्यं वगभस्म भिषग्वरैः ।

वै. द , वृ र प्र , र ज नि , र. रा. सु

वग को पिघला कर सोरा की चुटकी दे घर्षण विधि द्वारा भस्म वनावे । फिर खरल में डाल पानी से गीलाकार रगडे और धो धोकर शोरा निकाल दे फिर सुखा कर व्यवहार मे लावे । र सि

(६) रजनी रजसा वह्नि स्थाप्या हण्ड्यां तु पूर्ववत् ।

वंगभस्म विधायाथ सोरकं तत्र निक्षिपेत् ॥
वंगं तुर्यांशमथतच्छरावेण पिधापयेत् ।
मन्दमग्निं घटीमेका दत्वाऽथ स्वांगशीतलम् ॥
कुन्देन्दुधवलं वगंभस्मग्राह्यं स्वकार्यकृत् ।

वृ यो त, आ प्र, भा. भै र.

वग को कढाई मे पिघलाकर हल्दी की चुटकी दे घर्पण विधि से भस्म वनावे। फिर उस वग का चौथाई सोरा की चुटकी दे रगडता रहे सोरा के समाप्त हो जाने पर सबको एकत्र कर १-२ घटा की तीव्र आच और दे तो वग की सफेद भस्म बने।

(७) पारा वग मिश्रण कर दूना सोरा मिलाय सम्पुट कर ऊपरकी हण्डी में छेद करके मैदान में रखकर ६ सेर उपलो की आच दे, उस भस्मको पानी में घोल कर सोरा निकाल दे और सुखाय काम मे लावे।

स अ., भा अ, अनु यो मा

(८) वङ्गे घर्षणकाल एव भिषजा क्षिप्त्वा यावनी रजा।
[1]प्रक्षेप्यं क्रमशः शिलाजतु तथा भस्माप्यपामार्गजम् ॥
क्षिप्त्वा [2]निम्बदलान्यरुष्कपिशिते भाण्डे तु चिञ्चात्वचो।
[3]भूयात्संस्तर सस्थितानि पुटतः कुर्वन्ति भस्मान्यपि ॥

पा. स, र प, र रा सु, र सा. प

१ नस्यन्ति क्षणश इति रसपद्धतौ। २ रगदला इति रसपद्धतौ ३ भूत्या इति रसपद्धतौ।

वग को कढाई मे पिघला कर अजवायन, शिलाजीत या सोरा, अपामार्ग, निम्बपत्र, भिलावा और इमली के चूर्ण की चुटकी देकर घर्पण विधि से भस्म वनावे और व्यवहार मे लावे।

हिन्दी और यूनानी के अनेक ग्रन्थो मे वनस्पति योग से बनने वाली निम्न विधियाँ मिलती है—

(९) भूफली की चुटकी देकर भस्म बनावे और शराव की भावना दे कर लघुपुट दे। आ. अ

(१०) वग को पिघला कर नागार्जुनी की चुटकी देकर भस्म वनावे और शराव की भावना देकर लघुपुट दे। अनु यो. मा, मा अ

(११) निम्बू फल की चुटकी देकर भस्म बनावे और निम्बूरस की भावना देकर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर पुट दे तो भस्म बने। मा अ.

(१२) वटजटा चूर्ण की चुटकी देकर भस्म बनावे और वटक्वाथ की भावना देकर पुट दे। मा अ., अ. त.

(१३) भाग, हल्दी, पोस्त की चुटकी देकर भस्म बनावे और कुमारी रस की भावना दे कुक्कुट पुट की आच दे। म अ, र सि, अनु पा मा

(१४) अण्डा छिलका चूर्ण की चुटकी देकर भस्म बनावे और गोदुग्ध की भावना देकर पुट दे। दूसरी भावना वटजटा क्वाथ की देकर दूसरी पुट दे तो भस्म बने। मु ति, मि ख.

(१५) वग को गलाकर सीपचूर्ण की चुटकी दे घर्पण विधि मे भस्म बनावे, सीप वगके बराबर हो। फिर बिना पानी के पतले शहद मे कूट टिकिया बनाय सम्पुटकर गजपुट की आच दे तो सफेद भस्म बने। रमू ति, र. ति.

नोट—उक्त ७ विधियो मे वनस्पति वगके बराबर हो या कुछ कम और भावना देते समय इतना रस डाले कि शाम तक घोटते घोटते टिकिया बन जाय, टिकिया बनाय सुखाय सम्पुटकर ८-१० सेर उपलो की आच दे अधिक आच देने पर यौगिक विच्छेद होकर वग पिघल कर निकल जाता है।

(१६) १ तो० वग चूर्ण को १० तोला ईसबगोल में मिला कर रोटी सी बना कर सुखाय सम्पुट में रख १० सेर उपलो की आच दे तो वग भस्म हो। स अ.

(१७) १ तोला वगचूर्ण को २० तोला जख्महयात के नुगदे में मिला कर कूट रोटी (टिकिया) बनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो वग भस्म हो। अ त, चा चि.

(१८) ५ तो० वगपत्र को २० तोला बिनोला की गिरी के आटे में मिलाय कुमारी रस से रोटी बनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो वग भस्म हो। स अ.

(१९) २ तो० वगपत्र बारीक को इमलीछाल चूर्ण, बिनौला गिरी का आटा १०-१० तोला मे मिलाय गूंध कर रोटी बनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो वग भस्म हो। स अ.

(२०) १ तोला वगपत्र को गोखरू चूर्णकी दो बडी बडी रोटिया बनाय

उसके मध्य वगपत्र बिछाय सम्पुट कर १० सेर उपलों की आग देने से भस्म हो। न द.

(२१) शुद्धवङ्गस्यपत्राणि समान्येव तु कारयेत्‌।
अजाशकृत्‌ वरातुल्या चूर्णिता च निशा तथा ॥
चतुरस्रमयोनिम्नगर्तं हस्त प्रमाण कम्‌।
कृत्वाच्छगणकैरर्धं पूरयेत्सततं भिषक्‌ ॥
ततः शणभवेनापि वस्त्रेणाच्छाद्य गर्तकम्‌।
पूर्वं प्रकल्पितं चूर्णं तत्रोपरि च विन्यसेत्‌ ॥
चूर्णेनाच्छाद्यचत्नेन छगणेनाथपूरयेत्‌।
पुटयेदग्निना सम्यक्‌ स्वांगशीतं समुद्धरेत्‌ ॥ र. त नु, र च

एक हाथ वर्गाकृति गहरा गढा बनाय उसे आधे वनोपल से भर उस पर दो तह टाट का चारस फुट व्यासका टुकड़ा बिछाय उसपर बकरी की मेंगनी का चूरा, त्रिफला चूर्ण, हल्दी चूर्ण की कमसे तह दे कर उसपर पतले पतले वग के पत्र बिछाय उस पर हल्दी, त्रिफला, मेंगनी चूर्ण बिछादे इस प्रकार कई तहें वग की लगाकर अन्त मे टाट से ढक उस पर वनोपल देकर आग लगा दे और गढे का मुह मिट्टी से दबा दे कोई ४ अंगुल हवा जाने के लिये उसके मध्य मार्ग रहने दे तो इस विधि से १०-४० तो० तक वग की श्वेत भस्म एक वार में बन जाती है।

(२२) वन्योपलोपरिस्थे तु गोणी खण्डे क्षिपेद्रज।
तिन्तडीवल्कलस्याथ तिलास्तत्र विनिक्षिपेत्‌ ॥
अंगुल्यार्ध प्रमाणेन तत्रवगदलन्यसेत्‌।
खण्डीकृत पुनस्तेन क्रमेणैवात्र विन्यसेत्‌ ॥
[1]वायुनारहितेस्थाने सर्वांस्तानाग्निनादहेत्‌।
स्वांगशीतं ततोग्राह्यं युक्त्या वङ्गस्यभस्मतत्‌ ॥
श्वेत लाजकणाभासं सुसूक्ष्म सर्वकार्यकृत्‌।

वृ यो त, र सा प, पा स, आ वे प्रा,

१ तिलतिन्तिणि वल्क च गोमयाच्चाग्निनादहेत्‌। वृ योगतरंगिण्यामितिपाठ।

भस्म विधान न० २१ के अनुसार इमलीछाल चूर्ण, तिलकी खल को उसी क्रम से टाट सम्पुट कर बिछाकर उस पर वग पत्र बिछाय उसी तरह उपलोंसे

ढक आच दे तो नावलो की सीलवत् वग भस्म वने ।

(२३) यद्वंगस्य दलानि विंशति गुणोपिण्याक चूर्णेऽतसी
सम्भूतंशणपट्टवर्तिनि पुनस्तद्यवान्यामपि ।
कीर्णानि क्रमशोनिबध्य सुदृढ रज्ज्वागजाह्वे पुटे
स्युर्भस्मत्रपुणिस्थिते तु पुटितोऽपक्वेऽयमेवक्रमः ॥
र प ,र मा ,प ,पा स.

वग पत्रों से २० गुनी अलसी की खल का चूर्ण टाट पर बिछा कर उस पर अजवायन और उन पर वग पत्र बिछाय फिर अजवायन और खल से ढक फिर टाट से ढक कर उसे बिस्तरे के मानिन्द लपेट रस्सी से बाव अर्ध गजपुट की आच दे तो वग की भस्म वने । जो पत्र कच्चे रह जाय दूसरी बार मे इसी तरह से बनावे ।

(२४) भल्लातकतैल लिप्त वगंवस्त्रेणवेष्टितम् ।
चिञ्चा पिप्पल पालाशकाष्ठाग्नौ यातिपञ्चताम् ॥ र र स,र च

वग पत्रो पर भिलावा तेल चुपड कर फिर उक्त विधि से पीपल, इमली, ढाक छाल चूर्ण को टाट सम्पट में बिछाय उसमें वंगपत्र उक्त विधिके अनुसार रख कर आग दे तो वग भस्म वने ।

(२५) वग पारा बराबर मिश्रण कर वग के बराबर सोमल मिलाय आक दूध मे घोट सनाय, मेंहदी, भाग अजवायन के चूर्ण के मध्य रख सम्पुट कर लघुपुट की आच दे तो वग भस्म वने । अ त ,चा चि.

(२६) वग पारे का मिश्रण कर पत्र बनाय दूधी चूर्ण पर धतूरा चूर्ण या जायफल चूर्ण के मध्य वग को बिछाय टाट सम्पुट मे रख आग लगा दे तो वग की भस्म वने । र सि ,अ स ,मस ,अ क ,मि स ,मा अ.

(२७) छागणोपरि कृते गर्ते चिंचात्वक् चूर्णक क्षिपेत् ।
कर्षमात्रां वगचक्रीं तत्रोपरि निधापयेत् ॥
चक्रीं चतुर्गुणेनैव वेष्टितां धारयेत्ततः ।
छगणेन विशुष्केन पुटाग्निं दापयेत्ततः ॥
स्वाङ्ग शीत समुद्धृत्य सर्वकार्येप्रयोजयेत् ।
अनेनविधिना शेषमपक्व मारयेद्बुध. ॥
भा. भै र, र रा सु, र प्र. सु, पा स.

वडे उपले मे गढा करके इमली की छाल के चूर्ण को विछाय ऊपर वगका सूक्ष्म पत्र रख, उसके ऊपर चूर्ण विछा कर उसमें अग्नि लगा दे। ठण्डा होने पर राख में से वग भस्म को सावधानी पूर्वक निकाल ले यदि ठीक न हुई हो तो वैसे ही एक और पुट दे।
मा अ

निम्न विधियो से ग्रन्थकारो ने वग भस्म वनाने की कुछ और विधिया दी है—

(२८) अफीम को पानी मे पीस वग पत्रो पर लेप कर सूखे ढाक के पत्ते पर विछा कर दूसरे पत्ते से ढक धान की भूसी की २ अगुल मोटी तह नीचे ऊपर देकर आग लगा दो तो वग भस्म वने।
अनु यो मा

(२९) १ तो० वगपत्र,१ तो० अफीम, १० तो० मेंहदी चूर्ण पत्र पर अफीम का लेप कर मेंहदी चूर्ण के मध्य रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे। तो वग भस्म वने।
अ त

(३०) वग पत्रो को भाग चूर्ण के मध्य रख कर टाट सम्पुट में लपेट १० सेर उपलो की आच दे तो वग भस्म वने।
अ त, चा चि, र नि

(३१) वग पत्रो को इमली, पीपल छाल चूर्ण और भाग तीनो के मध्य टाट सम्पुट में रख थोडी सी खुली आच दे तो वग भस्म वने। अ त, चा चि

(३२) अजवायन, हल्दी, मेंहदी, कमरकस, सरुकेपत्ते, पीपरामूल, जावित्री, भागरा, नीव, कुलजन, अकरकरा, भाग, कायफल, दालचीनी, लोध, हरमल, व्रेरपत्र, इनमें से किसी भी वनस्पति के चूर्ण मे वग के वारीक पत्रो को टाट सम्पुट के मध्य रख आच दे तो वग की भस्म वने।
मा अ

(३३) रगच्छेदन तनुनापरिवेष्ठ्यमुद्रां ताम्रस्य सावयव मार्कवकल्कमध्ये।
सम्यग्पुटेद्‌तिपटुःसुरभै शकृद्भिः स्यात्सोमनाथरस एप समीरहर्ता॥
सि. भै मा., र. यो सा

ताम्र पत्रो को वग के पत्रो के ऊपर लपेट आकके नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो वग की भस्म वने।
स अ, मा अ

सनत अकवर के लेखक ने भिलावा जैपाल का नुगदा लिया है और ताम्रकी कटोरी वनानी वताई है।

(३४) शिरीपरजनी चूर्णं कुमार्या युग गोलकम्।
सूत लिप्तं वंगपत्रं गोलकं समसेलयेत्॥

रुद्ध्वा लघुपुटैः पक्वऽमृतं स्यात् पूर्ववत् क्रियाम् ।   आ
सिरस हल्दी को कुमारी रस में घोट कल्क बनाय वग पत्रो पर लेपकर सुनाय सम्पुट कर लघुपुट की पूर्व विधियो के अनुसार आच दे यदि कुछ कच्चा दिखाई दे तो इसी विधि से और पुटें दे तो वग भस्म बने ।

(३५) रसेनवंग द्विगुणं प्रगृह्य विद्राव्यनिक्षिप्य समुद्रजञ्च ।
विमर्दयेदम्लजलेन गोल कृत्वासुसंपेष्य पुटेनतीव्रम् ॥
ततःक्षिपेत्तज्जल पात्र मध्ये नीरन्तुसन्त्यज्य गृहाणसूतम ।
तद्रक्तियुग्म मधुनासमेत ददीतपथ्य मधुरं समुद्गम् ॥
र.दी ,र चि ,र.क ल ,र.सि ,र का धे ,र मृ ,वै मृ , र च , रसा स , र यो सा

वग को पिघला कर उसमें आधा पारा डाल दे फिर नमक की चुटकी देकर घर्पण विधि से भस्म बनावे भस्म बन जाने पर जम्बीरी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, उस भस्म को पानी में धोवे और उसका नमक निकाल दे फिर सुखाय व्यवहार में लावे । मात्रा २रत्ती शहद मिलाकर सेवन करे ।

(३६) शरावनिहितं सूतं द्विगुण वग मुहुर्मुहु ।
दत्वाग्निं सूर्ययामान्त निम्ब काष्ठेन वट्टयेत् ॥
एव भवेत्पीतवर्णा रस राजस्य भूतिका ।
अर्जित विविधोपायैर्जङ्गमाद्विपजामया ॥
नि र , वै मृ , रसा स , र. कौ , व रा ,वृ यो त ,र यो सा , र सि ,भा भै र

पारा १ भाग वग दो भाग कडाई में पिघलाकर निम्ब दण्डमे घर्पण विधि द्वारा १२ प्रहर में वगकी भस्म बनावे । ३५ और ३६ न० की इन दोनो वग भस्मोको ग्रन्थकार पारद भस्म बतलाते है । त्रिमल्ल भट्ट कहताहै कि यह पारद भस्म मैंने जगम वैद्य मे बडे प्रयत्न से प्राप्त की है । वास्तव मे यह दोनो ही पारद भस्म नही वग की ही भस्में है, पारद तो उड जाता है । केवल वंग की ऊष्मिद भस्म बन जाती है ।

१ तो० वगमें १ तोला पारा मिलाय मिश्रण कर भिन्न-भिन्न ग्रन्थकारो ने भिन्न भिन्न वनस्पतियो में रखकर निम्न विधान दिये है :—

(३७) पारद वग के मिश्रण का पत्र बनाय कमर कस चूर्ण के मध्य रख २ सेर वस्त्र सम्पुट मे रख कर आच दे ।

अ स

(३८) मिश्रण के पत्रो पर इलायची वडी के कल्क का लेपकर तेजवल छाल चूर्ण के मध्य रख २ सेर का कपड सम्पुट कर आच दे ।

मा. अ , मि ख , वा , वि.

(३९) मिश्रण के पत्र वनाय कुलजन चूर्ण के मध्य रख वस्त्र सम्पुट में लपेट आच दे ।

मखजन

(४०) मिश्रण के पत्र वनाय चने के आटे की रोटी पर विछाय सम्पुट कर ४ सेर वनोपल की आच दे ।

स अ

(४१) मिश्रण के पत्र वनाकर हव्वुल्लास (मोडियो) के चूर्ण मे रख वस्त्र सम्पुट में लपेट आच दे ।

अ. हि , कु र , मि ख

(४२) मिश्रण के पत्र वनाय हाथीमुण्डी के चूर्ण मे रख वस्त्र सम्पुट में लपेट आच दे ।

म अ

(४३) मिश्रण के पत्र वनाय हल्दी, भाग चूर्ण के मध्य रख टाट सम्पुट में रख आच दे ।

भा अ

(४४) मिश्रण के पत्र वनाय मेंहदी चूर्ण मे रख सम्पुट मे वन्द कर ४ सेर उपलो की आच दे ।

रस अ

(४५) मिश्रण के पत्र वनाय हरमल चूर्ण के मध्य रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आच दे ।

मा अ , अ त.

(४६) मिश्रण के पत्र वनाय कपूर कचरी के चूर्ण में २-२ सेर के उपल सम्पुट में रख कर आँच दे ।

वा अ.

(४७) मिश्रण के पत्र वनाय पीपल, नीव, अपामार्ग, भाग इनके मिश्रित चूर्ण में रख २-२ सेर के उपल सम्पुट में आच दे वग की भस्म वने ।

मख

(४८) मिश्रण के पत्र वनाय इमली, सेमल, या पीपल चूर्ण के मध्य रख ३-३ सेर उपलोके सम्पुट मे आच दे तो वग भस्म वने ।

र सि

वंग की वलिकाइद भस्में

(१) पलाशद्रवयुक्तेन वगं [1]पत्रं प्रलेपयेत् ।
तालेन पुटितं पश्चान्म्रियते नात्र संशयः ॥

र लं , र. र. स , र सागर , र च , र ज नि , भा भै. र

[1] पत्राणि लेपयेत् रसचण्डांशौ इतिपाठ ।
रसालकारे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

हरिताल को ढाकके रसमें कल्क बनाय वग पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आच दे तो वग भस्म बने ।

(२) मानिक हरिताल च पलाशस्वरसेन च ।
¹पिष्ट्वा कल्केन संलिप्य वंगपत्राणि मारयेत् ॥ र र,र ज ति.

१ हृत रसरत्नाकरे इति पाठ ।

ढाक के रस में नादिक और हरिताल को घोट वग पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो वग भस्म बने ।

(३) अभ्रक तालक शंख क्षारस्याश्चिचाश्चिकाभव ।
रसेन सहितान्सर्वान् वज्री दुग्धेन मर्दयेत् ॥
विलिप्य वंग पत्राणि पुटेत्पूर्व वल्लघु । र ल

अभ्रक, हरिताल, शख चर्ण, इमली की भस्म, पारा सब समभाग थोहर के दूध मे पीस वग पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे तो वग भस्म बने ।

(४) तालकै कर्कटास्थिभि शंखशुक्ति वराटकै ।
सिन्धु कर्पूर सयुक्त मारयेद्वगपत्रकम् ॥ र ज ति.

हरिताल, केकडा अस्थिचूर्ण, शख, सीप, कौडी समुद्रझाग सब को कुमारी रस में घोट वग पत्रो पर लेप कर लघुपुट की आच दे तो वग भस्म बने ।

(५) कन्यामूल विघट्टना रहितया वङ्गोऽपि भस्मी भवेत् ।
पूर्व प्रक्रियवैव नानसशिला स्थानेतुदत्तालया ॥ र प

जिस प्रकार कुमारी मूल से सीसा को घर्षण विधि से आक, वट, पीपल, ढाक चूर्ण की चुटकी दे कर भस्म बनाई थी उसी प्रकार वग को बनावे फिर मैनसिल के स्थान पर हरिताल मिलाय घोट टिकिया बनाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे तो वग भस्म बने ।

(६) मृत वग तत: पश्चान्मर्दयेत्पुरवारिणा ।
समाशं रससिन्दूर मनेन सह मेलयेत् ॥
खल्वे दृढतर पिष्ट्वा काच कूप्यांनिवेशयेत् ।
विपचेदग्नि योगेन याम षोडश मात्रया ॥
हेमप्रभ मृते वंग जायते रस वगकम् ।
सर्व रोगान्हरत्याशु शक्ति दायी गुणाधिकम् ॥ र प्र सु, र च

वनस्पतियों से बनाई वग भस्म के बराबर हिंगुल मिलाय गुगुल की भावना दे सुखाय काचकूपी में भर वालू का यन्त्र मे विठाय १६ प्रहर की आन्च दे तो सुनहरे रग की वग भस्म वने ।

(७) नवसारं सैंधव च पञ्च विल्व मित पृथक् ।
निधाय डमरुयन्त्रे वह्नियाम चतुष्टयम् ॥
प्रज्वालयेदूर्ध्वं भाण्डे लग्ने सत्त्व समाहरेत् ।
तत्सत्वं चूर्णित रग समगन्ध तयोः समम् ॥
विचूर्ण्यैकत्र काचोत्थ कूपिकाया विनिक्षिपेत् ।
मृल्लिप्त वालुका यन्त्रस्थिताया दिवस द्वयम् ॥
चुल्ल्यामग्निमधोदत्वा यामान्द्वादश वा पचेत् ।
कूपी तलस्थ तद्भस्म स्वर्णाभ स्वाङ्ग शीतलम् ॥

र कौ, सि भै मा, र यो सा

नौसादर सेंधानमक सम मिलाय डमरू यन्त्र में रख सम्पुट कर जौहर उडावे उस जौहरके बराबर वग और सबके बराबर वलि मिलाय खरल कर कांच कूपी में भर वालुका यन्त्र मे विठाय १२ प्रहर की आच दे तो वग की सोने जैसे रग की भस्म वने ।

(८) शुद्ध तालं शुद्ध सूतं वंगं गन्धक शुद्धकम् ।
ग्राहयेत्सम भागानि अर्क क्षीरे विमर्दयेत् ॥
दिनसप्तकपर्यन्त मर्दयेच्च निरन्तरम् ।
काचकुप्यां क्षिपेन्मुद्रां दत्वा चैव भिषग्वरः ॥
द्वादश प्रहरदेयं मन्दाग्नि च न संशय ।
पुनरेव प्रकर्तव्यो विधिरेष न संशय. ॥
रस ग्राह्यो प्रयत्नेन रक्तिकार्धं प्रदीयते ।

रसा सा, र रा सु, भा भै र

हरिताल, पारा, वग और वलि सब बराबर मिलाकर आक दूध की ३ भावना दे सुखाय काच कूपी मे भर वालुका यन्त्र मे विठाय १२ प्रहर की आच दे तो ऊपर रस सिन्दूर नीचे वग की भस्म वने । रसायन सार के कर्ता ने निम्बू रस की भावना दी है ।

(९) प्रद्राव्य खर्परे वग षोडशांशं रसं क्षिपेत् ।

स्वल्प स्वल्पाऽऽलक दत्वा भारद्वाजस्य काष्ठतः ॥
मर्दयित्वा चरेद्भस्म तद्रसादिषु शस्यते ।

र च, रसे चू, र र स, रज नि, भा, भै र,

शुद्ध वग को कढाई में पिघला कर उसका १६ वा भाग पारा मिलाय हरितान चूर्ण की चुटकी दे कवी की लकडी से घर्षण विधि द्वारा भस्म वनावे। उसे समस्त कार्यों में लावे ।

(१०) तावद्यावन्निरुत्थं स्याद्वलितस्ताप्यतोऽथवा ।
यद्वा मन शिला वंग मूषाया स्रियते ध्रुवम् ॥ र ल.

वलि के याग से अथवा मादिक के योग से वग की भस्म वनावे, उसे तव तक पुटें देता रहे जब तक भस्म न वन जाय ।

(११) पारा वलि सम मिश्रण कर वग के वरावर वलि मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १५ सेर उपलो की आच दे तो वग भस्म वने । अ त.

(११) तद्वङ्गभस्माम्बुनि निम्बुजाते तालस्य चूर्णेन समेन मर्देत् ।
दिनद्वय श्लक्ष्ण तदीयकल्कं शखे सुशुभ्रे परिपूरयेत ।
दत्वाऽथ मुद्रा दृढसञ्ज्ञयोक्ता सशोष्य हण्ड्या निदधीतशखम्
विधाय मुद्रामथ हण्डिकायां मध्याग्निना चुल्लिकया पचेत्
यामेष्वतीतेषु चतुर्षु हण्डि पुटेद्गजाख्ये हिममुद्धरेत ।
महोग्र वीर्य स्वगुणेषु भस्म प्लीहाग्निमान्द्यादि निवर्तनाय ॥

रसा सा

वनस्पति से वनाई हुई वग भस्म के समान हरिताल चूर्ण मिला कर निम्बू रस में घोट एक शुद्ध साफ शख के भीतर भर कर उसके मुह को वन्द कर सम्पुट मे रख उस सम्पुट को हण्डी में रख लवण यन्त्र या भस्म यन्त्र मे दाबू दे कर आच दे । अगले दिन निकाल उस सम्पुट को गजपुट की आच दे शीतल होनेपर निकाल शख समेत वग भस्मको पीसकर उपयोग मे लावे । यह वग भस्म प्लीहा मन्दाग्नि, श्वास, कास में लाभ करती है ।

(१२) विशुद्ध वंगमादाय कटाहे चुल्लिका स्थिते ।
विनिक्षिपेद्विपग्वर्य श्चुल्लिकाग्नि प्रदापयेत् ॥
वंगात्कलांशकं सूत विशुद्धंतत्र निक्षिपेत् ।

विशुद्ध हरितालं च स्वर्णं स्वर्णं [illegible] ॥
निक्षिप्य वङ्ग कर्षांश दत्त्वैन परिचालयन ।
यावद्भस्म भवेत्तावच्चालनं [illegible] ॥
ततः शरावेणाच्छाद्य पचेन्तीव्राग्निनाभिषक् ।
अनेन विधिना वङ्ग पञ्चतामेति [illegible] ॥ र० म०

वंग को गला कर उसका १६ वां भाग [illegible] हरिताल [illegible] देकर कपास [illegible] से चलाता हुआ भस्म बनावे । [illegible] एकत्र कर उसे एक प्याले में [illegible] ३ [illegible] और [illegible] तो उत्तम भस्म बने ।

(१२) वङ्गं प्रविष्टे खलु मूतराजे शिलातलं तालमतो [illegible] ।
सर्वेण तुल्यं परिशुद्ध गन्धं गन्धार्धकं हिंगुलमाक्षिकं ॥
निम्बूकनीरेण दिनत्रयं च सम्मर्द्य पिष्ट्वा परिशोषयेत ।
शुष्कं च चूर्णं निरितं निदध्यात्सच्छिद्रयन्त्रे नलिकायुतेऽपि ।
दिन द्वयं तीव्रहविर्भुजात यन्त्रं पचेद्गन्धक जारणान्तरम् ।
वगेश्वर यन्त्र तले लभेत गले च सिन्दूररसं महोत्तमम् ॥ रसा त

वग को गला कर बराबरका पारा मिश्रण करे, मैनसिल, हरिताल, और सोमल प्रत्येक वग के बराबर और सबके बराबर बलि, बलि का आधा हिंगुल, बलि को अलहदा रख के अन्य सब चीजो को खरल मे डाल निम्बू रस की ३ दिन तक भावना दे सुखाय ऐसे उमरु यन्त्र मे डाले कि जिसमें बलिको डालनेके लिये छेद बनाया गया हो । आरम्भमें उसके छेदको बन्द रखे,उस उमरु यन्त्र को चूल्हे पर चढा कर आँच दे ४ प्रहर की आच देने के बाद उस छेद को खोल कर थोडा-थोडा बलि उस मे डालता रहे और सीक से हिला दिया करे, इस तरह दो दिन तक थोडा-थोडा गन्धक डाल कर जारण करे, गन्धक जीर्ण होने पर उस छेद को पूरी तरह बन्द कर दे और एक दिन आच दे, शीतल होनेपर निकाले तो नीचे वग की भस्म बनी हुई मिलेगी ऊपर रस सिन्दूर या मल्ल सिन्दूर लगा मिलेगा । उस मल्ल सिन्दूर को खरल कर दूसरी बार पुन कूपीपाक करे तो उत्तम मल्ल सिन्दूर बने ।

(१३) वङ्गस्य द्रवणं कृत्वा पारदं च चतुर्गुणम् ।
द्विगुणं गन्धकं युक्त्वा खल्वमध्येसुघोटयेत् ।

सम्पुटे च तुसन्मुद्रय मृदा शिररिा मर्दयेत् ॥
वर्मे च शोषयित्वा तु घण्टा पट्क प्रदापयेत्।
द्विगुणभस्म सजात तुलस्यारस सयुता ॥ रसा,

वग को रितरा कर उसमें चौगुना पारा दूना वति मिलाय घोट सम्पुट काच कूपी मे भर वालुका यन्त्र में बिठाय ६ घन्टा की आग दे तो ऊ रस सिन्दूर नीचे वग भस्म बनी मिले।

(३ मूर्छा) तोरिका पट्टके कृत्वा कटु सर्षपजां खलिम् ।
दशटङ्क प्रमाणान्यात्पिप्पलस्य त्वचोरज ॥
तस्योपरि [२]न्यसेच्चैवकर्कटास्थि रज: पुन. ।
तस्योपरि न्यसेत्तोरी [३]प्रसता सूक्ष्मरेणुका ॥
तस्योपरि [४]न्यसेत्पश्चाद् वङ्ग पत्राणि विस्तरात् ।
तेषा मुपर्य थोदद्यात्तोरी चूर्ण मनामयम् ।
[६]कर्कटास्थि भवं चूर्णं पिप्पल्यस्य रजस्तथा ॥
एव खलि विधातव्या तथा सम्वृतपट्टकम् ।
पुन. सम्पुटके धृत्वा पच्याद्गजपुटे तत ॥
पुन खल्वतलेपिष्ट्वा मत्स्यमासेन भावयेत् ।
पुनर्गजपुटे पक्त्वा पुन खल्वेप्रपेपयेत् ॥
एवं वारत्रयं कृत्वा वङ्ग भस्म प्रजायते। चि र., र का धे

[१] प्रथमो अष्टमो नवमो पाद रस कामधेनौ दृश्यते।

[१] स्याद्रण रज [२] भवेदेतत्, [३] न्यसे तस्योपरि तोरी सूक्ष्मरेणु च विस्तृतम् । [४] पश्चाद्विन्यस्यवग पत्राणि सर्वत [५] तोरिकादद्या दुपरिष्ठात्ममतत । [६] पुन कर्कटज चूर्णं पिप्पलस्यापि तत्पुन । रसकामधेनौ अयपाठ भेदो दृश्यते मृत्स्नयालिप्य संशोष्य पुनर्गजपुटे पचेत् इति रसकामधेनौ अधिक ।

वोरी का टाट काट कर चौरस टुकडे बनावे उसपर सरसो की खल विछा दे, उस पर ४ तो० पीपल छाल का चूर्ण विछावे उस पर केकडे की अस्थि का चूर्ण विछावे उस पर बहुत पतला फिटकरी का चूर्ण विछावे उस पर वग के पतले पत्र पर विछावे जिस प्रकार नीचे क्रम से चीजे विछाई है इसी प्रकार प्रथम फिटकरी, फिर केकडास्थि, फिर खल का चूर्ण विछा कर उसे टाट मे टक कर ऐसे ढग से लपेटे कि उन की तहे न टूटे, उस पर मिट्टी का

लेप चढा कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे, फिर निकाल मछली के मास रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इस तरह कुल तीन पुट दे तो वग की भस्म वने।

(२) अपामार्गस्य च क्षारैर्लोष्टे वङ्ग प्रदापयेत्।
भस्मी भवति तद्भस्म जम्वु नीरेण मर्दयेत्॥
पुटत्रयं च दातव्यं सिन्दूरं भवति ध्रुवम्। व रा

अपामार्ग की भस्म की चुटकी देकर वङ्ग की भस्म वनावे उस भस्म को जामुन के रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर आवे गजपुट की आँच दे इस प्रकार ३ पुट दे तो लाल रग की वग भस्म वने।

(३) वगेद्रुते तत्सम सूतराज सम्पाद्य पिष्टिं सम तालचूर्णैं
निम्वूक नीरेणविमर्दयेत दिनैकमात्रं च विधाय चक्रीम्।
सशोष्य घर्मे परिलग्न चेता खट्वाङ्गय यन्त्रेण पचेत यामौ।
एवं त्रिवारेण परविशुद्धं संजायते भस्म निरुत्थ रूपम्।
रसा सा, र त

वग को गला कर वरावर का पारा मिलाय मिश्रण वना ले फिर दोनो के वरावर हरिताल चूर्ण डाल निम्वू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय काच कूपी मे भर वालुका यन्त्र में विठाय १ प्रहर की आच दे, ऊर्ध्व लग्न पारद को भिन्न निकाल ले नीचे की वग भस्म मे पुनः आवा हरिताल चूर्ण मिलाय निम्वू रस में घोट पुन. उक्त विधि से चूल्हे पर रख आँच दे, तीन वार करने पर वग भस्म हो। रसतरगिणी कारने वग से चौथाई पारा और वग का आधा हरिताल मिला कर अर्क दुग्ध की भावना दी है और भस्म यन्त्र में उसके भस्म वनाने का विधान वतलाया है।

(७ पुटी) शुद्धं वग क्षिपेल्लोहे कटाहे सुदृढे भिषक्।
तदधोज्वालयेदग्निं द्रुते वङ्गे क्षिपेत्पुनः॥
अपामार्ग चतुर्थांशे चूर्णं संचालयेदिदम।
स्थूलाग्रया लोह दर्व्या यावद्भस्म प्रजायते॥
चूर्णं प्रक्षेपणं कार्यं स्वल्पं स्वल्पं मुहुर्मुहु.।
तत शरावपिहितं स्थापयेत्तत्र तद्भिषक्॥
रज. सर्वं ततोऽवस्तात्कुर्यादग्निं तु तीव्रिकम्।

यावद्भारवर्णं तद्रज समुपजायते ॥
स्वाङ्गशीते ततोग्राह्यं मारणाय रजः शुभम् ॥
कुक्कुटाण्डक पालाना मुक्ताशुक्त्यास्तथैव च ।
चूर्णं पलाश पुष्पाणां वटाश्वत्थ त्वचां तथा ॥
एषामेकैकयोगेन वंग चूर्णं प्रकारयेत् ।
स्वरसेन कुमार्यास्तु वर्या क्षीर सरेणवा ॥
विमर्द्य चक्रिका कृत्वा ह्यर्धभाख्ये पुटे पचेत् ।
एव सप्त पुटे वंगं मृतं भवति निश्चितम् ॥ रसामृत

वंग को कड़ाई में पिघला कर अपामार्ग चूर्ण की चुटकी दे कर भस्म बनावे, फिर मुर्गी के अण्डे के छिलके का चूर्ण या सीप चूर्ण टेसू, वट या पीपल छाल चूर्ण इन में से किसी की चुटकी देकर ८ घंटे चूल्हे पर कड़ाईमे डाल रग-उता रहे, फिर वंग को एकत्र कर तीव्र आंच देकरके छोड़ दे । अगले दिन खरल में डाल कुमारी रस सतावर या दूध की मलाई इन में से किसी की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर अर्ध गजपुटकी आंचदे इस प्रकार ७ पुट देने पर वंग की श्वेत भस्म बने । मात्रा १-२ रत्ती । सिद्धयोग संग्रह ।

(२) श्वेताभ्रं श्वेत कांच च विष सैंधव टंकणम् ।
स्नुही क्षीरे दिन मर्द्य तेन वंगस्य पत्रकम् ॥
लेप्य पादांशकैः कल्कैश्चांधमूषागत धमेत् ।
द्रावेयाते ततो वंग पूर्वं तैले च ढालयेत् ॥
वार्यादिलेप मेकत्र सप्त वाराणि कारयेत् ।
पुत्रजीवोत्थ तैले च ढालयेत् सप्तवारकम् ॥
तद्वंगं जायते तारं शंखकुन्देन्दु सन्निभम् । र रा.सु,

श्वेत अभ्रक, कांच, विष, नमक, सुहागा, इनको थोहर के दूध मे घोट चतुर्थांश उसका कल्क वगपत्रो पर लेप कर अंधमूषा में रखकर धमावें फिर नेत्र-वालादि ओषधियो का लेप कर ७ वार अग्नि पु दे । जीयापोतेके तैलमे पहले ७ वार बुझा ले तब पुट दे तो वंग की श्वेत भस्म हो ।

(३) मनःशिलेनार्क दुग्धेन लिप्त्वा वंगदलानि च ।
चोञ्चिचात्वच क्षारैः दद्याल्लघु पुटानि च ॥
मर्दयित्वाचरेद् भस्म तद्रसादिषु शस्यते ।

भा भै र, र र. स, रसे चू, आ प्र, र त, अ. क, रसे मा. म,
र ज नि, वृ यो त, र र. प्र, र का धे, यो त,

(४) अर्क दुग्धेन सपिष्ट सताल पुट सप्तकैः
वंग हि म्रियते शुष्काश्वत्थ वल्कल वेष्टितम् ॥

हरताल को आकके दूधमें पीस वगके पत्र पर लेप कर पीपलके त्वचे चूर्ण के मध्य रख कर सम्पुटकर पुट दे, इस विधि से ७ पुट देने पर वग भस्म हो।

(५) वंग संशोधयेत्तत्र तप्त तैलादिकेगणे।
ततः क्षिपेद्घ्राणिकाया चुल्लीस्थाया शनैः शनैः ॥
तदधोज्वालयेद्वह्निं द्रुते वगे क्षिपेत्पुनः।
अपामार्ग चतुर्थांश चूर्णं सचालयेन्दिदम् ॥
स्थूलाग्रया लोहदर्व्या यावत्तद्भस्म जायते।
ततः शराव पिहित स्थापयेत्तत्र तद्धिपक् ॥
स्वांगशीतल मादाय शुद्ध तालेन मेलयेत्।
समेन निम्बुज द्रावै मर्दयेत्तत्पुनर्दृढम् ॥
तदपूर्वं घर्म शुष्कं पिप्पलस्य त्वगन्तरे।
सस्थाप्य पच्यादेवं तत्सप्तधा विपचेद्धिपक् ॥
सर्वोत्तम वङ्ग भस्मं सर्व कार्यकर भवेत्। वृ यो. त

वग को तेल आदि शोधक वर्ग मे शुद्ध कर उसे एक ठीकरे मे डाल पिघलावे, फिर वग का चौथाई अपामार्ग चूर्ण लेकर उसकी चुटकी दे करछी से चलाता हुआ भस्म बनावे, फिर उसे एकत्र कर१ प्रहरकी और आच दे, स्वाग शीतल होने पर निकाल उसके बराबर हरिताल चूर्ण मिलाय निम्बू रसमें घोट टिकिया बनाय सुखाय पीपल चूर्ण के मध्य रख सम्पुट कर कोई १०-१२ उपलो की पुट दे। इसी प्रकार ७ पुट दे। आगे हरिताल मिलाने की आवश्यकता नहीं, केवल निम्बू रस की भावना देकर पुट देता रहे तो उत्तम वग भस्म बने।

(६) [1]वगं सताल मर्कस्य पिष्ट्वा दुग्धेन तपुटेत्
शुष्काश्वत्थ भवैर्वल्कैः सप्तधा भस्मतां व्रजेत्।
रसमजरी, र च., वृ. यो. त

१ शुद्ध वृहद् योगतरगिण्यामिति पाठ ।

वग पत्र पर अर्क दुग्ध में घोटी हरिताल का लेप कर सुखाय पीपल के

चूर्ण मे सम्पुट कर ३-४ सेर उपलों की आन्च दे, इस विधि से ७ पुट दे तो वग की भस्म बने ।

(७) एक सेर वग को कड़ाई मे गला कर पोस्त डोडेकी चुटकी दे कर बबूल के दण्ड से रगड़ता हुआ भस्म बनावे । ४ प्रहर तक चुटकी दे कर भस्म करे, फिर अगले दिन दो प्रहर तक बिना चुटकी दिये ही मन्द-मन्द आच दे कर वग को हिलाता रहे, दो प्रहर के बाद वग को एकत्र कर उसे प्याले से ढक कर दो प्रहर तक उस के नीचे बराबर आच देता रहे, अगले दिन स्वाग शीतल होने पर निकाल कुमारी रस की भावना दे १-१ तोला की टिकिया बनाय सुखाय बिनौला चूर्ण की एक मोटी तह ५ सेर वजन के १ कण्डे पर बिछा कर उस पर वग की टिकिया बिछाय एक अगुल मोटी तह बिनौला चूर्ण की ऊपर देकर उस के ऊपर फिर वग की टिकिया देकर फिर बिनौला चूर्ण की मोटी तह दे कर दूसरा ५ सेर का उपला उस पर रख उपल सम्पुट बनाय उसको गोबर से लीप कर सुखा दे, फिर इस उपल सम्पुट को १५ सेर और उपलो के मध्य रख कर आच देवे, इसी विधि से ६—७ पुट देने पर उत्तम सफेद वर्ण की वग भस्म बनती है। कदाचित् कुछ कालिमा रह गई हो तो खुले सम्पुट की एक आच और दे तो यह अत्यन्त सफेद निरुत्थ भस्म होती है। रस योग सागर

(१० पुटी) मृत्पात्रे द्राविते वङ्गे चिञ्चाश्वत्थजो रज. ।
क्षिप्त्वा वङ्ग चतुर्थांश मयोदर्व्या प्रचालयेत् ॥
ततोद्वियाम मात्रेण वङ्ग भस्म प्रजायते ।
अथ भस्म समताल क्षिप्त्वाम्लेन विमर्दयेत् ॥
ततो गजपुटं पक्त्वा पुनरम्लेन मर्दयेत् ।
तालेन दशमाशेन याममेकं तत पुटेत् ॥
[1]एव दश पुटै पक्वं वर्ग तुयाति भस्मताम् ।

वृ र प्र, भा प्र, शा. ध, आ प्र, यो चि, र प्र, र सा प, पा स, भा भै र, र ज नि, चि र, र स क, र र । [1] एव विंशति इति रसरत्नाकरे।
चिकित्सा रत्नाभरणे रस सकेतकलिकायाम् किंचित्पाठ भेद दृश्यते ।

मिट्टी के ठीकरे मे वग को गलाकर वग से चौथाई इमली व पीपल छाल के चूर्ण की चुटकी दे घर्षण विधि से वग की भस्म बनावे, फिर उस वगका दसवाँ भाग हरिताल मिलाय निम्बू रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर

गजपुट की आंच दे इस विधि से १० पुट दे तो वग की उत्तम भस्म बने।

(२) अथ वङ्ग समंतालं क्षिप्त्वाम्लेन विमर्दयेत्।
तालेशद्दशमांशेन याममेकं ततः पुटेत् ॥
एवं दशपुटैः पक्वं वंग मायाति भस्मताम्। वै द.

वग के बराबर हरिताल को निम्बू रस मे घोट वग पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आँच दे, इस प्रकार प्रत्येक वार वग से १० वा भाग हरिताल मिलाय १० पुटे दे तो वग की भस्म बने।

(११ पुटी) वग को कढाई में पिघला कर वट पत्र की चुटकी दे वट दण्ड से रगड कर भस्म बनावे, फिर भूफली, आक, वट, पीपल, ववूल, कुमारी, भाग, पोस्त, धतूरा, दूवी, अपामार्ग प्रत्येक के रस मे १-१ भावना दे पुटें देना रहे तो ११ पुट मे उत्तम वग भस्म बने। स. अ, मि ख, अ ति.

(१७ पुटी) मल्लिका भस्म सेहुण्ड क्षीरेण परिभावयेत।
यावद्भस्मत्वमायाति तत्तुल्यं तालकं तत ॥
अर्क क्षीरेण चाम्लेन पुटेन लघुना पचेत्।
पुनस्तद्दशमांशेन पूर्व द्रावेण मर्दयेत् ॥
पुटेदेवं भवेद्वङ्ग मृतिर्द्वादश पञ्चभिः। वै क, र का धे.

वग को कढाई में पिघला कर चमेली भस्म की चुटकी दे घर्षण विधि से भस्म वनावे, फिर उस वग के बराबर हरिताल मिलाय आक दूध और निम्बू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुटकर लघुपुट की आच दे, इस विधि से प्रत्येक पुट मे वग से १० वा भाग हरिताल मिलाकर पुटें देता रहे तो १७ पुटमे वग की भस्म वने।

(२० पुटी) अथवा वङ्गपादेन सूतेन परिलेपयेत्।
अन्तस्त्वं च चिञ्चिकाया स्तण्डुलैः परिपेपयेत् ॥
तत्पिण्ड मध्ये वङ्गस्य पत्राणि परिमिश्रयेत्।
रुद्ध्वा विंशति संख्याकैर्लघुभिर्म्रियते पुटैः ॥ वै क, र का धे.

वग के बराबर पारा मिलाय पिष्टी वनावे, फिर इमली की अन्त छाल के चूर्ण को चौलाई के रस में पीस नुगदा वनाय उस मे उक्त वग को रख सम्पुट कर लघुपुट की आच दे, इस विधि से २० पुट दे तो वगकी भस्म वने।

(२) नागवच्छोधयेद्वङ्गं तद्वदश्वत्थ चिञ्चयोः।

तद्भस्म हरिताल च तुल्यमल्लेन केनचित् ॥
पलाशोत्थ द्रवैर्वाऽथ[1] लिप्त्वा वगं पचेत् पुटे ।
उद्धृत्य दशमांशेन तालेन सह मर्दयेत् ॥
पूर्व द्रावैः सहालोड्यरुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ।
एव विंशति पुटं पक्वंवगमायाति भस्मताम् ॥ अ क, र र, र ज नि.

१ गोलयित्वान्धयेत्पुटे इति रस रत्नाकरे । आनन्द कन्दे त्रुटित. पाठ. ।

वग को कढाई मे पिघला कर इमली चूर्ण की चुटकी दे घर्षण विधि से भस्म बनावे फिर बराबर की हरिताल मिलाय निम्बू रस की या ढाक रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुटकर लघुपटकी आच दे, इस विधिसे प्रत्येक पुट में वग से १० वा भाग हरिताल मिला कर पुटे देता रहे तो २० पुट मे वग भस्म बने । अन्तिम पुट गजपुट की दे । नोट—१० पुटी और यह दोनो एक है ।

(३) वङ्गपादेन सूतेन वंग[1] पत्रे विलेपयेत् ।
शिरीष रजनीचूर्णं कुमार्या सह पेपयेत् ॥
सूतलिप्तं वगपत्रं तत्कल्केन विलेपयेत् ।
चिञ्चा वृक्षस्य सगृह्य चान्तच्छन्न च तण्डुलैः ॥
पिष्ट्वा तत्पिण्डमध्ये तु वंग [2]पत्रं च रक्षयेत् ।
रुद्धं गजपुटे पक्वं म्रियते विंशतै पुटै ॥ र र, र. ज नि ।

१ पत्राणि लेपयेत् इति रसरत्नाकरे । २ पत्राणिपिश्रयेत् इति रसरत्नाकरे ।

वग का चौथाई पारा वग पत्रो पर चढा कर सिरस और हल्दी को कुमारी रस मे घोट कल्क बनाय उसका लेप वग पत्रो पर कर इमली छाल चूर्ण को चौलाई रस मे घोट इस के नुगदे के मध्य रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधिसे २० पुट दे तो वग भस्म बने । २० पुटी न०१ और यह दोनो एक ही विधि को दर्शाती ह ।

(३० पुटी) मृत्पात्रे द्राविते वगे चिञ्चाश्वत्थकोरजः ।
क्षिप्त्वा वग चतुर्थांश मयोदर्व्या प्रचालयेत् ॥
ततो द्वियाम मात्रेण वगं भस्म प्रजायते ।
पादांशं तालकं दत्वा मृत वगं नियोजयेत् ।
मत्राम्ल स्वर्जिके र्भाव्यत्रिंशल्लघु पुटैः पचेत् ॥
र. का धे, र सा, र सा ०

मिट्टी के ठीकरे में वग को पिघला कर वग से चौथाई इमली, पीपल छाल चूर्ण की चुटकी दे घर्षण विधिसे भस्म वनावे, फिर उस वंगसे चौथाई हरिताल मिलाय गोमूत्र, निम्बू रस और सज्जी के पानी की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे, इस विधि से ३० पुट दे तो वग भस्म वने। १० पुट वग भस्म और यह एक है।

(४० पुटी) लोह पात्रे द्रुते वंगे पादांशं तालकं क्षिपेत्।
चाल्यमश्वत्थ दण्डेन जातं भस्म समुद्धरेत ॥
तद्भस्म हरितालं तु तुल्यमम्लेन मर्दयेत्।
पलाशक द्रवैर्वाऽथ यामान्ते चोद्धृतं पुटेत् ॥
उद्धृत्य दशमांशेन तालेन सह मर्दयेत्।
पूर्व द्रावैस्तु यामैकं रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ॥
चत्वारिंशत्पुटै रेवपक्वंस्यान्मृत वंगकम्। ऋ. ख.

वग को कढाई में पिघला कर चौथाई हरिताल चूर्ण की चुटकी दे पीपल के दण्ड द्वारा घर्षण विधि से भस्म वनावे, फिर वरावर हरिताल मिलाय निम्बू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे, इसी तरह प्रतिवार वगसे दसवा भाग हरिताल मिलाय निम्बू रस या ढाक रस की भावना दे ४० पुटे दे तो वग की भस्म वने।

(४० पुटी) [1]अक्षंभल्लाततोयेन पिष्ट्वा वगं प्रलेपयेत्।
[2]ततस्तिल खली मध्ये [3]रुद्ध्वातच्च पुटे पचेत् ॥
[4]गजाख्येजायते भस्म [5]चत्वारिंशत् प्रसंख्यया।
आ क, वै. क, र का धे, र र., र. ज नि

१ त्र्यक्ष इति वैद्यकल्पतरौ रसकामधेनौ। २ वग पत्राणि पिण्याकं क्षिप्त्वा इति रसकामधेनौ। ३ क्षिप्त्वा रुद्ध्वा इति आनन्दकन्दे पाठ। ४ चत्वारिंशद्गजपुटै वग भस्म प्रजायते इति आनन्दकन्दे। ५ चत्वारिंशतिवगकम् इति रस रत्नाकरे।

वहेडा को भिलावे के रस मे घोट वग पत्रो पर लेप कर सुखाय तिल की खल के चूर्ण के मध्य विछाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इस प्रकार ४० पुट दे तो वग की भस्म वने।

वंग भस्म के गुण

वङ्गं तीक्ष्णोष्णरुक्षं कफक्रिमिवमिजिन्मेहमेदोऽनिलघ्ने ।
कासश्वासक्षयारि प्रशमित हुतभुङ्मान्द्यमाध्मानहारि ॥
वल्यं वृष्यं प्रभाकृन्मनसिज जनक स्वप्नमेह प्रणाशी ।
प्रज्ञाकृद् व्रणमुच्चै रलघुरतिरसस्त्यास्पदं वृहणंतत् ॥

र सा प ,पा स

वग भस्म चरपरा उष्ण, रूक्ष, कफ, क्रिमि विकार, वमन को जीतने वाली है; कास, श्वास, क्षय, मन्दाग्नि और आध्मान का शत्रु है, वल, स्थूलता, कान्ति को उत्पन्न करती है, कामेच्छा की जनक है, स्वप्न दोप, प्रमेह का नाश करने वाली है, वुद्धि प्रद है, व्रण को दूर करती है और विपय में आनन्द देने वाली है ।

वंग भस्मानुपान—करज गिरी और शहद से या पीपल चूर्ण शहद से क्रिमि में, मोचरस हल्दी से प्रमेह मे या शिलाजीत, सतगिलोय मिश्री से प्रमेह मूत्रकृच्छ मे, कपूर १ रत्ती जायफल २ रत्ती शहद मिला कर स्वप्नदोप में, शीघ्रपात मे, घृत से पाण्डु मे, सुहागा खील से गुल्म मे, प्लीहा मे, हल्दी से अम्लपित्तमें, धनिया चूर्ण मिश्रीसे पैत्तिक विकारोमे, पीपर चूर्णसे अग्नि माद्यमे, हल्दी चूर्ण अद्रक रस से ऊर्ध्व श्वास मे, निम्ब पत्र रस से दाह मे, सोठ चूर्ण से आमवात मे, खदिर क्वाथ से रक्तविकार मे, मक्खन, दूध से निर्वलता मे, भाँग चूर्ण मिश्री से स्तम्भन में, लहसुन से वातपीडा में, अपामार्ग मूल चूर्ण से कुब्जवात में, अजवायन असगन्ध चूर्ण से समस्त वात रोगो मे वग भस्म को देने से लाभ होता है मात्रा १–२ रत्ती तक ।

वज्र भस्म

(१) त्रिवर्षा रूढ कर्पास मूलमादाय पेपयेत् ।
त्रिवर्षं नाग वल्या वा निज द्रावै अपेषयेत् ॥
तद्गोलके क्षिपेद्वज्रं रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ।
एव सप्तपुटै[१]र्नूनं कौलिश भस्म जायते ॥

र च, आ क, ऋ ख, पा स, र ज नि, व रा

१ पक्वमेकैकेन मृतो भवेत् इति ऋद्धिखण्डे वादिखण्डे ।

तीन वर्ष के ऊपर की पुरानी कपास के जड को या तीन वर्ष पुरानी पान की जड को उसी के रस में घोट नुगदी वनाय उसमें हीरा रख सम्पुट कर गज-पुट की अग्च दे, इस विधि से ७ पुट दे तो हीरा की भस्म हो।

(२) त्रिवर्षा रूढ कर्पासैमूलं कान्त मुखै. सह।
नारिस्तन्येन सपिष्य पिष्ट्वा ध्मात मृतं भवेत्॥ आ. क

तीन वर्ष की पुरानी कपासमूल कान्तलोह दोनो को स्त्री के दूध मे पीस नुगदा वनाय इसके मध्य हीरा रख कर धमन करे, इस विधी से ६-७ पुटें दे तो हीरा भस्म हो।

(३) हीरक विमल ताल यथायोग शिलामला।
समं समं समादाय स्तर खल्वे विमर्दयेत्॥
त्रिवर्षा रूढ कर्पास शिफास्वरस योगत।
सम्पेष्य कार्यं थामैक निदाघे परिशोपयेत्॥
विशुष्क सम्पुटेनास्य पुटयेत्तु महापुटे।
एव चतुर्दस पुटैर्हीरकं याति पञ्चताम्॥ र. त

हीरा, विमल, हरिताल, मैनसिल सव वरावर पुरानी कपास मूलके क्वाथमें घोट नुगदा वनाय उसमे हीरा को रख कर धूप मे सुखाय नम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से १४ पुट दे तो हीरा की भस्म वने।

(४) हन्सपादी देवदाली वटार्कश्च स्नुही पय॥
पुनर्मर्द्य पुन पाच्य भूधरे च त्रिधा पुन.।
म्रियन्ते नात्रसन्देहो सत्यं गुरु वचो यथा। रस सागर

हन्सराज, वन्दाली, वट, आक, और थोहर का दूध इनमे हीरा को तपा-तपा कर वुझावे, जव पीसक हो जाय इन्ही मे खरल कर टिकिया वनाय इन्ही के नुगदेमें रख सम्पुट कर भूधर पुटकी आच दे, इस तरह ३ वार करे तो हीरा की भस्म वने।

(५) ऊर्णायु शृङ्गी परिपिष्ट पिण्ड मेतस्य मध्ये तु निधाय वज्रम्।
पिण्डेऽथवाऽधाय व वज्र वल्ल्या पुटत्रय तस्य रसे विदध्यात्
मृत्युरेवभवेदस्य वज्राख्यस्य न संशय। र ज नि, र र.

ऊन को मेढासिंगी के दूध में घोट नुगदा वनाय उसमे हीरा को रख कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे। अथवा हड सहारीके रसमे ऊन को घोट नुगदा

वनाय उसमें हीरा को रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस प्रकार ३ पुट दे तो हीरा की भस्म वने ।

(६) गोपुच्छ केशा· केतक्या रसोन्यग्रोधजं पयः ।
वज्र कन्दं च तत्सर्वं वडवा पयसासह ॥
पिष्ट्वा तद्गोलकं कृत्वा मध्ये वज्रं तु विन्यसेत् ।
पश्च कृत्वा च खदिराङ्गारैश्च पुटयेद्भिषक् ॥
वज्रं मारणतामेति सत्यं गुरु वचो यथा । र का धे

गो पूंछ के वालो को केतकी के रस की भावना दे, फिर वट दुग्ध की भावना दे नुगदा वनावे फिर वज्रकन्द को भी वट दुग्ध की भावना दे दोनो को एकत्र कर उसके नुगदे में हीरा को सम्पुट कर खैर की लकडीके अगारो मे रख कर आच दे । इस विधि से कुछ पुटें देने पर हीरा की भस्म हो ।

(७) उत्तरा वारुणी क्षीरैः कान्तपाषाणज मुखे ।
क्षणे पिष्ट्वा तु तद्गोलं क्षिप्त्वा तस्मिन् पचेद्दिनम् ॥
नृतैले गन्धतैले च म्रियते नात्र संशय । रस सागर

इन्द्रायण के रस में कान्त पष्पाण को पीस कर नुगदा वनाय उसमे हीरा को रख कर नृतेल और गन्धक तेल मे दिन भर हीरा को पकावे तो हीरा की भस्म हो ।

(८) इस्पन्दस्य च तैलेन काच कूपी कृतेन च ।
तप्त च वाप्यते हीरं तन्मध्ये पूर्व मात्रया ॥
म्रियते नात्र सन्देहश्चतुर्जातिसमुद्भवम् । र चिं, र का धे

इसपन्द वीजो के तेल को काच के पात्र में डाले उस तेल मे तपा-तपा कर हीरा को वुझाता रहे तो हीरा की भस्म वने ।

(९) सम्पूर्णचूर्ण कलिकाकारं हीरं वर परम् ।
मेषिका पयसामिश्रं हीरे दद्यात्पुटत्रयम् ॥
म्रियते सम्यगे वेदं साधयेच्च समीहितम् । र चिं, र का धे.

हीरे की कनियो को मेढासिंगी के दूध मे रख सम्पु कर गजपुट की आच दे,इस विधि से ३ पुट दे तो हीरा की भस्म वने ।

(१०) मूले वज्रलतायास्तु मृदु वज्रं विनिक्षिपेत् ।
पुटंदद्यात्प्रयत्नेन भस्मी भवति तत्क्षणात् ॥ रसार्णव ,र का धे

हडसहारी मूल के नुगदे में नरम वज्र को रख कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म हो ।

(११) मन्दारार्कास्तु येश्वेतास्तेषा मूलानि दाहयेत् ।
ज्वाल्य मानेषु तेपुतैश्च कर्त्तव्या मृत जीवनः ॥
तेष्वगालेपनेतेषु कार्यायत्नेन गर्तका ।
तेषु वज्राणि विन्यस्याग्निष्टे सौवर्णकेक्षिपेत् ॥
आम्लिल्या उलि वब्बूलै सम्पल्या मृत जीविभिः ।
सुवज्रा नाग्निना ध्मात्वा क्वाथे कौलत्थके क्षिपेत् ॥
सुखेनाथ तथा युक्त्या मार्यन्ते हीरका बुधै. ।
भस्मी भूतं तु वज्राणि चूर्ण क्षेप्य च कुम्भ के ॥ रसाध्याय ।

सफेद फूलवाले आककी जडकी भस्मके नुगदेमे हीराको रख तपावे कोयला इमली, आउली, वबूल आदि का हो । हीरालाल होने पर कुलथी के काढे में वुझावे, इस प्रकार अनेक वार करने पर हीरा चूरा चूरा हो जाता है । वस,पीस कर शीशी मे धरे ।

(१२) अश्वत्थ वदरी भिण्डी [१]माक्षिक कर्कटास्थि च ।
[२]तुल्यं स्नुहीपय पिष्ट्वा वज्रं तद्गोलके क्षिपेत् ॥
रुद्ध्वा गजपुटे पच्याद्विप्रवज्रं मृत भवेत ।
र र, र का धे, आ क, रसार्णव, र ज नि.

१ मूलक इति आनन्दकन्दे । २ स्नुही क्षीरेण सम्पिष्ट पुटाद्विप्रो मृतो भवेत् इति रसार्णवे । रस कामधेनौ तृतीय पक्ति नास्ति ।

पीपल, वेर, भिण्डी तोरी जगली, माक्षिक, और केकडा की अस्थि सव वरावर लेकर थोहर के दूध मे पीस नुगदा वनाय उसमे हीरा रख कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीराकी भस्म वने, कितने पुटमे वने? यह ग्रन्थकार ने स्पष्ट नही किया ।

(१३) अश्वत्थ भिण्डी स्थाने अश्मन्तक कदल्यौ क्वचित् ।
करवीरार्क दुग्धेन मेषशृंगी च हिंगुली ॥
उदुम्वर समायुक्ता पुटात्क्षत्रिय मारणम । रसार्णव, र का धे.

कुछ ग्रन्थो में पीपल, वेर के स्थान पर पाषाण भेद और केला पाठ दिया है अर्थात् पाषाण भेद, केला कन्द रस, कनेर, आक का दूध, मेढासिंगी का दूध,

वडी कटेली के फल, गूलर इन सब को कूट नुगदा वनाय इनमे हीरा रख कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म हो ।

(१४) करवीरं मेषशृङ्गी[1]वदरं च उदुम्वरम् ।
अर्क दुग्धं सम पिष्ट्वा विप्रवन्मारयेन्नृणाम् ॥

आ क, र र, र ज नि

१ दरद आनन्द कन्दे इति पाठ ।

कनेर मेढासिंगी वेर गूलर इन सवो को आक के दूध मे पीस कर नुगदा वनाय उसमें हीरा रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म हो । आनन्दकन्दकारने वेर के स्थान पर हिंगुल डाला है ।

(१५) नीलज्योतिर्लताकन्दे घृष्टं घर्मे विशोषितम् ।
वज्रं भस्मत्व मायाति कर्मवद् ज्ञान वह्निना ॥

र प्र मु, र रा सु, रसे चू, र र स, पा स, र ज नि

हीरा पर लागुली (कलिहारी) के कन्द को पीस लेप लगाय सुखाय उसी के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म वने ।

(१६) अग्निसंयुक्त मूलानि मुखा उल्या समानयेत् ।
श्रीखण्डं घर्षयेत्तेषां तत् सार्धेनप्रलेपयेत् ॥
वज्रमूषान्तरगर्भे प्रक्षिप्यो जात्य हीरकाः ।
क्षिप्त्वा श्रीखण्ड शेषर्द्धि मूषामग्निष्टके क्षिपेत् ॥
ध्मात्वाद्याग्निनिभा कृत्वा वज्रिदुग्धेन ढालयेत् ।
सुखेनाथानयायुक्त्या म्रियते जात्य हीरका. ॥
तस्मिस्तेषां कृते चूर्णं प्रक्षिपेत्कुम्पिके सुधी ।
यो वज्र भस्मना कर्म प्रभावोग्र भविष्यति ॥ रसाध्याय

ज्वालामुखीकी जड, आँवला दोनों वरावर चन्दनमे उन्हे रगडे, उसका हीरा पर लेप करे और दृढ कुठाली में उस हीरा को रख कर वाकी चन्दन का जो घिसा भाग हो उसे उस कुठाली मे रख कर खूब धमावे जव हीरा तप कर लाल हो जाय उसे थोहर के दूध मे वुझावे, इस प्रकार कई वार करे तो हीरा कूटने के योग्य हो जाता है उसे पीस कर शीशी में रख ले । यह कर्म में प्रभाव शाली होता है ।

(१७) मदनस्यफलोद्भूत रसेन द्रोणि[1]नागरै.

कृत कल्केन संलिप्य पुटेद्विंशति वारकम् ।
वज्रचूर्णंभवेद्वर्यं योजनीयं रसादिषु । रसे चू. र. का वे

१ नागकै रसेन्द्र चूडामणी इति पाठ ।

मैनफल के रस मे अलसी और सोठ को रगड कर नुगदा वनाय उन में हीरा रखे फिर उक्त चीजो का मूपा में लेप कर उसमें वह हीरा रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से २० पुट दे तो हीरा की भस्म वने।

(१८) पीतामलक पञ्चांग रोचनामिन्द्रवारुणीम् ।
अनेन वेष्टितं वज्रं म्रियते सप्तभिः पुटैः॥ र का वे.

हल्दी, आवला, गोरोचन, इन्द्रायण इन को कूट नुगदा वनाय उसमें हीरा रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस प्रकार ७ पुट दे तो हीरा की भस्न वने।

(१६) अमृताकन्द तिमिर वीजत्वक क्षीरवेष्ठितम् ।
मेपशृङ्गी गतंवज्रं मृल्लिप्त म्रियते पुटैः॥ र का वे

पुरानी गिलोय का कन्द, मेहदी वीज, वन्सलोचन, मेढार्सिगी इन सवको कूट नुगदा वनाय उसमें हीरा को रख कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो हीरा की भस्म वने ।

(२०) पेटारी हन्सपादी च वज्रवल्ली च सूरणम् ।
अश्वत्थास्याकुरादेव सर्वे. स्त्रिस्तन्यपेपिताः॥
अनेन सिद्ध कल्केन वेष्टित वृहती फले ।
क्षिप्तं वह्नौ मृदालिप्त म्रियते सप्तभिः पुटैः॥ र का. वे

पतवार, हन्सराज, हडसहारी, जिमीकन्द, पीपल के अकुर सव को स्त्रि के दुग्ध मे पीस नुगदा वनाय उस मे हीरा को रखकर सम्पुट कर गजपुटकी आच दे, इस प्रकार ७ पुट दे तो हीरा की भस्म वने ।

(२१) पीतवर्णा जयन्ती च कालिका सुरदालिका ।
तप्तं तप्तं वहु सेच्य सर्ववज्रादि मारणम्॥ रस सागर

पीले फूल की जयन्ती के क्वाथ मे हीरा को तपा तपा कर वुझाता रहे तो हीरा की भस्म वने ।

(२२) स्नुह्यर्कोन्मत्तकन्यानां क्षीर द्रावेण वासरम् ।
भाव्यासितस्य मांसेन कुलीरस्य विवेष्टयेत॥
भूनाग मृत्स्नयाध्मातं यामं भस्मत्व माप्नुयात् । र का वे

थोहर, आक इनके दूध, कुमारी, धतूरा इनके रसमें हीरा को तपा तपा कर बुझावे फिर सफेद केकडे के मासरसमे लपेटकर इसी प्रकार तपा कर बुझावे। हीरा को तपाते समय केंचुएं के मल की मिट्टी में लपेट कर तपाया करे और फिर बुझावे तो हीरा की भस्म हो।

(२३) शरपुंखायाः पञ्चाङ्गं पेष्य स्त्रिरजसाऽन्वितम्।
पेटारी बीजमथवा संपेष्य तण्डुलाम्भसि॥
पेष्यं त्रिवर्ष कर्पास मूल वा तण्डुलाम्भसा।
आरक्तं चार्कमूलं वा स्त्रिस्तन्येन च पेषितम्॥
पेषितं वज्र कन्द वा वज्री क्षीरेण सुव्रते।
तालेन मेष शृङ्ग्या च वज्रवल्ल्या च वेष्टितम्॥
अन्धमूषागतध्मातं वज्र तु म्रियते क्षणात्। र का धे.

शरफोका के पचाग को स्त्रि दुग्ध मे पीस कर नुगदा बनावे या पतवार बीजो को चावल के पानी मे पीसकर नुगदा बनावे या पुरानी कपास जड को चावलके पानीमे पीसकर नुगदा बनावे या आककी जड को स्त्रि के दूध मे पीस कर नुगदा बनावे या वज्र कन्द को थोहर के दूध मे पीस कर नुगदा बनावे अथवा हरिताल को मेढासिंगी के रस में पीस कर हडसहारी के नुगदे के मध्य रख उसके भीतर हीराको विठाय सम्पुट कर धमन करे तो हीराकी भस्म बने। ग्रन्थकार ने छ विधिया एक ही साथ दी है।

(२४) हिंगुसैंधव [१] सयुक्ते क्वाथे कौलित्थजेक्षिपेत्।
तप्ततप्तं पुनर्वज्रं [२]भूयाच्चूर्णं त्रिसप्तधा॥

शा ध, भा प्र, यो र, र. च, आ वे प्र., चि. र., वै द., र.का धे, र.रा.-सु, पा स, भा. भै र, र. ज. नि, र र

१ सुण्ठिभि इति रसरत्नाकरे। २ भवेद्भस्म इति रसचण्डाशौ।

हींग, सेंधानमक इन्हे कुलथी के साथ मिला कर काढा बनावे रसरत्नाकर ने सोठ भी मिलाई है, इस काढे में हीरा को तपा-तपा कर २१ बार बुझावे तो हीरा चूर्ण विचूर्ण हो जाता है उसे पीस कर रख ले।

(२५) हिंगु सैंधव सौवर्च रसगन्धक माक्षिकम्।
लिपेत्तप्तं च बहुधा वज्राद्यं भस्म जायते। र सा.

हींग, सेंधानमक, सज्जीखार, पारा, बलि, और माक्षिक इनको पानी

मे घोट उसकी नुगदी वनाय हीरे पर उस का लेप कर तपावे और घोड़े के मूत्र या मेंढक के मूत्र में वुझावे या कुलथी के काढे मे वुझावे, ऐसे वहुत वार करने से हीरा की भस्म वने ।

(२६) कान्तस्य पिष्टिकामध्ये वज्रं देवि विनिक्षिपेत् ।
पाचयेद्गन्ध तैलेन म्रियते वज्र मीश्वरी ॥ र. का धे.

कान्तपाषाण का नुगदा वनाय उसके मध्य हीरा को रख कर गन्धक के तेल मे पकावे तो हीरा भस्म हो ।

(२७) स्नुह्यर्क करवीरं च भूनागं दरदं वटाः ।
उत्तरा वारुणी क्षीरैर्वै श्याणा मारण पुटैः ॥

र. रा सु, र ज. नि.

वट थोहर, आक का दूव इन मे केचुआ और हिंगुल को घोट नुगदा वनाय उस मे हीरा को रख तपावे लाल होने पर कनेर इन्द्रायण के रस मे वुझावे । इस तरह कुछ वार करने पर हीरा की भस्म हो या इन का नुगदा वना कर उस मे हीरा को रख कर गजपुट की आच दे ।

(२८) जलकुम्भी कुमारी च दरदं सर्वं मर्दयेत् ।
म्रियन्ते नात्रसन्देहः अग्नियोगे त्रिवासरम् ॥ रस सागर

काई, कुमारी का रस, हिंगुल इनको खरल कर नुगदा वनाय उस मे हीरा को रख कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म हो ।

(२९) वज्रं वह्नौ प्रताप्यैव कृत्वा सिन्दूर सन्निभम् ।
निर्वापयेत्कासमर्दे दशवारान्प्रयत्नतः ॥
तत्पश्चात् गन्धकेनैवाऽलोड्यनिर्वापयेद्बुधः ।
वज्रं लाजा कृति भवेत्प्रागुक्त विधिना तत । र म, र का धे.

हीरा को तपा-तपा कर लाल कर अगारवत् करे फिर उसे कसौदी के रस मे वुझावे, इस तरह १० वार करे फिर वलि चूर्ण के मध्य रख कर इसी तरह तपावे और उक्त रस मे वरावर वुझाता रहे तो हीरा धानकी खील के मानिन्द फूल जाता है ।

(३०) भूनागं गन्धकं चाऽथ नारीस्तन्येन पेषयेत् ।
तद्गोलस्थं पचेद्वज्रं पूर्वतैले मृतं भवेत् ॥ रा. ख, आ क

कचुवा चूर्ण या वलि चूर्ण को स्त्रि दुग्ध मे पीस कर नुगदा वनाय उस

में हीरा रख कर तपावे और नृतैल, वलि तेल में वुझावे इस प्रकार कुछ वार करने पर हीरा की भस्म हो ।

(३१) गन्धकं चूर्णितं भाव्य स्त्रिपुष्पेण तु सप्तधा ।
पुन. स्त्रिरजसालोड्य तस्मिन् वज्रं सुतापिनम् ॥
सेचयेत्तापयेद्रेक विंशद्वारान्मृतं भवेत् । आ क.

वलि को स्त्रिरज की ७ भावना दे उसके मध्य में हीरा को रख कर तपावे और स्त्रि के रज मे वुझावे इस तरह २१ वार करने से हीरा भस्म हो ।

(३२) क्षारेण शशदन्तस्य वल्कलेन शणस्य च ।
अम्लवेत्र रसेनैव गन्धक परितापयेत् ॥ र का। धे
हन्तिवज्रं न सन्देहो वज्रं वज्राहतं तथा ।

सज्जीखार, जवाखार, खरगोश के दात, वलि और सन के वृक्ष का छिलका सब को कूट कर अम्लवेत के रस मे घोट नुगदा वनाय उम में हीरा रख कर तपावे लाल होने पर हीरा को अम्लवेत रस मे वुझावे इस प्रकार २१ वार वुझाने से हीरा भस्म हो ।

(३३) वलाचातिवला गन्धं पेपयेत्कच्छपास्थि च ।
एतैश्च वारुणी दुग्धैर्म्रियते वैश्योपि विप्रवत् ॥
रसार्णव, र का. धे., आ. क , र. र , र ज नि.
रसार्णवे, रस कामधेनौ आनन्दकन्दे भिन्न पाठ प्रतिपादित

खरेटी, कघी, वलि और कछुआ की हड्डी सब को इन्द्रायण के रस मे घोट नुगदा वनाय उसमें हीरा रख सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो हीरा की भस्म हो ।

(३४) श्वेतेन्दु रेखा पुष्पाम्बु गन्धकत्रय माक्षिकैः ।
वेष्टितं कुलिश देवि पुट पाकान्मृतं भवेत् ॥ र का. धे.

सफेद इन्दुरेखाके फूलो का रस निकाल उसमे वलि, माक्षिक, विमल कास्य माक्षिक को घोट नुगदा वनाय उस में हीरा रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से कुछ पुटें देने पर हीरा की भस्म वने ।

(३५) गण्डदूर्वा रसे वज्रं तप्तंतप्तं निषेचयेत् ।
दशवारानान्धकेनालोड्य पश्चात्पुटेद्द्विपक् ॥
वलामूलस्य कल्कस्य पिण्डग तद्गजाह्वये ।

स्वभावशीतल ज्ञात्वा ततस्तस्मात्समुद्धरेत् ॥
वज्रं स्फटिक संकाशं भवेदेव न संशयः। र. च., र का धे.

जलदूब का रस निकाल उसमे हीरा को तपा तपा कर वुझावे फिर वलि चूर्ण के मध्य मे रख खरैटी के नुगदे मे लपेट सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म वने।

(३६) रुदन्त्या स्वरसे सेच्यमेकविंशति वारकम्।
गन्धकेन समालोड्य तस्मात्कन्या रसे पुनः॥
निषेचयेदेक त्रिंशद्वारानेवं पुनः पुन.। र म, र का धे.

हीरा को तपा तपा कर रुद्रवन्ती के रस मे २१ वार वुझावे फिर वलि के मध्य रख कर लाल करे और कुमारी रस में ३१ वार वुझावे तो हीरा की भस्म वने।

(३७) ढाहीकन्दरसेवाऽथ जम्वीरोत्थरसे तथा।
अर्कन्यग्रोधवज्रयाणां पयस्याथनिषेचयेत् ॥
आलोड्य गन्धकेनैव तप्तं तप्तं निषेचयेत्।
म्रियते नात्रसन्देहो वज्रं किं वहुनोच्यते ॥ र म, र का. धे.

आक के दूध में या वट के दूधमें वलि को पीस कर हीरा पर लेप करे और हीरा को तपावे लाल होने पर वराहीकन्द के रस मे या जम्वीरी के रस मे वुझावे तो कुछ वार वुझाने पर हीरा की भस्म वने।

(३८) कन्देन सौरणेनापि शिलया लशुनेन च।
न्यग्रोधभवदुग्धेन शूद्रोऽपिम्रियते क्षणात् ॥

रसार्णव, र का धे

जिमीकन्द मैनसिल लहसुन इन सव को कूट वटदुग्ध मे सान कर नुगदा वनाय उसमे हीरा रख कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म वने।

(३९) सूरणं लशुनंशङ्खं शिला सम्पेपयेत्समम्।
वटक्षीरेण तत्क्लृप्ते गोलकेपूर्ववत्पचेत्।
वज्रं यच्छूद्र जातीयं तेन सम्यक् भवेत्मृतम् ॥

र र, र. ज नि., आ. क.

रसरत्नाकरे रसजलनिधौ भिन्न पाठ प्रतिपादित।

जिमीकन्द लहसुन शख मैंनसिल इन सब को बराबर लेकर वटदुग्ध में पीस नुगदा बनाय उसमें हीरा रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म बने ।

(४०) कुलत्थक्वाथ सयुक्त लकुचद्रवपिष्टया ।
शिलया लिप्त मूषायां वज्रं क्षिप्त्वा निरुध्य च॥
अष्टवारं पुटेत्सम्यग्विशुष्कैश्च वनोपलै ।
शतवारं ततो ध्मात्वा निक्षिप्तं शुद्धपारदे ॥
निश्चित म्रियते वज्रं भस्मवारितरं भवेत् ।
सत्यवाक सोमसेनानीरेतद्वज्रस्य मारणम् ॥
र को, र र स, रसे चू, र ज नि, पा स

मैंनसिल को कुलथी के काढे और वडहल के रस में घोट कर मूषा में इसका लेप करे और उसके नुगदे में हीरा रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस प्रकार ८ पुट दे फिर हीरा को कुठाली मे रख कर तपावे लाल होने पर उसे पारद मे डुबो दिया करे। इस प्रकार १०० वार करने पर हीरा की भस्म बने ।

(४१) नील च शख चूर्णं च शिलाभूनाग सूरणम् ।
म्रियते त्त्रि जातीना मेषा मध्ये पुटे नहि ॥ र रा सु, र ज नि.

नील, शख चूर्ण, मैंनसिल, केंचुआ इनको जिमीकन्द के रस मे घोट नुगदा बनाय उसमें हीरा रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म बने ।

(४२) केतकीनां स्तनान्ये निसाहायां जलेविना ।
वर्तयित्वा रसोग्राह्यो वस्त्रपूतोहि निर्मलः ॥
रसेनानेन सूक्ष्माच वर्तनीया मनःशिला ।
तया सम्वेष्ट्य वज्राणि वज्र मूषान्तरे क्षिपेत् ॥
विध्यापयार्क दुग्धेन ध्मातांतामग्निभा कृताम् ।
एवमिच्छन्मुहु. कार्यः सप्तवेला मयं विधि. ॥
स द्वज्राणि म्रियन्ते च सुख साध्यानि निश्चितम् ।
तच्चचूर्णं कुम्पेत्क्षेप्यं मृतहीरक सम्भवम् ॥ रसाध्याय

केतकी के पत्तो को विना जल का स्पर्श किये कूट कर रस निकाल ले

उसे छान कर निर्मल कर ले उसमें मैनसिल को डाल कर घोटे और नुगदा वनाय उसके मध्य हीरा को रख कर कुठाली में विठाय धमावे लाल होने पर हीरा को आक के दूध में बुझावे, इस तरह ७ वार करे तो हीरा की भस्म वने। अर्थात् हीरा चूर्ण हो जायगा पीस कर शीशी मे रख ले।

(४३) वज्रं मत्कुणरक्तेन[1]चतुर्वारं विभावितम्।
सुगन्धि मूपिकामांसै वर्तितैः परिवेप्टयेत् ॥
पुटेत्पुटैर्वराहाख्यै स्त्रिंशद्वारं ततः परम्।
ध्मात्वाध्मात्वा शत वारान् कुलत्थ क्वाथके क्षिपेत्॥
अन्यैरुक्तं शतवारान् कर्तव्योऽयं विधिक्रमात्।
सत्यवाक् सोमदेवेन एत द्वज्रस्य मारणम्॥

रसे चू, र र स, पा स, र ज नि, र रा सु-

[1]त्रिशद्वार रसजलनिवौ इति पाठ.।

हीरा को खटमल के खून से तर कर के सुखावे इस तरह ४ वार करे फिर छछूंदर के मास के मध्य रख कर, सम्पुट कर वराह पुटकी आच दे, इस प्रकार ३० वार करे फिर उस हीरा की कनियो को कुठाली में तपा तपा कर कुल्थी के काढे में बुझावे इस तरह १०० वार बुझाने से सोम देव कहते है कि हीरा की भस्म वन जाती है, यह दो विधिया एक है, दूसरी विधि पूर्ण दिखाई देती है।

(४४) त्रिसप्त कृत्वा संतप्त खरमूत्रेण सेचितम्।
[1]मत्कुणैस्तालकं पिष्ट्वा तद्गोले कुलिशं क्षिपेत्॥
प्रध्मातं वाजि मूत्रेण सिक्तं पूर्वक्रमेण च।
भस्मी भवतितद्वज्रं शंखशीतांशु सुन्दरम्।

र म, र. र, र र प्र, पा स, वृ यो त, रसे. सा. स, र च, भा र प, आ क, ऋं ख., र ज नि, वि र., र प्र, भा भै. र

१ पडगुणो रसरत्नाकरेइति पाठ। भिन्न२ ग्रथे भिन्न २ पाठ प्रतिपादित

हीरा को तपा तपा कर २१ वार गधे के मूत्र मे बुझाने से हीरा शुद्ध हो। फिर हरताल को खटमलके साथ घोट, उसीके पुगदी में हीरा को रखकर धमावे और घोडे के मूत्रमे बुझावे इस प्रकार २१ वार करने से हीरा की भस्म वने।

आनन्दकन्द, ऋद्धिखण्ड, रस जलनिधि, चि रत्नाभरण आदि ग्रन्थो ने भिन्न

भिन्न पाठ दिया है।

(४५) मत्कुणानान्तुरक्तेन सप्तधाऽऽतपेशोषितम्।
कुलिशं भावितं तद्वच्चूर्णिता च मनःशिला॥
एते च वदरीपत्रैर्वेष्टयित्वा पुटेपचेत्।
पुनर्लेप्य पुनर्पाच्य सप्तधाम्रियतेततः॥ र र, र ज नि.

हीरा को खटमल के रक्त मे लेप कर सुखावे, इन प्रकार ७ वार करे फिर खटमल रक्त में मैनसिल पीस कर उसका लेप कर सुखावे, ७ भावना इसकी दे फिर वेरके पत्तो के नुगदेमें रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इस विधि से ७ वार करे तो हीरा भस्म वने।

(४६) वज्रं मत्कुणरक्तेपु क्षिप्त्वालिप्त्वाऽऽतपेक्षिपेत्।
शुष्कं लेप्यं पुनः¹ शोष्यं यावत्सप्तदिनावधि॥
विष्णुक्रान्ता पेटिकाया द्रवैः सिंचेत्पुनः पुनः।
तप्तं तप्तं तु तद्वज्रं शतवारान्मृत भवेत्॥ ऋ. ख, आ. क

१ सेच्य आनन्द कन्दे इति पाठ ।

हीरा को खटमल के रक्त में भिगोकर धूप में सुखावे इस प्रकार ७ दिन करता रहे फिर अपराजिता और पतवार का रस या क्वाथ वना कर उसमे हीरा को तपा तपा कर वुझाता रहे इस प्रकार १०० वार करने पर हीरा की भस्म वने।

(४७) भेक मत्कुण रक्तेन भावयेदेक विंशतिम्।
मुहुः सूर्यपुटे स्थाप्यं पश्चान्नागार्जुनी रसैः॥
वज्र तुण्ड्याख्य जन्तोश्च जठरे स्थाप्य वज्रकम्।
मल पचक संयुक्तं निक्षिपेद्वज्रमूपके॥
पार्श्वे मृदान्धयित्वाऽथ महागजपुटे दहेत्।
भस्मी भवति तद्वज्र स्वाङ्गशीतल मुद्धरेत्॥ र की

मेढक के रक्त और खटमल के रक्त में वज्र को भिगोकर धूप मे सुखाता रहे, इस प्रकार उने २१-२१ सूर्य पुट दे तत्पश्चात् नागार्जुनी रस की भी इसी प्रकार २१ सूर्य पुट दे अर्थात् भिगोकर सुखाता रहे। फिर वत्तख के पेट में हीरा को रख कर मलपचक (कवूतर, पिंढुकी, कुक्कुट, चकोर, तीतरकी विष्ठा) से ढक सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा भस्म वने।

(४८) सुभावितं मत्कुणशोणितेन वज्रं चतुर्वार विशोषित च ।
छुच्छन्दरास्थिंहि विपाचितपुटे पुटेद्वराहेण च त्रिंशदेवम् ॥
ध्मातपुर्नध्मात शत हि वारान् क्वाथे कुलत्थस्य हि निक्षिपेच्च ।
सपेपयेत्त हि शिलातलेन मन.शिलाभिः सहकारये द्वटीम् ॥
क्षिप्त्वानिरुन्ध्यापि च मूषिकायांपुटान्यथाष्टौ च वनोपलैर्दहेत् ।
वारान् शत चापि ततोधमेत्त सम्मर्दित शोधितपारदेन ।
वज्राणि सर्वाणि मृती भवन्ति तद्भस्मक वारितरं भवेच्च ॥
श्रीसोमदेवेन च सत्यवाचा वज्रस्यमृत्यु कथितोहि सम्यक् ।
र प्र सु

हीरा को खटमल के रक्त का लेप कर सुखावे इस प्रकार ४ वार करे फिर छछूंदर के माँस के नुगदे मे रख सम्पुट कर वराहपुट की आच दे इस प्रकार ३० पुट दे फिर हीरा को कुठाली मे रख कर धमावे और कुलथी के काढे मे वुझाता रहे इस प्रकार १०० वार करे फिर हीरा को पीस वरावर का मैनसिल मिला कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट या मूपा मे वन्द कर वराह पुट की ८ पुट दे । फिर हीरे को कुठाली मे धमन कर कुलथी के काढे में वुझाता रहे, १०० वार वुझावे, फिर वरावर पारा मिलाकर धमन करे और पुट दे तो ऐसा करने पर श्री सोमदेव कहते है हीरा की भस्म निश्चय रूप से हो जाती है । यह मै सत्य कहता हू ।

(४९) मत्कुणरुधिरेलिप्त्वा पुटेत्सूर्यपुटेन च ।
आतपे शोषयेद्वज्रं प्रलिप्त्वा मत्कुणास्रजा ॥
भेक मूत्र मेघनाद रसमेकत्र कारयेत् ।
तस्मिन्निसेचयेद्वज्रं सप्त कृत्वा पुटं ततः ॥
तथा गण्डूपदेनापि पुटनान्मृति माप्नुयात् ॥ र का धे

हीरा को खटमल के रक्त मे डुवो कर धूप में सुखावे इस प्रकार ७ वार करे फिर मेढक के मूत्र मे भिगोकर सुखावे फिर चौलाई के रस मे भिगो-भिगो कर सुखावे इस तरह ७-७ वार करे फिर केंचुआ के नुगदे मे रख कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हीरा की भस्म हो ।

(५०) [१]रक्तोत्पलस्य मूलैश्च मेघनादस्य कुड्मलैः ।
[२]पिण्डितै वेष्टितध्मातं वज्र मायाति भस्मताम् ॥ [१]आ.क ,[२]र ज.नि

१ रक्त मूलस्य इति आनन्द कन्दे । २ पेपितै. इति आनन्द कन्दे ।

लाल कमल की जड (भिस) या लाजवन्ती की जड़, चौलाई और खटमल इन तीनो को पीस कर नुगदा वनाय उस में हीरा को रख कर सम्पुट कर गज-पुट की आच दे तो हीरा की भस्म वने । कितने पुट में वने । इस की सख्या नहीं दी ।

(५१) विलिप्तं मत्कुणस्यास्रक् सप्तवारं विशोपितम् ।
कासमर्दरसपूर्णे लोहपात्रे निवेशयेत् ॥
सप्तवारं परिध्मातं वज्र भस्म भवेत्खलु ।
ब्रह्म ज्योतिर्मुनीन्द्रेण क्रमोऽयं परिकीर्तितः ।

र. र स, पा. स, र. ज नि., र प्र सु, रसे. चू ।

हीरा की कनी को खटमल के रक्त में भिगो कर सुखावे इस प्रकार ७ वार करे, फिर कसौदी के रस को लोहे के पात्रमे डाले और हीरा को तपा-तपा कर उस रस में वुझावे ऐसे ७ वार करे तो हीरा की भस्म वने । मुनियो में श्रेष्ठ ब्रह्मज्योति नामक रस सिद्ध ने इसे कहा है ।

(५२) कास्यपात्रस्य भेकस्य मूत्रे वज्रं तु भावयेत ।
त्रिसप्त कृत्वा संतप्तं वज्रमेव मृतं भवेत् ॥ रसे. सा. स., शा, ध, आ. वे. प्र, वृ. यो. त, पा स, र ज. नि., चि र., र. का. धे, रसे चि.,
चिकित्सारत्नाभरणे रसकामधेनौ रसेन्द्रचिन्तामणौ भिन्नपाठ प्रतिपादित ।
रस कामधेनौ अजशृंग गत ध्मात इति विशेप ।

मेढक को पकड़ कर कास्यपात्रमे मुतावे उसका मूत्र एकत्र कर उस मूत्रमे २१ वार तपा-तपा कर हीरा को वुझावे, रस कामधेनुमें लिखा है कि वकरे के सीग मे रख कर तपावे फिर वुझावे इस प्रकार २१ वार करने से हीरा की भस्म हो ।

(५३) वज्रं स्त्रिरजसालिप्वा शोपयित्वाऽऽतपेखरे ।
तप्तं तप्त त्रिधा भेकमूत्रेण किलसेचयेत् ॥
भवेल्लाजाकृतिः प्राय सत्यंगुरुवचो यथा । र. का धे

हीरा को स्त्रीके रजमें भिगो कर धूप मे सुखावे, इस प्रकार ७ वार करे फिर उसे तपाकर मेंढक के मूत्र में वुझावे इस प्रकार ३ बार करने पर ग्रन्थ कार कहता है कि हीरा खील हो जाता है ।

(५४) वज्रं महानदी शुक्तौ क्षिप्तं भाव्यं मुहुर्मुहुः ।
स्नुह्यर्कोन्मत्त कन्यानां द्रवेणैकेन [1] चाह्निकम् ॥
कृष्णकर्कट [2] मांसे तत्क्षिप्त्वा चा वेष्टयेद्बहिः ।
भूनागस्य मृदासम्यग् [3]ध्मातं भस्मत्व माप्नुयात् ॥
र., ज. नि, आ क

१ चातपे इति आनन्दकन्दे । २ मासेनपिष्टतद्वै इति आनन्द कन्दे । ३ वृत इति आनन्द कन्दे ।

समुद्री सीप मे हीरा को रख कर थोहर आक दूध धतूरा कुमारी रस को क्रमसे उस पर डाल कर अग्निपर पुट दे या धूपमे सूर्य पुट दे, जब उस पर कई तहे भावना की चढ जाय तो उसे काले केकडे के मास के नुगदे में रख कर केंचुवे की मिट्टी चढाय कुठाली में रख धमावे इस तरह कई वार करे तो हीरा की भस्म हो ।

(५५) वैक्रान्त भस्मनासार्धं पेपयेदम्लवेतसम् ।
तद्गोलके क्षिपेद्वज्रं मन्धमूपागतं धमेत् ॥
सेचयेदश्वमूत्रेण पूर्वगोले [1] पुनः क्षिपेत् ।
रुद्ध्वा ध्मात पुनः सेच्य मेवं कुर्यात् [2]त्रिसप्तकम् ॥
म्रियते नात्र सन्देहः सर्व कार्येषु योजयेत् । ऋ. ख, आ क

१ विनिक्षिपेत् इति आनन्द कन्दे । २ त्रिसप्तवा इति आनन्दकन्दे ।

हीरा से आधा वैक्रान्त भस्म ले कर अम्लवेत के रस में घोट नुगदा वनाय उसमे हीरा रख कुठाली मे विठाकर धमन करे और घोडे के मूत्र में वुझावे, इस प्रकार २१ वार करे तो हीरा भस्म हो ।

(५६) स्नुहीक्षीरेण विमलं पिष्ट्वा तद्गोलके क्षिपेत् ।
वज्रं [1]निरुद्ध्य मूषां तु शुष्कांतीव्राग्निना धमेत् ॥
[2]तप्तमश्वस्य मूत्रेतु क्षिप्त्वा वज्रं समाहरेत् ।
इत्येव सप्तधा [3]कार्यं ततस्तालकमल्कुणैः ॥
कृत्वा गोलं क्षिपेत्तस्मिन् वज्रं मूषां निरुध्य च ।
धामितं पूर्व वत्सेच्यं सप्त वारैर्मृतं भवेत् ॥ ऋ ख, आ. क.

१ निक्षिप्य इति आनन्द कन्दे । २ क्षिप्त्वा अश्वस्य मूत्रे तु इति आनन्द कन्दे । ३ कुर्यात् इति आनन्द कन्दे ।

विमल को थोहर के दूध में घोट नुगदा वनाय उसमे हीरा को रख कर धूप में सुखावे फिर तीव्र अग्नि में रख कर धमावे लाल होनेपर घोडे के मूत्रमें वुझावे, इस प्रकार ७ वार करे फिर हरिताल को खटमल के रक्त मे पीस कर नुगदा वनाय उसमे हीरा रख कर कुठाली में विठा कर फिर धमावे हीरा के लाल हो जाने पर उसे घोडे के मूत्र मे वुझावे, इस तरह ७ वार करे तो हीरा की भस्म हो ।

(५७) मेषशृङ्ग भुजगास्थिकूर्म्म [1]पृष्ठाम्लवेतसैः ।
[2]शशदन्त समं पिष्ट्वा वज्रीक्षीरेण गोलकम् ॥
कृत्वा तन्मध्यगं वज्रं म्रियते ध्मात [3]वह्निना ।
र रा. सु , पा. म., भा. प्र , वै द , र.ज. नि., भा भै र

२गजदन्त इति रस जलनिधौ १ पृष्ठशिलाजतु इति ३ मेवहि इति रस जलनिधौ र. का धेनौ -

मेढा के सीग, सर्पास्थि, कछुआ की खोपरी, खरगोश के या हाथी के दात अम्लवेत, (रस कामधेनुकार कहता है अम्लवेत रस के स्थान पर शिलाजीत मिला कर थोहर के दूध) की भावना दे नुगदा वनाय उसके मध्य हीरा को रख कुठाली मे विठा कर धमन करे तो हीराकी भस्म वने ।

(५८) मेषशृंग भुजगास्थि कूर्मपृष्ठं शिलाजतु ।
स्नुक्कीलाल रसस्तन्यं कान्तपाषाणमेव च ॥
वज्रकं चापि वैक्रान्त तन्मध्ये प्रक्षिपेत्प्रिये ।
तीव्रानले पुटंदत्त्वा पुटान्त यावदागतम् ॥
कुलत्थ कोद्रवं चापि हयमूत्रेण पेषयेत् ॥
तप्त निषेचयेत्तस्मिन्यावद्भस्मतां गतम् ।
एष कामान्तिको योगो वज्र मारण मुत्तमः ॥ र का धे.

मेढा के सीग, सांप की हड्डी, कछुआ की हड्डी,शिलाजीत,थोहर दूध, रक्त, स्त्रिरज, स्त्रि का दूध, कान्तपाषाण इनमे हीरा या वैक्रान्त कोई भी रख कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से कई वार पुट दे तो भस्म वने ।

अथवा—कोदव, कुलथी, को घोडे के मूत्र मे पीस कर उसके नुगदे में हीरे को रख कुठाली मे विठा कर धमावे, लाल होने पर हीरा को घोडे के मूत्र मे और कुलथी, कोदो के काढे में वुझावे, इस प्रकार कई वार करने पर

हीरा भस्म हो जाता है, यह किसी कपाली का कहा हुआ योग है। जो हीरा को मारने में उत्तम है।

(५६) मेषश्रृङ्ग भुजङ्गास्थि कूर्मपृष्ठ शिलाजतु।
गन्धकं कान्तपाषाणं मुनिपुष्प सतालकम्॥
त्रिक्षारं पञ्चलवणं मेषश्रृङ्गीन्द्रवारुणी।
वज्रवल्ली मूषकर्णी वदरी कुड्मलानि च॥
मूषकस्य मलं स्तन्यं स्नुह्यर्क क्षीरमत्कुणः।
पञ्चाङ्गा शरपुंखांच [1]हस्तिनीरं नृछागयोः॥
पेटरीबीजं [2]स्त्रिपुष्पं परावतमलं शिलाम्।
पुष्पाणि चैव वाकुच्याः पचाङ्ग [3]निम्बकस्य च॥
धात्री वृक्षस्य पंचाङ्गगोरम्भा च मूत्रकम्।
हन्सपादी वज्रकन्दं वृहतीमूल सूरणम्॥
गोजिह्वां कर्कटं मांसं मूत्रवर्गं च मिश्रयेत्।
एतत्समस्त व्यस्तं वा यथालाभं सुपिण्डितम्॥
तत्पिण्डे निक्षिपेद्वज्रमन्धमूषागतं [4]पुटेत्।
कुलत्थ कोद्रवं पिष्ट्वा हयमूत्रै विलोडयेत्॥
तन्मध्ये सेचयेत्तप्तं मूषापुट विनिर्गतम्।
एवं पुनः पुनः कुर्यादेकविंशतिवारकम्॥
आदाय[5]पूर्वजं वज्रं ताले मत्कुण पेषिते।
गोलके निक्षिपे[6]द्रुध्वा मूषां तीव्रानले धमेत्॥
इत्येवं सप्तधा धाम्यं हयमूत्रै र्निषेचयेत्।
अनेन क्रमयोगेन मृतं भवति निश्चितम्॥ क्ष ख, आ क

१ अस्थिनिखरमेषयो। २ श्रीपुष्प। ३ तिमिरस्य च। ४ धमेत्। ५ तत्पुनर्वज्र। ६ दूर्व्वं इति आनन्दकन्दे पाठभेदा दृश्यन्ते।

मेढा के सींग, सर्पास्थि, कछुआपृष्ठास्थि, शिलाजीत, वलि, कान्तपाषाण, अगस्तिया के फूल, हरिताल, सुहागा, सज्जीखार, जवाखार, पाचो नमक, मेढासिंगी, इन्द्रायण, अस्थिसहारी, मूषाकर्णी, वेर, मुर्गे की विष्ठा, चूहें की विष्ठा, स्त्रिदुग्ध, थोहर दुग्ध, आक दुग्ध, खटमल रक्त, शरफोका पचांग, हाथी का मद, मनुष्य का रक्त, वकरे का रक्त, गधा या भेड की हड्डी, पतवार के बीज, स्त्रि

का रज, कबूतर की विष्ठा, मैनसिल, बावची के फूल, निम्बू का पचाग, आवले का पचाग, गोमूत्र, केला रस, मेढक मूत्र, हन्सराज, वज्रकन्द, बडीकटेली के फल, जिमीकन्द, गोजिया, केकड़े का मांस, पशुओ के मूत्र यह सारे या कुछ चीजें जो मिल सके सब को कूट कर नुगदा बनाय उसमे हीरा रख कर कुठाली में बिठाय धमन करे और लाल होने पर निकाल कुल्थी के काढे में बुझावे। इस प्रकार २१ बार करे, फिर हरिताल को खटमल के रक्त मे पीस उसका लेप हीरा पर करके उसीके नुगदेमे रख तीव्र आच पर धमावे, इस प्रकार ७ बार करे तो हीरा भस्म बने। यह सिद्ध योग कहा है।

नोट—इस योग में हीरा मारनेके लिये प्रयुक्त हुए किसी भी द्रव्य को नही छोडा। इसने अपने इस विधि-विधानमें सबका समावेश कर दिया कि इन सबो के मेल से तो हीरा अवश्य ही मृत हो जायगा पर इन सबो के मेल से भी हीरा भस्म कठिनता से होती है यह मेरा निश्चित मत है।

(६०) आमकस्य मुखं ताप्यं पेटारीबीज टंकणम्।
क्षीरे चोत्तरवारुण्या गन्धकं तालकं शमी॥
चिञ्चाबीजं मेषशृङ्गी स्त्रिपुष्पं चाम्लवेतसम्।
पञ्चाङ्ग शरपुङ्खायाः शशदन्ताः शिलाजतु॥
एतत्समस्तं व्यस्तं वा यथालाभं सुचूर्णयेत्।
स्नुह्यर्कोन्मत्त वारुण्या क्षीरैः स्तन्यैर्विमर्दयेत्॥
तद्गोलके क्षिपेद्वज्रं रुद्ध्वा मूषां धमेद् दृढम्।
गडुची सैंधवं हिंगु समस्तोत्तरवारुणीम्॥
क्वाथैः कौलत्त्थकैः पिष्ट्वा तस्मिन्द्रावे निषेचयेत्।
तद्वज्रं पूर्ववद्गोले क्षिप्त्वा रुध्वा धमेत्तथा॥
सेचनानां पुनः कुर्यादेकविंशति वारकम्।
तालमत्कुणयोगेन सप्तवारं पुनर्धमेत्॥
सेचयेदश्वमूत्रेण तद्वज्रं म्रियते ध्रुवम्। ऋ ख.

कान्तलोह, माक्षिक, पतवार बीज, सुहागा, इन्द्रायण, बलि, हरिताल छोकर, इमलीबीज, मेढासिगी, स्त्रिरज, अम्लवेत, शरफोका पचाग, खरगोश के दात, शिलाजीत यह समस्त चीजें या इनमे जो जो मिलें उनका चूर्ण बनाय थोहर, आक के दूध, इन्द्रायण का रस स्त्रिदुग्ध मे खरल कर नुगदा बनाय उसके

मध्य हीरा को रख कुठाली में विठा कर धमावे जब लाल हो जाय उसे गिलोय सेंधा नमक, हीग, इन्द्रायण, कुल्थी सब बराबर ले इनका क्वाथ बनाय इस क्वाथ में बारम्बार हीरा को तपा-तपा कर बुझाता रहे। २१ बार बुझावे हरिताल को खटमल के रक्तमे पीस कर हीरा पर लेप कर कुठालीमे विठा कर फिर धमावे, लाल होने पर घोडे के मूत्र मे बुझावे, इस तरह सात बार बुझाने पर हीरा भस्म बने।

(६१) गरुडं गन्धकं तालं बदरीरस संप्लुतम्।
अश्वत्थ स्वरसे भाव्य पुटेत्पिण्डं सरक्तकम्॥
म्रियते तेन योगेन ब्रह्मवज्रं हि तत्त्वतः। र रा सु, र ज नि

माक्षिक, बलि, हरिताल को बेर के रस मे घोट नुगदा बनाय उसमे हीरा को रख कर आग पर लाल करे जब हीरा रक्त तप्त हो जाय निकाल कर पीपल के रस में बुझावे इस प्रकार २१ बार बुझाने पर हीरा की भस्म बने।

(६२) दरद माक्षिकं तालं कुनटी तारमाक्षिकम्।
अभ्रक टंकणं तुत्थ मंजनं स्फटिकाशिला॥
एतत्सर्वं मृत शीघ्रं सत्यं सत्यमयोदितम्। रससागर

हिंगुल, माक्षिक, हरिताल, मैनसिल, विमल, अभ्रक, सुहागा, तुत्थ, अञ्जन, फिटकिरी, शिलाजीत इन सब का नुगदा बनाय उसमें हीरा को रख कर सम्पुट कर गजपुट की आंच दे या धमन कर बुझाता रहे तो हीरा भस्म बने।

(६३) माक्षिक मेषशृङ्गं च शिलागन्धकटङ्कणम्।
वैक्रान्तं तालकं चैव वज्रीक्षीरपरिप्लुतम्॥
लेपं मूषोदरे कृत्वा समावर्तं तु कारयेत्।
म्रियते हीरकस्तत्र नात्र कार्या विचारणा॥ र का धे

माक्षिक, मेढासिंगी, मैनसिल, बलि, सुहागा वैक्रान्त हरिताल सब बराबर लेकर थोहर के दूध में घोट नुगदा बनाय हीरा को उसमे रख तथा इसी का लेप कुठाली मे करके हीरा को विठा कर धमावे और लाल होने पर कुलथी के काडे मे बुझावे तो हीरा की भस्म बने।

(६४) तालकासीस सौराष्ट्रीह्यपामार्गस्य भस्म च।
पिष्ट्वा कौलत्थकैः क्वाथै स्तस्मिन् वज्रं सुतापितम्॥

क्षिप्त्वा त्रिसप्तवाराणि म्रियते नात्र संशयः।
ऋ ख., आ क, र का धे.

रसकामधेनौ अस्पष्टविधि तथा भिन्न पाठ निर्दिष्ट ।

हरिताल, कसीस, फिटकिरी, अपामार्ग की राख, आक की जड़ इनको कुलथी के काढे मे पीस नुगदा बनाय उसमें हीरा को रख कर आग में तपावे और कुलथीके काढेमें बुझावे, इस प्रकार २१ वार बुझानेपर हीराकी भस्म बने ।

(६५) गन्धाश्मकं घृत ताल मेषशृङ्गसमांशकम् ।
विषं कान्तं स्नुहीक्षीरं नारीपुष्पं पयः प्लुतम् ॥
एभिर्विलिप्त मूषायां धमनात् शूद्रमारणम् । र ज नि, र.रा सु,

वलि, घी, हरिताल, मेढासिंगी, मीठातेलिया, कान्तलोह, थोहर का दूध इन सब को स्त्रि के दूध में घोट नुगदा बनाय उसमें हीरा को रख कर धमन करे और लाल होने पर स्त्री के दूध में बुझावे इस प्रकार २१ वार करे तो हीरा की भस्म बने ।

(६६) गन्धकं च शिलाधातुं भ्रामकस्य मुख तथा ।
शशकस्य तु दन्ताश्च वेतसाम्लेन पेषयेत् ॥
अनेकसिद्धं कल्केन मूषालेपं तु कारयेत् ।
अन्धमूषागतं ध्मातं वज्रं तु म्रियते क्षणात् ॥ र का धे

वलि, मैनसिल, कान्त लोह, खरगोश के दात सब बराबर लेकर अम्लवेत के रस में पीस नुगदा बनाय इसमें हीरा को रखे और इसी का लेप कुठाली मे करके उसमें हीरा को रख कर सम्पुट कर धमावे तो हीरा भस्म बने ।

(६७) तालकं गन्धकं म्लेच्छं ताप्य कर्पूर टङ्कणम् ।
चिञ्चास्थिमेषशृङ्गं च स्त्रिरजः परिपेषितम् ॥
मूषालेपं गते ध्मातं वज्रं तु म्रियते क्षणात् । र का धे, र त

रसतरंगिण्या त्रुटित पाठ ।

हरिताल, वलि, हिंगुल, माक्षिक, कपूर, सुहागा, इमली के बीज, मेढासिंगी, इन सबो को कूट कर स्त्रि के रज में पीस नुगदा बनाय उसमें हीरा रखे और इसी का लेप कुठाली में करके उसमें हीरा रख कर धमावे तो हीरा की भस्म बने ।

रसतरंगिणीकारने कपूर सुहागा नही डाला और उसने वेर के रस और

पीपलके रसकी ७-७ भावना दे उक्त नुगदे में हीरा रख सम्पुट कर गजपुट की आंच दे ऐसा लिखा है। कहता है कई पुट में भस्म होती है किन्तु माक्षिक पहिली पुट में डाले ऐसा आदेश देता है।

(६८) रस हंस शिलां तालं गरुड गन्ध टंकणम्।
भूनागं विमलं वङ्गं मेषशृङ्गी च चुम्बकम्॥
शुक्रं शोणितसंयुक्तं स्वेदनोपधिभावितम्।
मूषालेपप्रयोगेन रत्नान्नां मारणं ध्रुवम्॥
एवं वज्रभवं भस्म वज्रस्थाने नियोजयेत्। र रा सु, र. ज. नि.

पारा, हिंगुल, मैनसिल, हरिताल, माक्षिक, वलि, सुहागा, केंचुआ, विमल, वंग, मेढासिंगी, कान्त पाषाण, स्त्रिरज रक्त इन सब चीजों को कुनयी के काढे में घोट नुगदा बनाय उसमें हीरा रखे और इसी नुगदे का लेप कुठाली में करके उसमें हीरा विठाय धमावे तो हीरा की भस्म बने।

(६९) गन्धकामल साराख्यो हरितालं मनःशिला।
तुर्यः सुवर्णमाक्षीकं कर्तव्याः समतुल्यकाः॥
चत्वारो वारिणा पिष्ट्वा कार्यास्ते राबसदृशा।
पुष्पाल्या घन पुष्पाणि निसाहायां प्रवर्तते॥
पिण्डं पिण्डस्य कृत्वाऽथ तन्मध्येजात्याहीरकान्।
क्षिप्त्वाऽथ गोलकं कृत्वा वज्र मूषान्तरे क्षिपेत्॥
ध्मातां तामग्नि वर्णाभां राबामध्ये क्षिपेन्मुहुः।
एवमित्थं विधिः कार्या वारानेकचतुर्दश।
अनायासेन वज्राणि भस्मानि स्युर्न संशय.॥
चूर्णं विधायतेषां च प्रक्षिपेत्कुप्पके सुधी। रसाध्याय

वलि, हरिताल, मैनसिल, माक्षिक सब बराबर सब को जल से पीस कर पतला राब सदृश कल्क बनावे। फिर अनेक वृक्षो के फूलो का नुगदा बनाय उस में आभूषण के अयोग्य हीरा को भर कर कुठाली में रख कर धमन करे जब हीरा लाल वर्ण हो जाय निकाल कर उक्त राब सदृश कल्कमे बुझावे, इस प्रकार १४ वार करने पर हीरा की भस्म हो। इसे पीस कर शीशीमे रख ले।

हीरा भस्म के गुण—इस की भस्म शरीर को दृढ करती है। शोथ, क्षय, भगन्दर, प्रमेह, पाण्डु, शोथ में लाभदायी है। लिखा है "सर्व रोगापहारी"

समस्त रोगो को दूर करती है। इस की मात्रा १-२ चावल है। उचित अनुपान से देवे ।

विमल भस्म

विमल वास्तव में लोह वलि के योग से निर्मित एक खनिज द्रव्य है जिस का वर्णन उपोद्धात पृष्ट १५८ पर हम कर चुके है। इस के भस्म की विधि प्रायः वही है जो माक्षिक की दी है, तथापि जो अन्य कुछ ग्रन्थो में मिलती है निम्न हैं।

(१) कुलत्थस्य कषायेण घृष्ट्वा तैलेन वा पुटेत् ।
तैलेन वाऽजी मूत्रेण म्रियते तार माक्षिकम् ॥ वै द.

विमल को कुलथी के काढे में, या एरण्ड तेल मे या एरण्ड तेल और घोड़े के मूत्र में घोट कर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो विमल की भस्म बने ।

(२) गन्धाश्म लकुचाम्लैश्च म्रियते दशभिःपुटैः ।
र. च., र. र. स., र. प्र. सु., र. त., र. रा. सु

अथवा विमल और वलि को वडहलके रसमें घोट टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इस विधि से १० पुट दे तो विमल की भस्म बने ।

(३) विमल चूर्ण को त्रिफला की ३ भावना दे सुखाय फिर एक भावना घी की दे तवे पर रख आच दे और करछी से हिलाता रहे जब घी जल जाय विमल को घोटता रहे जब लाल हो जाय फिर घी डाल कर रगड़ता रहे इस प्रकार ३ बार करने पर विमल की लाल रगकी भस्म बन जाती है। सि.यो.स.

वैक्रान्त भस्म

वैक्रान्त क्या है ? इस के सम्बन्ध में उपोद्धात पृष्ट १३३ पर देखो ।

(१) वैक्रान्तं वज्र वच्छोध्यं नीलं वा लोहितं तथा।
हयमूत्रे तु तत्सेच्यं तप्त तप्तं द्विसप्तधा ॥
[1]ततस्तु मेषशृंग्युत्थ पंचांगे गोलके क्षिपेत् ।
[2]पुटेन्मूषा पुटेरुद्ध्वा कुर्यादेवं च सप्तधा ॥

र चू, र का धे., र च, आ क, ऋ ख, र र., र च, र चिं, पा स, र. रा सु., र. ज नि

१ तत्तच्चोत्तर धारण्या रसरत्नाकरे इति पाठ । २रुद्ध्वामूषापुटे पच्यादुद्धृत्य गोलके पुन रसरत्नाकरे इति पाठ. ३ क्षिप्त्वा रुद्ध्वासचेदेव सप्तधा भस्मता व्रजेत् रस जलनिधौ इति पाठ ।

रस चण्डांशो आनन्द कन्दे ऋद्धिखण्डे वादि खण्डे तथा रस चूडामणौ रस काम धेनौ भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

वैक्रान्त को तपा-तपा कर घोड़े के मूत्र में १४ वार बुझावे, पुन. मेढासिंगी पञ्चाङ्ग का नुगदा वनाय उसमें रख सम्पुट कर गजपुट की आंच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो वैक्रान्त की भस्म वने । आनन्द कन्द, ऋद्धि खण्ड, रस चण्डांशु तथा रस रत्नाकर कार ने मेढासिंगी के स्थान पर इन्द्रायण के नुगदे का प्रयोग लिखा है ।

(२) वैक्रान्तं वज्रवच्छोध्य ध्मातसिक्तंनृमूत्रके ।
वज्रवन्मृतिमायाति वज्रस्थाने प्रयोजयेत् ॥ र. रा सु.

वैक्रात को हीरे की तरह शुद्ध कर मनुष्य के मूत्र में वुझावे, हीरा के सदृशही इस का मारण करे ।

(३) कुलत्थ क्वाथ संस्विन्नो वैक्रान्तः परिशुध्यति ।
म्रियतेऽष्टपुटैर्गंध निम्बुकद्रव संयुतम् ॥ र रा सु, र ज नि

कुलथी के क्वाथ में स्वेदन किये हुए वैक्रान्त पर वलि को निम्बू रसमें घोट उसके मध्य वैक्रान्त रख कर पुट देने से ८ पुट में भस्म हो ।

(४) वैक्रान्तकस्तु विधिवत्त्रिदिनं विशुद्धो संस्वेदितः क्षारपटूनि दत्त्वा ।
'अम्लेषु मूत्रेषु कुलत्थरंभानीरेऽथवाकोद्रव वारिपक्व. ॥ र रा सु

वैक्रान्त को नमक और क्षार के जल में ३ दिन स्वेदन कर फिर घोड़े के मूत्र, निम्बू रस, कुलथी और कोदो के काढो में तपा-तपा कर वुझावे, जव खस्ता हो जाय उक्त क्वाथो में भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे तो वैक्रान्त की भस्म वने ।

(५) वैक्रान्तं चूर्णित सूक्ष्मं सुरासुर नमस्कृतम् ।
व्याघ्रि कन्दस्य मध्यस्थं स्थापयित्वा पुटे पचेत् ॥

रसार्णव, र का धे

विल्लौर चूर्ण को वारीक कूट कर व्याघ्री कन्द के रस में खरल कर टिकिया वनाय सुखाय व्याघ्रि कन्द के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आँच

दे तो बिल्लौर की भस्म बने ।

(६) म्रियतेऽष्ट पुटैर्गन्धनिम्बुकद्रव संयुतः ।

र र, र का. वे., र. च, रसे. चू, र र. स, पा स

(७) गन्ध निम्बू रसै मंद्य. पुटितो म्रियते ध्रुवम् ॥ र प्र स.

वैक्रान्त चूर्ण मे बराबर बलि मिला कर निम्बू रस मे घोट टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इसी प्रकार ८ पुट दे तो वैक्रान्त की भस्म बने ।

(८) वैक्रान्तस्य पलैकन्तु पलैकं टंकणस्य तु ।
रवि क्षीरे दिनं भाव्यं मर्द्यं शिग्रु द्रवैर्दिनम् ॥
गुञ्जा पिण्याक वह्नीनां प्रतिक्षार नियोजयेत् ।
अनेन गुलिकां कृत्वा कोष्ठी यन्त्रे धमेद्ध्रुवम् ॥
शंख कुन्देन्दु सकाशं सत्त्वं वैक्रान्तजं भवेत् । आ क

वैक्रान्त चूर्ण के बराबर सुहागा मिलाय आक दूध की १ दिन भावना दे पुन सोहजना रस की १ दिन भावना दे टिकिया बनाय सुखाय गुञ्जा, तिल की खल, चित्रक, प्रसारणी क्षार इन सब को बराबर ले कूट इनका नुगदा बनाय इसके मध्य वैक्रान्त की टिकियो को रख उसको कुठाली में रखकर धमावे तो एक बार के धमाने पर वैक्रान्त की श्वेत सत्त्वरूप भस्म बने ।

(९) मूत्रेऽश्वस्य विभावितं स्त्रिचतुरैर्ध्मातः पुटैर्मारितो ।
योज्यो वज्रपदे सुबुद्धिभिरयं यद्वज्र तुल्योगुण' ॥ र.प

वैक्रान्त को तपा-तपा कर अश्व मूत्र में बुझावे ७ बार करने पर वज्र भस्म हो । इसकी भस्म के वज्र तुल्य गुण हे ।

(१०) ताम्रवर्णञ्चवैक्रान्त हिंगुलेन समन्वितम ।
मर्दित चाम्लवर्गेण ह्रेमाद्यैर्भस्म कारक. ॥
रस म, र यो. सा

लाल वैक्रान्त को तपा-तपा कर निम्बू रस मे बुझावे, फिर चूर्ण कर बराबर का हिंगुल मिलाय निम्बू रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो वैक्रात भस्म बने ।

(११) वैक्रान्त को मज्जी के घोलमें तपा-तपा कर २१ वार बुझावे, फिर इसी पानी मे भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की

आच दे तो वैक्रांत भस्म वने।   स ग

(१२) वैक्रान्त को तपा-तपा कर हाथी दात के क्वाथ में २१ वार वुझावे फिर इसी पानी की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय हाथी दात के वुरादे के नुगदे में रख सम्पुट कर ८ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो वैक्रान्त की भस्म वने।   स. अ

(१३) वैक्रान्त को सिरस के रस मे तपा-तपा कर वुझावे जव खस्ता हो जाय सिरस के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो वैक्रान्त की भस्म वने।   नू. वि

वैक्रान्त भस्म के गुण

वैक्रान्त भस्म के गुण हीरे की भस्म के समान लिखे है। यह विप विकार, ज्वर, कुष्ठ, क्षय, पाण्डु, उदररोग, उन्माद, श्वास, कास, प्रमेह में लाभदायी लिखी है।

शङ्ख भस्म

(१) द्वौ भागौ गन्धकस्याऽष्टौ शङ्ख चूर्णस्य योजयेत्।
एकमेव रसस्यांशमर्क क्षीरेण मर्दयेत्॥
चित्रकस्य द्रवेणैव शोषयित्वा पुनः पुनः।
एकी कृत्य रसेनाऽथ क्षारं दत्त्वा तदर्द्धकम्॥
अर्कक्षीरेण कुर्वीत गोलकान् च विशोषयेत्।
निरुद्ध्य चूर्ण लिप्तेऽथ भाण्डे दद्यात्पुटं तथा॥
लोकनाथ रसोह्येष ग्रहणी रोग कृन्तनः।
गुञ्जा चतुष्टयं दद्यान् मरिचाऽऽज्य समन्वितम्॥

र र सु, र रा. सु, र यो सा

पारा एक भाग, वलि २ भाग, शख चूर्ण ८ भाग पारद वलि की कज्जली वनाय उस मे शख चूर्ण मिला कर आक के दूध और चित्रक क्वाथ की ७-७ भावना दे टिकिया वनाय सम्पुट मे रख गजपुट की आच दे तो लोकनाथ नामक शख की भस्म वने। मात्रा ४रत्ती। मिर्च घी के साथ देनेपर ग्रहणी रोग मे लाभ होता है, पथ्य इस मे दही भात देवे।

(२ पुटी) शुद्धस्य शङ्ख खण्डानि शरावे स्थापयेत्सुधीः।

शरावेण पिधायाथ यत्नात्सन्धिं प्रलेपयेत् ॥
आतपे त्वथसंशोष्य पुटेद्‌गजपुटे भिषक् ।
स्वाङ्ग शीतं समुद्धृत्य खल्वे संचूर्णयेद्भिषक् ।
चूर्णितञ्चाथ विज्ञाय सम्पुटस्थं तथा पुटेत् ।
एवं पुटद्वयेनैव शंखको मृति माप्नुयात् ॥ र त

शख को सम्पुट में रख गजपुट की पुट दे पुन निकाल कूट पीस कर पुन सम्पुट कर गजपुट की पुट दे तो शख भस्म हो ।

(२) शुद्धो वुभुक्षित· सूतो भागद्वयमितो भवेत् ।
तथा गन्धस्य भागौ द्वौ कुर्यात्कज्जलिकां तयो. ॥
सूताच्चतुर्गुणेष्वेव कपर्देषु विनिक्षिपेत् ।
भागैकं टंकणं दत्वा गोक्षीरेण विमर्दयेत् ॥
तथा शंखस्य खण्डानां भागानष्टौ प्रकल्पयेत् ।
क्षिपेत्सर्वं पुटस्यान्तचूर्णं लिप्त शरावयोः ॥
गर्ते हस्तोमिते धृत्वा पचेद्‌गजपुटे न च ।
स्वांगशीतं समुद्धृत्य पिष्ट्वा तत्सर्वमेकतः ॥
षट्‌गुञ्जा सम्मिते चूर्णमेकोन त्रिंशा दूषणैः ।
घृतेन वातजे दद्यान्नवनीतेन पित्तजे ॥

शा ध, र च, वै क, यो चि, नि, र, वै चि, र का धे, र. प्र. सु, भै. सा, यो, म, रसा, र. र म मा, रसा स, रसा प, चि र भ, टो, र मृ,

पारा वलि वरावर कज्जली वनाय इससे चौगुनी पीली कौडी मे भर कर सुहागे को दूव से पीस कौडियो का मुह वन्द कर कज्जली से आठ गुना शख के टुकडे लेकर उस के मध्य कौडिया रख कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शंख कौडी की लोकनाथ नामक भस्म वने । इसे पीस रखें, इसकी मात्रा ६ रत्ती है । अनेक अनुपान से अनेक रोगो मे इस को देते हैं । यह प्राय जीर्ण विषम ज्वर की एक अच्छी औषधि है ।

(३) अन्ध मूषा गत शंखं पादमेक विचक्षण. ।
मापार्द्धं टंकणं मिश्र दण्डयन्त्रेण मारयेत् ॥

पर लेप कर सम्पुट में वन्द कर तीव्र अग्नि में दे या गजपुट में रखे तो शख भस्म हो। ग्रन्थकार दण्ड यन्त्र मे रख कर मारना वतलाता है।

(४) वन्ध्या लांगुलिका मूल शंखं तु द्विगुणं तयो.।
त्रयाणां भावयेच्चूर्णं त्र्यह जम्बीरजद्रवैः॥
रुद्ध्वा गजपुटे पच्यात्त त्क्षार मरिचै घृतै.।
कर्षमात्रं पिवेच्छूली तत्क्षणात्सुखमाप्नुयात्॥

र. र. स, भा भै र.

ककोडा कन्द, कलिहारी दोनो से दुगुना शख चूर्ण इन तीनो को जम्वीरी निम्वू के रस की भावना दे टिकिया वनाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शंख की भस्म हो। इस शंख भस्म में काली मिर्च चूर्ण मिला कर घी के साथ चटाने से तत्काल शूल नष्ट होता है। इस का नाम शूलहर क्षार है।

(५) शंख शम्बूक शुक्तिनां कपर्दविद्रुमस्य च।
कन्यायां पुटनाद्भस्म जायते सकृदुत्तमम्॥ रसा सा.

शंख, घोघा, सीप, कोडी, मूगा इन की भस्म वनाने के लिये कुमारी के गूदे मे रख कर सम्पुट कर गजपुट की पुट देने पर प्रत्येक की भस्म हो जाती है।

(६) शंख कुक्षि पूरित शतमल्लं पुनर्दिनेश दुग्धेन।
दन्तावल पुटसिद्धः श्वासे कासे ज्वरे प्रसिद्धोऽयम्॥

सि. भै मा, र यो सा.

शख के पेट मे ५ तो० सोमल भर कर उस मे आक दूध भर सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने, इसकी मात्रा १ रत्ती है। यह श्वास, कास, ज्वर में प्रसिद्ध योग है।

(७) शख के टुकडो को इसी तरह जला दे या सम्पुट मे वन्द करके गजपुट मे फूक दे भस्म हो जायगी। मखजन

(८) शख के वरावर वलि मिलाय सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो शख भस्म वने। र. ति.

(९) शंख को वथुआ के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने। म. अ.

(१०) शंख को निम्वू रस में भिगोय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने। अ ति.

(११) शख को गोखरु के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शंख भस्म वने । अ. ति.

(१२) शख को गोदुग्ध मे भिगो कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने । अ स.

(१३) शंख को आक दूध मे भिगो कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने । अ. स.

(१४) शंख को २० दिन तेल सरसो मे भिगो कर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने । अ. स , मि. ख.

(१५) शंख को तपा-तपा कर निम्बू रस में वुझावे फिर निम्बू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने । स. अ

(१६) शंख को तपा-तपा कर निम्बू रस में वुझावे फिर जल जमनी के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने । स अ.

(१७) शख को निम्बू रस में तपा-तपा कर वुझावे फिर शराव की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय कुरण्ट (वयुआ भेद) के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने । स. अ.

(१८) शख को निम्बू रस मे उवाल लें फिर निम्बू रस में वुझाकर सम्पुट मे रख गजपुट की आच दे तो शख भस्म वने । सि. यो. स

उक्त भस्मों के विशेष गुण—न० ७ की भस्म श्वास, कास, रक्त पित्त, मन्दाग्नि मे, न० ९ की भस्म सर्प विष, अलर्क विष मे, न० १० की अतिसार, आमातिसार में, न० ११ की प्रत्येक विष विकार मे, न० १५ की विषजन्य ज्वर, सन्धि दर्द, आमाशय शोथ मे, न० १६ की जलोदर, आमवात मे, न० १७ की प्रत्येक विष विकार में देने से अधिक लाभ होता है। इस की मात्रा ४ रत्ती से १ माशे तक है।

शंख भस्म के गुण

शख सर्वरुजं हन्ति विशेषादुदरामयम् ।
शूलाम्लपित्त विष्टम्भ मेहह्रद्वह्निदीपनः रसे. सा स

शख समस्त उदर रोगोमें लाभदायी है विशेषकर शूल, अम्लपित्त, आध्मान प्रमेहको दूर करती है और अग्निको वढाती है, ग्रहणी, परिणाम शूल, पक्वाति-

सार मुहासे मे लाभदायी है।

शंख योग

शंखं विघृष्टं सहसा प्रातः पीत च सप्ताहात्।
हरति कामलार्तिं वाणोरामस्यताडकायाम्। भा. भै र

शख को पानी में घिस कर प्रात काल पीवे ७ दिन पीने से कामला रोग नष्ट होता है जैसे राम ने ताडका को नष्ट किया।

शम्बुक भस्म

घोघा को कूटकर चूर्ण बनाय पित्तपापडा क्वाथ की तीन भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो घोघा की भस्म बने। र त सा

घोघा को अग्नि में डाल देने पर घोघा की भस्म हो जाती है। र सि.

शम्बुक भस्म के गुण

शम्बुकजं भस्म पीतं जलेनोष्णेन तत्क्षणात्।
पक्तिजं विनिहन्त्येतच्छूलं विष्णु रिवासुरान्॥

वं से, यो र, र. च, वृ मा, नि र, वृ यो त, भा भै. र

घोघा की भस्म को गरम पानी से लेने पर पक्ति शूल दूर होता है। इससे भिन्न परिणाम शूल, विषम ज्वर, ग्रहणी, अतिसार, मन्दाग्नि, अजीर्ण, गुल्म आदि उदर सम्बन्धी अनेक रोगो में अच्छा लाभ करता है। मात्रा इसकी ६ रत्ती से १$\frac{3}{2}$ माशे तक है। उचित अनुपान से देवे।

शृङ्गराज भस्म

(१) खण्डितं मृगशृङ्गं च ज्वालामुख्या रसैः समम्।
रुद्ध्वा भाण्डे पचेच्चुल्ल्या यामयुग्मं ततो नयेत्॥
अष्टांशं त्रिकटुं दद्यान्निष्कमात्रं च भक्षयेत्।
नागवल्या रस सार्धं वातपित्त ज्वरापहम्॥
अयं ज्वरांकुशो नाम रसः सर्व ज्वरापहः।

शा ध, नि. र, र क ल, रसा स, र सा. स, र च, र का, र प्र सु, र को, यो. म, र. रा सु, र श्री यो, चि र भ, र. यो सा

बारह सिगाके सीगके छोटे-छोटे टुकडे करके लागली या सूर्यमुखी रस सीग

के वरावर ले मिट्टीके पात्रमें भरकर २ प्रहर तक चूल्हे पर रखकर पकावे, फिर सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो वारहसिगा की भस्म हो।

इसमें आठवाँ भाग त्रिफला मिलाकर नागर वेल पान के रस मे मिला कर १-२ रत्ती तक उक्त भस्म को सेवन करावे तो यह भस्म समस्त ज्वरो को दूर करे। इनका नाम ग्रन्थकारो ने ज्वराकुश दिया है।

(२)(३ पुटी) मृग शृंगं समादाय करपत्रेण कर्त्तयेत्।
खण्डश कारयित्वा च त्वङ्गाराग्नौ दहेत्तत ॥
सु दग्धञ्चाथ विज्ञाय खल्वे सचूर्णयेद्भिपक्।
रविदुग्धेन सम्पेष्य चक्रिका: कारयेत्तत: ॥
शराव सम्पुटान्तस्थ पुटे तीव्राग्निना भिपक्।
त्रिवार पुटनादेवं विषाणं मृतिमाप्नुयात् ॥ र त.

वारहसिगे के सीगो को आरी से काट कर अग्नि मे डाल कर जला दे फिर कूट कर आक दूधकी भावना दे टिकिया वनाय सम्पुटकर गजपुट की आँच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो मृग शृग की उत्तम भस्म वने।

(३) मृगशृग के टुकडो को थोहर के नुगदे में रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो सीग की भस्म वने। अ त

(४) मृगशृग को अजवायन, सोरा के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म वने। अ त.

(५) मृगशृग को आग मे जला कर कूट कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म वने। सि. यो स

(६) मृगशृग को आक के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे या कुमारी मे सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म वने।

र त सा, सि भै मा, यू सि. यो.स, र ति, म अ, चा चि.

(७) मृगशृग को घी मे भिगो कर दूधी के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे, पुन थोहर दूधकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर एक पुट और दे तो अच्छी भस्म वने। सि. भै मा

(८) मृग शृग को आग में जला ले फिर दही की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म वने।

(९) मृग शृग के वरावर सोरा, अजवायन मिलाय सम्पुट कर १० सेर

उपलो की आच दे तो भस्म वने । म अ

(१०) मृग शृग को आग पर जला लें पुन खरल मे डाल वकरी मूत्र, दही, कुमारी, वनगोभी, वारतग, वासा प्रत्येकके रस की १-१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म वने । म अ

(११) मृगशृग को ७ दिन आक दूध मे भिगो कर सम्पुट कर १० सेर उपलोकी आच दे फिर आक दूधकी भावनादे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर इस विधि से ७ पुट दे तो उत्तम भस्म वने । यू. सि यो.स , चा चि,

(१२) मृग शृग को अजवायन के मध्य रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस विधि से १४ पुट दे तो उत्तम भस्म वने । म. अ

(१३) मृगशृग को आक, कटेली, धतूरा, वकायन इनमें एक एक पुटके वाद दूसरी पुट दे । १०-१५ सेर उपलोकी आच हो । ४ पुटमें यह भस्म वनेगी। इसके सेवन से श्वास रोग में अवश्य लाभ होता है । मात्रा १ माशा शहद से दे । वि.नू

(१४) मृगशृङ्ग योग—वारहसिंगा को स्त्रिदुग्धमें घिसकर नेत्रमें आजनेसे फोला जाता रहता है । अनुभूत है ।

(१५) वारह सिंगा को शरावमें घिस कर पार्श्व शूलपर लगाने से तत्काल लाभ होता है अन्य दर्दो मे भी लेप से लाभ होता है ।

(१६) वारह सिंगा को अर्क गुलाव में घिस कर पिलाने से वातज व श्लेष्मज दर्द व शोथ में लाभ होता है ।

शृङ्गराज भस्म के गुण—दमा, खासी, पाण्डु, यकृतावरोध, सुजाक आन्तरिक क्षय, शोथ, ऋतवाधिक्य, अतिसार, अर्श, वृकशूल, (कोलिन्ज) आध्मान, शोथ यकृत प्लीहा व वस्तिका, आमवात, प्रदर, मन्थर ज्वर मे लाभदायी है । नेत्र में लगाने से नेत्र स्राव, नेत्रकण्डु, धुन्ध, जाला मे लाभदायी है । शक्तिवर्धक है, वीर्य को गाढा करती है । अगद है । न० ३ की शृंग भस्म सन्धिदर्द, स्नायु पीडा, श्वास, कास, फुफुम प्रदाह, उव्रा, पार्श्वशूल में तथा श्लेष्म ज्वरोमे लाभदायी है ।

शुक्ति भस्म

(१) शुक्तिकां खण्डशः कृत्वा सम्पुटस्थां तत. पुटेत् ।
हिम कुन्देन्दु संकाशं शुक्ते भू॑ति समाहरेत् ॥ र त

सीप के टुकडो को सम्पुट में रख गजपुट की आच दे तो सीप की सफेद भस्म वने ।

(२) सीप को कुमारी के नुगदे में रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे तो सीप की भस्म वने । अ स.

(३) सीप को आक के दूव में सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो सीप की भस्म वने । मखजन, मि. ख, अ. ति,

(४) सीप को भाग के नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो सीप की भस्म वने । अ स, अ त.

(५) सीप को सिरस के नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो सीप की भस्म वने । अ. हि.

(६) सीप को निम्बू रसमें उवाल, धोय, सुखाय चूर्ण कर फिर अर्क गुलाव की ३ भावना दे तो यह विना अग्नि की भस्म भी उपयोगी वने । सि यो स

(७) सीप को तपा कर धनियां क्वाथ में वुझावे फिर इसीके क्वाथ की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय अजवार के नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो सीप की भस्म वने । अ. त.

(८) सीप को निम्बू रस मे भिगोय मक्खन में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो सीप की भस्भ वने । स अ

सीप भस्म के गुण—ज्वर, श्वास, कास, अतिसार, सग्रहणी, ऋतवाधिक्य प्लीहा रोग, यकृत विकार, प्रमेह, प्रदर, हृददाह, हृदयोद्वेग में लाभदायी है । मात्रा २ से ४ रत्ती ।

सीप भस्म अनुपान—त्रिफला, मुलहठी चूर्ण या त्रिकटु चूर्ण से शूल मे आमला चूर्ण मकोय रस से हृदरोग में, त्रिकटु शहद वासा रस से श्वास मे, मधु पीपर से मन्दाग्नि मे, तृणपञ्चमूल क्वाथ से मूत्रशर्करा मे, त्रिकटु जवाखार नमक मधु से प्लीहा वृद्धि मे, वग शिलाजीत से प्रदर, प्रमेह में, जवाखार नमक और तक्र से अतिसार सग्रहणी मे, यवक्षार सोनामक्खी भस्म शहद से अम्लपित्त में सीप भस्म को देवे ।

सप्त धातुओं की भस्म

(१) सूतस्य द्विगुणं गन्धंमल्लेन कृत कज्जलीम् ।
द्वयोः समं कृतं धातु चूर्णमम्लेन मर्दयेत् ॥

शरावसम्पुटान्तस्थं मध्यं ऊर्ध्वं च सैंधवम् ।
अष्टयामाद्धवेद्भस्म सर्वयोगेषु योजयेत् ॥ र, सा, वै. द

रस सागरे भिन्न पाठ प्रतिपादित किन्तु एको भाव ।

पारे से दुगुना वलि मिला कर कज्जली वनाय निम्वू रस में घोट इस कज्जली के वरावर कोई भी धातु पत्र वनाय उन पर लगाय सुखाय सम्पुट कर लवण यन्त्र मे दावू दे ८ प्रहर की आच दे तो समस्त धातुओ की भस्म हो ।

(२) पत्राणि सर्वधातूनां तत्तुल्या कज्जली तथा
दावा दलान्तरे तच्च वालुका यन्त्रगं पचेत् ॥
पृथक् पृथक् सूर्यनाड़ी वह्निभिर्दीपिकादिभिः ।
भस्मीभवन्ति सर्वेऽपि स्वर्णाद्या. सर्वधातव' ॥ र च

किसी भी धातु के पत्र वना कर उस के वरावर कज्जली को पत्रो के मध्य विछाकर सम्पुट कर वालुका यन्त्र मे रख कर ३ प्रहर से लेकर भिन्न-भिन्न धातु को १२ प्रहर तक की अग्नि क्रम से दे तो सुवर्ण आदि समस्त धातुओ की भस्म हो ।

(३) रीत्यानया वैद्यवरः प्रकुर्याद्रीत्या स्तथाताम्र मुखस्थधातो. ।
मन.शिलालस्य च योगतोऽपि कृत्वामसिं कूम्पदरे च भृत्वा
सर्वस्य धातोस्तलयाति भस्म कुर्वीत सूतं गलयाति तच्च । रसा सा

इसी रीति से वैद्यवर धातुओ का मारण करे अथवा ताम्र को कूपी में या काच कूपीमें या किसी धातु चूर्णको हरिताल मैनसिल मिलाकर काच कूपीमें भर दे और उसे वालुका यन्त्रमें रख ८ प्रहर की आच दे तो धातु भस्म तल में और रस सिन्दूर या ताल सिन्दूर गले पर लगा मिलेगा ।

(४) त्र्यूषण लवणं राजी आर्द्र चित्रकजैर्द्रवैः ।
सूतं पादाशक मर्द्य गन्धकं तत्समं क्षिपेत् ॥
काकोदुम्बरि दुग्धेन समांश नवसादरम् ।
मर्दयेत्त्रिदिनं सूतं साधनं योग मुत्तमम् ॥
एवं प्रकार सर्वे ते धातवः साधनेन वै । र सागर

त्रिकुट, नमक, राई, अद्रक, चित्रक इनके काढे मे प्रथम पारद को मर्दन कर पुन. उसके वरावर वलि और नौसादर मिलाय कठूमर के दूव मे तीन दिन

खरल कर इसका लेप किसी भी धातु के पत्र पर करके सुखाय सम्पुट कर जैसी धातु हो उसके अनुसार पुट दे तो इस योग से समस्त धातु की भस्म बने ।

(५) नागं मनःशिला हन्ति हरितालं च वङ्गकम् ।
हिङ्गुलेन तथा लोहं ताम्रं च शुद्ध गन्धकम् ॥
रौप्यं च तिल माक्षीकं स्वर्णं नागेन हन्यते । रसाध्याय

मैनसिल से सीसा, हरिताल से वग, हिंगुल से लोहा, बलि से ताम्र, तिल और मक्षिक से चादी, सीसा के योग से सुवर्ण की भस्म बनावे ।

(६) वंग पलाशद्रव तालकेन नाग पयस्यार्क मनश्शिलेन ।
शुल्वं ह्यजाक्षीरकगन्धकेन तीक्ष्णं च नाग पयहिंगुलेन ॥
तारं च वज्रीपय माक्षिकेण हेमं शिलाऽऽवर्तक नाग भस्मना
तालेन वंग दरदेन तीक्ष्णं नागेन हेमं शिलया च नागम् ।
शुल्वं तथा गन्धवरेण नित्यं तारं च माक्षीकवरेण हन्यात् ।
व रा

वग पत्रो को पलाश द्रव में घोटी हरताल से, सीसा को आक के दूध में घोटी मैनसिल से, ताम्र को बकरी के दूध में घोटी बलि से, लोह और सीसा को दूध में घोटे हिंगुल से, चादी को थोहर के दूधमें घोटी माक्षिक से, सोने को नागभस्म माक्षिक और मैनसिल से, वग को हरिताल से, लोह को हिंगुल से, सोनेको सीसा भस्म से, सीसा को मैनसिल से, ताम्र को बलि से, चादी का माक्षिक से मारे ।

(७) नागै सुवर्णं रजतञ्च ताप्यै र्गन्धेन ताम्रं शिलया च नागम् ।
तालेन वंग त्रिविधं च लोहं नारीपयो हन्ति च हिंगुलेन ।
अ क, र र, र च,

सीसा से सुवर्ण को, माक्षिक से चादी को, बलि से ताम्र को, मैनसिल से नाग को, हरिताल से वग को और तीनो लोहो को अथवा स्त्रि दुग्ध मे घोटे हिंगुल से तीनो लोहो को मारे ।

(८) गन्धकं च मनश्शैलं हिंगुलं च रस समम् ।
मातुलुङ्गाम्लजम्बीररसैः समर्द्यतेनतत् ॥
शुल्वायो हेमतारादि कांस्यपत्राणि लेपयेत् ।

इत्थं मुहुः सप्तवारं लेपयेदातपे क्षिपेत् ॥
मूषायामथ संस्थाप्य तत्पत्राण्यधरोत्तरम् ।
सम्यक् तद्रोधनं कृत्वा पुटयेत्सप्तवारकम् ॥
स्वांग शीतलमुद्धृत्य तस्मात्तद्धुत्य द्धृते ध्रुवम् । र को

बलि, मैनसिल, हिंगुल, पारा सब बराबर इन्हे निम्बू या बिजौरा रसमें घोट किसी धातु के पत्रो पर लेप कर सुखाय पुन इन्हीका लेप कर सुखावे, इस प्रकार लेपकी ७ तहे चढाकर सम्पुटमें रख जैसी आँच सह धातु हो उसके अनुसार गजपुट की या कुक्कुट पुट की पुट दे, इस प्रकार उक्त विधि से ७ पुट देने पर सुवर्ण से लेकर कासी, पीतल तक समस्त धातुओ की भस्म बने ।

(९) शिलागन्धार्क दुग्धाक्ताः स्वर्णाद्याः सर्वधातवः ।
म्रियन्ते द्वादशपुटैः सत्य गुरु वचो यथा ॥
शा ध, भा प्र, रसे चि, र प्र, र ज. नि, भा भै. र

मैनसिल और बलि को आक के दूध में घोट सुवर्ण आदि समस्त धातुओ के पत्रो पर इसका लेपकर सुखाय सम्पुट में रख आच दे, इस विधि से १२ पुट दे तो समस्त धातुओ की भस्म हो ।

(१०) कली (बग) चादी, सीसा, जस्त, पारा, प्रवाल, अकीक प्रत्येक तोला धातुओ को पिघला कर उसमें पारा डाल दे और ठण्डा कर कूट ले, फिर इसमें अकीक, प्रवाल का चूर्ण मिला कर कुमारी रस में खरल कर टिकिया बनाय सम्पुट में रख १५ सेर उपलो की अग्नि दे। पुन निकाल कर इसमें ४ तोला पारा २ तोला नौसादर मिला कर पुन कुमारी के रस में खरल कर टिकिया बनाय ५ सेर उपलो की अग्नि दे तो भस्म बने । अ त.

(११) मीठातेलिया को सिरका में ४० दिन तर करके सुखाय चूर्ण बनाय किसी भी धातु के नीचे ऊपर देकर सम्पुट कर दो उपलो की आंच दे तो समस्त धातु की भस्म हो । पा स.

संगयसब

सगयसब पत्थर अत्यन्त कठोर पत्थरो में से है, वास्तव में यह पत्थर उन अग्नि शिलाओ का उत्तम अश है जिनसे हमारे घोटने के सब से बढिया खरल बनते है । जिसका वर्णन उपोद्घात के छठे अध्याय के आरम्भ मे हम कर आये है । सगयसब पत्थर की कठोरता जरकन और क्राइसोबैरिल के मध्य मे है ।

इससे कठोर तो पद्मराग, नीलम और वज्र ही होता है।

हम उक्त अध्याय के वर्णन मे बतला आये है कि इस आग्नेय पाषाण मे अभ्र-मूल, वैक्रान्तमूल, तुरमलीमूल, माणिक्यमूल के तत्व मिश्रित हुए होते है। इसलिये यह पत्थर साधारण पत्थर नही है। दूसरे यह काश्मीर, ईरान के जिन स्थानो से प्राप्त होता है भूगर्भ विज्ञानियो का अनुमान है कि जब यह पिघ के रूप में रहा होगा उस समय यह आग्नेयशिलाओ के रत्नमूल तत्वो से अधिक पूर्ण था, इसीलिय इसका वर्ण इसकी स्वच्छता अन्य आग्नेय शिलाओ से बहुत उच्चकोटि की थी, हमारे रस गन्थो मे इसका कही उल्लेख नही हुआ। यूनानी के प्राचीन ग्रन्थो मे इसका उपयोग खूब हुआ है। यह पत्थर मूल्यवान् रत्नो से कम गुणवान् नही, इसकी महिमा यहाँ तक बढी हुई है कि इसको गले में धारण करने वाले को दिल के धडकन की बीमारी नही होती, ऐसा यूनानी चिकित्सको को विश्वास है। इसीलिये इसके बने सुन्दर ताबीजो को हौलदिली कहते है। किम्वदन्ति है कि जिसके गले में हौलदिली पडी होती है उसकी हार्ट फेलसे मृत्यु नही होती। खैर! कुछ हो यह पत्थर हृदयरोगो मे मस्तिष्क और स्नायु सम्बन्धी रोगो में विशेष लाभदायी पत्थर है जिसकी तुलना का अन्य पत्थर नही।

इस युद्धकाल के समय से इस पत्थर की आमदनी घट गई है, बहुत कम मात्रा मे आता है इसीलिये अमृतसर, देहली के दूकानदार एक दूसरा पत्थर जो सगपशम के नाम से प्रख्यात है वह वैद्यो और हकीमो को इसके स्थान पर दे देते हैं, सगयसव और सगपशम वास्तव मे दोनो ही जहरमोहरा रग के हल्के हरे रग के पत्थर है, देखने में अच्छे अच्छे समझदार व्यक्ति धोखा खा जाते हैं। इसकी सबसे उत्तम पहचान यही है कि इस पत्थर को हथौडा से तोडा जाय तो संगयसव बडी मुश्किल से टूटता है और सगपशम जल्दी टूट जाता है। सगयसव के खरल इतनी मुश्किल से बनते है कि छोटे छोटे खरल कई कई सौ रुपये मे बिकते है जबकि मूगिया पत्थर के बढिया खरल ३ रु० इच के हिसाब से मिल जाते हैं।

संगयसब भस्म की विधियां

(१) सगयसव के डले को तीव्र अगारो पर रखकर तपावे लाल हो जाने पर गुलाब के अर्क मे डाल कर बुझावे १५-२० बार तपा-तपा कर बुझाने से

यह पत्थर कूटने के योग्य हो जाता है फिर इसे कूट कर चूर्ण वनाय खरल मे डाल अर्क वेदमुश्क या गुलाब के अर्क मे खरल करके टिकिया वनाय सुखाय गावजवॉ के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आँच दे तो सगयसव की भस्म हो। स अ

(२) सगयसव पत्थर को तपा-तपा कर कुमारी रस मे वुझाते रहे जव पीसने के योग्य हो जाय कूट पीस कर शराव की ३ भावना दे टिकिया वनाय कुमारी के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आँच दे। दूसरी पुट अर्कदुग्ध की भावना दे, तथा तीसरी पुट शहद मे रख कर दे तो ३ पुट मे उत्तम भस्म वने। स अ.

(३) सगयसव को तपा-तपा कर अर्क गावजवॉ मे वुझाता रहे। जव कूटने के योग्य हो जाय तो कूट कर गावजावॉ अर्क की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस प्रकार ३ पुट दे तो उत्तम भस्म वने। र त सा.

(४) सगयसव पत्थर को अर्क केवडा मे तपा-तपा कर वुझावे फिर चूर्ण कर अर्क केवडा की ७ भावना दे सुखाय रख लें। र त सा

(५) सगयसव को तपा-तपा कर अर्क वेदमुश्क मे वुझावे जव कूटने योग्य हो जाय कूट पीस अर्क वेदमुश्क की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय गावजवा के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म हो। कु अ

(६) सगयसव को तपा-तपा कर कुमारी रस मे वुझावे फिर चूर्ण कर पुनर्नवा, गोजिह्वा, कुलथी, गावजवा के मिश्रित क्वाथ मे घोट टिकिया वनाय सुखाय इन्ही के नुगदे मे रख सम्पुट कर गजपुट की आँच दे फिर निकाल अर्क केवडा, अर्क वेदमुश्क अर्क गावजवा की भावना देकर रख ले। या अ, मि, ख

संगयसव भस्म के गुण

जीर्णशिर शूल, प्रतिश्याय, नजला, विस्मृति, मनौलिया, उन्माद, हृदयोद्वेग, हृदयनिर्वलता, अपतानक (हिस्टीरिया), सर्पविष का अवशिष्ट प्रभाव, प्रसूताक्षेप, स्नायुओ का खिचाव, मस्तिष्क निर्वलता, हृदयप्रसार आदि रोगो में लाभदायी है मात्रा २ रत्ती से ४-६ रत्ती तक है।

सीसा

द्रुतंद्रावं महाभारं छेदेकृष्ण समुज्ज्वलम् ।
पूतिगन्धं वहि:कृष्णं शुद्धसीसतमोऽन्यथा ॥ र. चू.

जल्दी अग्नि पर पिघलने वाला, मात्रा में सोना से भी भारी, वुरी गन्ध वाला, ऊपर से श्यामतायुक्त किन्तु काटने पर अन्दर से वगवत् उज्ज्वल ऐसा सीसा शुद्ध होता है इससे भिन्न अशुद्ध या सकर जाने ।

भौतिक गुण—ऊपर जो भौतिक गुण सीसा के ग्रन्थकार ने वतलाये है इसका विस्तृत रूप निम्न है। सीसा वास्तव मे श्वेतवगवत् उज्ज्वल धातु है किन्तु हवा के स्पर्श में वना रहने पर वह ऊष्मजन से प्रभावित होता रहने के कारण भूरा काला सा हो जाता है। यह ३२७ श. के उत्ताप पर ही पिघल जाता है और १५२५ श के उत्ताप पर वाष्पीभूत होता है। सोना जानी हुई धातुओ में सवसे भारी है अर्थात् उसकी मात्रा २००° है किन्तु सीसा इससे भी भारी है अर्थात् इसकी मात्रा २०७ २ है। यह घनवर्धनीय तो अच्छा है पर तान्तवता में अच्छा नही। तार खीचने पर इसके तार टूट जाते है। यह इतना नरम धातु है कि चाकू से काटे तो काटा जा सकता है और कागज पर पेंसिल जैसी लकीर देता है।

रासायनिक गुण—सीसा ऐसी नरम धातु है कि हवा और जल की उपस्थिति में यह ऊष्मजन से सयोजित होता रहता है और ऊष्मदीय क्षार (भस्म) के रूप में वदलता रहता है इस तरह का यह सीसा यदि ऊष्णजल में डाला जाय तो उसमे घुल जाता है इस घोल को पिया जाय तो यह शरीर के भीतर पहुँच कर शरीर के सन्धि स्थलो में सचित होने लग जाता है और उससे सीसा विप के लक्षण प्रादुर्भूत होते है।

उक्त सीसा की भस्म या ऊष्मिद का रूप तो प्रकृति मे वनता है किन्तु प्रयोगशाला में या व्यापारिक रूप मे इसके निम्नलिखित ऊष्मिद वनाये जाते है। सीससोष्मिद (सी ऊ)

सीसकोष्मिद (सी$_2$ ऊ$_3$) सीसद्विऊष्मिद (सी ऊ$_2$) सीसचतुरोष्मिद (सी ऊ$_4$) सिन्दूर (सी$_3$ ऊ$_4$)। इसी तरह वलि से मिलकर ४ यौगिक वनाता है।

यथा—सीसस वलिकाइद (सी व) सीसक वलिकाइद (सी$_2$ व$_3$) सीसद्विवलिकाइद (सी व$_2$) सीस जलिकेत (सी र ज$_4$) हम अपने रसग्रन्थों के आधार पर जो वनस्पतियों के योग से कटाह पुट द्वारा भस्म बनाते हैं वह सीससोष्मिद नामक पीली भस्म बनती है। और जब इसे ज्यादा दिन तक वनस्पतियों के साथ रगड रगड कर भस्म बनाते रहते हैं तो यह फिर सीस कोष्मिद में बदलता रहता है जिसका रंग लालाई युक्त होता है और ज्यादा पुटें देने पर सीसा सिन्दूर के यौगिक में बदलता रहता है किन्तु उसमें वनस्पति-यों के क्षारांश मिले हुए होते हैं इस लिए वह एक निश्चित रूपवाला ऊष्मिद नहीं होता।

इसीतरह जब हम मैनसिल, हरिताल या वलि मिलाकर इन के योग से सीसा की भस्म बनाते हैं तो वह प्रथम सीसवलिकाइद बनता है जो भूरा काला होता है। जैसे जैसे वलि या मैनसिल आदिसे मिलाकर पुटें दी जाती हैं वैसे वैसे वह अन्य वलि के वलिकाइदों में बदलता रहता है। जिनका वर्ण हल्का लाल या गहरा लाल हो जाता है। इस में कुछ यौगिक ऊष्मिद का भी स्वत बन कर मिला होता है। हम अपने रसग्रन्थों के आधार पर जितने प्रकार की सीसा भस्म बनाते हैं इन्ही दोनों में से कोई होती हैं किन्तु इस समय के रसायन शास्त्री सीसा की कज्जलिका, लवणजन, नोनजन, ब्रह्मणिका, नैलिका आदि तत्त्वों के योग से बीसों प्रकार की (भस्म) बनाते हैं जिनका सम्बन्ध हमारे इस ग्रन्थ से नहीं है।

सीसा की ऊष्मिद भस्में

(कटाह पुटी) खर्परे निहितं नाग रवि मूलेन घर्षयेत्।
यामत्रिकैर्भवेद्भस्म हरिद्वर्णमदूषणम्॥

र रा सु, र ज नि, रस सा.,

सीसे को खपरे में पिघलाकर आक जड से रगडते रहे तो ३ घंटे में ही हरे रंग की भस्म बन जाती है। ति र., अ स,

(२) भागैकं महिफेनस्य नाग भागचतुष्टयम्।
घर्षणाग्निस्वकाष्ठेन मन्द वह्नि प्रदानत.॥
नागभूतिर्भवेच्छ्वेता नीर्य दार्ढ्य करीमता।

र च, भा भै.र, अनु त, र रा सु, रस सा, र ज नि,

१ भाग अफीम, ४ भाग सीसे को कड़ाही में डालकर भस्म होने तक नीम के दण्ड से घोटे व चलाता रहे तो सीसा की भस्म बने। सि.भै.मा

नोट :—रसायन सार के कर्ता ने अहिफेन से भस्म बन जाने के पश्चात् ७ पुटें और दे ऐसा अपने ग्रन्थ मे उल्लेख किया है।

(३) लोहपात्रे द्रुते नागे घर्षण तु प्रकारयेत् ।
चतुर्याम प्रयत्नेन मूलैश्चैव पलाशजैः ॥
अधस्तज्ज्वालयेत्सम्यग्ध ठाग्निं म्रियते ध्रुवम् ।
रक्ताभं जायते चूर्णं सर्व कार्येषु योजयेत् ॥

र ल, भा भै र, प्र सु, र च,

शुद्ध सीसे को कढाई में पिघला कर पलाश की जड से ४ पहर रगडता रहे तो सीसा की लाल रग की भस्म हो।

(४) अथवा दुग्धिका नीरैरभिषेके म्रियेत वै । र लं.

अथवा सीसा को कढाई में पिघलाकर नागार्जुनी की चुटकी देकर रगडता रहे तो सीसा की भस्म बने।

(५) अथवा सीसा को पिघलाकर वटजटा चूर्ण की चुटकी देकर वटदण्ड से रगडता रहे, एक ग्रन्थकार, वट के पत्र डालकर वटजटा से रगडे ऐसा कहता है। भस्म बन जाने पर एक घटा और आच दे। र.सि, धा वि, मि ख, म अ.

(६) ततो नागं लोष्टमध्ये वासाद्रावाजमोदके ।
तापयेद्वासकाकाष्ठैर्भस्मी भवति तत्क्षणात् ॥ व रा.

सीसा को कढाई में पिघला कर वासा का रस या अजमोद की चुटकी देकर रगडता रहे और वासा की लकडी से चलाता रहे तो सीसा की शीघ्र भस्म हो जाती है।

नोट :—गले हुए सीसा पर रस पडनेसे पानी का वह विच्छेद कर तिडकता है इसलिये सावधानी से इसे बनाना चाहिये।

(७) कर्परे सीसकंदत्वा वृषकाष्ठेन घट्टयेत् ।
निरन्तरं मासमेकं म्रियते तद्रविप्रियम् ॥ र ल

सीसा को ठीकरे में पिघलाकर वासा की हरी लकडी से रगडता रहे तो १ मास के निरन्तर रगडते रहने से सीसा की भस्म हो।

(८) चिञ्चात्त्व केतु भल्लात बला वज्रिलताभवैः ।

अपामार्गोत्थं नागस्य भस्मनिर्मि [illegible] ॥
समाह नागपत्रके निवत [illegible] ।
पलाश [illegible] ॥ [illegible]
लोहपात्रे तु समाह [illegible] भस्मानि [illegible] ।

रसरत्नाकरे [illegible] पाठ ।

हटपालाशकरटेन [illegible] तु भस्मना ।

रसानन्दे कन्दे इति पाठ ।

इमली, बहेड़ा, ढाक, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], पीपल इनमें से किसी की भस्म सीसा [illegible] । सीसे [illegible] पिघला कर उन भस्मों को चुटकी [illegible] और [illegible] रहे । एक सप्ताह इस प्रकार करने से सीसा की भस्म बने ।

(९) नाग गालितमग्निना वरसिना प्रक्षेप पूत मुहु,
मृत्पात्रे हटकैतकी लकुटत. सघर्षयेद्वरात् ।
भस्मीभूत मुदीक्ष्य वल्लतुलित चौद्रे मु दद्यादसु
दुर्वार प्रदर व्यथाऽपहृतये नागेश्वराख्य रसम् ॥

नि [illegible]

सीसा को ठीकरे में डाल कर गलावे और [illegible] के दण्ड से रगड़ता हुआ उसकी भस्म बनावे, भस्म बन जाने पर उसे उसी ठीकरे में इकट्ठा करके १ प्रहर और आग देकर उतार ले और पीस ले । मात्रा ३ रत्ती शहद में दे तो दुस्तर प्रदर दूर हो इसका नाम नागेश्वर ग्रन्थकार ने दिया है ।

(१०) कुलीरास्थिक गोदन्त शेफाली त्र्यसवृत्तकैः ।
द्रवैः सम्मर्द्य नाग मारयेत्खर्परेऽग्निना ॥ र का वे

गले हुए सीसे पर गिरगिट की हड्डी, गोदन्ती, चूना और सभालू व शाक का रस डाल कर रगड़ता रहे तो सीसा की भस्म बने ।

(११) निशार्कदुग्धगोदन्तचिंचणीभवचूर्णकैः ।
लिप्त्वाऽथ नागपत्राणि मारयेत्पुटयोगत. ॥ र का वे.

हल्दी, गोदन्ती चूर्ण, इमली त्वचा चूर्ण को अर्क दुग्ध में घोट नागपत्रो

पर लेप कर सम्पुट कर ५-७ सेर उपलो की ग्राच दे। दूसरे ग्रन्थकार कहते है कढाई मे सीसा को पिघला कर घर्पण विधि से उक्त चीजो में भस्म वना ले और व्यवहार मे लावे।

(१२) सीसा पारा सम भाग मिश्रण वनाय ढाक फूल, वेर छाल चूर्ण की चुटकी देकर भस्म वनावे। मा ग्र

(१३) नागं कपालमध्ये क्षिप्त्वाचाग्निं [1]निधापयेत्क्रमशः
चिंचात्वक् वचक्षारं स्वल्पंस्वल्पंविकीर्य कुन्तलेन
भागं पारद सीसं घृष्ट्वा घृष्ट्वा विचूर्णित सम्यक्।
तिलमानं खादयन्मधुना तरवटवीजेनमिश्रितं क्रमशः
पिटिका सहित विशेपं प्रमेहगणार्ति कुष्टमनिलश्च।
हन्त्यल्पदिनाभ्यासात्सुपथ्ययोगान्नगेन्द्र नामोऽयम्॥

र चं, र र.स, र को, र र कौ, र रा सु, र.यो.सा, भा भै र

१ विशोपयेत् रसचण्डाशौ इतिपाठ।

सीसा को ठीकरे मे पिघला कर इमली छाल चूर्ण के भस्म की चुटकी देकर रगडता हुआ सीसा की भस्म वनावे। भस्म वन जाने पर उसमें वरावर का पारा डाल फिर घोटता रहे और जव भस्म की रगत वदल जाय उसे उतार पीस रखे। इस सीसा भस्म की मात्रा १ तिल के वरावर है। ग्रन्थकार कहता है इसे ग्राहुली या रग नामक वृक्ष के वीज चूर्ण के साथ मिला कर शहद से सेवन करे तो १८ प्रकार के प्रमेह, १८ प्रकार के कुष्ठ, ८४ प्रकार के वातविकार थोडे दिन के सेवन से जाते रहते है यह नागेन्द्र नाम रस है।

(१४) सीसा को कढाई मे गलाकर कुमारी रस का गूदा डाल करछी से चलाता हुआ भस्म वनावे। ११ दिन नित्य इस तरह कुमारी का गूदा डाल कर रगडता रहे तो लाल रगकी सीसा की उत्तम भस्म वने। म ग्र

(१५) १० तो० सीसा को पिघला कर सोरा की चुटकी देकर मूसली से रगडते हुए भस्म वनावे, सोरा ४० तो० खर्च करे ४ प्रहर मे भस्म वन जाती है। ग्रसरार सदरिया का लेखक सोरा के साथ भाग की चुटकी भी डालना लिखता है। ग्र स., मा ग्र., ग्र.त., स ग्र, मि ख.

(१६) सीसा को पिघला कर सोरे की चुटकी दे ग्राक की लकड़ी से रगड़

कर भस्म वनावे। फिर कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय तीव्र आच पर रख कर सेंके, इस प्रकार ७ वार करे फिर ३ वार चूना की भावना देकर सेक तो खाने योग्य सीसा वने। मा प्र

(१७) तिर्यगाकारचूल्ल्यां तु तिर्यग्वक्त्रघट क्षिपेत्।
तद्वक्त्रं च विना सर्व[१] गोमयेद्यत्नतो मृदा॥
आप्टयन्त्राभिर्वतस्मिन्यन्त्रे सीस विनिक्षिपेत।
पल विंशितके नाग मधस्तीव्रानलं क्षिपेत्॥
द्रुते नागे क्षिपेत्सूत शुद्धंकर्पमित शुभम्।
[१] घर्पयित्वाक्षिपेत्क्षारमेकैकं हि पलं पलम्॥
अर्जुन[२]स्याक्ष वृक्षस्य महाराज तरोरपि।
दाडिमस्य[३]मयूरस्य क्षिप्त्वा क्षारं पृथक् पृथक्॥
एवं विंशति [४] रात्राणि पचेत्तीव्रेण वह्निना।
विघट्टयन्दृढं दोर्भ्यां लोह दर्व्या प्रयत्नतः॥
रक्तं तज्जायते भस्म[५]कपोताभं विवर्जयेत्।
नागं दोपंविनिर्मुक्तं जायते [६] तु रसायनम्॥

र. र स, रसे चू, पा.म.र चू, र यो सा, र ज नि

१ विमृद्य इति रस चूडामणौ

१ विघट्टय इति रसेन्द्र चूडामणौ २ अर्जुनस्यास्य इति रसेन्द्र चूडामणौ। ३ गिरे रपि इति रस चूडामणौ। ४ वाराणि इति रस रत्न समुच्चये रसेन्द्र चूडामणौच। ५ कपोतच्छायमेवच इति रसेन्द्र चूडामणौ। ६ जायतेऽति इति रसेन्द्र चूडामणौ।

भरभूंजा की तिरछी भट्ठी जैसी भट्ठी वना कर उस में १ सेर सीसा डाल कर पिघलावे, जव सीसा पिघल जाय उसमें १ तोला पारा डाल दे फिर उसमे अर्जुन, वहेडा, अमलतास, अनार, अपामार्ग प्रत्येक की ४-४ तोला भस्म ले कर इनकी चुटकी देता जाय और रगड़ता रहे इस प्रकार २० दिन तक रगड़ता रहे और तीव्र अग्नि देता रहे। दूसरे ग्रन्थ का यह अभिमत है कि उक्त भस्म २०-२० तोला वीस वार डाल कर रगड़ता रहे। वीस दिन घोटने पर लाल रग की भस्म वनेगी उस ठीकरे मे किनारे किनारे कुछ सीसा भस्म कपोतवर्ण की लगी रहे उसे ग्रन्थकार कहता है कि त्याग दे। दूसरा ग्रन्थ-

कार कहता है कि सारी सीसा भस्म कपोत छायायुक्त लाल होगी।

(१८) लोहपात्रे द्रुते नागे चूर्णितं रसकं शुभम्।
पिष्ट्वा चूर्णं पचेद्यामं चाल्यो पाषाणमुष्टिना॥
यामान्ते हिंगुले क्षेप्यं चूर्णितं नागतुल्यकम्।
मर्दयेत्तदवच्छिन्नं दृढं पाषाण मुष्टिना॥
पचेच्चण्डाग्निना यावद्दिनानामेक विंशतिम्।
जायते कुंकुमाभस्तु तारं तेनैव वेधयेत्॥ वै. चि., र यो सा

सीसा को कढाई में पिघला कर उस के बराबर खर्पर चूर्ण डाल लोहे की या पत्थर की मूसली से रगडता रहे,३ घन्टे बाद उसमें हिंगुल की चुटकी देकर घर्षण करता रहे, हिंगुल सीसा के बराबर खपादे, इसके बाद धीरे-धीरे तीव्र आंच देता तथा रगडता रहे इस विधि से २१ दिन घर्षण करे और आंच दे तो सीसा की लाल भस्म बने। इस का नाम नाग सिन्दूर है।

(१९) शुद्धं सीसं समादाय खर्परोपरिनिक्षिपेत्।
वह्निं चुल्ल्यां समारोप्य ज्वालयेच्छनकै शनैः।
द्रुते नागे तदूर्ध्वंच तालचूर्णं प्रदापयेत्।
किंचित्किंचिन्निघृष्याथ लोह दर्व्या भिषग्वरः॥
कज्जलाभंभवेद्भस्मतदुतार्या प्रदापयेत्।
गुञ्जाद्वयमितं जग्ध्वा दद्रुघ्नो रजनी तथा॥
वाकुची बीज निम्बत्वग्वाणपुंखानिचूर्णयेत्।
क्षाराम्ल रहितान्नं च भोज्यं कुष्ठ निवारणम्॥

र र कौ , र यो स

सीसा को ठीकरे मे पिघला कर उसमे हरिताल की चुटकी दे कर घर्षण विधि से भस्म बनावे यह भस्म काले रग की बनेगी। इसे पीस रखे पनवाड बीज, हल्दी, बावची, नीब,सरफोका इनके मिश्रित चूर्णसे २ रत्ती उक्त भस्म सेवन करे तो समस्त कुष्ठ दूर हो। सेवनकालमें खटाई,खार,नमक रहित भोजन करे।

(२०) सीसा के बराबर फिटकरी ले सीसा को गला कर फिटकरी की चुटकी दे घर्षण विधि से भस्म बनावे। मखजन

(२१) सीसा को पिघला कर उस के बराबर बलि की चुटकी दे घर्षण विधि से भस्म बनावे तो सीसा भस्म बने। अ त , या अ., ति अ.

(२२) न० २१ की विधि से भस्म बनाने के पश्चात् उसे कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघु पुट की आच दे तो उत्तम भस्म बने। र सि

(टाटपुटी) (१) जीर्ण सर्षप सम्भूत खलेन पुट योगतः ।
मृति माप्नोति मातंगस्तिलत्थ खलतोऽपिवा ॥ र ल

सीसा के बारीक पत्र बनाकर पुरानी सरसो की खल या तिल की खल के चूर्ण को टाट पर बिछाकर उस पर सीसा पत्र बिछाय खल चूर्ण से ढँक पुन पत्र बिछाय फिर खल से ढँक उस पर दूसरा टाट रखकर लपेट आग लगा दे या नीचे करसी (उपल चूरा) बिछाकर उस पर टाट बिछाकर क्रम से उक्त विधि द्वारा टाट से ढकने के बाद करसी की एक तह देकर अग्नि लगा देते है। दोनो प्रकार से बनाते है। अथवा टाट को लपेट सम्पुट मे बन्द कर २० सेर उपलो की भी आच देते है। किसी विधि से बनावे सीसा भस्म बन जाती है।

(२) उक्त विधि से सीसा पत्र को इमली छाल चूर्ण मे रखकर भी बनाने से बन जाता है। स अ

(३) उक्त विधि से निम्बपत्र चूर्ण मे रखकर पुट दे तो सीसा भस्म हो। स अ, मि.ख

(४) सीसा, पारा समभाग मिश्रण कर पत्र बनाय हरिताल, हिंगुल, मीठा-तेलिया, अफीम, धतूरा बीज सब सीसा से चौथाईले शरावमे घोट पत्रो पर लेप कर सुखाय भागरा, बबूल, भाग, हरमल-इनके चूर्ण पर पत्र बिछाय उपल सम्पुट मे रख आच दे तो भस्म बने। मखजन

(५) सीसा, पारा समभाग मिश्रण कर पत्र बनाय उसका दसवॉ भाग हरिताल, हरितालसे आधा अफीम, अफीमसे आधा सोमल इन सबको अर्क दुग्ध मे घोट उन पत्रो पर लेपकर भिलावा तिल के चूर्ण पर बिछाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की पुट दे तो भस्म हो। मा अ.

(एक पुटी) (१) रसष्टङ्काष्टको गन्धष्टङ्क षोडश सम्मितः ।
कज्जलीं कारयेद्यत्नाच्छृङ्गवेररसेन च ॥
भावनास्तत्र दातव्या स्त्रयो विंशति संख्यकाः ।
चतुर्विंशति टङ्काश्च कूपिका नाग सम्भवाम् ॥
निर्माय स्थापयेदेतां कज्जलीमार्द्र भाविताम् ।

मृदालिप्तां सुशुष्कां च ततो गजपुटे पचेत् ॥
तत्सर्वं चूर्णयेत् खल्वे स्थापयेत्काच भाजने ।
रक्तिकैकरसेदत्त्वा भक्षयेत्प्रत्यहं रसः ॥

रसा सा, र सि स, र यो सा.

पारा ३ तो०, वलि ६ तो० कज्जली वनाय अद्रक रस की २३ भावना दे पश्चात् १२ तोले सीसे की कटोरी वनाय उसमे कज्जली भर दे और सम्पुटकर गजपुट की आच दे, स्वाग शीतल होने पर निकाल पीस ले ।

नोट:—रसायन सार के कर्ता ने कज्जली को गुजा क्वाथ की भावना देना लिखा है तथा डमरुयन्त्र मे आच देने का विधान वताया है । इस भस्म को पुन ठीकरे मे डाल गुजा चूर्ण की चुटकी देकर नीम के दण्डे से २ प्रहर तक रगड कर भस्म वनाने का विशेष विधान वताया है ।

(२) नागं विशुद्धन्तु निधाय दर्व्यां प्रद्रावयेत्तीव्रतरानलेन ।
द्रुतं समालोक्य भिषग्वरेण्यः पादांशमीश द्रुतमेवदद्यात् ।
द्रुतन्तु भूमाववतार्य खल्वे सम्पेषयेत्सत्वरमेव यत्नात् ।
प्रक्षाल्य साम्लेन जलेन नून विशोष्य नीरं विदधीत चूर्णम् ॥
निक्षिप्य सीसाद्द्विगुणन्तु गन्ध सम्पेषयेद्याम युगं प्रयत्नात् ।
विलोक्य चूर्णं खलु कज्जलाभ निधापयेद्वैद्यवरः शरावे ॥
शराव सम्पुट स्थित पुटेल्लघौ पुटे ततः ।
स्वतः सुशीतलांगते शराव माहरेद्भिषक् ॥
विभिद्य सम्पुटात्ततः शुभं सुकज्जलप्रभम् ।
मृतन्तु सीस माहरे द्रसायनागमार्यम् ॥ र त

सीसा को करछी में पिघला कर उसमें वरावर का पारा मिश्रण कर गरम को ही खरल में डाल घोटे और खूव घोटे । फिर सीसा से दूना वलि मिलाय छ घटे तक घोट सम्पुट में रख लघुपुट की आच दे तो कज्जल सदृश सीसा की भस्म वने ।

(३) सीसा पत्र को जख्महयात के रस की भावना दे इतनी घुटाई करे कि सीसा के पत्र उस रस में मिलकर तद्रूप हो जाय उस की छोटी २ टिकिया वना ले और ३-३ सेर के एक एक उपले वना कर सुखाय एक उपले पर जख्महयात का चूर्ण विछा कर उस पर वह टिकिया विछाय जख्महयात के चूर्ण से ढक ५

सेर उपल का सम्पुट वनाय ३-४ सेर और उपलो में रख आग दे दें। लेखक कहता है यह सीसा की श्वेत रग की भस्म वनेगी। स अ., मा अ.

(४) सीसा को गला कर वरावर का पारा मिलाय भिलावा क्वाथ की भावना दे टिकिया बनाय एक एक सेर के उपल सम्पुट मे रख आच दे तो भस्म वने। म आ., मि ख, मा अ.

नोट—इसके नीचे ऊपर कोई वनस्पतिका चूर्ण नही दिया गया है यदि कोई वनस्पति चूर्ण विछा लें या कबूतर की विष्ठा विछा कर आग दे तो भस्म बनने में आसानी होगी।

(५) सीसा के वारीक पत्र वनाय पुनर्नवा रस की और वटजटा क्वाथ की भावना तव तक दे जव तक सीसा रस में मिलकर तद्रूप न हो जाय फिर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ४-५ सेर उपलो की आच दे तो सीसे भस्म हो। अ स

(६) सीसा के पत्र वनाय पीपल की कोपल के नुगदे में रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आँच दे तो सीसा भस्म हो। अ स

(७) सीसा को गलाकर वरावरका पारा मिलाय वारीक पत्र वनाय हव्वुल्लास (मोडियो) के पत्र या मेहदी चूर्ण मे रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आँच दे तो सीसा भस्म हो। अ. स

(८) नागं खर्परके निधाय कुनटी चूर्णं ददीत द्रुते।
निम्बूत्थद्रव गन्धकेन पुटित भस्मी भवत्याशुकृत् ॥
[1] एक तालक वापतस्तु कुटिलं चूर्णी कृते तत्पुटेत्।
गन्धाम्लेन समस्तदोष रहितं योगेषु योज्यं भवेत् ॥

र का धे, रसे चि, र त, वृ यो त, र ज नि।

१ एव इति रसचिन्तामणौ।

ग्रन्थकार सीसा भस्म वनाने की तीन विधियाँ एक साथ वताते है। कहते है — ठीकरे मे सीसा पिघला कर मैनसिल के चूर्ण की चुटकी दे कर रगडते हुए भस्म वनावे। (२) गन्धक की इसी प्रकार चुटकी दे कर निम्बू रस से भस्म वनावे। (३) अथवा सीसा को पिघलाकर हरिताल की चुटकी दे कर भस्म वनावे। इनमें से गन्धक और अम्ल योग से जो भस्म वनाई जाती है वह समस्त दोषो से रहित अनेक योगो मे डालने के योग्य होती है। म अ.

वक्तव्य—उक्त विधि को रसकामधेनुके सग्रह कारने निम्न रूपमे दिया है। अथखपरे नाग द्रावयित्वा चिञ्चादि भस्म दत्वा, मृद्भाण्डे रोधयित्वा, मन. शिला दत्वा गजपुटे पचेत् एव षष्टि पुटानि षण्मासपर्यन्त वा पुटानि दद्यात् ।

रसनरगिणी कारने सीसा को मैनसिल की चुटकी दे कर कटाह पुट मे भस्म वनावे भस्म वनाने के वाद पुन वलि मिलाय निम्वू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर अर्धगजपुट की आच दे, इसी विधि से ३ पुट दे ऐसा लिखा है ।

(६) शिलयावाऽथ पुटनाद्रविदुग्धे प्रविष्टया ।
वलि योगेन पुटनान्म्रियते ताप्यतोऽथवा ॥ र. लं.

मैनसिल के योग से या वलि के योग से या माक्षिक के योग से सीसा की भस्म वनावे। मैनसिल आदि का कल्क आक दूध मे वनावे और उसका लेप कर पुटे दे ।

(दो पुटी) अश्वत्थ चिञ्चात्वग्भस्म भस्म तुल्या मनःशिला ।
जम्बीरैरारनालैश्चपिष्ट्वा रुध्वा पुटे पचेत् ॥
स्वांग शीतं पुनः पिष्ट्वा विंशत्यांश शिलात्मकैः ।
नाग सिन्दूर वर्णाभा म्रियते सर्व कार्य कृत् ॥ यो. चि.

पीपल और इमली की भस्म के वरावर मैनसिल सवको जम्वीरी के रस मे पीस कर कल्क वनाय सीसा पत्रो पर उस का लेप कर सुखाय सम्पुट कर अर्धगजपुट की आच दे पुन सीसा से २०वा भाग मैनसिल मिलाय जम्वीरी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर एक पुट और दे तो दो पुट में सीसा भस्म वने ।

(३ पुटी) शिलारविदुग्धेन नाग पत्राणि लेपयेत् ।
मारयेत्पुट योगेन निरुत्थ भस्म जायते ॥
र. सागर., र र स., पा. स., र ज नि.

मैनसिल को आक के दूध मे घोट सीसा पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो सीसा की उत्तम भस्म वने ।

(२) सुशोधितस्य नागस्य सूक्ष्म पत्राणि कारयेत् ।
तच्चूर्णेन सलिप्य प्रपुटेद्गोमयाग्निना ॥
भस्मी भूतं तु तन्नाग चित्रकद्रवसंप्लुतम् ।

शराव सम्पुटे दत्वा पुटेद्गजपुटे तथा ॥
मर्दयेच्च तथा पश्चान्निरूत्थं भस्म जायते । र. म., र का. धे.

मैनसिल को अम्लरस में घोट सीसा के शुद्ध पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे पुन चित्रक रस की भावना दे टिकिया वनाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे इस प्रकार ३ पुट दे तो सीसा भस्म वने।

(३) पलाशवीजतैलेन शिलांसमर्दयेद्दृढम ।
तनूनि नागपत्राणि तेन शुद्धानि लेपयेत् ॥
पादांशं पारदं क्षिप्त्वा संपुटेरोधयेच्चतत् ।
दाहयेच्च चतुर्याम शीतं कुर्यात् पुनस्तथा ॥
तथा लिप्त्वा दहेत्तावद्यावद्भस्मत्वमाप्नुयात् ।
र का धे, र यो. सा, भा भै. र

पलास पापडा तेल में मैनसिल को घोट सीसा पत्रो पर लेप कर सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आच दे, पुन पारा सीसा से चौथाई और मैनसिल मिलाय ढाक वीज तेलमें घोट सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इसी प्रकार एक पुट और दे तो सीसा की उत्तम भस्म वने ।

(४) कुनटी माक्षिकं चैव समभागं तु कारयेत् ।
अर्कपर्णेन तत्पिष्ट्वा सीसपत्राणि मारयेत् ॥
सतिक्त मधुरो नागो मृतोभवति भस्मसात् ।र च, र र, र ज नि

रसचण्डाशी तृतीयपाद अधिक ।

मैनसिल, माक्षिक दोनो सीसा पत्र के वरावर लेकर अर्कपत्र मे घोट सीसा पत्र पर लेप कर सम्पुट कर लघुपुट की पुट दे, इस तरह कम से कम ३ पुट दे तो सीसा की भस्म वने ।

(५) त्रिभिः कुंभीपुटैर्नागो वासारस विमर्दितः
सशिलो भस्मतामेति तद्रजः सर्व मेहनुत् । र च, र रा. सु, र प्र सु,
र. र प्र, र. का धे, र ज. नि. पा स, वृ यो त, र सा प, रसा. सा, रसमजरी

सीसे को मैनसिल के साथ अडूसा के रस में घोट, टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर अर्धगजपुट की आच दे इसी विधि से ३ पुट दे तो सीसा भस्म हो ।

नोट—रसायन सार के कर्ता ने वासा के स्थान में अर्क दुग्ध की भावना

दी है। और कूपी पाक करने का आदेश दिया है।

(६) सीसा का बुरादा करके गुलाबासीके रसमें घोटे जब सीसा उस रसमें तद्रूप हो जाय उसके बाद बेर के रस की एक भावना और दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर ५-६ सेर उपलों की पुट दे। पुन दूसरी पुट अर्क दुग्ध की तथा तीसरी कुमारी रस की दे। चारु चिकित्सा के लेखक ने कुमारी के स्थान पर पोस्तडोडा क्वाथ की भावना देकर पुट दी है। चा चि ,म अ ,मा अ

(७) पल प्रमितं नागं तिलतैले सप्तवारं विशोध्य, पश्चाद्विस्तीर्ण हण्डिकायां द्रवीकृत्य, वर्तुल पाषाणेन मर्दनपूर्वकं कासीसस्योत्तमस्य चूर्णं नागपरिमित स्वल्पं स्वल्प दत्त्वा दत्त्वा मारयेत्, मृतंनागं घटीद्वयं वह्नावेव स्थाप्यम्। पश्चाद्भाजनेतच्चूर्णं दत्त्वा, उष्णोदकेन सप्तवारं सुधौतम् घर्मेसंशुष्क च विधाय, अर्कदुग्धेन प्रहरद्वय मर्दयेत्। पश्चाच्चक्रिकां कृत्वा संशोष्य शराव सम्पुटेधृत्वा पञ्च पट्कपरिमितैर्वनोपलै. पुटेत्। पश्चात् पारद. पलमितः गन्धक आमलासाराख्यः पलप्रमित. द्वयो कज्जलीं कृत्वा पूर्वं सिद्धमृतनागे विमिश्र्य मर्दयित्वा सहदेव्या रसेन मर्दयेत्प्रहद्वयं, ततश्चक्रिकां कृत्वा विशोष शराव सम्पुटे धृत्वा पूर्णं गजपुटं दद्यात्। तत. स्वागशीतं गृहीत्वा कुमारी रसेन मर्दयेत्। तदुपरि अर्कदुग्धेन मर्दयेत् प्रहरैक, पश्चाच्चक्रिका कृत्वा सशोष्य शराव सम्पुटे धृत्वा पच पट्क परिमितैर्वनोपलैः पुटेत् तदनन्तर तस्य सहदेव्या रसेन पुटैक दद्यात् ततः सिद्धो जातः। इति नागेश्वरो नामा रसः। मात्रां रक्तिका द्वयम्। आ वे प्र ,भा भै.र

५ तो० सीसा को ७ बार तिल तेल में बुझावे। फिर उसे पिघला कर थोडा थोडा कसीस चूर्ण की चुटकी देकर रगडते हुए भस्म बनावे। भस्म होने के कुछ देर बाद और अग्नि पर रहने दे। फिर उसे खरल में डाल पानी से रगड कर धो डाले। फिर अर्क दुग्ध की एक भावना दे टिकिया बनाय शराव सम्पुट में रख ३० वनोपल की पुट दे फिर इसमें पारा बलि ५-५ तो० की कज्जली मिलाय सहदेवी रस की भावना दे, टिकिया बनाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, फिर उसे कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सम्पुट कर ३० वनोपल की पुट दे। इसी प्रकार १ भावना सहदेवी की देकर पुट दे तो उत्तम भस्म बने। मात्रा २ रत्ती। मण्डलकुष्ठ गलित्कुष्ठ में लाभ

दायी लिखा है ।

(४ पुटी) सीसा के पत्र बनाय उसका आधे हिंगुल, हरिताल को निम्बू रस में घोट सीसा पत्र पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर ८ सेर उपलों की आंच दे । मनाउल अवसीर का लेखक कहता है कि हिंगुल, हरिताल के साथ निम्बू रस मे इतना घोटे कि सीसा उसमे मिल जाय पुन टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर पुट दे । तत्पश्चात् ३ पुट कुमारी रस की दे । इन पुटो में हिंगुल, हरिताल मिलाने की जरुरत नही । म अ, मि ख

(६ पुटी) अथवानागपत्राणि चूर्णलिप्तानि खर्परे ।
अत्यग्नौ पाचयेद्याम तद्धस्मचित्रकद्रवैः ॥
भर्जयेल्लोहजेपात्रे चालित पार्थदण्डकै. ।
याम षोडशपर्यन्तं द्रवोदेयः पुन. पुन. ॥
दण्डेनमर्दयेत्क्वाथ मुद्धृत्य चित्रक द्रवैः ।
गोलयित्वा निरुध्याथ पट् पुटे मारयेल्लघु ॥ र र, र ज नि

रस जलनिधे निम्नपाठ दृश्यते ।

पाकान्ते सर्व मुद्धृत्य मर्दयेच्चित्रक द्रवैः ।
गोलयित्वाविमारयेत्षड्भि' र्लघुपुटैश्चतत् ॥ र ज नि

सीसा के पत्रो को कढाई में गलाकर चित्रक चूर्ण की चुटकी दे ताजी अर्जुन वृक्ष की लकडी से रगडता हुआ भस्म वनावे । १६ प्रहर में भस्म वन जाती है पुन चित्रक क्वाथ की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आँच दे, इस विधि से ६ पुट दे तो सीसा की भस्म वने ।

(७ पुटी) कुडवनागपत्राणां कुनट्या.स्यात्पलार्धकम ।
तंदुलीयरसै र्यामं यामंवासा रसैस्तथा ॥
सम्मर्द्य चक्रिकां कृत्वा घर्मे संशोष्यतत्पुनः ।
शराव सम्पुटे कृत्वा पचेद्वन्योपलैर्भिषक् ॥
एवं सप्तपुटेर्नागो भस्मी भवति निश्चितम् ।
द्विगुञ्जोऽयंध्रु वं हन्यात्प्रमेहानखिलान्गदान् ॥
र रा सु, वै द, वृ र प्र, र ज नि.

३२ तोला सीसे के सूक्ष्म-पत्रोको २ तोला मैनसिल के साथ १ प्रहर चौलाई के रस में घोटे, पुन एक प्रहर वासा रस में घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट

कर वनोपल की लघु पट दे इस प्रकार ७ पुट दे तो सीसा भस्म वने। मात्रा २ रत्ती है समस्त प्रमेह में लाभदायी है।

(२) भूनागागस्त्य पत्राणिपिष्ट्वा पत्रविलेपयेत्।
वासापामार्गजं क्षारं तत्र नागयुत क्षिपेत्॥
गुरुक्तितश्चतुर्थांशं वासादर्व्या विघट्टयेत्।
यामैकेन भवेद्भस्म ततोवासा रसान्वितम्॥
एवं सप्तपुटै नागः सिन्दूराभः प्रजायते। र मा, पा स, रसे. चि
र का धे, र च, वृ यो त, र त, रसमजरी, र रा सु, र ज नि
रस चडागु, वृहद्योगतरगिणी, रसतरगिण्या भिन्न पाठ प्रतिपादित
१ भू भुजगमगस्त्यच इतिरसचडाशौ। २ तद्रसेविद्रतेनागे रसमजर्यामितिपाठ।

केचुए को अगस्त्य के पत्ते के साथ पीस कर मिट्टी के पात्र मे लेप करे उसमें सीसे को पिघला कर वासा और अपामार्ग की भस्म चौथाई डाल कर वासा की लकडी से रगडता जाय १ पहर मे भस्म होगी। फिर उस भस्म को खरल में डाल वासा रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लघु-पुट की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो सीसा की लाल रग की भस्म वने।

नोट—रसतरगिणीकार ने ७ पुट देने के वाद भस्म से आधा हरिताल मिलाकर वासा रस में घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर इस विधि से ३ पुट और देने का आदेश दिया है।

नोट—यह और २१ पुटी सीसा भस्म दोनो एक ही है निर्माण विधान में जो अन्तर है वह २१ पुट की अपेक्षा ७ पुट का ठीक प्रतीत होता है।

(३) सिंहास्यास्यार्द्र दण्डेन द्रुत नागं विघट्टयेत्।
खर्परे याम युगुलं कुंकुमाभः प्रजायते॥
तत उद्धृत्य तच्चूर्णं वासा नीरे विमर्दयेत्।
एवं सप्त पुटैर्नागः सिन्दूराभ. प्रजायते॥ र चि

सीसा को ठीकरे में पिघला कर वासा के गीले दण्डे से रगडता रहे तो २ प्रहर में सीसा की भस्म वने। पुन उसे खरल मे डाल वासा रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो सीसा की लाल रग की भस्म वने।

(४) वह्नौतु विद्रुते नागे पादांशं सूतकं क्षिपेत् ।
ततस्तु खाखसं चूर्णं दत्वा दर्व्या प्रचालयेत् ॥
चूर्णीभूतशिलांतुल्यां दत्वाऽटरूपपत्रजे ।
स्वरसे मर्दयेत्सम्यक् ततो लघुपुटे पचेत् ॥
द्वितीयादि पुटे दद्याच्छिलां पादांशिकावुधः ।
एव सप्त पुटै नागो भस्मी भवति निश्चितम् । रसामृत

कढाई मे सीसा पिघला कर उसमें चौथाई पारा डाल फिर पोस्तडोडे के चूर्ण की चुटकी दे कर करछी से हिलाता रहे। समन्त सीसा भस्म हो जाय उसे एकत्र कर उसको शराव से ढक ३ घन्टे की तीव्र आच दे, पुन निकाल वरावर मैनसिल मिलाय वासा रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १०-१२ उपलो की पुट मे दे। इस प्रकार ७ पुट दे, मैनसिल बरावर चौथाई मिलाता रहे और पुट के उपलो की आच भी वढाता रहे तो उत्तम भस्म वने।

आचार्यजी ने सिद्धयोग सग्रहमे उक्त विधि देते हुए उसके साथ पारा नहीं डाला। वहा आपने लिखा है—इमली, पीपल छाल चूर्णकी चुटकी देकर सीसा की भस्म वनावे और जव सीसा भस्म हो कर लाल वर्ण हो जाय निकाल उसमें १२ वा भाग मैनसिल मिलाय वासा रस मे घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १२ सेर उपलो की पुट दे, इस प्रकार ४० पुट दे। सिद्धयोग सग्रह

(२१ पुटी) पिष्ट्वाऽगस्ति च भूनाग लिप्त्वा पाद विशोधयेत् ।
तद्भाण्डे स्थापयेद्याम दृढे भाण्डे विनिक्षिपेत् ॥
वासा चिंचिटयो क्षारं वासा दण्डेन घट्टयेत् ।
यामैकं पाचयेच्चुल्ल्यां समुद्धृत्य विमिश्रयेत् ॥
तच्चूर्णं तु शिला ताप्यैर्वासक क्षार सयुतै. ।
तच्च तुल्यं पूर्व नागविंशदेक पुटे पचेत् ॥
द्विपुटं चिञ्चिटाक्षारैर्देयं वासारसैः सह ।
नागः सिन्दूर वर्णाभो म्रियते सर्वकार्यकृत् ॥ र र, र त.

सीसा पत्रो पर अगस्ति रस में केंचुवे पीस कर उस का लेप चढाय उन्हे तपा कर शुद्ध करले फिर एक ठीकरे मे डाल सीसा को गलावे और उस पर अडूसा, अपामार्ग के भस्म की चुटकी दे कर वासा के दण्डे से घोटता हुआ

एक प्रहर में भस्म वना ले, उस भस्म के वरावर मैंनसिल और माक्षिक तथा वासा भस्म मिला कर टिकिया वनाय सम्पुट कर १० सेर वनोपल की पुट दे, इस प्रकार २१ पुट दे। ग्रन्थकार कहता है वासा भस्म दो पुट में ही मिलावे फिर आगे की पुट मे नही किन्तु वासा रस मे भावना वरावर दे कर २१ पुट दे ता लाल वर्ण की सीसा भस्म वने।

रसतरगिणीकार ने भस्म को धोकर फिर खाली मैंनसिल मिलाय वासा रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर पुटे दे, इस विधि से२ पुटमें सीसा भस्म हो ऐसा विधान दिया है।

(३०पुटी) सीसं काष्ठ कृशानुना पटुघट भ्राष्ट्रे द्रुतं कन्यका
मूलैर्घृष्टमिभाशनार्क वटुपाद्ब्रह्मद्रुमूलायसम्।
दण्डेनान्यत भस्म यावद्वधिस्यात्पिष्टिका तत्पुन.
सिन्दूरारुण मुद्धृतं च शिलया वस्वशाया योजितम्।
कन्यावारि विभावित पुनरपि प्राक् प्रक्रियोपाहृतम्
त्रिंशद्भस्म करोति वह्नि पुटितं प्रान्तेऽतिमन्दं कृतम्। र प

सीसा को ठीकरे नें पिघला कर कुमारी मूल से घर्षण करे और पीपल, आक, वट, ढाक इनके मूल के चूर्ण की चुटकी देता हुआ भस्म वनावे फिर उसमें आठवा भाग मैंनसिल मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आंच दे, इस विधि से ३० पुट दे तो सीसा की उत्तम भस्म वने।

(४) पलाश क्षार भागैक माटरूष समन्वितम्।
संस्थाप्य खर्परे नाग पादांश क्षारयोजितम्॥
आटरूषक दण्डेन चालयेच्च पुनः पुनः।
दिनत्रयं प्रकर्त्तव्यं नागभस्म सुशोभनम्॥
स्वांगशीतं समुत्तार्य जलेन क्षालयेत्तत।
शिलासत्वं तु पादांश दत्वा खल्वेविमर्दयेत्॥
कुमार्या भावितं शुष्कं त्रिंशल्लघु पुटै. पचेत्।
नागस्य मारण श्रेष्ठं सर्वकर्मसु योजयेत॥ र.सा ,र का धे

ढाक और वासा की भस्म, भस्म से चौगुना सीसा को कढाई में पिघला कर उक्त भस्म की चुटकी दे वासामूल से रगडते हुए घषर्ण विधि से भस्म

वनावे, ३ दिन इस प्रकार घर्षण करते रहने से सीसा की भस्म वने तत्पश्चात् भस्म से चौथाई मैनसिल मिलाय कुमारी रस की भवना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे, इस विधि से ३० पुट दे तो सीसा की उत्तम भस्म वने।

नोट—मैनसिल का सत्व ग्रथकार लिखता है किन्तु मैनसिल का सत्व नहीं निकलता वह स्वत. सत्व रूप है इसलिये मैनसिल ही डाले।

(३२पुटी) ताम्बूलीरस संपिष्ट शिलालेपात्पुनः पुन।
द्वात्रिंशद्भिर्पुटैर्नागो निरुत्थं भस्मजायते॥

भा प्र, र च., चि र, आ वे प्र, र प्र, र सा.प, पा स, र ज नि

मैनसिल को पान के रस मे कल्क वनाय सीसा पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे, इसविधि से ३२ पुट दे तो सीसा की भस्म वने।

(६०पुटी) अश्वत्थ चिंचात्वग्भस्म नागस्य चतुरशतः।
[1] क्षिपेन्नागं पचेत्पात्रे लोहदर्व्या च चालयेत्॥
[2] यामाद्भस्म तदुधृत्य भस्मतुल्या मनःशिला।
जम्बीरै रारनालैर्वा पिष्ट्वा रुद्ध्वा पुटे पचेत्॥
स्वांङ्गशीतं पुनः पिष्ट्वा विंशत्यंशशिलायुतम्।
अम्लेनैव तु यामैकं पूर्ववत्पाचयेत्पुटे॥
एवं षष्टि पुटैः पक्वो नागः स्यात्सुनिरुत्थितः।

आ.क, रसा सा, र का धे, र र स, पा म, वै क, चि र, र प्र, र त, र.र, भा प्र, भा भै र, र ज नि, र सा प, ऋ ख

१ क्षिप्त्वा तुल्य इति आनन्द कन्दे। २ तदर्धंगन्धक दत्वा तदर्धञ्च मन शिला इति वैद्य कल्प द्रुमे। ऋद्धि खण्डे वादि खण्डे अश्वत्थ चिंचा स्थाने पलाश दण्डेन घर्षयेत् पठितम्।

८ भाग शुद्ध सीसे को लोह पात्रमें अग्नि पर गलाय इमली तथा पीपल की भस्म डाल-डालकर लोहे की करछी से हिलाता रहे तो १ पहरमें भस्म हो। फिर वरावर की मन शिला मिला कर काजी से या जम्वीरी रस से घोट टिकिया वनाय, सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। फिर आगे की पुट में सीसा

का वीसवा भाग मैनसिल मिलाकर जम्वीरी रस में घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे। इसी विधि से ६० पुट दे तो सीसा की निरुत्थ भस्म वने। ऋद्धि खण्ड में पलाश दण्ड से घोटना लिखा है।

नोट—रसतरगिणीकार ने लिखा है कि कटाह पुट देने के वाद खरल मे डाल रगड कर पानी से धोकर उसकी राख निकाल दे मन शिला मिलावे और पुट दे।

रसायन सार के कर्ता ने लिखा है प्रथम कटाह पुट देने के वाद मैनसिन के साथ कज्जली भी मिलावे और पुट दे।

(२) शिला गन्धक कर्पूर कुंकुम मर्दयेत् समम्।
जम्वीरस्य द्रवैर्याम तत्सम नागपत्रकम्॥
लिप्त्वा लिप्त्वा पुटे पाच्य यावत् षष्टि पुट भवेत्।
तन्नागं विद्युदाभास जायते नात्र संशयः॥ र रा सु, र ज. नि

मैनसिल, गन्धक, कपूर, केसर इन्हे जम्वीरी के रस मे घोट कर सीसे के पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट मे धर गजपुट में फूकता रहे, इस तरहसे ६० पुट दे, तो लाल पीले रग की नाग भस्म वने।

(३) वङ्गवन्नाग भस्मापि कृत्वादौ तत्समांशिलाम्।
क्षिप्त्वा तप्तोदकै मर्द्य दत्त्वा गजपुट ततः॥
षष्ट्यंशं गन्धकं दद्यात्पाच्य षष्टि पुटावधि।
नागभस्म निरुत्थ तद्वङ्ग भस्म गुणाधिकम्॥ र सं क.

सीसा को कढाई में पिघला कर पीपल, इमली, ढाक आदि के चूर्ण द्वारा प्रथम भस्म वना ले पुन उस मे वरावर मैनसिल मिलाय गरम पानी डाल कर घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे फिर प्रत्येक पुट में सीसा का ६० वा भाग वलि मिला कर काज से घोट टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे, इसी विवि से ६० पुट दे तो सीसा की निरुत्थ भस्म वने।

(१००पुटी) कुमारी पादघातेन तत्क्षणात् म्रियते फणी।
पुटेन शतकेनापि सिन्दूरं केवलं भवेत्॥ र रा सु, र ज नि

सीसा को अग्नि पर पिघला कर कुमारी के मूल से रगडता जाय तो सीसा भस्म हो, फिर कुमारी के रस में खरल कर टिकिया वनाय सुखाय

सम्पुट कर गजपुट की आँच दे, इसी विधि से १०० पुट दे तो सिन्दूर जैसी भस्म हो। अ.स.

(२) वासकस्य तथा क्षार सेकी कृत्वा तु सम्पुटे।
कुमारी रस संयुक्तं शतधा तत्पुटी कृतम्॥ रसे र को.

वासा की भस्म के बराबर सीसा मिलाकर कुमारी रससे खरलकर सम्पुटमें रखकर लघुपुट की आचदे। इसी विधि से १०० पुट दे तो सीसाकी भस्म हो।

(सहस्र पुटी) पारदाद्भागमेकं तु नागाद्भागश्चतुर्दश।
द्रावयेत्खर्परे धीमान् पारदं तत्र निक्षिपेत्॥
तद्ग्रन्थि चूर्णनं कृत्वा कन्यका द्रव संयुतम्।
मर्दितं क्षणमेकञ्च धृत्त्वातत्रप्रयत्नतः॥
आरण्यगोमयैः शुष्कैस्ततो लघु पुटे पचेत्।
स्वाङ्ग शीतं समुद्धृत्य पुनर्मर्द्यपुनः पचेत॥
एवं पुट सहस्रेण कुङ्कमाऽऽभं भवेत्तदा।
र र म मा, र यो सा

पारा १ भाग सीसा १४भाग लेकर सकर बनावे,फिर दोनोको कुमारीरसमें घोटकर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुटपुट की आच दे। इसी विधिसे एक हजार आच दे तो केसर के रग की नाग की भस्म बने।

वक्तव्य—कई टीकाकार लिखते है कि प्रत्येक बार पुट देने के बाद पारा मिलाया जाय। मेरी सम्मति में बारम्बार पारा मिलाने की आवश्यकता नही। यह नाग की ऊष्मिद भस्म बनती है, पारा तो इसको भस्म बनाने में कोई सहायता नही करता, बिना पारे के भी कुमारी रस में घोट-घोट कर आच देता जाय तब भी सीसाकी केसर रगकी भस्म बन जाती है। ग्रन्थकार कहता है इस नाग भस्म ६ मा में लौंग, जायफल, तेजपत्र, नागकेसर, इलायची, दारचीनी प्रत्येक तोला मिलाकर पीस कर रख ले, इसमें से १ रत्ती नित्य सेवन करे तो विषय के समय ४ प्रहर वीर्य पात न हो और क्षुधा इतनी बढेगी कि ५ सेर भोजन वह खाने में समर्थ होगा। स्त्री प्रसंग में अव्याहत शक्ति होगी।

सीसा भस्म के गुण

नाग. समीर कफपित्त विकार हन्ता-
सर्व प्रमेह वनराति कृमीट योनि।

उष्णः सरारजतरंजन कृदशार्णो-
गुल्म ग्रहण्यतिसृतिक्षण दाशुमाली ॥ र सा प, पा स.

सीसा भस्म वात, कफ, पित्त-विकारोको हरता है,समस्त प्रमेहोका विनाशक है। उष्ण, सर है, क्षुधा और अग्निका दीपन करती, गुल्म, सग्रहणी, अतिसारका नाश करती है।

सीसा जीर्ण ज्वर, क्षय, शोथ, सुजाक, पित्तविकार, ऊष्म प्रकृति रोगो, गर्भाशय सम्बन्धी रोगो मे, लकवा, अर्धांग में लाभदायी है, अच्छी शक्तिवर्धक है। मात्रा २-४ रत्ती तक। मा अ

सुरमा काला भस्म

सौवीरं द्विगुणं निधाय तरणि क्षीरे धरेस्नेहले ।
ग्राह्यं नागमनुक्षिपेल्लघुतरं चूर्णं कृत भञ्जिताम् ॥
तद्वक्त्रं परिरुद्ध्य भूमिनिहतं सन्दह्य मग्नं समु-
द्धृत्याऽऽचूर्णं विनिक्षिपेन्मृतरसं तत्पादभाग भिषक् ॥
पिष्ट्वा खल्व तले भवेद्रसवरः सूची मुखो मस्तके
सूच्यग्रेण निवेशितोऽद्भुत तरं सौवीरयोगाज्जयेत् ॥
तन्द्रा शैत्यसुसन्निपात पवनापस्मार भूतग्रहान् ।
दृष्यन्नं ससितं ददीत गदिने शीतोपचाराहिता ॥

र रा श., र रा ल., र का.धे, र यो सा.

काले सुरमे को आक के दूध में भिगो दे फिर एक मृत काले साप फनियर के मुख मे वह सुरमे की डलियाँ रख कर अर्क दुग्ध से पात्र को भरकर सम्पुटकर जमीन में गाड दे अर्थात् भूधरपुट में रखकर २४ घटे की आच दे, (मेरी सम्मति में आच गजपुट की दें) स्वाग शीतल होने पर निकाल इसमें चौथाई पारद भस्म मिलाकर रख छोडें। सन्निपात से मूर्छित, अपस्मार से मूर्छित, हिस्टीरिया से मूर्छित रोगी को एक सूई के नोक पर रख कर तालु मे पछ लगाकर उसमे मल दे तो रोगी की मूर्छा जाती रहे। दाह मालूम हो तो शीतोपचार करे।

सुरमा सफेद भस्म

यह भी चूनकज्जलेत का ही एक यौगिक है। जिसके अणु में ऊष्मजन का

एक परमाणु अधिक मिला होता है। भस्म बनाने पर इसमें ऊष्मजन की मात्रा और बढ जाती है। अर्थात् कज्जल का स्थान भी ऊष्मजन ही ले लेता है। इसकी भस्म का विधान रस ग्रन्थो मे नही मिलता, यूनानी चिकित्साकी प्राचीन पुस्तकों में भी इसका कोई जिकर नही है, नव्य ग्रन्थो मे किसी-किसी मे उल्लेख है। नव्य चिकित्सक इसकी जो भस्म बनाते है वह निम्न है—

(१) सफेद सुरमा को कुमारी या सोसन के नुगदे में रख सम्पुटकर १५-२० सेर उपलो की आच दे तो भस्म बने। अ.ति, सि भै मा.,

(२) सफेद सुरमा को कूट खरल मे डाल पेठा रस की भावना दे, टिकिया बनाय सुखाय सम्पुटकर गजपुट की आच दे तो भस्म बने। कु र

(३) सफेद सुरमा को कूट खरल में डाल वेदमुश्क के अर्क की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुटकर १०-१५ सेर उपलो की आच दे तो भस्म बने। म अ.

सुरमा सफेद भस्म के गुण—पैत्तिक ज्वर, सुजाक, वस्तिशोथ, यकृतोष्णता, स्वप्नदोष रक्तार्श, रक्तपित्त, प्रदरमे लाभदायी है। जिन रोगो में दूध पथरी या सीप भस्म, शख भस्म, प्रवाल भस्म लाभ करती है उन सबो में इसे उपयोजित कर सकते है। वास्तव मे यह भी तो चूनजम का ही ऊष्मिद है। जैसे — प्रवाल, शख, सीपादि।

सुवर्ण

आवर्त सविभाग के प्रथम समूह की त्रिधातुओमें सुवर्ण का स्थान है जिसके भौतिक व रासायनिक गुण निम्न है

भौतिक गुण—सोना अपनी आभा-प्रभा के कारण अपने नाम सुनहरे रूप से विख्यात है। जिस पर हवा और जल का कोई दुष्प्रभाव नही होता, अर्थात् इसकी आभा-प्रभा सदा एक सी बनी रहती है। यह बहुत उत्तम विद्युत व ताप का वाहक है और अन्य धातुओ की अपेक्षा अधिक घनवर्धनीय तथा तान्त्वीय है। इसके इतने पतले पत्र (वर्क) बन सकते है कि जिनकी एक इचकी मोटाई मे २१ लाख से अधिक पत्रो की तह आसकती है और तार भी इतना बारीक बन सकता है कि १ तोला सोना की इतनी पतली तार खिंच सकती है जिसकी लम्बाई २०मीलतक जाती है। इसके अत्यन्त पतले पत्रो के मध्यसे सूर्य को देखा जाय तो उसकी हरी आभा दिखाई देती है। यह १०६१° श. पर द्रव

होता है और २५३०° श के उत्तापपर वाष्पी भूत होने लगता है उस समय इसकी ज्वाला का रग हरा होता है। कुठाली में द्रव सोना जब उड रहा हो तो हरी ज्वाला से उसे जाना जा सकता है कि यह सोना है।

आज कल सोने की शुद्धता को व्यक्त करने वाले मानदण्ड को कैरट (carat) की सख्याओ से जानते है, २४ कैरट के सोने को पूर्ण शुद्ध माना जाता है। पूर्णतया शुद्ध सोना इतना नरम होता है कि उसे पानी डालकर दृढ चिकने पत्थर पर रगड़ा जाय तो सोना घिसता रहता है, इसी लिये इतने नरम सोने के आभूषण जल्दी घिस व मुड जानेके कारण नही बनाये जाते। इसीलिये उसमें चादी और तावेकी खोट मिलाते है तव वह कठोर होजाता है। इसके एक अणु की रचना में २० के लग भग सोने के परमाणु परस्पर सगठित रहते है और वह इतनी दृढ़ता से वधे होते है कि वाल से भी पतली तार खीचनेपर वह दृढतर वने रहते है। प्रयोगो से देखा गया है कि सोनेके अणु की रचना जब तक नही टूटती, तबतक सुवर्णके अन्य यौगिक अर्थात् भस्म नही बनती। पारा इसके अणु को तोडने में परम सहायक होता है वह भी तव जब इसे अधिक खरल किया जाय या भावना दी जाय।

रासायनिक गुण—यह धनात्म प्रकृति की धातु है जिसका साधारणत ऊष्मजन से कोई सयोग नही होता, किन्तु पारद की उपस्थिति मे अर्थात् पारद की उत्प्रेरणासे यह २६० श के उत्तापपर ऊष्मजनसे संयुक्त हो जाता है। किन्तु इसके ऊष्मिद प्राय अस्थायी होते है ३७० श के उत्ताप पर गरम करने से उस का विच्छेद होजाता है। रासायनिकोने इसके ऊष्मजनसे सुवर्णास ऊष्मिद (सु$_2$अ) सुवर्णक ऊष्मिद (स$_2$ ऊ$_3$) दो प्रकार के ऊष्मिद वनाये है। वलिका से भी सुवर्णास वलिकाइद (सु$_2$ व) का एक यौगिक वनाया है।

सुवर्णमें यह विशेपता हैकि वह किसी साधारण तीव्राम्लमे नही घुलता, किंतु अम्लराजमें घुल जाता है और उसमे घुलकर सुवर्णकलवणाइद (सु$_2$ल$_3$) के यौगिक में परिवर्तित हो जाता है और अम्लराज के घोलमे जव सोना घुला हुआ हो उस घोल मे यदि तीव्र सैधव क्षार (सोडा कास्टिक) का घोल थोडा थोडा डाला जाय तो सुवर्ण के उस यौगिक में विनिमय होता है और सुवर्ण लवणजन के यौगिक को छोड कर सुवर्ण उद्गूष्मिद सु (ऊ)$_3$ के यौगिक में वदल जाता है जो उस घोल में नीचे बैठ जाता है। इसे उस घोल से भिन्न कर के यदि मन्द मन्द

आच पर भूना जाय तो उदूष्मिद का यौगिक टूट जाता है और उस समय सोनाके परमाणु ऊष्मजन से मिल कर सुवर्णक ऊष्मिद में बदल जाते है यह गेरुआ रगकी भस्म होती है।

यदि इसे कुछ और अधिक आच दी जाय तो फिर यह सुवर्णक से सुवर्णस ऊष्मिद (सु$_2$ ऊ) मे बदल जाता है जिसके रूप व गुण हमारी वनस्पति के भस्म से पूरी तरह मिलते हैं। इस तरह रासायनिकों ने सुवर्ण के अनेक यौगिक बनाये हैं।

अपक्व सुवर्ण योग

अपक्वं सजल हेमं घृष्टं क्षौद्रयुतपिबेत्।
अथवा नवकाख्य तु चूर्णितं मधुयुक् भजेन्॥ रसा प., पा. स

बिलकुल शुद्ध सोने की डली को चिकने पत्थर पर पानी डाल कर घिसे उस सुवर्ण जल में शहद मिलाकर पीवे अथवा सोने के वर्क शहद में मिला कर चाटे।

(२) यद्वा च वरखाख्य तु स्वर्णपत्रं विचूर्णितम्।
मधुना संग्रहीत च सद्योहन्ति विषादिकम्॥ नि. र, र च.

अथवा सोने के वर्क को शहद में मिलाकर कुछ दिन सेवन करते रहने से स्थावर जगम विष का रहा प्रभाव शीघ्र नष्ट हो जाता है।

(३) नवनीतसितामधु प्रयुक्तो वरखो हेमभवः क्षयच्छिणोति।
वितथः प्रभवेदयं प्रयोगो यदितन्मे शपथ. सदा शिवस्य॥
नि र, रसा स, र चं, वै. मृ, भा भै. र.

सोने के वर्को को मक्खन मिश्री और शहद के साथ मिलाकर चाटने से क्षय अवश्य ही जाता रहता है, यह बात मै शिवजी की सौगन्ध खाकर कहता हूँ।

(४) सुवर्ण के वर्क १ तो० रूह गुलाब १ सेर बढिया खरल में डाल कर उक्त रूह की भावना देता रहे, समस्त गुलाब जल के समाप्त हो जाने पर सुवर्ण को सुखाय पीस रखे। मात्रा २-४ चावल। मखजन., मि.ख

सुवर्ण की ऊष्मिद भस्में

(१ पुटी) सुवर्ण चूर्ण को गुलाबासी, तुलसी, कचनार, नीब, जगली-गुलाब फूल प्रत्येक रस की तीन तीन भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट

कर ५-६ सेर उपलो की आच दे तो सुवर्ण की भस्म वने ।
मा अ, अ का, मि ख, पा म, चा चि,

(२) सुवर्ण चूर्ण को अद्रक रस, कुमारी रस अर्कदुग्ध और पान रस प्रत्येक की तीन तीन भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ५-६ सेर उपलो की आच दे तो सुवर्ण की भस्म वने । अ त

(३) सुवर्ण चूर्णको करेलेके पत्तोके रसकी २१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २-३ सेर उपलो की आँच दे तो सुवर्ण की भस्म वने। अ त

(४) सुवर्ण चूर्ण को नकछिकनी, कुकरौंधा रस, आक, थोहर का दूध, गोमूत्र और सरसो का तेल प्रत्येक मे ७ वार वुझावे, पश्चात् थोहर के रस की २१ भावना दे अन्तिम भावना थोहर दूध की दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ६-७ सेर उपलो की आच दे तो सोना की भस्म हो । स. अ.

(५) सुवर्ण चूर्ण १ तो०, पारा १तो०,मिश्रण करे मोती ४ माशेका चूर्ण, सिंगरफ ३ माशा सवको खरल मे डाल निम्बू रस की ७ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ६-७ सेर उपलो की आच दे तो सोना भस्म वने । मा अ

(३ पुटी) सुवर्ण पत्र को निर्मली का लेप कर सुखाय निर्मली के नुगदे मे रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ३ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म वने । सि भै मा.

(२) सुवर्ण पत्र को या अशर्फी को गोरखमुण्डी के नुगदे मे रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की पुट दे, इस विधि से ३ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म वने । सनत अकवर के लेखक ने दूसरी जगह पर उक्त विधि से ७ पुट देने का उल्लेख किया है । स अ

(३) सुवर्ण वर्क को पान के रस, तुलसी के रस की ७ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर ५-६ उपलोकी आच दे इस विधिसे ३ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म वने । किसी किसी ने १० पुट भी दी है । पा स, त तु

(४ पुटी) सुवर्ण पत्र या अशर्फी को कचनार रस, कुमारी रस, सज्जीखार के पानी में २१-२१ वार वुझावे फिर कलौजी के नुगदे मे रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की पुट दे, इस प्रकार ४ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो । मि ख

(२) सुवर्ण रेत को तुलसी रस की २१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय

सम्पुट कर ६-७ उपलो की आच दे, इसविधि से ८ पुट दे, तो सुवर्ण की भस्म बने। चा चि, मि ख

नोट—मिफताय उलखजाईन के सग्रहकर्ता ने सुवर्ण रेत के साथ बराबर का पारा मिला कर फिर तुलसी रस की भावना दी है।

(७ पुटी) सुवर्ण रेत को २१ भावना शराब की देकर टिकिया बनाय सुखाय कायफल और चौलाई के लुगदे मे रख सम्पुट कर ७ सेर उपलो की आच दे। फिर अनार रस की भावना देकर टिकिया बनाय सुखाय पुट दे, तीसरी बार अद्रक रस की भावना देकर पुट दे, इस विधि से क्रमसे ८ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो। र त

(२) सुवर्ण पारा बराबर लेकर पिष्टी बनाय बराबर का नौसादर मिला कर सिरका की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर जौहर उडावे पारा नौसादर का जौहर उडेगा उसे फिर सोने मे मिलाय सिरका की भावना दे जौहर उडावे। इस विधि से ७ बार करने पर लेखक कहता है सोना भी जोहर के साथ उड कर ऊपर लग जायगा। म अ, मि म.

(३) १ तोला सोना चूरा, ३ माशा पारा दोनो को मिला कर जल पीपल के रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो सुवर्ण की गुलाबी रग की भस्म बने। मि ख

१ तोला स्वर्ण के वर्क सत्यानासी (स्वर्णक्षीरी) के रस मे २४ घटे खरल कर टिकिया बनाय सुखाय, सम्पुट कर २० आरने कडो से फूक दे। इसी विधि से ५-६ पुट देने पर काले रग की भस्म बनती है, लाल बनानी हो तो ४-५ पुटे चौलाई की और दे तो सुवर्ण की उत्तम भस्म बने।

(११ पुटी) सुवर्ण रेत को गुलाब पुष्प के रस की २१ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर ८ सेर उपलो की आच दे, इस विधि से ११ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म बने। अ त, मि ख

मिफताय उलखजाईन के सग्रहकर्ता ने १५ पुट देनी लिखी है।

(२१ पुटी) सुवर्ण पत्र को कटेली के रस मे २१ बार बुझाय बराबर का पारा डाल पिष्टी बनाय कटेली रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे इस विधि से २१ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म बने।

(६० पुटी) तन.स्वर्णभवपत्र तापित हि विनिक्षिपेत्।
ज्वालामुखी रसेषष्ठी पुटै र्भस्मी भवत्यलम् ॥ र. प्र सु.

सुवर्ण के पत्र बनाकर उन्हे लाल करके ज्वालामुखी के रस में ६० वार बुझावे फिर ज्वाला मुखी के नुगदे मे रख सम्पुट कर कुक्कुट पुट की ग्राच दे, इस विधि से ६० पुट दे तो सुवर्ण की भस्म बने।

(७ पुटी) राजवृक्ष रसेनापि भल्लातैष्टङ्कणेन च।
लिप्त्वा स्वर्णस्य पत्र च रुध्वा गजपुटे पचेत् ॥
तैर्द्रवैश्च पुन. पिष्टं[1] म्रियतेसप्तवा पुटै। र ज नि., र. र.

१ पिष्ट्वा इति रसरत्नाकरे।

स्वर्ण पत्रो को ग्रमलतास, भिलावा, सुहागा से लेप कर सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की ग्राच दे, इस विधि से ७ पुट देने से सुवर्ण की भस्म हो।

(१० पुटी) पारावत मलै र्लिम्पेद्थवाकुक्कुटोद्भवै[1]।
हेम पत्राणि तेषां च प्रदद्या[1]दन्तरान्तरम्।
गंधचूर्णं समं धृत्वा शराव युगसम्पुटे।
प्रदद्यात्कुक्कुटपुट पचभिर्गोमयोपलै. ॥
एव नवपुट दद्याद्दशम च महापुटम्।
त्रिंशद्वनोपलैर्देयं जायते हेमभस्म तु ॥
चि र, र प्र, र का वे, भा भे र, यो र, शा ध, व रा, र रा सु,

१ दधरोत्तरम् इति रसप्रदीपे।

वसवराजीये इक्षुरसेन मर्दित गन्धकलेप हेमपत्रेषु कृत्वा पुट दद्यात् त्रिपुटै र्भस्मतामेतीति। ग्रस्मिन् ग्रन्थे भिन्नपाठ प्रतिपादित।

स्वर्ण पत्रो को कबूतर या कुक्कुट विष्ठासे लीप कर सुखाय नीचेऊपर वलि दे कर सपुट मे रख कुक्कुट पुट मे—५ उपलो की—ग्राच दे, इस तरह ९ पुटे दे, फिर १०वी वार गजपुट की ग्राग देनेसे स्वर्णकी भस्म हो। सि. यो. प्र

वसवराजीयके कर्ता ने विष्टा के विना ही केवल वलि को ईखके रसमे घोट उसका लेप सोने के पत्रो पर कर पुट देने का विधान दिया है वह कहता है कि ३ पुट में ही भस्म हो जाती है।

(१० पुटी) हेम्न. सूक्ष्मदलानि भूर्जसदृशान्यादाय संलेप्य वै।
वज्रीदुग्धक हिंगुहिंगुलसमैरेकत्र पिष्टीकृतै[1] ॥

सत्य संपुटके निधाय दशभिश्चैव पुटैं कुक्कुटे. ।
पाच्यं हेम च रक्त गैरिक समं सजायते निश्चितम ॥
भा भैं र, र प्र सु, र. च

सोनेके सूदम पत्रोपर हींग और सिंगरफको थोहरके दूधमे पीसकर लेप करे, सूखजाने पर शराव सम्पुटमें बद कर कुक्कुट पुटमें फूंक दे। इस प्रकार १० पुट देने से गेरु जैसी भस्म होगी।

हेम्न. पाद मृत सूत पिष्ट मम्लेन केनचित् ।
पत्रे लिप्त्वा पुटे पच्याद्ष्टाभिर्म्रियते ध्रुवम् । र र स,
र. ज नि, व रा, र ल, र प्र सु, र सागर, र त

आनन्दकन्दे रस प्रकाश सुधाकरे रससागरे च भिन्न-भिन्न पाठ प्रतिपादित। रस प्रकाश सुधाकरे अम्लस्थाने गुग्गुल रस नियोजितम् । तथा दशभिपुंटै प्रकल्पित इति विशेष।

सुवर्ण पत्रो से चौथाई हिंगुल को लेकर जम्बीरी निम्बू के रस मे घोट पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे इस विधि से ८ या १० पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो।

नोट—रसतरगिणीकार ने उक्त विधि मे निम्न सशोधन किया है। सुवर्ण को गला कर उसमें हिंगुल चूर्ण की चुटकी दे तो सुवर्ण पीसक बन जाता है उसमें चोथाई हिंगुल मिलाय निम्बू रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे।

(७ पुट) प्रत्येकमेकंगद्याण शुद्ध सूत सुवर्णयो: ।
खल्वेपिष्ट्वा त्र्यहं कार्या पिष्टि. सूक्ष्मा सुवर्णजा ॥
वस्त्रे क्षिप्त्वाथ तापिष्टिं ग्रन्थिवद्धवा दृढांतत: ।
मृन्मयी गोस्तनाकारा मूषाकार्या दृढ़ाततः ॥
स्थालिका वालुका पूर्णां मूषांतत्रान्तरे क्षिपेत् ।
चुल्ल्या मारोप्य ता थालीं हठाग्निं ज्वालयेदथ. ॥
शुद्ध गन्धक गद्याणं नष्टौ मूषान्तरे क्षिपेत् ।
गलिते गन्धके जाते तिलतैलेन सन्निभे ॥
प्रक्षिपेद्धेमजां पिष्टिं ग्रन्थि वद्धाञ्च गन्धके ।

द्व्योगन्धक गद्याणो सुहुर्दग्धे च गन्धके ।
एवमेव महोरात्र स्वेद्या पिष्टिश्चहेमजा ॥
शुद्धगन्धक गद्याण द्वययुक्तां दिन द्वयम् ।
वज्री क्षीरेण सम्पेष्य प्रक्षिपेच्च शरावके ॥
भूमावेवपुटोदेयो लावक. पुटसप्तकम् ।
तुङ्ग याऽनयामृत हेम चूर्ण कृत्वा सुसूक्ष्मकम् ॥

र क, र चि, र यो. सा.

पारा सुवर्ण चूरा प्रत्येक ६ मा० दोनो को खरल कर पिष्टी बनावे छोटे वालुका यन्त्र मे एक कुठाली विठा कर उसमे उक्त पिष्टी रख कर वालूको खूब गरम करे कुठाली गर्म होने पर उसमें ४ तोला वलि डाल दे वलि तेल जैसी पिघल कर हो जायगी और फिर धीरे-धीरे जलेगी जब वह जल जाय उसमें ६ माशे वलि और डाल दे इस प्रकार ४ अहोरात्रि सुवर्ण पिष्टी पर गन्धक जारण करे। एक अहो रात्रि के वाद वलि की मात्रा १-१ तोला डाले ४ दिन वाद पिष्टी को निकाल थोहर के दूध मे घोट कर टिकिया बनाय सम्पुट कर लावक पुट की आच दे, इस विधि से ७ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो।

सूतस्य द्विगुण गन्ध मम्लेन कृत कज्जलीम् ।
द्वयो समंकृत स्वर्ण सस्यगम्लेन मर्दयेत् ॥
शराव सम्पुटांतस्थ मधः ऊर्ध्वं च सैन्धवम् ।
अष्ट यामाद्भवेद्भस्म सर्वयोगेषु योजयेत् ॥

भा. भै र, र रा सु, र च, र ज नि

१ भाग पारा को २ भाग गधक मे कज्जली बनावे, दोनो के बराबर स्वर्ण पत्रो को मिलाकर निम्बू रसमे घोट सम्पुटमें रख उस सम्पुट को लवण यन्त्रमे दवा कर ८ प्रहर पकाने से स्वर्ण की भस्म होती है। सि औ प्र.

(२) विशुद्ध गंधाऽश्म पल पल रसात्पल तथा शोधित शुद्धकांचनम् ।
पुटेन वह्नौ पुटित कनीयसा क्षौद्रे णसाऽऽज्येनयथाग्निभक्षितम्॥

लो प, र प्र सु, र च, र र.म मा., र यो सा.

शुद्ध वलि और पारा ४-४ तोला सोना की रेत भी ४ तो० सुवर्ण पारद की पिष्टी बनाय वलि मिलाय किसी अम्ल रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे तो सुवर्ण भस्म हो। कितनी पुटो मे

यह ग्रन्थकारने स्पष्ट नही किया ।

(३) शुद्धं हेमंश्लक्ष्ण पत्रीकृतं तद्वार वार सूतगन्धानुलिप्तम् ।
तीव्रे वह्नौ काञ्चनारे हलिन्याज्वालामुख्या सम्पुटे भस्मकुर्यात् ।
र का धे, धन्व, र ज नि.

शुद्ध सुवर्ण के बारीक पत्रो पर पारा वलि की कज्जली का कचनार या ज्वालामुखी या लागली के रसमे घोट वारम्वार लेप कर सुलावे फिर सम्पुट मे रख तीव्र आच दे कर भस्म वनावे । कितने पुट मे भस्म वनावे ? इसने भी स्पष्ट नही किया, किन्तु निम्न ग्रन्थ इस को स्पष्ट करते है ।

(४) काचनाररसै घृष्टा सम सूतक गधयो ।
कज्जलीहेम पत्राणिलेपयेत्[1]समया तया ॥
काचनार त्वचः कल्कै मूषायुग्म प्रकल्पयेत् ।
धृत्वा तत्सपुटे गोलं मृन्मूषा सपुटेपचेत् ।
विधाय सन्धिरोध च कृत्वा सशोष्य [2]गोलकन् ।
वह्नि खरतरं कुर्यादेव दत्वा पुट त्रयन् ॥
निरुत्थ जायते भस्म सर्व कर्मसु योजयेत् ।
भा भै र भा प्र, शा ध, आ वे. प्र, र. प्र, चि र, र प

रस पद्धतो भिन्न पाठ प्रतिपादित तथा चतुर्दशपुट प्रदीयतानिनि ।

१ मात्रया रसप्रदीपेइतिपाठ । २ गोमयै रस प्रदीपे इतिपाठ ।

कचनार रससे पारद और गधककी कज्जली को घोट कर स्वर्ण के पत्रो पर लेप करे । फिर कचनार छाल की दो मूपा वना कर उसमे स्वर्ण पत्रोको रख शराव सम्पुट मे वद कर सम्पुट को सुखाय तीव्राग्नि दे, इस तरहकी ३ पुट देने से स्वर्ण की निरुत्थ भस्म हो ।

(५) कांचनार प्रकारेण लांगलो हन्ति कांचनम् ।
ज्वालामुखो तथा हन्या[1] यथा हन्ति मनः शिला ॥
र ज नि., र प्र, भा भै र, भा प्र, आ वे प्र

१ तथा रसप्रदीपे इति पाठ

स्वर्ण को जैसे कचनार से घोट कर भस्म करते है, वैसे ही लागुली या ज्वालामुखीसे भी भस्म वनावे या मैनसिल देकर भस्म वनावे, इसने भी पुटोकी सख्या नही वताई है किन्तु अभिप्राय यह है कि तबतक पुटे देता रहे जव

तक सुवर्ण की भस्म न बन जाय।

(१० पुटी) कृत्वा कण्टक वेध्यानि स्वर्ण पत्राणि मेलयेत्।
नवनीत निभा पिष्टीं कृत्वा ता बलिनासह ॥
लुङ्गाम्बु भस्म सूतेन म्रियते दशभि. पुटै।
रसमंजरी, रसे चू, र का धे, र. र स, र प्र सु, र ज नि, भा भै र.

सुवर्ण के सूक्ष्म पत्र बनाय खरल मे डाल बराबर का पारा मिलाय पिष्टी बनावे, फिर बलि मिलाकर जम्बीरीके रसमे घोट टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आंच दे, इस विधि से १० पुट दे तो सुवर्ण की भस्म बने।

(१४ पुटी) शुद्ध सूत समं स्वर्णं खल्वे कृत्वा तु गोलकम्।
[1]ऊर्ध्वाधो गन्धक दत्वा सव तुल्यं निरुद्ध्य च ॥
त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात् पुटान्येवं चतुर्दश।
निरुत्थ जायते भस्म गन्धो देयो पुन. पुन. ॥ र.र., वृ यो त, र चू, र का धे., र प., र द, र च, र त, रसे चि, आ क,

१ अधोर्ध्वं इति रस चण्डाशौ।

जम्बीरद्रवदानतु सर्वत्रैव विनिश्चित इति रसचण्डाशौ भावनार्थं निर्देश।

सुवर्ण चूर्ण के बराबर पारा मिलाय पिष्टी बनाय उस पर बराबर का बलि देकर सम्पुट कर ३० बनोपल की पुट दे, इस प्रकार १४ पुट दे तो सोना की निरुत्थ भस्म बने। ग्रन्थकार कहते है प्रत्येक पुट मे बलि देता रहे। इसमें भावना देने के समय किस का रस डाले ? इसका उत्तर रसचण्डाशुकार देता है कि जहाँ भावना में रस का उल्लेख न हो वहा जम्बीरी का या निम्बू का रस डाले।

नोट—रस तरंगिणी कार ने प्रत्येक पुट में १६ वा भाग पारा डालते रहने का आदेश दिया है, कहता है इससे सुवर्ण भस्म ठीक बनती है।

(१४ पुटी) स्वर्णाच्च द्विगुण सूत मम्लेन सह मर्दयेत्।
तद्गोलकसम गंधं निदध्याद्धरोत्तरम् ॥
गोलकं च ततो रुन्ध्याच्छराव दृढ सपुटे।
त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात् पुटान्येव चतुर्दश ॥
निरुत्थ जायते भस्म गन्धो देय. पुन' पुन। भा प्र, गा ध,
र ह, आ वे प्र, भा भै र, र प, र म, चि र, र का धे, र त, रसा सा, र ज नि

रस पद्धती भिन्न पाठ प्रतिपादित, सप्तधापुटै र्भस्मी भवति इति व्याख्यात ।

स्वर्ण पत्रो मे दुगुना पारा मिलाय निम्बू रससे घोटे, जब मिल जाय गोला बनाय गोले के नीचे ऊपर उन दोनोके बराबर बलि दे शराब सम्पुट में रख ३० उपलो की अग्नि दे, इस तरह १४ पुट दे तो स्वर्ण की भस्म हो ।

नोट—रसायन सार के कर्ता ने पारा सोनेसे तिगुना डाला है और बराबर का बलि मिला कर खरल कर काच कूपी मे भर प्रथम कूपी पाक किया है। स्वर्ण सिन्दूर बना लेने के बाद जो स्वर्ण नीचे रहता है उसे कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच देता है, वह कहता है इस प्रकार १४ पुट दे तो सुवर्ण भस्म बन जाती है ।

पलेन सूतेन तदर्ध हेम सम्मर्द कुर्वीत दिनद्वयेन ।
पिष्टं ततो गन्धक मल्लयुग्म सूतेन तुल्यं परिमर्दयेत्तत् ॥
पचेत यन्त्रेऽनुच वालुकाख्ये गले विलग्न रसमाददीत ।
तले विलग्नं च सुवर्ण भस्म तारोऽप्यनेनैव यथा सुसिध्येत् ॥
रसा सा

४ तोला पारा २ तो० सोना पिष्टी बनावे फिर बलि, सोमल ४-४ तो० मिला कर खरल कर कूपी मे भर वालुका यन्त्र में चढाय ४ प्रहर की आच दे तो ऊपर मल्ल सिन्दूर तल मे सुवर्ण भस्म मिले ।

नोट—इस तरह मे सुवर्ण भस्म नही बनती और पुटें दे तब बनती है ।

यथा—चन्द्रोदय बनाने के समय नीचे रही हुई काली भस्म को जलमे घोल कर मैल निकाल दे, २-३ बार में गन्धक की स्याही निकल जायगी इन भस्म को तुलसी वा कुकरोदा के रस मे खूब घोटे, गाढी होने पर धूप मे चीनी की प्लेट मे सुखा दे, इसे सपुट मे रख कुक्कुट पुट की आच दे इस प्रकार ८ पुट देनेपर फीके लाल रग की भस्म बने । र. त सा, रसा सा

रसायन सार के कर्ता ने कुमारी, आक, थोहर दूध की भावना देकर पुट देने की विधि बताई है ।

(१० पुटी) शुद्ध स्वर्णभव चूर्णं तत्सम श्वेतमल्लकम् ।
काञ्चनार द्रवैर्मर्द्य तुलसी स्वरसैस्तथा ॥
विधाय चक्रिका शुष्कां ततो लघुपुटे पचेत् ।
द्वितीयादौ पुटे देय मल्लं पादमितं बुधै. ॥

अरुणाभं भवेद्भस्म हेम्नस्तुदशभि.पुटैः । रसामृत

सुवर्णकी रेत और सोमल बराबर ले कचनार और तुलसी रस की ७-७ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुटकर लावकपुट की आचदे । पुन निकाल सुवर्ण ने चौथाई सोमल मिलाय उक्त विधि से भावना दे सम्पुट कर लघुपुट की आच दे, इसी प्रकार १० पुट दे तो सुवर्ण भस्म हो । जबतक सुवर्णकी भस्म न हो जाय सोमल बराबर मिलाता रहे । जब भस्म बन जाय फिर सोमल न मिलावे उन भस्म को फिर कमल, मौलश्री या गुलाब इनके रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर १२ पुट और दे तो उत्तम भस्म बन जाती है/। सिद्ध योग संग्रह

(३ पुटी) सूची वेध्यानि पत्राणि सुवर्णस्य समाहरेत् ।
रसेशं तत्समं दत्वा मर्दयेत्तु दिनत्रयम् ॥
निम्बू नीरेण सम्मर्द्य वारिणा क्षालयेद्भृशम् ।
श्वेतपाषाण चूर्णञ्च स्वर्णार्द्धं तत्रनिक्षिपेत् ॥
जम्बीरस्य द्रवं दत्वा पेषयेच्च दिनत्रयम् ।
शोषयित्वा द्रवं सम्यक् विदध्यात् श्लक्ष्ण चूर्णकम् ॥
शुद्धगन्धक चूर्णं च तत. स्वर्णोन्मितं क्षिपेत् ।
शराव सम्पुटे न्यस्य विदध्यात्सन्धिरोधनम् ॥
पुटेल्लघुपुटेनैव यावन्निश्चन्द्रिकं भवेत् ।
काचनार त्वचोत्थेन वारिणाभावितस्ततः ॥
पुटेत्त्रिधा लघुपुटे स्वाङ्गशीत समाहरेत् ।
एवजाम्बव वर्णाभं भस्म हाटकजं भवेत् ॥ र त

सुवर्ण वर्क के बराबर पारा मिलाय पिष्टी बनाय निम्बू रस की ३ भावना दे उसे फिर धो डाले फिर उसमें सगमरमर का चूर्ण सोने से आधा मिलाय निम्बू रस की ३ भावना दे फिर सोने के बराबर बलि मिलाकर टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की पुट दे, इस विधि से ३ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म बने । सगमरमर पहिली ही पुटमे मिलावे ।

(१०पुटी) कृत्वा कण्टकवेधीनि स्वर्णपत्राणि लेपयेत् ।
शिलासूताम्ल पिष्ट्या च म्रियते दशभि. पुटैः ॥ चि र

सुवर्ण के बारीक पत्र बना कर मैनसिल पारद को निम्बू रस मे घोट पत्रो

पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आंच दे, इसविधि से १० पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो ।

(३ पुटी) रसस्य भस्मना वाऽथ [1]रसेनाऽऽलिप्यतद्दलम् ।
हिंगुहिंगुलसिन्दूरैः शिला साम्येनमेलयेत् ॥
समर्द्य काचन द्रावैर्दिन कृत्वाऽथ गोलकम् ।
तं भाण्डस्यतले [2]दत्वा भस्मना पूरयेद्दृढम् ॥
अग्नि प्रज्वालयेद् गाढ द्विनिशांस्वाग शीतलम् ।
उद्धत्य सावशेष चेत्पुनर्देय पुट [3]द्वयम् ॥
अनेन विधिना स्वर्ण निरुत्थ जायते मृतम् ।

भा भै र, वृ यो त आ वे प्र, र रा सु, र र प्र, र का वे, रसमजरी, र ज नि

१ रसैर्वालिपयेद्दलम् रसमजर्यामिति पाठ । २ धृत्वा रसरत्न प्रदीपे रसमजर्यामितिपाठ । ३ त्रयम् रसमजर्यामितिपाठ ।

स्वर्ण के बारीक पत्रो पर पारद भस्म या पारे का लेप करे, फिर हीग, हिंगुल, सिन्दूर तथा मैनसिल को कचनार के छिलके के रसमे घोटे, उस मे स्वर्ण पत्रो को घोट, गोला बनाय, कपरौटी की हुई मजबूत हण्डीमे उस गोले को रख सम्पुट कर उसपर एरने उपलो की राख मुह तक दबा कर भर दे और फिर उसे चूल्हे पर चढा कर दो दिन की तीव्राग्नि दे । इस प्रकार दो या तीन पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो ।

(१० पुटी) स्नुग्दुग्ध हिंगुहिंगूल शिलासिन्दूरकाम्लकैः ।
पुटित दशवारेण निर्जीव हेम जायते ॥

थोहर का दूध, हीग, हिंगुल, मैनसिल, सिन्दूर इन सब को निम्बू रस मे घोट सुवर्ण पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट में रख लघुपुट की पुट दे, इस प्रकार १० पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो ।

(२) शालची कटुका सिन्धुवार जम्बीर वारिणा ।
काचनार जयाभेका चागेरी स्वरसै. पृथक् ॥
तदेतैरेव सूर्याशं प्रदद्याद्भावनामपि ।
नोवासूक्ष्म दलीकृत्य स्वेतार्क पयसा प्लुतम् ॥
सिन्दूर कुनटी ताप्य दोद्रैरुद्धत्य काचनम् ।
सारयित्वा पुटैर्गर्ते पुटित पूर्व भेपजम् ॥ रसे चू, र का वे, र, त

सुवर्ण पत्रो पर सिन्दूर, मैनसिल, माक्षिक, को शहद मे पीस लेप कर के सम्पुट में रख ८ सेर उपलो की आच दे। फिर निकाल शान्तिशाक, कुटकी सभालू, जम्बीरी निम्बू रस, कचनारफूल रस, भाग, ब्राह्मी, चागेरी, स्वेत आक दूध सबो की धूपमें बैठ कर भिन्न भिन्न भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे, इस विधि से तीन पुट देने पर सुवर्ण की भस्म हो।

(४) शिलागन्ध रसेन्द्रञ्च रविदुग्धेन लेपयेत्।
स्वर्णसूक्ष्मदलानि त्रि पुटैर्यान्ति हि भस्मताम्। चि र

सुवर्ण के सूक्ष्म पत्र बना कर उन पर मैनसिल, वलि, पारद को आक के दूध में घोट लेप कर सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे, इस विधिसे ३ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो।

(५) हिंगुलं गन्धक सूत नवसार मन. शिलाम्।
अम्लेन मर्दयेत्सर्व हेमपत्राणि लेपयेत्॥
छागणकैःपुट देय हेम भस्म प्रजायते। र ना, र का धे, र त

हिंगुल, वलि, पारद, नौसादर और मैनसिल सब सम भाग इनको कूट निम्बू रस की भावना दे सुवर्ण पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट कर अर्ध गजपुट की आच दे, इस विधि से दो तीन पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो।

(१ पुटी) नाग चूर्णं शिलावज्री[1] क्षीरेण परियोजितम्।
[2]तेनलिप्त सुवर्णं च कल्केन म्रियते पुटात्॥
र. सागर, आ. क, र. ज नि, र प्र सु.

१ क्षार समन्वितम् इति रस प्रकाश सुधाकरे २ तेन लिप्य सुवर्णस्य कल्कञ्च इति रस जलनिधौ।

यद्वामृतेन करिणा शिलायोगेन भस्मताम्।

रसालकारे अय पाद भिन्न प्रतिपादित।

स्वर्ण पत्रो पर सीसा और मैनसिलका चूर्ण, आक दूध मे घोट लेप कर सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे, इस विधि से कुछ पुटें दे तो स्वर्ण की भस्म हो।

(७ पुटी) काचने [1]गलिते नागं षोडशांशेन निक्षिपेत्।
चूर्णयित्वा तथाम्लेन घृष्ट्वा कृत्वातु गोलकम्॥

गोलकेन समं गंध दत्वा चैवाधरोत्तरं ।
शराव सम्पुटे कृत्वा पुटे [२]द्विंशद्वनोपलैः ।
एवं सप्तपुटे हेम निरुत्थ भस्म जायते ॥

ना मे र, भा प्र, वृ यो त, रसे मा म., यो र, आ व, चि. र, रस मंजरी, वृ र. प्र, वै द, र प्र, र का धे, र न क, र मा. प

[१] गालिते इति रस प्रदीपे २ त्रिंशद् इति रससंकेत कलिकायां रसप्रदीपेच

सोना गलाकर उसमें १६वां भाग सीसा डालकर ठण्डा करउसे कूटकर चूर्ण करे, फिर नींबू रस मे घोट टिकिया बनाय नीचे ऊपर गंधक का चूर्ण देकर शराव सम्पुट मे बंद करके, २० उपलो की आग दे, इसी प्रकार ७ पुट दे तो सुवर्ण की निरुत्थ भस्म हो। रस संकेत कलिका और रस प्रदीपमें ३० वनोपल की आंच देना लिखा है।

(१० पुटी) [१]स्वर्ण मावर्त्य तोलैक मापैक शुद्ध नागकम् ।
[२] क्षिप्त्वाचाम्लेन सञ्चूर्ण्य तत्तुल्यौ गन्ध माक्षिकौ ।
अम्लेन मर्दयेद्यामं रुद्ध्वा लघुपुटे पचेत् ।
गंध. पुनः पुनर्देयो म्रियते दशभिः पुटैः ॥

आ क, र का धे, र. ज नि, भा. भै र. रसे. चिं, चि र, र.र.

[१] हेम मारभ्य इति रसरत्नाकरे२ लिप्त्वादेयन्तु इति रसरत्नाकरे २ क्षिप्त्वा दाय च तत् इति आनन्दकन्दे ।

१ तोला स्वर्ण को पिघला कर १ माशा शुद्ध सीसा डालकर उतार ले पुन १ तोला शुद्ध गंधक १तो० स्वर्ण माक्षिक चूर्ण मिला कर पुन निम्बू के रस मे १ प्रहर घोट गोला बनाय मूसाय सम्पुट मे रख लघुपुटकी आंच दे, इस विधि से १० पुट दे तो स्वर्ण की भस्म हो।

(१ पुटी) माक्षिकं नाग चूर्णं च पिष्टमर्कं रसेन च ।
हेम पत्रं [१]पुटेनैव म्रियते क्षणमात्रत. ॥ भा भै र, र रा सु, रसे. सा स, र. च, र. र., र ज नि,

१ च तेनैव इति रसचण्डांशौ ।

स्वर्ण-माक्षिक और सीसे का चूर्ण १-१ भाग ले, आक के रस वा दुग्ध मे घोट, सम भाग स्वर्ण पत्रों पर लेप कर मूसाय सम्पुट कर लघुपुट की आंच दे तो सुवर्ण की भस्म हो।

(२ पुटी) ¹स्वर्णार्धं पारदं दत्वा कुर्याद्यत्नेनपिष्टिकाम् ।
दत्वोर्ध्वाधो नाग-चूर्णं पुटनान्म्रियते ध्रुवम् ॥
मा. भै. र, र रा सु, र च, र र, रज. नि

¹ सुशुद्धं इति रस चण्डांशौ ।

२ भाग स्वर्ण मे १ भाग पारद मिला कर पिष्टी बनाय नीचे-ऊपर सीसे का चूर्ण बिछा कर शराव सम्पुट मे बन्द कर लघुपुट की आच दे, इस तरह कुछ पुटे देने से सुवर्ण की भस्म हो ।

(३) सौवीर मञ्जन पिष्ट्वा चार्कवन्वरसैर्दृहेत् ।
जात रूपस्य पत्राणि शरावे सम्पुटे पचेत् ।
गजाख्येन पुटेनैव स्वर्ण याति भस्मताम् ॥
मा भै. र, र रा सु, र ज नि

काले सुरमे को भागरे के रसमे घोट, स्वर्ण पत्रो पर लेप कर सम्पुट में रख गजपुट की आँच दे, इस विधि से कुछ पुटें दे तो स्वर्ण की भस्म हो ।

(४) सूतेनपिष्टिका कृत्वा स्वर्णरुद्ध्वाशरावके ।
स्वल्पनीलाञ्जनोपेत दग्ध स्वल्पैर्वनोपलै. ॥
कुङ्कुमाभं भवेद्भस्म योऽयं रस रसायने । रसे चू

धारा और सुवर्ण रेत को मिलाकर पिष्टी बनावे उस पिष्टी पर सुरमे का लेप कर शराव सम्पुटकर लघुपुट की आच दे तो सुवर्ण की भस्म हो ।

(५) स्थूलवालघुकिञ्चिकाञ्चन दलं त्रि. काञ्चनारिद्रवै. ।
अक्लृद्यन्मृतशृङ्गलिप्त पुटित भस्मत्वमापद्यते ॥ र प

पतले पतले सुवर्ण के पत्रो पर मुर्दा सग की भस्म को कचनार के रस में खरल कर पत्रो पर लेप चढाय सुखाय सम्पुट मे रख लघुपुट की आच दे तो सुवर्ण की भस्म हो । मादन उल अक्सीर का लेखक मुर्दासग और कबूतर की विष्टा से भस्म बनाने का विधान देता है । मा अ.

नोट—सुरमा सीसा और वलि का यौगिक है, मुर्दा सग भी सीसा की ऊष्मिद भस्म है, इसलिये यह सुवर्ण की भस्में सीसा योग की है ।

(१० पुटी) इक्षोररिष्टेन दरंप्रलिम्पेत्कंकुष्ठ चूर्णेन च मृच्छरावम् ।
सुवर्णलोष्ठी च निधाय मध्ये पिधाय चान्येन च तस्य वक्त्रम
वनोपलानां युग सेटकानां ददीत वह्निं पुनरित्थमेव ।

यावत्पुटानान्तु रात प्रमाण भवेत्सुवर्णस्य निरुत्थ भस्म।
निष्कादरागाञ्च न मार्जनस्यात्स्पर्शस्यकाठिन्य मपिप्रजह्यात्॥
रसा सा

जिस प्याले मे १० तो० वस्तु आवे उसमे प्रथम सिरका चुपड दे उस पर मुर्दा सग का चूर्ण १ मासा लगा दे उस प्याले मे १ तो० सुवर्ण की डली रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की पुट दे शीतल होने पर निकाल इसी विधि को १० वार करने पर श्यामसुन्दराचार्य कहते है कि यदि सुवर्ण की अशर्फी रखी गई होगी तो उसके अक्षर भी बने रहेगे और सुवर्ण की भस्म हो जायगी, जो अगुली से मलने पर घिस जायगी, श्यामसुन्दराचार्य ने अपनी उक्त रचनामे ककुष्ठको मुर्दा सग माना है जिसे टीकामे स्पष्टत स्वीकार किया है कि मुर्दा सग मे सीसे का अश रहता है। वास्तव मे मुर्दासग सीसे का ही यौगिक है किन्तु ककुष्ठ न तो खनिज पदार्थ है, न सीसे का यौगिक है। खैर! उक्त भ्रामक व्याख्यासे हमे यहा कोई प्रयोजन नही, किन्तु यहा जो उन्होने सुवर्णकी डली को मुर्दासग से भस्म बनने का विधान दिया है इसे किसी वैद्य को बना कर देखना चाहिये।

(८ पुटी) मृतंनागस्नुही क्षीरै रथवाम्लेन केनचित्।
पिष्टातेन समाशेन स्वर्णपत्राणि लेपयेत्॥
रुद्ध्वा गजपुटे पक्त्वा समुद्धृत्यविचूर्णयेत्।
तस्मिन्नेव मृतं नाग मष्टमाशेन लेपयेत्॥
यामैक मर्दयेदम्लै रुध्वा गजपुटे पचेत्।
एवमष्टपुटैः पक्वंमृत भवति हाटकम्॥ ऋद्धिखण्ड, र र

आनन्दकन्दे निम्नपाठ प्रतिपादित।

पिष्ट्वा लेप्य स्वर्णपत्र रुध्वा गजपुटे पचेत्।
आदायपेपयेदम्लैमृन्नागं चाष्टमाशकम्।
वद्ध्वागजपुटे पच्यात्पूर्व वंशागसंयुतम्।
एवपुनः पुनः पच्यादष्टधा म्रियते ध्रुवम्॥ आ क

सीसा भस्म को थोहर के दूध में घोट अथवा किसी अम्लरस मे घोट सुवर्ण के पत्रो पर लेप कर सुखाय सम्पुट मे रख गजपुट की आच दे, फिर निकाल अष्टमाग सीसा भस्मको घोट पत्रोपर लेपकर सम्पुटमे रखकर पुट

दे, इसी विधि से आठ पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो ।

(३ पुटी) हेम पत्राणि सूक्ष्माणि जम्भाम्भो नागभस्मन. ।
लेपत पुट योगेन त्रिवारं भस्मता नयेत् ॥
पुनः पुटेन त्रिवारं तन् म्लेच्छतो नागहानये ।
यो र भा भै र, र का वे, र ज नि, भा भै र. रसे चि,

योगरत्नाकरे भारत भैषज्यरत्नाकरे भिन्न पाठ प्रतिपादित तथा त्रिपुटेन भस्म निर्माण विधि प्रतिपादिता ।

सूक्ष्म स्वर्ण पत्रों पर नीबू रस मे घुटी सीसे की भस्म का लेप कर, सपुट में रख ३ पुट दे, इसी प्रकार हिंगुल मिला कर घोट गोला बनाय सपुटकर ३ पुट और देने से स्वर्ण की भस्म हो ।

नोट—उक्त तीनों विधियां एक है किन्तु एक ग्रन्थकार आठ पुट मे दूसरा छ पुट मे तीसरा तीन पुट मे भस्म बनने का उल्लेख करता है । इस अन्तर का क्या कारण ? वास्तव मे सुवर्ण जल्दी नही मरता, ३ और ६ पुट में यदि भस्म बन जाती तो आठ पुट देने की आवश्यकता नही थी । आठ पुट तभी देनी पडी जब उसमें त्रुटि दिखाई दी इसी लिये यह ठीक समझे ।

(३ पुटी) शिला सिन्दूरयोश्चूर्णं समयोरर्क दुग्धकै. ।
सप्तधा भावनां दत्वा च्छोपयेच्च पुनः पुन' ॥
ततस्तु गलिते हेम्नि कल्कोऽस्य दीयते समः ।
पुनर्धमेदतितरां यथा कल्को विलीयते ॥
एवं वेलात्रय दद्यात्कल्क हेम मृतिर्भवेत् ॥

भा भै र., भा प्र, आ वे प्र, शा ब, र रा सु, र. प्र, चि र, र ज नि. र र कौ, र का वे, र सा प

मैनसिल और सिन्दूर सम भाग को आक के दूध की ७ भावना दे । फिर १ भाग स्वर्ण को गला कर उसमें १ भाग उक्त मिश्रण डाल दे, तीव्राग्नि पर रख इतना धमावे कि मैनसिल आदि जल जाय, इसी प्रकार उक्त मिश्रण को मिला कर तीन बार तपाने से स्वर्ण की भस्म हो जाती है ।

(वमन पुटी) स्वर्णस्य द्विगुणं सूतं याममम्लेन मर्दयेत् ।
[1]ऊर्ध्वाधो माक्षिकं [2]पिष्ट्वा मूषायां स्वर्ण तुल्यकम् ॥
तत्पृष्ठे मादृतं हेम, तत्पृष्ठे [3]हेम माक्षिकम् ।

देय स्वर्ण सम तच्च पृष्ठे गंध च तत्समम ॥
[2]षड् वारं चूर्णितं दत्त्वा रुद्ध्वा मूषां धमेद् दृढम् ।
स्वभाव शीतलं ग्राह्यं भस्म तद् भाग पचकम् ॥
टङ्कण श्वेतकाचञ्च भागैकंच प्रयोजयेत् ।
त्रितय मधुनाज्येन [5]मिलितं गोलकी कृतम् ॥
[6]धान्याभ्रकस्य भागैक मधश्चोर्ध्वंञ्च दापयेत् ।
निरुध्य तद्धमेद् गाढ मूषाया घटिकाद्वयम् ।
निरुत्थ जायते भस्म तत्तद्योगेषु योजयेत् ॥

आ क , र ज नि , र र

१ आरोट इनि आनन्द कन्दे । २ क्षिप्त्वा इति आनन्दकन्दे । ३ रुद्ध इति आनन्दकन्दे । ४ समधि इति आनन्दकन्दे । ५ मेलयेत् इति आनन्दकन्दे । ६ व्यानाहृत च इति आनन्दकन्दे ।

स्वर्ण-पत्रों को दुगुने पारे मे १ पहर निम्बू रस मे घोटे फिर टिकिया वनाय सुखाय नीचे ऊपर स्वर्ण- माक्षिक डाले, फिर गंधक डालें और मूषा मे रखकर धमावे । इसी प्रकार ६ वार गंधक देकर धमावे तो स्वर्ण की भस्म हो । यह भस्म ५ भाग, सुहागा १ भाग, श्वेत काच १ भाग तीनो को मधु और घृत से गोला वनाय अभ्रक पत्र के वीच देकर मूषा मे रख सम्पुट कर २ घटे रख तीव्र आँच देने से स्वर्ण की निरुत्थ भस्म होती है ।

(२ पुटी) स्वर्ण तुल्यंरसंदत्वा खल्वे सम्मर्दयेद्दृढम् ।
निम्बू द्रवेण सम्मर्द्य वहुशः क्षालयेद्भिपक् ॥
कुमारी रससिन्दूरं स्वर्णतुल्य विनिक्षिपेत् ।
सुवर्णमाक्षिकंचैव मृत कनकमाक्षिकम् ॥
स्वर्णक्षीरी रसै. पिष्ट्वा चक्रिका करयेद्भिपक् ।
दद्याल्लघुपुटे वैद्यो यावन्निश्चन्द्रिकं भवेत् ॥ रसामृत

सुवर्ण रेत के वरावर पारा मिलाय पिष्टी वनाय निम्बू रस की भावना दे देकर नित्य धोता रहे, ३ दिन के वाद उस पिष्टीमे सुवर्ण के वरावर मैनसिल तथा इतना ही हिंगुल तथा चौथाई माक्षिक भस्म मिलाकर सत्यानासी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर लावकपुट की आच दे, इस प्रकार कम से कम तीन पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो ।

(२) ततोरेतितमेवैतत्तुल्यं च सूतकम् ।
सूतार्धं धातुमाक्षीक कुमारीमाक्षिकोन्मितम् ॥
गन्धकं सूतकोन्मानं सर्वं [१]कन्याद्रवप्लुतम् ।
सुखल्वे मर्दयेद्गाढं यावन्निश्चन्द्रिकं भवेत् ॥
ततः कच्छपयन्त्रस्थं तत्पुटे प्रहर [२]त्रयम् ।
स्वाङ्गशीत [३]समादाय पुटेद्भूगर्भगर्भकम् ॥

रसे चू, र का धे, लो स

१ मम्ल इति लो. स २ द्वयम् इति. लो. स ३ समुद्धृत्य इति लोहसर्वस्वे

सुवर्ण की रेत के बराबर पारा मिलाकर घोट पिष्टी बनावे फिर पारे से आधा मैनसिल व माक्षिक तथा पारद के बराबर बलि सबको मिलाकर कुमारी रस की इतनी भावना दे कि पिष्टी घुटती हुई निश्चन्द्र हो जाय, उसे कच्छप यन्त्र में रखकर ३ प्रहर पकावे या भूगर्भ की पुट दे, इस प्रकार कम से कम तीन पुट देने पर सुवर्ण की भस्म हो ।

(१ पुटी) तत्सुवर्णं दलंकृत्वा सूक्ष्मं कुर्याद्विचक्षणः ।
जम्बीर नीरेण हेम माक्षिकं मर्दित भिषक् ॥
तद्दले लेपिते दन्ती पुटं देय शरावके ।
भस्मी भवति शीघ्रेण नात्र कार्या विचारणा ॥

र. चि, र. का धे, व रा, आ क, र ल.

आनन्दकन्दे रसालकारे भिन्नपाठ प्रतिपादित

उस सुवर्ण के पतले पत्र बनाय उस पर निम्बू रस मे घुटी हुई माक्षिक को पत्रोपर लपकर सुखाय दन्ती के नुगदे मे रख सम्पुट कर लघुपुट की आच दे तो सुवर्ण की भस्म बने ।

रस चिन्तामणि और रस कामधेनु संग्रहकर्ता ने निम्बू के स्थान पर कचनार रस में माक्षिक घोट कर लेप करना लिखा है बस इतना ही अन्तर है ।

समसूतेनवै पिष्टं कृत्वाऽग्नौ नाशयेद्रसम् ।
स्वर्णं तत्सम ताप्येन पुटित भस्मजायते ॥

र च, रसे चि, र ज नि, र सागर

रस सागरे भिन्नपाठ प्रतिपादित ।

पारद सुवर्ण बराबर मिलाकर पिष्टी बनाय कुठाली में रख धमन करे

और पारद को धमन क्रिया से नष्ट कर दें फिर सोने के बराबर माक्षिक मिलाय कचनार रस या निम्बू रस में घोट टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुट की आच दे तो सुवर्ण की भस्म बने ।

(१० पुटी) लोह पर्पटिका बद्धं मृतं सूत समाशकम् ।
विद्रुते हेम्नि निक्षिप्तं स्वर्णं भूतिप्रभं भवेत् ॥
तद्भस्म पूरतोयेन दरदेन समन्वितम् ।
मर्दयेद्दिनमेकं तु संपुटे धारयेत्ततः ॥
पुटित दशवारेण स्वर्णं सिन्दूर सन्निभम् ।
जायते नात्र संदेहो सर्वरोगेषु योजयेत् ॥

र मृ., भा भै र, र प्र सु ।

स्वर्ण को पिघला कर उसमें लोह-पर्पटिकाबद्ध-पारद भस्म डाल दे इससे स्वर्ण भस्म सा हो जायगा। फिर सिंगरफ मिलाकर बिजौरे के रस में १ दिन खरल करके शराव सम्पुट में बंद कर लघु पुट दें। इस प्रकार १० पुट देने से सुवर्ण की सिन्दूर सम भस्म हो जाती है।

(१२ पुटी) द्रुते विनिक्षिपेत्स्वर्णे लोहमानं मृतं रसम् ।
विचूर्ण्य लुङ्गतोयेन दरदेन समन्वितम् ॥
जायते कुंकुमच्छायं स्वर्णं द्वादशभिः पुटैः ।

रसे चू, र ज नि., भा भै र, र स,

१ भाग स्वर्ण पिघला कर, १ भाग लोह पर्पटी का बद्ध पारद मिलाय, १ भाग हिंगुल, नीबू रस मे घोट उसपर लेपकर सुखाय सम्पुट में बन्द कर लघु पुटकी आच दे, इस तरह १२ पुटें देने से केसर जैसी वर्ण की लाल भस्म हो।

(८ पुटी) शुद्धसूत सम गंधं माक्षिक च सहाम्लकैः ।
अष्टभिश्चपुटैर्हेम म्रियते पूर्ववत्क्रियाम् ॥ र र, आ.क.

पारा बलि और माक्षिक इनको बिजौरा निम्बू रस मे घोट सुवर्ण पत्रो पर लेप कर सम्पुटकर लघुपुट दे, इसी प्रकार ८ पुट दे तो सुवर्णकी भस्म हो।

(१४ पुटी) तुल्य त मर्दयेच्छुल्कं समकनक माक्षिकम् ।
गाढं खल्वे विमर्द्याथ स्वरसैः काञ्चनारजैः ॥
शराव सम्पुटे कृत्वा पुटेदष्टादशोपलैः ।
कार्या कनक पुष्पाणां वृद्धिरेव पुटे पुटे ॥

यावद्गौरिक वर्णाभं स्वर्ण भस्म प्रजायते ।
तोलिते यदि वृद्धि.स्यात्पुन' पाकं समाचरेत् ॥
एवं चतुर्दश पुटैर्निरुत्थं भस्म जायते । र.का. धे.

सुवर्ण के वरावर माक्षिक चूर्ण मिलाय दोनो को खूव घोट कचनार रसकी भावना देकर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुटकर १८ वनोपलकी पुट दे, इस प्रकार १४ पुट देने पर सुवर्ण की लाल गेरु जैसी भस्म वनती है ।

ग्रन्थकार कहता है यदि सुवर्ण भस्म का वजन वढ जाय तो उसको और आगे पुटे देता रहे और प्रत्येक पुट में धतूरे के फूलो की वृद्धि करे अर्थात् धतूरे के फूलो का नुगदा अधिक दिया करे ।

वक्तव्य—माक्षिक में ताम्र और लोह दो धातुए होती हैं, जव यह सुवर्ण के वरावर एक वार मिलाया जायगा तो इसकी मात्रा से १ तोला सोना हर हालत मे १॥ तोला से कुछ अधिक उसकी भस्म रहेगी । ग्रन्थकार कहता है, वजन वढ जाय तो पुट देता रहे । पुट चाहे कितनी ही क्यो न दी जॉय ताम्र और लोह का जो सुवर्ण में मिश्रण हो जाता है, यह पुट देने से कदापि नही घट सकता । हा पुट देते-देते छीजन में चली जाने से अवश्य ही घट सकती हैं ।

शोधिताशोधितं हेम माक्षिक च द्विभागिकम् ।
द्वौ भागौ पारदस्यापि निम्बुनीरेण मर्दयेत् ॥
हेम पत्रस्य भागैकं लिप्त्वाऽम्लेन विमर्दयेत् ।
त्रियामं पातनायन्त्रे हठा त्तद्गोलकं पचेत् ॥
शराव सम्पुटे कृत्वा पुटे त्रिंशद्वनोपलैः ।
पुनरम्संमर्द्यस्यादेव लेनदशधा मृति. ॥ र.का धे, र र, आ.क.

आनन्दकन्दे रसरत्नाकरे भिन्न पाठ प्रतिपादितः । द्वयो ग्रन्थयो पातन-यन्त्रेण विधिनानिरुत्थ भस्म विधान विहितम् इति । रसकामधेनौ धमन पश्चात् पुन दशवारपुट प्रकल्पितम् ।

शुद्ध और अशुद्ध माक्षिक एक-एक भाग पारा दो भाग सोने के पत्र एक भाग पारे से सोने का मिश्रण कर सवको एकत्र कर निम्बू रस से घोट पिष्टी वनाय अन्ध मूषा मे रख ६ घटे तक तीव्र अग्नि मे धमन करके पुन निकाल खरल में डाल निम्बू रस की भावना दे, टिकिया वनाय सुखाय सम्पुटकर ३० वनोपल की आच दे । इस विधि से १० पुट दे तो सुवर्ण की भस्म हो ।

रसरत्नाकर और आनन्दकन्दकार कहते हैं कि अन्धमूपा में रख पातनयन्त्र में धमन करने से ही सुवर्ण की निरुत्थ भस्म हो जाती है। यदि ऐसा होता तो रसकामधेनु कार और दस पुटें क्यों देता, इससे ज्ञात होता है कि धमन मात्र से सुवर्ण भस्म नहीं होती।

अथवा मृतवज्रेण योगिन्यश विलेपितम्।
अम्लवर्ग विलिप्तं च पुटितं याति भस्मताम्॥ आ क., र ल

अथवा वज्र भस्म सुवर्ण पत्र से १२ वा भाग ले अम्लवर्ग में घोट उन पत्रों पर लेपकर सम्पुट में रख लघुपुट की आच दे तो सुवर्ण की भस्म हो।

सुवर्ण भस्म के गुण

विष भुक्ताय दद्याच्च शुद्धायोर्ध्वं मधस्तथा।
सूक्ष्म ताम्ररजः काले सक्षौद्रं हृद्विशोधनम्॥
शुद्धे हृदिततः शाण हेम चूर्णस्य दापयेत्।
नसज्जते हेमयोगे पद्मपत्रेऽम्बुवद्विपम्॥ र सा प, पा स

विष खाये हुए को नीचे लिखी विधि से सुवर्ण सेवन करावे। प्रथम तत्काल ताम्र चूर्ण शहद मिला कर वमन के लिये दे, जब उससे वमन विरेचन होकर कोष्ठ शुद्ध हो जाय उसकेबाद ४ माशा सुवर्ण दे. इसके देनेपर विष का प्रभाव जाता रहता है।

एतद्भस्मसुवर्णज कटुघृतोपेत द्विगुञ्जोन्मितं
लीढहन्ति तृषां क्षयाग्नि सदनं श्वासं च कासारुचिम
ओजोधातु विवर्धनं वलकरं पाड्वामयध्वन्सनम्
पथ्यं सर्वविपापह गरहरं दुष्टग्रहण्यादिनुत्॥ र र स, पा स,

२ रत्ती सुवर्ण भस्म काली मिर्च घृत के साथ सेवन करने से क्षय, तृषा मन्दाग्नि, श्वास, कास और अरुचि को नाश करता है। ओजरस और धातुओं को वढाने वाला है। वलकारक, पाण्डुरोग, असाध्य संग्रहणी और विष को नष्ट करने वाला है।

स्निग्धं मेध्यविषगरहरं वृंहणं वृष्यमग्र्यं
यक्ष्मोन्माद प्रशमनं परं देह रोग प्रमाथि।
मेधा बुद्धि स्मृति सुखकरं सर्वदोषामयघ्नम्।
रुच्यं दीपि प्रशमित रुजं स्वादुपाकं सुवर्णम्॥ र.र.स

सुवर्ण भस्म स्निग्ध है मस्तिष्क के लिये हित कर है स्थावर जगम विषो के विकारो को दूर करनेवाली है। वीर्य वर्वक, अग्नि वर्वक है, उन्मादको शमन करने वाली है, और वडे वलवान् रोग यक्ष्मा को शमन करने वाली है स्मृति शक्ति बुद्धि को वढाती है, सुख स्वास्थ्य को देने वाली है। समस्त दोषो रोगो को नष्ट करने वाली, रुचि वर्धक, क्षुधा वर्धक,जीर्ण रोगोको दवाने वाली पाकमे मधुर है। उक्त रोगो से भिन्न निम्न रोगो में भी इस को देते है अर्धाव-भेदक, मनालिया, वहम, कास, श्वास, अर्श, भगन्दर, नाडीव्रण, कण्ठमाला, श्वित्र कुष्ठ, सिध्म, आमवात में लाभ दायी है। शरीर के प्राकृतिक उत्ताप को स्थिर रखती है। मात्रा १ रत्ती

अनुपान—ब्राह्मी, वच, कुठ, शखपुष्पी इनके चूर्ण २-३ माशा के साथ लेने से उन्माद, अपस्मार, भूतबाधा मे लाभ होता है और बुद्धि स्थिर होती है।

कुठ, वच, मधु, और घृत से अथवा मछेछी, शखपुष्पी, मधु घृत से या हिरन खुरी, वच मधु घृत से सेवन करने पर मेधा वृद्धि होती है, सौख्य वढता है। पुनर्नवा त्रिफला चूर्ण शहद से नेत्र ज्योति निर्बलता में, शखपुष्पी रस शहद से मन्द बुद्धि में देते है।

सेलखड़ी (दूधपथरी) भस्म

इसको यूनानी में सगजराहत, गुजराती और मरहटी में घा पाषाण कहते है। यह वास्तवमें चून कज्जलेत का ही एक यौगिक होता है, जिसके अणु मे जलके दो परमाणु विद्यमान रहते है इसे यदि आगमें रख दें तो इसमें से जल के उक्त परमाणु उसके यौगिक से निकल जाते है और वह केवल चून कज्जलेत रह जाता है इसकी भस्मका उपयोग रस ग्रन्थमे नही मिलता। सुधापाषाण का नाम आता है जो चूने के पत्थर के लिये उपयोजित हुआ है इसकी जानकारी तो वहुत पीछे की है यूनानी के किसी प्राचीन ग्रन्थ में भी इसका उल्लेख नहीं मिलता। नव्य ग्रन्थो में ही इसका अधिकतर उल्लेख हुआ है इसके भस्म करने की अन्यग्रन्थो में निम्न विधिया है।

(१) दूध पथरी को कुमारी के गुदे मे रख सम्पुट कर अर्व गजपुट की आच दे तो भस्म होगी। सि भै मा.

(२) निम्ब पत्रो में रख उक्त विधि से आच दे। सि भै. मा.

(३) दूध पथरी को १४ वार गावजवा के अर्क में बुझावे फिर उक्त विधि

से कुमारी के गुदे में रख सम्पुट कर पुट दे। र न मा.

(४) दूध पथरी को गधी के दूध में रख कर पुट दे। अ न

(५) इसे तेल मे ३ दिन रखकर पीपलके नुगदेमें रखकर पुट दे। मखजन

(६) इसमे बराबर फिटकरी मिलाय कुमारी मे रख कर पुट दे। अ स

(७) इसे ब्रह्मदण्डी के नुगदे में रख सम्पुट कर पुट दे। मखजन

(८) इसे लोबान कौडिया मे रख कर पुट दे। अ न, नि ख

(९) इसे मुण्डी बूटी के नुगदे मे रखकर पुट दे। अनु यो मा

(१० इसे गोदुग्ध में घोट टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर २० सेर उपलो की पुट दे। अ त.

(११) इसे जख्म हय्यात के नुगदे मे रख कर पुट दे। म अ

(१२) इसे भाग के नुगदे में रख कर पुट दे। म अ

तवे पर फिटकिरी डाल कर पिघलावे जब फिटकरी गल जाय उसके बराबर पिसी दूध पथरी उसमें मिलादे और प्याले मे ढक कर थोडी देर आच दे फिटकरी फूल जाय उतार ले। अ. ति

(१४) गोदन्ती और दूध पथरी बराबर की मिलाकर गोजिह्व (वन गोभी) के नुगदे में रख २० सेर उपलो की आच दे। म अ

(१५) दूध पथरी को खुरफा रस, बांसा रस, बारतग की एक एक भावना दे सुखा कर रख ले। मखजन

(१६) इसे मक्खन में रख कर पुट दे। नि कि

सेलखड़ी भस्म के गुण

प्रत्येक श्लेष्म विकार, नजला, कास, रक्तष्ठीवन, पित्तज्वर,प्रमेह, रक्तपित्त, नकसीर, यकृत, आमाशय व्रण, सूजाक, मुख स्फोट, में लाभदायी है। कहीं से भी रक्त स्राव होता हो, ऋतु अधिक आ रहे हो, रक्त बन्द न होता हो तो इसके सेवन से लाभ होता है।

सोमल

भौतिक गुण—सोमल जब विशुद्ध रूप में होता है तो इसका रग काले भूरे काच जैसा चमकदार होता है, यह धातुओ जैसा ही ताप व विद्युत का अच्छा वाहक है किन्तु अन्य धातुओ के गुण इसमे नहीं पाये जाते। यह चोट

मारने पर काचवत् चूरा हो जाता है दूसरे धातुओवत् हवाकी विद्यमानता मे पिघलाया भी नहीं जा सकता। हवा रहित वन्द वर्तन मे गरमी दी जाय तो १८०° श० के उत्ताप पर पिघलता है और ज्यादा देर द्रव वना रहे तो इसका वर्ण भूरा काला हो जाता है।

सोमल के कई रूप—सोमल को जहा खनिजो से भिन्न किया जाता है वहा इसे हवा शून्य भट्टो मे जव पिघलाते है तो उस समय यह तीन रूपो मे पाया जाता है।

(१) रवारहित डले के रूप मे (२) घन वर्गाकार अष्टफलक रवाके रूप में (३) कुछ समपार्श्वीय रवादार। किन्तु इनमे मे किसी को पुन हवा शून्य पात्र में उदजन की उपस्थिति में पिघलावें और इसकी वाष्पो को भिन्न भिन्न उत्तापपर शीतल करें तो यह कई वर्णों में वदल जाता है। १६० शताश से २१० शताश के उत्ताप पर जमाया जाय तो इसका वर्ण भूरा रवा युक्त वनता है। यदि २१०—२२० शताश के उत्ताप पर इसकी वाष्प को जमाया जाय तो काला रवा रहित चमकीला होता है और इसकी वाष्प को एका एक १०० शताश केनीचे ले जाकर जल्दी शीतल कर दे तो यह पीले रवो के रूप में जमता है और कज्जल द्विऊष्मिद की उपस्थिति मे भी इसी तरह शीतल करनेपर पीला रवादार वनता है। यह इस तरहके रग रूपमे कुछ काल तक स्थायी रहता है। किन्तु, इसके भूरे डलो को खुली हवा मे रखा रहने दें तो वह हवा का ऊष्मजन चूस कर सफेद दूधिया वनता चला जाता है, यही ऊष्मिद हुआ सोमल हम सव सदा ही व्यवहार में लाते है। इनमे कोई कोई वहुत वडा डला तोडा जाय तो वह अवश्य भीतर से काच सा चमकदार निकलता है। जो हवा के अभाव से वचा रहने के कारण अपने असली रूप में होता है, वरना सारा का सारा ही सफेद हो जाता है।

रासायनिक गुण—यह अञ्जन, विस्मिथ नैलिका श्रेणीका अर्ध धातवतत्त्व है। इसमे यह विशेपता है कि जव यह ऋणात्मक तत्त्वोसे मिलता है तो धातुओ का सा आचरण करता है और जव यह धातुओ से मिलता है तो ऋणात्मक तत्त्वोका सा आचरण करता है अर्थात् इसमें धातव और अधातव दोनों तत्त्वोंके गुण मौजूद है इसलिये इसकी अर्ध धातव तत्त्वोमे गणना की गई है।

इसकी परमाणु मात्रा ७४-६ है तथा घनता ५-७ है। इसकी यथक्षा

उस तरह तो ४ है पर उच्च ताप पर घटकर दो ही रह जाती है। इसका क्वथनाक ४५० श० निर्वात मे है। सवात में तो यह गरम होते ही शीघ्र ऊष्मजन से सयुक्त हो सोमल ऊष्मिद(सो$_2$ऊ$_3$) मे परिणत होने लगता है इसकी वाष्प वन कर जब हवा मे मिल कर चारो ओर फैलती है तो उसकी लहसुन की सी गन्ध आने लगती है। यह विषाक्त होती है, आखो में लग कर व फुफुस में हवा के साथ जाकर बहुत हानि पहुचाती है। भस्में बनाते समय जब सोमल उड़ रहा हो उक्त गन्ध से इसका शीघ्र ज्ञान हो जाता है।

सोमल का उपयोग—प्राचीन रसग्रन्थो मे इसका कही भी उल्लेख नही मिलता, १६ वी शती के वाद के ग्रन्थो में इसका उल्लेख मिलता है। इससे पता चलता है कि १७ वी शताब्दी मे रसायनाचार्यों को इसका ज्ञान हुआ था।

किन्तु इसके प्राकृतिक दो यौगिक हरिताल और मन शिला का उपयोग रसवादी आरम्भ से ही करते रहे है किन्तु उन्हें इस वात का ज्ञान नही था कि हरिताल और मैनसिल सोमल के ‚वलि से वने हुए ही यौगिक है। इसका सही ज्ञान तो इसी वीसवी शताब्दी मे आकर नव्य रसायन शास्त्र की सहायता से हुआ। इस समय हम सोमल का उपयोग तीन रूप में करते है (१) ऊष्मिद रूप में (२) धातवीय लवणो के रूप में (३) वलि से मिल कर वनने वाले वलिकाइद के रूप में जैसे हरिताल मैनसिल।

किसी वनस्पति की भस्म के सयोग से जो सोमल का यौगिक बनता है वह प्राय वनस्पति मे विद्यमान क्षारोके उत्पादक धातुओ से इसका सयोग होता है, वह इसका लवण होता है। दूसरे केवल वनस्पतियो के लुगदेमें रखकर भस्म वनाने पर यदि भस्म वन जाय तो वह उच्च ऊष्मिद होती है। तीसरी वलि के साथ मिलाकर कूपी पाक में जो माणिक्य नाम से इसकी भस्म वनाते है वह वलिकाइद(मैनसिल रूप की)होती है। इन्ही का हम सव उपयोग करते है। उस तरह आजकल के रसायन शास्त्री इसके अनेको यौगिक वना कर अनेको तरह से व्यवहार में ला रहे है जिन का हमारे विषय से कोई सम्बन्ध नही।

सोमल भस्म

(१) शुभ्र मल्ल तु कर्षैक लघुमृद्भाजने न्यसेत्।
तस्योपरि ह्यजादुग्धं पञ्चकर्ष च ढालयेत्॥

मुद्रां मृत्कर्पटेनैव कृत्वाभूमौ निवेशयेत् ।
मृत्तिकां द्व्यङ्गुलमिता तस्योपरि प्रदापयेत् ॥
दशभिः करिषैर्दद्यात्तस्योपरि धनञ्जयः ।
एक विंशति पुटैश्चैव मल्लभस्म भवेद्ध्रुवम् ॥
निर्धूमं याति मरण मौपधादिषु योजयेत् ॥ र. च

एक छोटी सी कुल्हड़ी मे १ तो० सोमल रख कर उस पर ५ तोला बकरी का दूध भर कर सम्पुट कर भूधर यन्त्र में रख उस पर दो अगुल मिट्टी चढादे फिर १० उपलो के चूरे की आच दे, इसविधि से २१ बार करे तो सोमल की पीली भस्म बने ।

(२) कन्थारी काष्ठजां क्षारं स्वेत वर्णं प्रगृह्य च ।
कर्षैकं मल्लस्याधोर्ध्वं मृद्भांडे सम्प्रदापयेत् ॥
चुल्या मारोपयेद्भाण्ड बदरीकाष्ठ वह्निना ।
यामद्वयात्मकं पाच्यं भस्मी भवति मूषकः ॥ र च.

कन्थारी काष्ठ की भस्म बना कर भस्म यन्त्र में सोमल को दाव दे कर चूल्हे पर रख दो प्रहर तक बेर की लकडी की आच दे तो सोमल भस्म बने ।

(३) रूमामस्तकि चूर्णं तु ग्राह्यं कर्ष त्रयात्मकम् ।
कर्षैकं मल्लस्याधोर्ध्वं दत्त्वा तन्मृच्छरावके ॥
आच्छाद्य लोह पात्रेण सन्धि लेपं तु कारयेत् ।
पूरयेदर्क पयसा शरावं च विचक्षण ॥
पात्रं निमज्जमानेन पाचयेद्यामसात्रकम् ।
सोमलो भस्मतां याति योजयेत्कफ वातजे ॥ र च

रूमी मस्तगी का चूर्ण ३ तो० सोमल १ तो० एक कुल्हडी में रूमी मस्तगी के मध्य सोमल रख उसमें आक का दूध भर दे फिर सम्पुट कर लोहे के बर्तन मे चढा कर ३ घटे की आच दे तो सोमल की भस्म बने ।

(४) कण्टकारी रसैः सप्तदिन भाव्यं तु सोमलम् ।
एवं वारत्रय काचकूप्या सत्व च पातयेत् ॥
एतत्सत्वे पादसूत सगन्धं कज्जलीकृतम ।
कण्टकारी मूषिकायां शरावं पाचयेत्पुनः ॥
यामाष्टकं वज्रवनो रसं समस्त अर्तिजित् । र का धे, भा भै र

सोमल को कटेली रस की ७ भावना दे फिर उसे काचकूपी मे चढाय यन्त्र में रख उसको उडावे इस प्रकार ३ वार करे, उस जौहर का चौथाई पारा और इतना ही वलि मिलाय खरल कर टिकिया वनाय कटेली के नुगदा में रख सम्पुट कर वालुकायत्र मे चढाय ८ प्रहर की आच दे तो यह वज्रघन नाम का रस तय्यार होता है। इसे समस्त रोगो मे दे।

(५) स्फटिको धवलश्चैव दाडिमः कृष्ण पीतकः ।
एते पञ्चाहि पापाणा· गृह्णीयात्सम भागकैः ॥
खल्वे किञ्चिद्विचूर्ण्याथ क्षिपेड्डमरु यन्त्रके ।
रम्भाकन्द रसैश्चैव प्रतिकर्षे चतुर्गुणम् ॥
दापयेत्तत्समं चैव लिंगिनी स्वरसं तथा ।
सन्धि लेपं तथा कृत्वा चुल्योपरि निधापयेत् ॥
मन्दाग्नौ पाचयेद्याम चतुष्टयं विधानतः ।
मूर्ध्नि दत्वाऽऽर्द्र वस्त्रं तु स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥

र च, भा भै र

पाचो प्रकार के सोमल ले फिर केला रस, शिवलिंग रस सोमल से चौगुने ले सवको एक शीशीमें भर वालुकायन्त्र में या डमरुयन्त्र में रख चूल्हेपर चढा कर ४ प्रहर की आच दे। जो जौहर ऊपर लगे उसे खुर्च पीसकर प्रयोग मे लावे। मात्रा १ चावल। श्वास,कास, विपम ज्वर, वात व श्लेष्म रोगो में दे।

(६) ऋतु भागं सोममलं तालं दिनमित तथा ।
कन्याद्भि· पञ्चदश च भावना छिक्कका द्रवैः ॥
अश्वत्थ त्वच मध्यस्थ पड्याम दापयेत्तत· ।
आरण्योपलकै· शीतमश्वगन्धाम्बु योजित· ॥
भावयित्वा रसैस्तत्तु तालं कुष्ठ हर भवेत् ।
नित्योदितो स रसोऽत्र रसराजीयता भजेत् ॥

र का धे, र यो सा, भा भै र

६ भाग सोमल, ७ भाग हरिताल दोनो को कुमारी, नकछिकनी की १४ भावना दे, टिकिया वनाय पीपल की भस्म मे रख सम्पुटकर, चूल्हे पर रख ६ प्रहर की आच दे फिर निकाल एक भावना असगन्ध की देकर रख ले। मात्रा १ राई के वरावर है।

समस्त कुष्ठो में इसका उपयोग करे इसका नाम नित्योदित रस है।

(७) लाल मूली के पत्तो का रस निकाल उसमे भांग पत्र को घोट नुगदा वनाय उसमे सोमल की डली रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो सोमल की लाल भस्म वने। रक्त शोधक, शक्ति वर्धक है। मात्रा १ चावल। अ त

(८) सोमल की डली को करछी में रख एक सेर पेठा रस का चोया दे तत्पश्चात् अपामार्ग की राख मे दावू देकर ४ प्रहर की आच दे तो सोमल भस्म वने। मात्रा २ चावला मधुमेह में लाभ करता है। अ. त.

(९) सोमल की डली को हरमल की भस्म में दावू देकर २४ घटे की आंच दे तो सोमल भस्म वने। प्लेग मे लाभदायी है। मात्रा १-२ चावल। स अ

(१०) सोमल को अद्रक रस की भावना दे नुखाय प्यालो में सम्पुट कर जौहर उडावे। उस जौहर को निकाल वजन करे जितना घटा हो उतना सोमल और मिला कर पुन अद्रक रस की भावना दें जौहर उडावे, इस तरह ७ वार करे तो सोमल की नीचे वैठी हुई सफेद भस्म वने। अनु यो मा

(११) अर्कक्षार, आपामार्गक्षार ४-४ तो इसके नुगदे में सोमल की डली को रख पारस पीपल की राख मे दावू देकर ४ प्रहर की आच दे तो की सोमल की भस्म वने। अ त

(१२) सोमल को त्रिधारा थोहर के दूध की ३ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय २० तो० थोहर भस्म में रख दावू दे सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो सोमल भस्म वने। अ त

(१३) सोमल की डली को सिन्दूर मे दावू देकर १६ घण्टे की चूल्हे पर रखकर आच दे तो भस्म वने। फिरग में लाभदायी है। स अ मि ख

(१४) सोमल की डली को लाजवन्ती के नुगदे मे रख सम्पुट कर १ सेर उपलो की आँच दे। इस विधि से ७ वार करे तो सोमल भस्म वने। अत्यन्त उत्तेजक व कामोद्दीपक है। स अ, अ त.

(१५) सोमल को आक दूध की ७ भावना दे टिकिया वनाय आक भस्म मे दावू दे सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो सोमल की भस्म वने। स्तम्भक, श ; ग्वप्न दोष नाशक है। स अ

(१६) सोमल की डली को इन्द्रायण के फल मे रख सम्पुट कर पुटपाक करे इस तरह २१ वार कर पीस ले यह भी रेचक है। मात्रा १ चावल। मि ख

(१७) सोमल को फिर थोहर दूध की ३ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय थोहर भस्म में रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो सोमल भस्म वने। रक्त विकार, फिरग, कुष्ठ, श्वित्र कुष्ठ में लाभदायी है। इसके सेवन से रेचन आते है। मात्रा १ चावल। मि ख, मखजन

(१८) सोमल डली से चौगुने जैपाल वीज के नुगदे में वन्द कर करछी में रख इन्द्रायण के रस का चोया दे, २-३ वार इसी प्रकार करने पर सोमल मोम सा हो जायगा। मात्र १ चावल। लाभ उक्त लिखे अनुसार नाडीव्रण, भगन्दर मे भी लाभदायी है। मा अ, मि ख.

(१६) सोमल की डली को करछी में रख जैपाल वीजो को घोट दूध सा वनाय उसका चोया दे, १ सेर वीचो का चोया दे। पश्चात् सोमल की डली को अर्क गुलाव मे खरल कर रख ले। तीव्र रेचक है। उक्त रोगो में १ चावल दूध से दे। मखजन मि. ख

(२०) सोमल डली को जैपाल बीज तेल का चोया दे तो सोमल मोम सा हो जाता है। यह तीव्र रेचक है। मि. ख.

(२१) सोमल को लाल मिर्च के काढे की ७ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय एरण्ड पत्र के नुगदे में रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की पुट दे तो भस्म वने। ज्वर, नजला, फिरग, सुजाक, श्वास, कास, न्यूमोनियामें लाभदायी है। अ त

(२२) सोरा से दूनी दूधी दोनो को कूटकर कढाई में रख प्याले से ढक कर आच दे दूधी के जल जाने पर सोरा नीचे वैठ जायगा इस सोरे के नुगदे मे सोमल रख अपामार्ग, केला या तिल के राख में दाव देकर ४-५ घटे की आच दे तो भस्म वने। अ त

(२३) सोमल को वडी दूधी के रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय तिल भस्म मे दाव देकर बेरी की लकडी की ४ घटे आच दे तो सोमल की भस्म वने। अ त

(२४) सोमल को शराव, अद्रकरस, कुमारी रस की भावना देकर जौहर उडावे। जितना सोमल घटे और मिला कर फिर भावना दे जौहर उडावे ४-५

वार में सोमल की तललग्न भस्म वन जाती है। इस भस्म को पुन सम्पुट कर भूभज की आंच में स्वेदन कर पीस ले। उक्त गुण करे। अ त

(२५) सोरा में भस्म किया अभ्रक ले उसके मध्य सोमल रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो सोमल भस्म बने। अर्श, भगन्दर, नाडी व्रण में लाभदायी है। मात्रा वही १ चावल। अ त

(२६) सोमल की डली को आक दूध में १५ दिन भिगोवे, दूध नित्य बदले फिर डली को गुलाबासी के नुगदे में रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे तो सोमल की भस्म बने। अ त

(२७) सोमल डली को नागफनी की राख में दाबू देकर ६ घटे की आच दे जब सोमल फूलेगा राख ऊपर को उठ जायगी उसी समय आच बन्द कर दे, निकाल पीस धरे मूर्छा, सन्निपात, आक्षेप, पार्श्वशूल, जीर्णज्वर, विषमज्वर, श्वास, फिरग रोग में दे। मात्रा १ चावल। र त सा

(२८) सोमल को गुलाब अर्क की ३ भावना दे टिकिया बनाय दारचीनी चूर्ण के मध्य सम्पुट में बन्द कर चूल्हे पर रख ३ घटे की मन्द २ आच दे तो सोमल की भस्म बने। र त सा., स अ, मि ख.

(२९) सोमल डली को आठ गुने फिटकिरी चूर्ण में दाबू देकर सम्पुट कर १ सेर उपलोकी आच दे तो सोमलकी भस्म बने। किसी किसी ने ४ उपलो की पुट दी है। र त सा, स. अ, मि. ख.

(३०) तिल, पीपल, कायफल और इमली इनमें से किसी की भस्म मे दाबू देकर ४ प्रहर की चूल्हे पर आच दे तो सोमल भस्म बने। सि भै मा

(३१) सोमल को मस्तगी चूर्ण में दाब स्वेदन करे फिर उसे करछी मे रख मँजीठ चूर्ण सोरा से ढक कर करछी को आग पर रखे, जब सोरा मे अग्नि लग कर बुझ जाय उतारकर सोमलको निकाल पीस ले। श्वास मे दे। मि ख

(३२) सोमल को २१ दिन आक दूध मे भिगो कर फिर नागफनी के नुगदे मे रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो सोमल भस्म बने। फिरग, सुजाक, अस्थिव्रण में लाभदायी है। मात्रा २ चावल तक।

अ ति, मि ख, सि भै. मा

(३३) सोमल की डलियो को सलगम कन्द में भर कर सम्पुट कर चूल्हे पर रख कर पकावे ३-४ वार करने पर सोमल नरम हो जाता है उसे फिर

सलगम के नुगदे में रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आंच दे तो सोमल भस्म बने। मा अ, मि ख, म अ, अ, त

(३४) सोमल को बड़ी दूबी के रस की भावना दे सुखाय आतशी शीशीमें भरकर वालुका यंत्र में रख ४ प्रहर की आंच दे। फिर निकाल उक्त विधि से भावना दे सुखाय काँच कूपी मे भर वालुका यंत्र में रख कर आंच देता रहे, २१ वार करने पर तललग्न सोमल भस्म बने। मि ख

(३५) सोमल से चौगुना कपूर मिला कर प्यालो मे सम्पुट कर जौहर उडावे। उस जौहर को काम में लावे। स अ, नि ख.

(३६) सोमल को द्रोणपुष्पी रस की ७ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय ५ सेर राख में दाव देकर ८ प्रहर की आंच दे तो सोमल भस्म बने। मि भैं मा.

(३७) सोमल से चौगुना सोराके नुगदेमें रख सुखाय ढाक की राखमें दाव् देकर सम्पुट कर १० सेर उपलो की आंच दे तो सोमल भस्म बने। स.अ

(३८) सोमल को इन्द्रायण के नुगदे मे रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आंच दे तो सोमल भस्म बने। जलोदर में लाभ करता है। १-२ चावल माजून फिलासफा से दे। स. अ

(३९) सोमल को करछी मे रख कर आंच लगावें, गरम होने पर फिट-किरी की चुटकी देता रहे २० गुना फिटकिरी की चुटकी देकर उतार ले, सोमल पर लगी फिटकिरी सुर्च कर पीस ले। मात्रा ½ चावल, फिरंग में लाभदायी है। स अ

(४०) सोमल को लहसुन रस की २१ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय लहसुन के नुगदे में रख सम्पुट कर ३ सेर उपलो की आंच दे। इस विधि से दो पुट दे तो सोमल भस्म बने। नामर्दी में लाभदायी है। मात्रा १ चावल। स अ

(४१) सोमल को दुगुने राल चूर्ण मे रख उसे १० तोला एरण्ड तेल से तर करके सम्पुट कर १ घन्टा मन्द मन्द आंच पर पकावे। ऊपर के प्याले में बारीक छेदकर दे। ऐसा करनेसे सोमल मोमी हो जायगा। आमवात में दे। मात्रा १-२ चावल मि. ख

(४२) सोमल को २० गुना फिटकिरी के मध्य रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आंच दे तो सोमल भस्म बने। अ त.

(४३) सोमल समुद्रभाग वरावर गौ दूव की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय भाग के नुगदे मे रख सम्पुट कर २½ सेर उपलो की ग्राच दे तो सोमल भस्म वने। ग्र त

(४४) सोमल को वतूरा फल, भाग, गुलाव फूल, निम्बू, ग्रद्रक, कुमारी, ग्राकदूव, नागफनी इनमें से किसी के रसकी भावना दे टिकिया वनाय प्यालियो मे वन्द कर जौहर उडावे। ७ वार इस तरह जाहर उड़ावे तो यह तल में वैठी सोमल की भस्म वने। मि ख.

(४५) सोमल की छोटी छोटी डलियो को करछी मे रख किसी भी वनस्पति के क्षार के पानी का चोया देता रहे ३-४ घटे मे सोमल पिघल कर नरम हो जायगा, उसे किसी प्याली मे रख ग्रोम के स्थान मे रख दे पानी वन जायगा। यह सोमल का लवण है। इसे श्वास, काम, मे १-२ चावल खाड में दे इससे वमन होनी है ग्रोर उस वमन से लाभ होता है। धा वि, मि ख

(४६) सोमल को मूली या ग्रपामार्ग की भस्म मे दाव् देकर सम्पुट कर चूल्हे पर ४ प्रहर की ग्राच दे तो सोमल की भस्म वने। चि च, र त सा

(४७) सोमल को चौगुने पापड़ी खार के मध्य रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की ग्राच दे तो सोमल की भस्म वने। चि च, र त सा.

(४८) सोमल, सोरा, चूना, सीसा भस्म,सुहागा प्रत्येक वरावर सवसे दुगना नौसादर ग्राक दूध में भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २॥ सेर उपलो का ग्राच दे तो काले रग की भस्म वने। ग्रर्वाग, ग्रामवात, जीर्णज्वर, श्लेष्म विकार में लाभदायी है। मात्रा ½ रत्ती से १ रत्ती तक।

धन्व, र त सा

(४९)सोमल सीप भस्म वरावर ग्राक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर २ सेर उपलोकी ग्राँच दे तो सोमल भस्म वने। नाहरुग्रा, चर्मरोग, रक्त विकार, श्वास, कास, ग्रामाशय दाह में लाभदायी है। र त सा.

(५०) नरमूत्र १ सेर मिर्च लाल चूर्ण १५ तो० चौलाई की जड के नुगदे में सोमल को वाँव इसमें स्वेदन करे। फिर सोमल को एक प्याली मे रख ग्राक दूध मे तर करे २१ दिन तर करे, दूध नित्य वदले, फिर निकाल ग्रपामार्ग क्षार को ग्राक दूध में पीस सोमल पर लेपकर सुखाय सोमल से चोगुना ग्रपामार्गक्षार मे दावू दे सम्पुट कर वकरी की मैंगनी की भाडपुट दे तो सोमल कीभस्म वने।

र यो सा

हरिताल

वशपत्री या वर्किया हरिताल वास्तव में वलि और सोमल का प्रकृति में वना यौगिक है। यह यौगिक १५५ शताशके उत्तापपर द्रव होता है यदि निर्वात स्थान हो तो २०० श. के उत्ताप तक द्रव रूपमें वना रहता है किन्तु हवा लगने पर ऊष्मजन से वलि का सयोग होने लगता है और यह यौगिक हवा में उडकर मिलने लगता, इस स्थिति में वह पूर्व का यौगिक टूटता रहता है। यदि हम किसी वन्द वर्तन मे जिसमें हवा न हो ४५० श तक उत्ताप वढा दें तो हरितालके अणु मन शिला के अणु यौगिक मे वदलते रहते है और यह कूपी के गले में जाकर लगते है उसमे कुछ अश हरिताल के अणुओ का भी मिला होता है। इसे हम माणिक्य के नाम से पुकारते है। किन्तु इस हरिताल को यदि हम भस्म कहे तो ठीक है किन्तु अपने ग्रन्थो में वर्णित भस्म विधियो से भस्म वनावें तो वास्तव मे हरिताल की भस्म नही वनती, क्योकि हरिताल के मुख्य तत्त्व सोमल और वलि यह दोनो ही ऊष्मजन से या वनस्पतियो के कज्जल से मिलकर कोई ऐसा यौगिक निर्माण नही करते जो श्वेत वर्णका वनता हो। जिस भस्म को हम कम से कम उत्ताप पर वनाते है वह हवा के ऊष्मजन से सम्पर्क स्थापित कर ऐसे यौगिक में वदल जाता है जो वायु रूपका होता है वह उडकर हवा में मिलता रहता है। अवशिष्ट में वनस्पति के लुगदे की या भावना के अश की ही भस्म रह जाती है।

जिस उत्ताप पर हरिताल नही उडती वह माणिक्य या उस जैसे किसी और रूप में वह रह जाती है वही उपयोगी होती है। हरिताल की जो भस्म वनती है जिसमें हरिताल परिवर्तित रूप मे कुछ भी रहती है वही लाभ करती है, वाकी तो वनस्पति की ही भस्म होती है। वह जो कुछ गुण करती है वह वनस्पति भस्म के रूप मे करती है, हरितालके रूप में नही करती।

हरिताल के योग

हरिताल वर्की २ माशे को प्रथम पीसे फिर मिर्च काली का चूर्ण २ माशे डाल कर दोनो को १ घटा निरन्तर खरल करे फिर ४ माशे मिर्च चूर्ण डाल कर १ घटा घोटे, फिर ८ माशे मिर्च चूर्ण डाल कर १ घटा घोटे फिर १६ माशे मिर्च चूर्ण डाल कर १ घटा घोटे, फिर १ दिन और निरन्तर खरल कर

के रख ले। इसमे १६ गुना मिर्च पडती है। सब घोट कर रख ले। तमाम श्लेष्मज, वातज रोग, श्वास, खासी के लिये लाभदायी है। मखजन, मि.ख

नोट—इस योग पर मेरा बहुत वार का अनुभव है कि जिस रोगी को हृदयदौर्बल्य हो, ठण्डे पसीने आते हो, हृदयावसाद (दिलघटता) हो, मानसिक रोगो के कारण हृदय की गति अनियमित हो जाती हो, रोगी कई वार उस स्थिति को वतलाने मे असमर्थ होता हो, व्याकुलता होती हो, वह कुछ सही सही वतला न सकता हो, वह कहे मुझे कुछ हो रहा है। ऐसी दशा प्राय हृदयरोग के कारण उत्पन्न होती है इस दशा वाले रोगी को यह हरताल योग दिया जाय तो इससे महान् लाभ होता है।

(माणिक्यरस) अभ्र सम्पुटगं ताल किञ्चिदगार साधितम्।
वातश्लेष्म ज्वरे शस्त माणिक्य रस शब्दितम्॥

(अथवा) तत. शरावके यन्त्रे स्थापयेत्कुशलो भिषक्।
वदरी पल्लवोत्थेन लेपन कारयेत्ततः॥
अरुणाभ मध' पात्र तावज्ज्वाला प्रदीयते।
स्वागशीतं समुद्धृत्य माणिक्याभोभवेद्रसः॥

रसे सा स, र च, धन्व, भै र, र र, र.की, वै क, र त, सि भै मा, र यो सा, र चि, र रा सु, भा भै र

अभ्रक के दो वडे पत्र लेकर उस पर हरिताल को पीस कर रुपया जितनी मोटी तह विछा दे और अभ्रक का दूसरा पत्र उस पर ढक दे यह अभ्र सम्पुट वन गया, इसे चिमटे से उठा कर अङ्गारो पर रख दे थोडी ही देर में हरिताल पिघल जायगी। जहा से धुआ निकलने लगे उधर से अभ्रक पत्रो को चिमटे से दबाये रखे सारी हरिताल पिघल जाने पर अभ्रकपत्र सम्पुट को उतार उस पर सेरका बाट रख कर दवा दे ५-४मिनट मे वह शीतल हो जायगा अभ्रक को हटा कर माणिक्य को खुर्च कर छुडाले।

अथवा वेर के पत्रो को पीस कर एक प्याले मे लेप कर सुखाले उस प्याले में हरिताल चूर्ण विछाय दूसरे प्याला से ढक उसे अगारो पर रखे जव हरिताल पिघल जाय उतारले माणिक्य रस वने।

माणिक्य रस के गुण—प्रत्येक कुष्ठ, रक्त विकार, वातरक्त, भगन्दर नाडीव्रण, उपदश, नासिका के रोग, खराव जख्म, विस्फोट, वात श्लेष्म ज्वर

विषम ज्वर में लाभदायी है। मात्रा १ रत्ती।

हरिताल भस्म

(१) अपामार्गस्य भस्मन्तु घटे निक्षिप्य यत्नत.।
तन्मध्ये तालकं क्षिप्त्वा पचेद्द्वादशयामकम् ॥
धवलं जायते भस्म सर्व कुष्ठ निवारणम्।
नि. र, वृ नि र, भा भै र, र यो सा.

अपामार्ग की राख के मध्य हरिताल को दाबू दे कर भस्म यन्त्र को चूल्हे पर रख १२ प्रहर की आंच दे तो श्वेत वर्ण की हरिताल भस्म बने।

(२) भागास्त्रयस्तालकस्य नवसारस्य च त्रयम्।
पञ्चभाग प्रमाणेन मध्येऽपामार्ग भस्मकम् ॥
खर्परे चा ऽनलं दद्याद्यावन्मुद्रा विभेदनम्।
मुद्रभेदे पुनश्चूर्णं दद्यान्निर्धूमतावधि ॥
स्वांगशीत समुद्धृत्य तद्भवेत्सर्वं कुष्ठजित्। र. का, वे., र.यो सा

हरिताल ३ भाग, नौसादर ३ भाग अपामार्ग की भस्म ५ भाग एक प्याले में अपामार्ग की राख पर नौसादर चूर्ण बिछाय उस पर हरिताल रख नौसादर से ढक बाकी अपामार्ग की राख मे उसे अच्छी तरह दाबू दे कर तब तक आंच दे जब तक धुआ न निकले, धुआ निकलनेपर आंच मन्द करदे और जहासे धुआं निकलता हो और राख से दबा दे, तब तक मन्द-मन्द आंच दे जब तक वह निर्धूम न हो जाय। निकाल प्रत्येक कुष्ठमें इस का उपयोग करे। इसका नाम तालकेश्वर है।

(३) खण्डित कणवत्तालं कूष्माण्डाऽन्तर्गजाह्वयै.।
दोलायांविपचेद्यामैस्तत्तैले सपादके।
विरूक्षित ततिसतया क्षालयेदुष्ण वारिणा।
कन्याद्रवेण सम्मर्द्य द्विगुणैश्चवटाङ्कुरैः ॥
विमिश्रं पञ्च दिवसान् कन्या तोयेन भावयेत्।
दिन द्वयं च कूष्माण्ड भवैश्चक्रीं प्रकल्पयेत् ॥
स्थाल्यां पलाशजक्षार दत्वाकिञ्चत्ततोधिकम्।
वटाऽवरोहजं चूर्णं तस्योपरि ततः पलम् ॥
पुन स्तथैवता दत्त्वा कवची वालुका वृतम्।

कृत्वा पचेद्दिने दीप वह्निना मध्यमं दिनम् ॥
हठाग्निना च त्रीन्यामान् स्वाङ्गशीत समुद्धरेत् ।
निम्बुकैर्भावयेत्सप्त वारान् धूमोदयेऽसति ॥ रसे क, र. यो सो.

हरिताल के छोटे-छोटे टुकडे कर के पेठा रस मे स्वेदन करे फिर हरताल से चौथाई तिल तेल करछी में डाल कर उसमें हरताल रख कर मन्द-मन्द आच पर उसका तेल पाक करे तेल जल जानेपर हरतालको साफ करके, कुमारी रस वटाकुर पेठाके रसकी एक एक भावनादे टिकिया वनाय सुखाय पलाश भस्म में दाबू दे वालुका यन्त्रमें रख चूल्हेपर चढाय ८प्रहरकी क्रमसे आचदे तो हरताल भस्म हो। फिर निकाल निम्बू रस की ७ भावना दे कर रख ले और भिन्न भिन्न अनुपान से अनेक रोगो में दे।

(४) दग्धुन वालांत्रि रसं दत्त्वा ताल सु चूर्णितम् ।
पुनः पुनश्च सम्मर्द्य शुष्कं कृत्वा पुटे दहेत् ॥
दृढ़ स्थाल्यां धृतं क्षारं पलाशञ्चाप्युपर्यधः ।
ततः सञ्ज्वालयेदग्नि महोरात्रे मृतं भवेत् ॥
शुक्लवर्णं यदा च स्यादग्नौ दत्ते न धूमकम् ।
तदा ज्ञात्वा मृतं तालं सर्व कुष्ठ विनाशनम् ॥
वै र, र का वे., भै र, भा भै र, धन्व, र यो सा, नि र, आ प्र, रसा स, चि र भ, र र कौ,

पनवाड रसमें और सुगन्धवाला रस मे हरितालको कई भावना दे टिकिया वनाय सुखाय पलाश भस्म को मूपा मे रख दाबू दे कर ८ प्रहर की आच दे तो हरताल की भस्म बने। ग्रन्थकार कहता है कि भस्म हुई हरताल का वर्ण, सफेद हो और वह अगारे पर डानने से धुआ न दे तो समझना चाहिये कि भस्म हो गई है। यह हरताल भस्म समस्त कुष्ठो को नाश करती है इसमे आच देने के सम्वन्ध में गन्थकार कहता है द्वात्रिंशत्प्रहरान् वह्नि भक्त वद्दापयेत्तथा। ८ प्रहर से लेकर ३२ प्रहर तक की आच दे, पर उसे आच इतनी लकडी की देनी चाहिये जितनी चावल को पकाने के लिये देते है।

(५) तालं विचूर्णयेत्सूक्ष्मं मर्द्य नागार्जुनी द्रवैः ।
सहदेव्या च वलया मर्दयेद्दिवस द्वयम् ॥

तत्तालरोटक कृत्वा छायायां च विशोपयेत् ।
हंडिका यत्र मध्यस्थं पलाश भस्मकोपरि ॥
पाच्यं च वालुका यत्रे विहित चंड वह्निना ।
स्वांग शीतं समुद्धृत्य सर्व योगेपु योजयेत् ॥
र चि, नि र., र यो. सा, भा भै. र, र. रा. सु.

हरिताल को दूधी, सहदेई और वला इनके रसोमें दो दो दिन खरल करके रोटा सी वनाकर छाया मे सुखाले । फिर पलाश की राख के वीच में दावू दे हाडीमें रख कर भस्म यत्र वनाय चुल्हे पर चटाय ४ प्रहर की अग्नि दे तो हरितालकी भस्म वने । यह सर्व रोग हर भस्म है । र.त.सा.

(६) शुद्ध तालवटी कृत्वा सहदेव्या रसेन तु ।
छायाविशोपितां भाडे भस्म दत्त्वातलोपरि ॥
पलाशज मुद्रयित्वा ततो पाचन यन्त्र के ।
पाच्यं चण्डाग्निना शीत सर्व कर्मसु योजयेत् ॥ चि र

हरिताल को सहदेवी के रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय ढाक की राख में दावू देकर ४ प्रहर की चूल्हेपर रख आच दे तो हरितालकी भस्म वने ।

(७) तालकं मर्दयेत्सम्यक् ताम्वूली पर्ण वारिणा ।
त्रिदिनं मस्तुना मर्द्य त्रिदिनं पयसार्कवेः ॥
तद्गोले भाण्डमध्यस्थं किंशुक क्षार संयुतम् ॥
त्रिदिनं पाचयेत्सम्यक् मन्दमध्य हठाग्निना ।
ताल भस्म समाऽऽकृष्य तण्डुलद्वय मात्रकम् ।
वृ यो. त, नि र, र.यो सा

हरितालको पान रस, दही का पानी, आक दूधमें तीन तीन दिन भावना दे टिकिया वनाय सुखाय पलाश की राख में दावू दे कर तीन दिन की क्रम से विवर्द्धित आच दे तो हरितालकी भस्म वने । मात्रा २ चावल । वातरक्त, प्रत्येक कुष्ठ, ग्रहणी, भगन्दर, समस्त प्रकार के व्रणो को यह तालकेश्वर रस दूर करे ।

(८) स्वर्ण पत्र शुद्ध तालं पलानां दश सञ्ज्ञकम् ।
कौमारी द्रव प्रस्थेन मर्दयेत्तालकं शुभम् ॥
निम्वू प्रस्थ रसे चैव वाण पुंख रसैः पुन. ।
प्रस्थं वज्री रसेनैवमार्कस्य च रसैः पृथक् ॥

मर्दयेच्च दृढं खल्वे यावद्भवति गोलकम् ।
गोलकं शोषयेत् पश्चात् घर्मे सप्त दिनानि वै ॥
पलाश भस्म मृद्भाण्डे क्षिप्त्वोपरि च गोलकम् ।
दत्वोपरि पुनर्भस्म भाण्डवक्त्रं निसन्धयेत् ॥
चुल्ल्यामारोपयेद्यत्नात् पावकं ज्वालयेत् क्रमात् ।
मंदमध्यहठाग्नीना यामानां च द्विषष्टिकम् ॥
स्वाङ्ग शीतल मादाय शुभ्रतालं मृतं ध्रुवम् ।
तन्दुलं तन्दुलार्धं वा नागवल्ली द्रवैर्भजेत् ॥

आ.प्र , नि र., चि र , वै.र , रमा.म , रसे सा म , धन्व , र.चि , र का वे , र. रा. सु., भा. भै र.

४० तो० हरिताल के पत्रों को १ सेर कुमारी के रसमें, १ सेर निम्बू रस में, १ सेर शरपुङ्खा (सरफोका) के रसमें, १ सेर थोहर दूध मे और १ सेर आक के दूध मे घोट कर टिकिया बनाय, सुखाय पलाश (ढाक) की भस्म मे दाबू देकर हांडी का मुख दृढ बंद कर चूल्हे पर चढाय ६२ पहर की आंच दे तो हरिताल की उत्तम भस्म बने, मात्रा १ चावल भर। १८ कुष्ठ और ज्वरको दूर करे।

(६) पलाश भस्म मृद्भाण्डे क्षिप्तोपरि च तालकम् ।
दत्त्वोपरि पुनर्भस्म दत्त्वास्थालीं विमुद्रयेत् ॥
चुल्ल्यां पचेच्चतुर्यामं पश्चात्तत्सिद्धतां व्रजेत् ।
गाढं तप्तायसंन्यस्तंनिर्धूम चेत्तदा शुभम् ॥
खण्डेन रक्तिका मात्रं खादेत्कुष्ठनिवृत्तये ।
पथ्य कुष्ठे चणकैः लवणस्तेन वर्जित. ॥ चि र ,वै.र ,भा भै.र.

वैद्य रहस्ये, भारत भैषज्य रत्नाकरे भिन्न पाठ प्रतिपादित ।

हरिताल को ढाक की राख मे दाबू दे पात्र का मुख सम्पुट कर चूल्हे पर चढाय ४ प्रहर की आंच दे, निकाल शीतल होने पर अंगार पर डालकर देखे यदि निर्धूम हो तो व्यवहार मे लावे। मात्रा १ रत्ती प्रत्येक कुष्ठ मे दे। पथ्य में चने की रोटी घी से खाय नमक न खाय।

(१०) कूष्माण्ड त्रिफला तैल कन्या काञ्जिक भावितम् ।
तालके तुल्य गन्धस्यादर्धं पारद मर्दितम् ॥

अजाक्षीरेण निम्बूक कन्या तोयैर्दिनत्रयम् ।
प्रत्येके भावयेच्छुष्क चक्रिकां कारतां गतम् ॥
विपचेद्धण्डिकामध्ये पलाशं क्षार मध्यगम् ।
यामान्द्वादश शीतेऽस्मिन् प्रयोज्यं रक्तिकाद्वयम् ॥
हन्याष्टादश कुष्ठानि रोम विध्वन्सन तथा ।
विविधे वात रक्तं च नाड़ी दुष्ट व्रणानि च ।

र का. धे, धन्व, रसे क., र. यो. ना.

पहिले पेठा, त्रिफला, कुमारी, काजी और तेल में हरिताल को भावना दे कर फिर बराबर की वलि तथा वलि से आधा पारा मिला कर बकरी के द्व निम्बू रस, कुमारी रस प्रत्येक में १-१ दिन मर्दन कर टिकिया बनाय ढाक के क्षार के मध्य उन टिकियो को रख सम्पुट कर ढाक भस्म के मध्य दाबू दे कर १२ प्रहर की आच दे तो हरिताल की भस्म बने । मात्रा २ रत्ती, । १८ प्रकार के कुष्ठ, वातरक्त, नासूर में लाभ करता है। इस का नाम तालकेश्वर रस है ।

(११) जंबीर द्रवमध्ये तु प्रक्षाल्य नट मण्डनम् ।
दशांश टंकणं दत्त्वा खण्डशः परिमेलयेत् ॥
चतुर्गुणे गाढ पटे निवध्य प्रहर द्वयम् ।
दोलायंत्रेण संस्वेद्य प्रदीप प्रमितेऽनले ॥
चूर्णं तोये काजिके च कूष्माण्डे निम्ब तैलके ।
त्रिफलाम्बुनि तत्पश्चात् क्षालयित्वाम्ल वारिणा ॥
ततः पलाशमूल त्वक् परिपिष्टं प्रशोपयेत् ।
महिषी मूत्रे संपिष्टं पुनस्तं परिशोपयेत् ॥
तद्गोलकं सरावाभ्या संपुटीकृत्य यत्नतः ।
खाते गजपुटे कृत्वा स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥
अजादुग्धैः पुनः पिष्ट्वा शोपयेद्गोलकी कृतम् ।
आकंठं भस्म पालाशं हंडिकायां विनिः क्षिपेत् ॥
यथा धूमो न निर्याति तथा तांच विमुद्रयेत् ।
सम्यक् चूर्णस्य कुडवन् दत्वा तत्र विचक्षणः ॥
स्थापयेद्गोलकं तत्र पुनश्चूर्णस्य भस्म च ।
द्वात्रिंशत् प्रहराग्निं च चूल्ल्यां भक्तवदर्पयेत् ॥

र रा सु, धन्व, भै र, भा. भै. र

हरिताल को जवीरी के रस में प्रक्षालन कर १० वा भाग सुहागा मिलाकर ४ तहके कपडेमें बांध दोला यन्त्रमे लटकाय, चूनाका पानी, काजी, पेठारस, नीम तेल, त्रिफला क्वाथ प्रत्येक मे २-२ प्रहर स्वेदन कर निम्बू रस, पलाश मूल रस भैसके मूत्रमे घोट सुखाय गोला वनाय सम्पुट मे रख कर गजपुट की आच दे, फिर बकरी के दूध में घोट हण्डीमे पलाश की राखमे दाबू देकर ३२ पहर की अग्नि देवे तो हरिताल की सफेद भस्म वने।

इस रस का नाम भैपज्यरत्नावली और धन्वन्तरी में महातालकेश्वर रस है।

(१२) मधु तुल्ये घनी भूते कषाये ब्रह्म मूलजे।
त्रिवारं तालकं भाव्य पिष्ट्वा मूत्रेऽथ माहिषे॥
उपलैर्दशभिर्देय पुट रुध्वाऽथपेपयेत्।
एव द्वादशधा पाच्यं शुद्धं योगेपु योजयेत्॥

र र स, भा भै र, र त, र च.

पलाशमूल छाल का रस निकाल उसे गाढा कर उसकी ३ भावना हरिताल को दे फिर ३ भावना भैसके मूत्र की दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १२ वनोपलकी आच दे, इसी विधिसे १२ पुट दे तो उत्तम हरिताल की भस्म वने।

(१३) कूष्माण्ड तोयेन दिन विमर्द्य निम्बू रसे गोभि रसे तथैव।
सनाक छिक्कादि कुलत्थितोयैर्धत्तूरजेचार्द्रक भृंगराजत॥
नागार्जुनी वा सहदेविका च सब्रह्मदण्डीद्रव किंशुकानाम्।
एरंडमूल लसुनं पलांडु सुवर्णवल्लीरस काकमाची॥
गोपालिका वज्रिपयोर्क दुग्ध खल्वे विमर्द्य दिनमेकविंशत।
पृथक् पृथक् मास चतुर्दशाते चक्रीकृतवर्तुलरोटिकाभम॥
अश्वत्थ भूत्या मृदहंडिकाया मधोर्ध्व मध्यस्थित तालक च।
सुपूर्णपात्र दृढ भस्म संस्थ मुखे शराव मृतकर्पटं च॥
दद्याञ्च चुल्योपरि रक्षणाय मग्निक्रमेणापि दिनानि चाष्टौ।

र रा, सु

शुद्ध हरिताल को १ दिन पेठे के रस में घोट निम्बु, वन गोभी, नकछिकनी कुलथी, धतूरा, अद्रक, भागरा, दूधी, सहदेई, ब्रह्मदण्डी, ढाक, एरंड की जड, लहसुन प्याज, माल कगनी, मकोय, कचरिया, थूहर, आक इन के रस वा दूधमे २१-२१

दिन घोटे। १४ मास बीतने पर रोटी सी बनाय सुखाय पीपलकी राखके मध्य रख कर सम्पुट कर क्रमश २ दिनकी अग्नि दे तो कुन्द के फूल जैसी हरिताल की शुद्ध भस्म बने।

(१४) शुद्धंपत्राख्य तालं द्विपल परमित मित्रदुग्धैर्दिनैकम्।
सम्मर्द्य खल्वमध्ये दृढतर गुटिकाः भस्म मूषे कृता च॥
कृत्वा भस्माविलैस्त्रि परिमित वसनैर्लेपितां ताञ्चमूषाम्॥
स्वच्छे मृत्खर्परेऽश्वत्थजभसितयुग प्रस्थमात्रं निधायम्॥
तस्मिन् मूषाञ्च धृत्वा तदुपरिभसित प्रस्थयुग्मं दृढं च।
चुल्ल्यामारोप्य पश्चाद्वटुककुभपतीन् पूजयेद्योगसिद्ध्यै॥
कुर्यादश्वत्थ काष्ठै र्विधिवदथ कृशानुस्त्रियामञ्चपश्चा।
च्छुद्धोऽभूत्तालकेशो हिमकरधवलः सर्व रोगेषुयोज्यः॥

रस मा. व यो त, र यो मा, र त.

हरिताल को आक दूध में एक भावना दे टिकिया बनाय सुखाय पीपल की भस्म के सम्पुट मे दाब दे ३ प्रहर की आंच दे तो हरिताल की सफेद भस्म बने। इसे तत्तद्रोगहर अनुपान से देने पर कुष्ठ, प्रमेह, फिरंग, वातविकार, कास, श्वास, रक्तपित्त, वात रक्त, पाण्डु, शोथ, ज्वर, व्रण, अजीर्ण मे लाभ करती है। इस का नाम तालकेश्वर रस है।

(१५) सूक्ष्म विचूर्णं हरितालकस्य सभावयेद्विंशति वासराश्च।
अश्वत्थ तोयैः शुचि खल्वमध्ये घृष्ट्वा विदध्याद् दृढ गोलकं च।
अश्वत्थ भूत्यार्ध भृतेच भाण्डे न्यसेत्ततो गोलकमेव मेदम्।
संपूर्ण भूत्या परिपूर्य पात्र निरुध्य मुंचेच्च गजाह्वये च॥
सहस्र वन्योपल संयुते वै मृतिं व्रजे याम चतुष्टयेन।
निर्धूममेतद् यदि लोह तप्त मुंचेत्सुशुद्ध शुभ्र शुक्ल वर्णम्।

वृ यो. त, नि र, र त., र यो मा, र रा. सु., भा भै. र.

शुद्ध हरिताल को २० दिन पीपल के रस मे मर्दन कर गोला बनाय फिर पीपल राखके मध्य मे रख भस्म यन्त्र मे सम्पुट कर हजार जंगली उपलो की आग दे। ४ प्रहर की आंच देने पर हरिताल भस्म हो। तप्त लोहे पर डालने से यदि धूम्र न दे, श्वेत वर्ण हो जाय तो शुद्ध भस्म समझे। मात्रा २ रत्ती।

(१६) पत्राख्य तालकं शुद्धं पौनर्नव रसेन तु ।
खल्वे विमर्दयेदेक दिन पश्चाद्वि [1]शोषयेत् ॥
[2] सशोष्य गोलकं कृत्वा चक्राकारमथापि वा ।
तत पुनर्नवाक्षारैः स्थाल्यमर्द्धं प्रपूरयेत् ॥
तत्र तद्गोलकं धृत्वा पुनस्तेनैवपूरयेत् ।
आकठं पिठर तस्य [3]पिधाय रोधयेन्मुख ।
स्थाली चुल्या समारोप्य क्रमाद्वह्निं विवर्द्धयेत ।
दिनान्यन्तर् शून्यानि पञ्च वह्निं प्रदापयेत् ।
एव तु म्रियते तालं मात्रा तस्यैव रक्तिका ॥

नि. र., वै र, यो. म., चि क्र क, र क.ल, र कौ., वै चि, र त, र. र, वृ. यो. त, वृ. नि र.,र रा. सु, र. यो सा, भा. भै र, व रा, चि.र.

१ विमर्दयेत् वसवराजीये इति । २ समर्च गोलक तस्य कुर्यात्त च विशोषयेत् इति वसवराजीये ३ पिधाने धारयेन्मुखम् इति वसवराजीये ।

चिकित्सा रत्नाभरणे भिन्न पाठ प्रतिपदित ।

पञ्चमो अष्टमो पाद अन्य ग्रन्थेषु नास्ति वृ. यो त. दृश्यते ।

हरिताल को पुनर्नवाके रस में घोट गोला वनाय, पुनर्नवा की राख के मध्य गोले को रख, राखको खूब दाबू दे कर हाडी के मुख को सम्पुट करके चूल्हे पर चढाय क्रमश पाञ्च प्रहरकी अग्नि देवे तो हरिताल की श्वेत भस्म बने ।

(१७) सम्यक् पत्री कृत ताल कूष्माण्ड सलिलैः पुन ।
चूर्णोदके पृथक् तैले दोलायन्त्रे दिनपचेत ॥
शोधयित्वा तदम्लेनदध्नाऽऽलोड्य विमर्दयेत् ।
खल्वे लोहमयेवाऽपि गाढेयाम द्वय पुनः ॥
पुनर्नवाया क्षारेण संयोज्य घनता नयेत् ।
दर्विकिञ्चित्पुनर्दत्वा घनी भूतं निवेशयेत् ॥
स्थाल्या दृढतराया च क्षारे पौनर्नवे पुन ।
रोटिकासदृढंकृत्वा शरावेण पिधापयेत् ॥
पचेत्तावद्भवेत्तार शख कुंदेन्दु सन्निभम् ।
स्वांग शीत समुद्धृत्य पुनरग्नौ परीक्षयेत् ॥
क्षिप्ताग्नौ च निर्धूमं दृश्यते च विलीयते ।

तदां सिद्धि विजानीयाद्योजयेत्सर्वकर्मसु ॥

र त्रि, भै र, धन्व, र च, रसे सा. स, र रा. सु, र यो सा.

हरिताल को पेठारस, चूने का पानी और तेल मे पृथक् पृथक् दोला यन्त्र मे स्वेदन करे फिर दहीके पानी से धोकर उसी मे दो तीन दिन खरल करके टिकिया बनायसुखाय पुनर्नवा भस्मको दहीमें घोट उसकी रोटी बनाय उन रोटीके सम्पुटमें हरितालकी टिकिया रख पुनर्नवा भस्म के मध्य भस्म यन्त्रमे दाबू देकर ४ प्रहरकी आच दे तो श्वेत वर्णकी हरिताल भस्म बने । इसे अग्निपर डाल कर देखे धूआ न दे तो यथानुपान से दे तो यह उक्त समस्त रोगो में लाभ करे ।

(१८) पलद्वय ताल कस्योन्मत्ताद्भिर्मर्दयेत् त्रिभा ।
वटभस्मार्मणो चूर्णं मध्येनिक्षिप्य गोलकम् ॥
शरावेण विमुद्र्याथ वह्नि र्यामाष्टकं भवेत् ।
तद्गुञ्जा खण्ड संयुक्ता दुग्ध भक्त्याशनेन च ॥
चातुर्थिकारिरपरो वमना वमनेन च । र का, र यो सा.

८ तो० हरिताल को धतूरा रस में ३ दिन खरल कर के टिकिया बनाय वट वृक्षकी भस्म १ मनमें दाबू देकर सम्पुट बनाय चूल्हेपर रख २ प्रहरकी आँच दे तो चातुर्थिकारि रस नामक हरिताल की भस्म बने । मात्रा १ रत्ती खाड में दे तो चौथय्या ज्वर दूर हो ।

(१६) अश्वत्थ शेखरि क्षारं घटे निक्षिप्य यत्नतः ।
तन्मध्ये तालके रुद्ध्वा पचेद्द्वादश यामकम् ॥
रसांशं दापयेद्भस्म सर्वकुष्ठ निवारणम् ।
सर्व वात प्रशमनं ग्रन्थि वात विनाशनम् ॥ र ओ यो, र यो सा

पीपल अपामार्ग की राख को घडे में डाल कर उसका पानी निखार ले उस पानी में हरिताल को डाल कर १२ प्रहर पकावे उसी के गाढे रसमें हरितालको ढँक सम्पुट कर भस्म यन्त्र मे रख ४ प्रहर की आच दे तो हरिताल की भस्म बने । यह समस्त कुष्ठ समस्त वात रोग और ग्रन्थि वात को नष्ट करती है ।

(२०) तालंपालाशत्वग्वारिपिष्टं घर्मे विशोषयेत् ।
तद्गोलकं शरावाभ्यां सम्पुटी कृत्य यत्नत. ॥
खातं गजाख्ये पक्त्वातुस्वांगशीतलमुद्धरेत् ।
अजादुग्धे पुनः पिष्ट्वा शोपयेद्गोलकी कृतम् ॥

आढकं भस्मपालाशं हण्डिकायां द्दढक्षिपेत्।
अपामार्गस्य कुडवं भस्म दद्याद्विचक्षण। ।
स्थापयेद्गोलकं तत्र पुनश्चूर्णं च भस्म च।
यथाधूमोवहिर्नियात्तथा पत्रन्तु मुद्रयेत्।
द्वात्रिंशत्प्रहर वह्निं योजयेद्दीपयेत्तथा।
स्वांगशीत समुद्धृत्य चूर्णयेन्नटमण्डनम्।
हिमकुन्द प्रतिकाश निधूमं कृष्णवर्त्मनि।
रक्तिकास्य प्रदातव्या पुराणगुड योगत॥

चि रत्नाभरण

ढाकके छाल का रस निकाल उसमें हरितालकोभावित कर टिकिया वनाय सुखाय सम्पुटमें रख गजपुट की पुटदे। फिर निकाल वकरी के दूधकी भावना दे टिकिया वनाय सुखाय दो सेर ढाक की राख १ सेर अपामार्ग की राख दोनो को मिलाय भस्म यन्त्रवनाय उसमें हरितालको दाबू देकर चूल्हेपर चढाकर आच दे, जहांसे धुआ निकलता दिखाई दे वहा भस्म द्वारा वन्द करदे, इस प्रकार ३२ प्रहर की आच दे शीतल होने पर निकाल ले यह कृष्ण वर्ण की निर्धूम हरिताल की भस्म वनेगी। मात्रा १ रत्ती पुराने गुड मे दे तो कुष्ठ, वातरक्त, फिरग रोग मे लाभदायी है।

(२१) हरिताल पलं शुद्धं तथाकर्षं विषस्य च।
श्वेतार्कोत्थ रसेनैवद्वयमेकत्र खल्वयेत्।
पलाश भस्मद्विपल निधायस्थालिकोपरि।
तद्भस्मोपरितालस्य गोलकस्थापयेत्सुधी॥
स्थालीमुखे शरावञ्च दद्यायत्नेन लेहयेत्॥
तस्योपरिह्यपामार्ग भस्मदद्यात्पलत्रयम्।
लेपयित्वाततश्चुल्ल्या महोरात्र पचेद्भिषक्।
एतस्तुजायते भस्म शुद्धकर्पूर सन्निभम्॥
गुञ्जामानं ततोभक्ष्यमनुपान विशेषत।
कटिग्रहश्च कुष्ठञ्च दद्रु विस्फोटकाऽपची॥
विचर्चिकाचर्मदलं वातरक्तञ्च शोणितम्।
रक्तपित्तं तथाशोथं गलितकुष्ठ विनाशयेत्।

हलीमकं तथा शूलमग्निमान्द्यमरोचकम् ।

र यो सा, रसे स, वन्व, र त्र,

हरिताल ४ तो० मीठातेलिया १ तो० दोनों को अकोल क्वाथ की भावना दे टिकिया बनाय पलाश और अपामार्ग की राख के भस्म के मध्य रख कर ८ प्रहर की आंच दे। मात्रा २ रत्ती। यह ताल भस्म उपदंश, कटिग्रह, कुष्ठ, दहीविस्फोट, अपचि, विचर्चिका, भंगियादाद, वात रक्त, रक्तपित्त, शोथ, गलित्कुष्ठ, हलीमक, शूल, मन्दाग्नि, अरोचक आदि रोगों में भिन्न भिन्न अनुपान से देने पर लाभ होता है। इसका नाम तालकेश्वर है।

(२२) पलाशमूल स्वरसैरथवा कन्यकोद्भवैः ।
वटार्कस्नुग्जैरथवा दुग्धैस्ताल विमर्दयेत् ॥
चन्द्रिका रहित यावच्छायाशुष्कं च चक्रिकाम् ।
पलाशार्कस्नुही क्षारैरथवा तिंतिडी भवैः ॥
क्षारैः कवलिताकृत्वा पाचयेद्युक्तितो भिषक् ।
आमराज्यानुपानेन कुष्ठादौ सम्प्रयोजयेत् ॥ नु वि, र यो सा

हरिताल को कुमारी, वट अथवा आक या थोहर किसी के रस या दूध में भावना दे टिकिया बनाय सुखाय पलाश, अर्क, थोहर या इमली किसी की भस्म में दाब् दे कर चूल्हे पर रख ४ प्रहर की आंच देने पर हरिताल की भस्म बनजाती है। इसे शहद और घी से देने पर कुष्ठ में लाभ होता है।

(२३) स्थाल्यां निधाय नट मण्डन चूर्णमस्मिन् न्युब्जी कृतं कमलभाजन मन्धयित्वा। पक्त्वा तथैव शुकगन्धकमर्क जीर्णं पूर्वशतोहि रस युग्गुरुपातकारी ॥ र का धे, यो.म, र यो सा

हरिताल चूर्ण को ताम्र की कटोरी के सम्पुट में बन्द करके किसी वनस्पति की राख के भस्म यन्त्र में रख कर ४ प्रहर की आंच दे तो हरिताल की भस्म बने। इस का नाम वात रक्तान्तक है।

(२४) पलमेकं शुद्धतालं कुमारी रसमर्दितम् ।
शराव सम्पुटे क्षिप्त्वा यामान्द्वादशसपचेत् ॥
स्वागशीत समादाय तालकं च मृतं भवेत् । र च, र रा सु

४ तो० हरिताल को कुमारी रस मे भावना दे टिकिया बनाय सुखाय

सम्पुट कर भस्म यन्त्र या लवणयन्त्र में दाब दे १२ प्रहर की आच दे तो हरि-ताल की भस्म बने। यह गलित्कुष्ठ को दूर करती है ऐसा लिखा है।

(२५) शुद्धतालं समादाय द्रोणपुष्पी रसैर्भिपक्।
दिनानि सप्तसमर्द्य यन्त्रे विद्याधरे क्षिपेत्॥
यामानष्टौ पचेदग्नौ स्वांग शीतल मुद्धरेत्।
ऊर्ध्वपात्र गत सत्वं गृहीत्वा मर्दयेत् पुन।
त्रिदिनं तद्रसैरेव ततोयन्त्रे पुन पचेत्।
तद्धोज्वालेयेदग्नि मष्टयाममतन्द्रित.।
एव पुनः पुन कुर्याद्यावत्सत्व स्थिर भवेत्।
स्थैर्यं सत्त्वस्यनियत जायते सप्तमेऽहनि।
अष्टमेऽर्कदुग्धेन मर्दयेदेक वासरम्।
यामानष्टौ पचेदग्नौ कुर्यादेव त्रिवारकम्। र रा.सु.

हरिताल को ७ दिन गूमा के रस में घोट, पतली टिकियो को डमरुयन्त्र मे रख ८ पहर की आच दे। ऊपर की हाडी के लगे सत्व को निकाल ले, फिर उसे ३ दिन गूमाके रसमें घोट, टिकिया बनाय सुखाय जौहर उडावे, इस प्रकार ७ वार उडानेसे हरिताल अग्निस्थायी होती है। फिर आकके दूध में घोट ३ पुट देनेसे हरिताल सिद्ध हो, इसने गलित कुष्ठ दूर होता है।

(२६) हरिताल त्रि त्रिदिन मर्दयेत्कन्यका द्रवै.।
कर्पासवीज तैले च कूष्माण्डस्वरसे पुन॥
कांजिके त्रिदिनं कूप्यांरुद्ध्वा सत्वञ्च पातयेत्।
त्रियाम मतसीतैले श्वेतैरण्डज तैलके॥
पिष्ट्वा सिक्त्वा च दुग्धेषु पुनः स्वेद्य दिनत्रयम्।,
यामद्वादशक कूप्यां पुनः सत्व च पातयेत्॥
कदली स्वरसे भूयस्त्रिदिन वाऽतसीभवे।
मर्द्य स्वेद्यं पुनस्तद्वत्कूप्या पोडश यामकम्॥
अग्नि दत्वा च तत्सत्त्व रक्तिका सर्वकुष्ठजित्।
र का धे ,र यो सा.

हरिताल को कुमारी रस, बिनौले का तेल, पेठा रस, काजी प्रत्येक में तीन तीन दिन मर्दन कर काच कूपी में चढ़ाय वालुका यन्त्र में रख उसका जौहर

उडावे उस जौहर को अलसी तेल, एरण्ड तेल, आक, थोहर दूध में ३-३ दिन खरल कर फिर काच कूपी में भर वालुका यन्त्र में उस जौहर उडावे। फिर उस जौहर को केलाकन्द रस अलसी तेल रस की ३-३ भावना दे आतशी शीशी मे रख इसी तरह से तीसरी बार जौहर उडावे। इस जौहर की मात्रा १ रत्ती है यह समस्त कुष्ठो में लाभ करता है।

(२७) पलैकं तालकं शुद्धं तत्समं टङ्कणं भवेत्।
मर्दयेत्मेषिका क्षीरै. कूष्माण्ड द्रवत. पुनः॥
कन्या निम्बुक नीरेण वज्र्यार्क पयसा तथा।
वातारि तैल संयुक्तं मर्दयेत्सकृदेव त ॥
वटकान्कारयेत्पश्चान्मध्वाजेन समन्वितान्।
काचकूप्यां विनिःक्षिप्य लेपयेन्मृत कर्पटै ॥
वालुका यन्त्रगं कुर्यात्पचेद्दिन चतुष्टयम्।
सत्वं कुशिल सकाश मूर्ध्वलग्नं समुद्धरेत्॥
तत्तद्रोगहरैर्दत्त तत्तद्रोगविनाशनम्।
खदिरादि कषायेण दत्तं कुष्ठान्यपोहति॥ नि.र., र.यो सा.

हरिताल सुहागा ४-४ तोला दोनो को भेड के दूध, पेठा, कुमारी, निम्बू रस, थोहर, आक दूध तथा एरण्ड तेल इनकी १-१ भावना दे गोला बनाय घी शहद से चुपड कर कूपी में भर वालुका यन्त्र मे बिठाय ४ दिन की आच दे तो हरताल का हीरे जैसा चमकदार जौहर काच कूपी के गले मे लगा हुआ मिलेगा। इसको निकाल पीस ले। मात्रा ½ रत्ती। भिन्न भिन्न रोगो में भिन्न भिन्न अनुपान से दे। कुष्ठ मे खदिरादि क्वाथ से दे तो लाभ हो।

(२८) सुजात्यं तालमादाय निर्मल खल्वमध्यगम्।
कन्याद्रवेण सपिष्टं मर्दयेत्प्रति वासरम्॥
दिन सप्तक पर्यन्तं काचकूप्यां निधापयेत्।
वालुका यन्त्र मध्यस्थं मुखेमुद्रां प्रदापयेत्॥
दिनैक मपरस्वेदं तत्र दद्याद्दिनद्वयम्।
रूपेण स्फोटका कार तालसत्व महोज्ज्वलम्।
वल्लमात्रं विचूर्ण्याऽथ दद्यात्तत्कुष्ठिनेऽन्वहम्॥
र.का.धे., र यो सा.

हरिताल को ७ भावना कुमारी रस की दे नुगाय काचकूपी में भर वालुका यन्त्र में चढाय २ दिन की मन्द, मध्य तीव्र अग्नि क्रम से दे तो भावा सी हरिताल शीशीके नीचे और कुछ लाल वर्ण की चमकदार उस शीशी के गले मे लगी मिलेगी दोनो को मिलाकर पीस ले। मात्रा १-२ रत्ती। प्रत्येक कुष्ठ मे लाभदायी है।

(२६) शुद्धतालं [1] चूर्णयित्वा कन्या कूष्मांडजैर्द्रवै.।
दध्ना त्रिभावित शुष्क गोलं कृत्वा निवापयेत ॥
हंडिकाया पटुक्षारै· [2]चूर्णयेच्चपडंगुलम्।
क्षारेणाच्छाद्य च पुनर्ल्लोह पात्रे निधापयेत्॥
पुन. क्षारे तु चाकण्ठ पूरयित्वा क्रमाग्निना।
द्वात्रिंशत्प्रहरान् पाच्यं भस्मस्याच्चूर्ण सन्निभम्॥र रा.सु, रा.च.

१ विचूर्ण्याय इति रसचण्डाशौ। २ चूर्णं इति रस चण्डाशौ।

शुद्ध हरिताल को कुमारी और पेठे के रसमें घोट, दही को ३ भावना देकर टिकिया वनाय सुखा ले, फिर हडीमें ६-६ अगुल क्षार और नमक डाल कर उस पर टिकिया को रखे फिर क्षार और नमक से दाबू देकर, सपुट कर हाडी को चूल्हे पर रख, क्रमश· ३२ प्रहर की आंच दे, तो चूने के समान श्वेत भस्म होगी। मात्रा १ चावल भर दे तो वात-रक्त दूर हो।

(३०) एकोविभागा. शुचितालकस्य भागद्वयम् सुन्दर [1]धूम सारम्।
[2]अन्तर्विभूतिशुभतालचूर्ण [3]मधस्तदूर्ध्वं परिधूमसार· ॥
प्रपूरयेद्भूतिकयाथभाण्डे शरावकेणैव ततोनिरुन्ध्यात्।
विमुच्य चुल्ल्यां च हिरण्य रेतस दहेत्तु वै याम चतुष्टयं च ॥
एतैः प्रकारै मृतिमेतितालं निर्धूम मेवं किल शुक्लवर्णम्॥
नि र, रसा सा, र च, र यो सा, र रा सु

१ धूमकस्य इति रसराजसुन्दरे। २ मध्ये विमुञ्चेच्छुभ इति रसचण्डाशौ। ३ क्षिपेदुपरि भूरि सुधूम क्षार इति रसराज सुन्दरे।

हरिताल १ भाग घर का धुआ दो भाग किसी वनस्पति की भस्म के मध्य धुआके वीच हरिताल को रख भस्म यन्त्रमें दाबू दे सम्पुट कर ४ प्रहर की आच दे तो श्वेतवर्ण की हरिताल भस्म वने।

(३१) भल्लातक तालक तुल्य भागं तद्धण्डिका पत्रवरे च दत्तम्।

दत्त्वा ततश्चाप्यरणिकां तदूर्ध्वं सम्पिष्टिकांस्तान् विकरन्ति मध्ये॥
यदा च सर्वे स्फुटिता भवेयुः सिद्धोरसः स्यात् वहुतालकेश ।
कुष्ठाणि सर्वाणि निहन्तिमासाज्जराभवं रूपमपास्य सर्वम्॥
र. चि

हरिताल को पीस बराबर का भिलावा चूर्ण मिलाय कूटकर टिकिया वनाय किसी वनस्पति की भस्म मे दाव दे कर सम्पुट कर चूल्हे पर चढाय ४ प्रहरकी आच दे। जव गेहू का दाना ऊपर रखा हुआ भुन जाय आच वन्द करदे शीतल कर निकाल पीस रखे। इसको १ रत्ती सेवन करने से समस्त कुष्ठ एक महीना में दूर हो जाते हैं।

(३२) सुशुद्ध तालकसमं वीज भल्लातकस्य च।
मर्दयेदर्क दुग्धेन वासर त्रितय दृढम्॥
मृन्मूपा सन्पुटे कृत्वा वेष्ठयेन्मृत्तिकर्पटैः।
लघुपुटं ददीतास्य स्वागशीतं विचूर्णयेत्॥
वल्लमात्रं समरिचं गुडेन सह भक्षयेत्।
विपमज्वर निहन्त्याशु अष्टादश सुकुष्ठजित्॥
र चि, र मु, र का धे, र यो सा, भा भै र

हरिताल और भिलावा वरावर कूट कर आक दूध की तीन भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट रख लघुपुटकी आच दे तो हरितालकी भस्म वने। इसे २ रत्ती मिर्च गुड मे मिलाकर दे तो विपम ज्वर शीघ्र जाय तथा उचित अनुपान से १८ कुष्ठों मे दे तो लाभ हो।

(३३) पलैक हरितालञ्च स्नुही क्षीरेण भावयेत्।
भावना त्रयमेवंस्या त्ततोमुद्रां प्रकल्पयेत्॥
शराव सम्पुटे कृत्वा ततोगजपुटे पचेत्।
स्वागशीतलता ज्ञात्वा पुन. खल्वे विनिक्षिपेत्॥
तुलसी पत्र तोयेन मर्दयेद्याम मात्रकम्।
ततोमात्रा प्रभुञ्जीत गुञ्जात्रयमितां बुधः॥
महाज्वराङ्कुशो नाम सर्व ज्वर निवारणम्। र रा सु, र यो सा,

४ तो। ना हरिताल को थोहरके दूधमें २१ दिन खरल कर के टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुटकी आच दे तो हरितालकी भस्म हो। इनको तुलसी

पत्र रस में खरल कर लेने पर ज्वरांकुश नामा रस बन जाता है। मात्रा ३ रत्ती है। यह समस्त ज्वरों को दूर करता है।

(३४) विमल पत्रतालन्तु तत्तुल्या मृत शुक्तिका।
खल्वे सम्पेषयेद्यामं कुमारी स्वरसेन वै॥
निर्माय चक्रिका तस्य शोषये दातपेभिषक्।
शराव सम्पुटेन्यस्य ततो लघुपुटे पचेत्॥
स्वाङ्गशीतं ततो ज्ञात्वा भस्म निश्चन्द्रिकं हरेत्।
इत्थं मृतं तालकं तु कुष्ठरोग हरपरम्॥ र त.

हरिताल के बराबर सीपभस्म मिलाय कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय सम्पुट कर लघुपुटकी आंच दे तो हरिताल भस्म बने। यह कुष्ठ रोग नाशक है।

(३५) कन्याजातैर्विमर्द्याऽथ तालक कृतचक्रिकाम्।
गोमयेऽग्निकफ न्यस्य कृतगर्ते विधानतः॥
पुटेद्गजपुटे युक्त्या भूमौगर्तेऽथवा सुधी.।
स्वाङ्गशीतं समुद्धृत्य काचकूप्यां विनिःक्षिपेत्॥
तुलसी पत्र सम्भूतैर्वत्तूरस्य रसैस्सह।
तण्डुल प्रमितं दत्त विषमज्वर नाशनम्॥ नू वि.,र.यो.सा.,र.त.

हरिताल को कुमारी रस की ३ भावना दे टिकिया बनाय समुद्र झाग को कुमारी रस मे पीस लुगदा बनाय उस मे टिकिया रख सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आंच दे तो हरिताल की भस्म हो। मात्रा आधी रत्ती। तुलसी पत्र रस के साथ देने से समस्त विषम ज्वरों में लाभ होता है।

(३६) भागैकं शिग्रु पत्राढ्य द्विभागं शुद्धतालकम्।
चूर्णयित्वाऽविदुग्धेन श्लक्ष्ण पंकीकृत शुभम्॥
ततो गजपुटोत्तीर्णं भल्लातस्नेह भावितम्।
छायासुशोषित सम शाल्मली द्रुतिभिस्तथा॥
तालकेश्वरनामाऽय दुष्टकुष्ठ निवर्हण। र सा, र यो सा

सोहँजना के पत्ते १ भाग हरताल २ भाग, दोनों को भेड के दूध की कई भावना दे टिकिया बनाय सम्पुट कर गजपुट की आंच दे। पश्चात् निकाल भिलावे के तेल की १ भावना दे तथा मोचरस की ७ भावना दे तो तालकेश्वर

रस नामक हरताल की भस्म बने। यह समस्त कुष्ठ में लाभदायी है।

वक्तव्य—गजपुट की आच में हरताल उडजाती है इस लिए इसे कुक्कुट की आच दे।

(३७) सुवर्च निम्ब मज्जानं कांजिकेन प्रपिष्ट्य च।
हण्डिकायां निवेश्याऽथ तत्र शुद्धं च तालकम्॥
पूर्ववच्चाऽऽरनालेन पूरयित्वा निरुध्य च।
पूर्ववच्चतुरोयामान वह्नि कुर्याद्भिषग्वरः॥
स्वांगशीतं समादाय श्वेत वर्णं तु तालकम्।
भागानष्टारिष्टपत्रा दारनालेन पेषयेत्॥
पूर्वपक्वस्य तालस्य भागान्द्वादश चैतयोः।
पिष्टं विधायतं माष पिष्टिके स्थापयेत्ततः॥
शराव सपुटे तच्च पुटेद्गज पुटेन च।
स्वांगशीतं समुद्धृत्य चूर्णयेद्भिपजोवर॥
मरिचाऽऽज्ययुतदद्याद्गुञ्जा मेकांभिषग्वर.।
क्षीरौदनाशी सर्वेभ्यः कुष्ठेभ्यः परिमुच्यते॥ र.का धे., र यो.सा.

वच और निंब की निबोली की गिरी को काजी में पीस कर उसके मध्य हरताल रख उस हरताल को हाण्डी के मध्य रख उसमे काजी भर दे और उसे चूल्हे पर चढा कर ४ प्रहर पकावे जब काजी जल जायगी तो ग्रन्थकार कहता है हरिताल की श्वेत भस्म हो जायगी। इसे निकाल कर उस हरताल से आठ भाग निंब पत्रो को काजी मे पीस कर उसके नुगदे मे रख उस पर उर्द के आटे का सपुट दे पुन शराव सपुट में बन्द कर गजपुट की आच दे तो हरिताल भस्म हो। इसकी १ रत्ती मात्रा मिर्च घी से सेवन करावें तो समस्त कुष्ठ का नाश हो। भोजन में दूध भात ही खाय नमक न खाय।

(३८) ताल सप्तपलं गृह्य स्वेदयेत्तन्दुलांभसा।
दिनद्वयं च दुग्धेन रसो रुध्यःपलद्वयम्॥
एकतः क्रियते भृष्ट्वा पश्चादत्रपरिक्षिपेत्।
वर्षाभू पीतिका व्याघ्री गुडूची निम्ब चित्रकम्॥
रोहीतक द्वयं घृष्ट्वा द्वयमत्ररसोत्तमः।
निम्ब रोहितक क्वाथे तमाप्लुत्य निरुन्धयेत॥

हण्डिका यन्त्र मध्यस्थं दिनमेकं शनैरिह ।
कर्तव्यश्च शनैरेव वह्निः शीततदुद्धरेत् ॥ र चि.

हरिताल २८ तो० पारा ८ तो० दोनो को दो दिन घोट टिकिया बनाय तवे पर भूने निम्न चीजो की भावना दे, पुनर्नवा, पियावासा, कटेली, गिलोय, निम्ब, दोनो रुहेडा इनकी भावना देने के बाद निंब और रुहेडा के क्वाथ से हण्डिया को भर कर उस मे हरितालकी टिकिया रख कर सपुट कर उस हण्डी को चूल्हे पर चढा कर २४ घण्टे की मन्द मन्द आच दे। शीतल होने पर निकाल व्यवहार में लावे।

(३९) कपिलापयसापेष्य तालक दरदं समम् ।
अष्टयामावधि ततो गुटिकां कारयेद्बुधः ॥
छाया शुष्कं ततः कृत्वा मृत्तिका सम्पुटे पचेत् ॥
अग्नि गजपुटे दद्याच्छ्वेत भस्म प्रजायते । र च, र.स क, र का. धं, ग यो स

हरिताल हिंगुल सम भाग गाय के दूध में खरल करके टिकिया बनाय सुखाय सपुट में रख गजपुट की आच दे तो हरिताल भस्म हो।

वक्तव्य—गजपुट की आच में यह दोनो भस्म नही होगी उड जायगी। इनको तो लावक पुट की आच देना चाहिये।

(४०) हरिताल को धतूरा की राख में दाबू देकर सम्पुट में रख ५ सेर उपलो की आच दे तो हरिताल की भस्म बने। अ त

(४१) हरिताल को केला रस, कुमारी रस की ७-७ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय कुमारी के नुगदे में रख १ सेरका वस्त्र सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो हरिताल की भस्म बने। अ. त

(४२) हरिताल को २ सेर अनार पत्र के नुगदे में रख हण्डी मे सम्पुट कर चूल्हे पर चढाय इतनी आच दे कि नुगदा जल जाय, निकाल पीस ले। मि. ख

(४३) हरिताल को चूने के पानी में १० दिन भिगो कर पेठा के नुगदे मे रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे तो हरिताल की भस्म बने। सि भै मा

(४४) हरिताल को २४ घटे कुमारी रस में भिगोकर चूना मे दाबू दे

सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो हरिताल की भस्म वने। मि भै मा

(४५) कुमारी रस १ सेर को हण्डी मे भर उनमे ½ सेर गोरा डाल उसके मध्य हरिताल रख सम्पुट कर २० सेर उपलो की आच दे तो हरिताल भस्म वने। स अ

(४६) हरिताल के वरावर पारा मिलाय मकोय रस, नकछिकनी रस, वत्रा रस, आक रस की १-१ भावना दे सुखाय काच कूपीमें भर वालुका यत्र मे रख ४ प्रहर की आच दे। ऊपर लगे जौहर को खुर्च पीस रखे। र ति

(४७) ५ तो० हरिताल को ४० तो० अरण्डी की गिरी के साथ पीस रोटी सी वनाय गेहूँ के आटे पर रख डमरूयत्र में वन्द कर इसे वालुका यत्र मे दवाय मन्द मन्द आच दे। ऊपर की हाण्डी मे छेद कर दे ताकि धुआ निकल सके। एक प्रहर के वाद ३ प्रहर तक तीव्र आच दे। जव उस छेद से लाल के वाद सफेद रग का धुआ निकले छेद वन्द कर दे उसके वाद २ घटा और आच दे हरिताल की काले रग की भस्म वनेगी। मि ख

(४८) हरिताल को फिन्दक गिरी और नकछिकनी के नुगदे मे रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो हरिताल भस्म वने। मा अ

(४९) हरिताल को नकछिकनी के नुगदे मे रख सम्पुट कर ३ सेर उपलो की आच दे तो हरिताल की भस्म वने। स अ.

(५०) हरिताल की डली को सिम्वल फूल की राख मे दाव् देकर ४ प्रहर की आच दे तो हरिताल की भस्म वने। अ त

(५१) हरिताल को सिम्वल छाल की राख मे दाव् देकर ४ प्रहर की आच दे तो हरिताल की भस्म वने। अ त

(५२) हरिताल को रीठा फल का नुगदा, आक दूध मे वनाय उसमे हरिताल रख आक पत्र लपेट १ सेर का कपड सम्पुट कर थोडी सी आच दे। तो हरिताल भस्म वने। अ त, स अ,

(५३) हरिताल को गुलावाँसी मूल के नुगदे मे रख १ सेर वस्त्र सम्पुट कर थोडी सी आच दे तो हरिताल भस्म वने। मि ख, म अ

(५४) हरिताल को २१ दिन अपामार्ग के रस मे भिगोकर इसी के नुगदे मे रख २ सेर का वस्त्र सम्पुट चढाय ५ सेर उपलो की आचदे तो हरिताल भस्म वने। अ त

(५५) हरिताल को चागेरी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सुहागा को शहद मे पीस उस टिकिया पर लेप कर पीपल की राख में दाबू देकर ४ प्रहर की आच दे तो हरिताल की भस्म वने। अ त

(५६) हरिताल को चागेरी के रस में खरल कर टिकिया वनाय इसी के नुगदे में रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो हरिताल की भस्म वने। अ त

(५७) हरिताल को कुरण्ट के नुगदे में रख कर सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो हरिताल की भस्म वने। अ त

(५८) माई चूर्ण का वटजटा रस से नुगदा वनाय उसमे हरिताल रख १ सेर का वस्त्र सम्पुट कर आच दे तो हरिताल की भस्म वने। स अ

(५९) मैनफल चूर्ण को आक दूध मे सान नुगदा वनाय उसमे हरिताल को रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो हरिताल भस्म वने। स अ.

(६०) वेर की राख को आक दूध में सान नुगदा वनाय हरिताल को नुगदे मे रख वेरी की राख मे दाबू देकर ५ घटे की आच दे तो हरिताल की भस्म वने। स अ

(६१) हरितालको आक दूध, पेठा रस, कुमारीरस प्रत्येक की १-१ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय अपामार्ग भस्म के मध्य दाबू देकर ४ प्रहर की आच दे तो हरिताल भस्म वने। अ. अ

(६२) हरिताल से चौगुने अण्डे के खोल को चूर्ण वनाकर उसमे हरिताल रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो भस्म हो। मि ख

(६३) हरिताल और अण्डे का खोल दोनो वरावर आक दूध से पीस टिकिया वनाय सुखाय पीपल की राख में दाबू देकर सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे। पुन निकाल कुमारी रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १० सेर उपलो की आँच दे। इसी विधि से एक पुट और दे तो हरिताल भस्म वने। र त सा

(६४) हरिताल को गोजिह्वा के रस की ३ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय इसी के नुगदे मे रख सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे तो हरिताल भस्म वने। अ हि, मि ख, स अ

(६५) हरिताल को २० गुने गोजिह्वा के रस में पकावे फिर अमलतास

की राख मे दाव् देकर चून्हे पर चढाय ४ प्रहर की आच दे तो हरिताल भस्म वने ।

अ त

(६६)हरिताल को लहसुन रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर भस्म यत्र मे आच दे तो हरिताल भस्म वने । अ त

(६७) हरिताल को लोधकी राख मे दाबू देकर चून्हे पर चढाय ४ प्रहर की आच दे तो हरिताल भस्म वने । अ त

(६८) हरिताल को आक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय १० तो० लहसुन या कुकरोंधा के नुगदे में रख सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे तो हरिताल भस्म वने । र ति

(६९) हरिताल को आक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय रतन जोत के नुगदे मे रख सम्पुट कर कुक्कुट पुट की आच दे तो हरिताल भस्म वने ।

मि ख, म अ

(७०) हरिताल को आक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय अमलतास की राख में दाव् देकर ४ प्रहर की आच दे तो हरिताल भस्म वने ।

अ त.

(७१) हरिताल को आक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय उस पर आक दूध की २ तहे चढाकर सुखाय साप के मुह मे रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो हरिताल भस्म वने । अ त

(७२) हरिताल को आक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय आक पत्र व आक वीजके नुगदेमे रख वस्त्र सम्पुट १ सेर वस्त्रका करके थोडेसे गोहेकी आच दे तो हरिताल भस्म वने । अ हि

(७३) हरिताल को आक दूध की ४ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय ई ट के सम्पुट में वन्द कर ५ सेर उपलो की आँच दे काले रग की भस्म वने ।

अ अ

(७४) हरिताल को आक दूध की ७ भावना दे काच की कूपी मे भर वालुका यन्त्र मे रख कूपीपाक करे, आच ४ प्रहर की दे । शीशी तोड कर नीचे और ऊपर की लगी हुई हरिताल को एकत्र कर पीस रखे । अ अ

(७५) हरिताल को आक दूध की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय एरण्ड पत्रो मे लपेट अपामार्ग या पीपल की राख मे दाबू देकर ३-४ घटा की आच

दे तो हरिताल भस्म बने । अ अ

(७६) हरिताल डली पर २० तो० आक दूध का फिर ४ तो० कुमारी रस का चोया दे बाद मे कुचले की राख मे दाब् देकर ४ प्रहर की आच दे तो हरिताल भस्म बने । अ त

(७७) हरिताल डली को आक दूध, कनेर पत्र रस, कटेली फल रस प्रत्येक मे ११-११ दिन भिगोवे । फिर कटेली फल के नुगदे मे रख सम्पुट कर उसे एक हण्डी मे रख वालुका यन्त्रमें दाबू देकर सम्पुट कर १ मन उपलो की आच दे तो हरिताल भस्म बने । अ हि, मि ख

(७८) हरिताल को अभ्रक के बडे पत्र पर रख कर उस अभ्रक को अगारो पर रखे जब हरिताल धुआँ देने लगे आक दूध का उस पर चोया दे चोया १ सेर दूध का देकर उतार कूट कुमारी रस की भावना दे टिकिया बनाय सुखाय पीपल चूर्ण को गुड मे कूट नुगदा बनाय उसमे हरिताल को रख सम्पुट कर वालुका यन्त्र मे दाबू देकर ८ घटे की आच दे तो हरिताल की भस्म बने । अ त

(७९) हरिताल से चौगुनी लाल फिटकिरी के चूर्ण मे उसे रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे । यद्यपि हरिताल कुछ उड जाती है किन्तु फिटकिरी लाभ करती है । विषम ज्वर, जीर्ण ज्वर में दे । र. त सा

(८०) उक्त मात्रा में सफेद फिटकिरी के मध्य हरिताल को रख कर उसे करछी में रख गरम करे । जब फिटकिरी फूलने लगे उसमें ४ तो० सरसो का तेल डाल दे थोडी देर में तेल भक से जल उठेगा जब तेल जल जाय उतार ले उस फिटकिरी को खुर्च कर पीस ले हरिताल भस्म होगी ।

मु फि, मि ख, म अ, र त सा

(८१) हरिताल फिटकिरी को उक्त मात्रा में ले सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे । किसी ग्रन्थकार ने ५ छटाक उपलो की आच दी है । बस, उस फिटकिरी को पीस रखे । मि ख, म अ, र त. सा.

(८२) हरितालको ५ भावना वासा स्वरसकी देकर नारियल जटा भस्मको हण्डीमे भर भस्म यन्त्र बनाय उसमे रखकर दाबू दे ८ से १२ प्रहरकी अग्नि दे तो हरिताल की श्वेत भस्म बने । आ स प.

हरिताल भस्म के अनुपान

इसकी मात्रा १-२ रत्ती तक है, गिलोय क्वाथसे देने पर वातरक्त में, कुष्ठ मे, आमा हल्दी से रक्त विकार में, मीठातेलिया चौथाई रत्ती जीरा ३ माशे से मृगी रोग मे, समुद्र फल से जलोदर रोग मे, देवदाली रस से भगन्दर मे, फिरग रोग मे, मजिष्ठादि क्वाथ से कुष्ठ मे, त्रिफला मिश्रीसे पाण्डु रोगमें, सोठ चूर्ण से आमवात में, सज्जीखार, कचनार फूल चूर्ण से अम्लपित्त में, चौलाई रस से ज्वर मे देवे।

अद्रक रस से विषम ज्वर, शीताङ्ग, चित्त भ्रम मे दे मजिष्ठादि अर्क मे कुष्ठ मे,शक्कर से पाण्डु क्षय, ज्वर मे,अद्रक शहद से शूल वात विकारमें, बकरी के मूत्र से जलोदर मे, केशर जावित्री मे शीताधिक्य मे, चोपचिन्यादि चूर्ण शहद से सन्धिवात मे, आवा हल्दी से रक्त विकृतिमे, हरड चूर्ण से ऊर्ध्व श्वास में, बावची चूर्ण से श्वेत कुष्ठ में, गिलोय क्वाथ से वातरक्त व कुष्ठ मे, मीठाते लिया चूर्ण २ चावल,जीरा चूर्ण १॥ माशे से अपस्मार मे, देवदाली रस शहदसे भगन्दर रोग में हरिताल का सेवन करावे।

हिंगुल

हिंगुल या रस सिन्दूर पारा और वलि का एक यौगिक है जो प्रकृति मे पाया जाता है और कृत्रिम विधि से भी वनाया जाता है, वास्तव में हिंगुल स्वत ही पारद की भस्म है। क्योकि पारा और वलि दोनो ही मौलिक पदार्थ है इन मौलिकों से वनने वाले यौगिक को ही तो हमारे शास्त्र की परिभाषा में भस्म कहा गया है। देखो पारद भस्म प्रकरण में इसके प्रमाण। भस्म की भस्म क्या। हा ! यदि इसका यह यौगिक टूट कर कोई दूसरा यौगिक भी वन जाय तो वह पारद की भस्म कहलायेगी, न कि हिंगुल की। यौगिक ही यदि वदल जाय तो फिर उस मे हिंगुल नामक यौगिक का तो अस्तित्व ही मिट जाता है फिर उसकी भस्म क्या ?

इस वात को हमारे रस शास्त्र के ज्ञाता जान चुके थे,इस लिये हमारे ग्रन्थो मे हिंगुल भस्म का विधान नही मिलता। हा ! अनुभव से यह ज्ञान हुआ है कि यदि हिंगुलको स्वेदन किया जाय, तेल पाक, दुग्ध पाक, पुट पाक आदि विधियो से उसे कुछ उत्ताप–इतना उत्ताप—कि उसका यौगिक न टूटे तो उस

की यौगिक रचनामें कुछ हेर फेर अवश्य होता है और उस यौगिक रूप मे गन्धक की मात्रा उन मे कुछ घट जाती है इस तरह का पाक किया हुआ हिंगुल अधिक गुणदायी देखा जाता है इसी लिये इसे अनेक विधियों से स्वेदन, मर्दन योग, पाक द्वारा अनेक व्यक्तियों ने जो प्रयत्न किये हैं और उनके उन प्रयत्नों मे जो विशेषता आई है उनका जो ग्रन्थों मे उल्लेख मिलता है उनका सकलन इस प्रकरण मे हमने कर दिया है।

सिद्धदरदामृत

कर्षद्वयमितं खण्ड हिंगुलस्य समाहरेत् ।
भृशंकर्पास सूत्रेण वेष्ठयेत्परितोभिपक् ॥
निधापयेदम्बरीप चुल्लिका वेष्ठिते तत ।
पल द्वयोन्मित तत्र पलाण्डु स्वरस क्षिपेत् ॥
कर्षकञ्च वटक्षीर ततोऽग्नि दीपयेद्भृशम ।
शुष्के जलाशे चुल्ली तोऽम्बरीय मवतारयेत् ॥
स्वागशीतं ततो ज्ञात्वा रक्तखण्डं समाहरेत् ।
अम्बरीपं प्रमृज्याथ चुल्लिकायां निधापयेत् ॥
कर्षोन्मित देवपुष्प चूर्णं तत्र प्रसारयेत् ।
ततोदरद् खण्डं च निदध्याद् युक्तितो भिपक् ॥
भल्लातक फलानां च सार्द्ध द्वादश कर्षकम् ।
स्तूपाकार तया तस्मिन्निदध्यात्परितोभिपक् ॥
देवपुष्पस्य चूर्णेन छिद्रण्यत्र प्रपूरयेत् ।
ततः प्रज्वालयेद्वह्निं रसतन्त्र विशारद. ॥
दग्धान् भल्लातकान् प्राज्ञो मध्यतश्चापसारयेत् ।
घृतं दशगुणं रक्तात् क्रमशो निक्षिपेत्तत ॥
दग्ध चापि घृत प्राज्ञो हिंगुलं त्वव तारयेत् ।
कर्पास सूत्र भस्माथ समृज्यापनयेद्भिपक् ॥
समर्पितोह सिद्धेभ्यो यतोऽयंत्रिपुरद्विषा ।
भुवनेऽसौ ततः ख्याता श्रीसिद्ध दरदामृत ॥ र. त.

४ तो० सिंगरफको धागे से लपेट कर गोली बनाय इसे बडे करछेमे रखकर इसमे प्याज रस और वट दुग्ध इतना डाले कि वह डूब जाय फिर मन्द आंच

पर उक्त रस व दुग्ध को [illegible] कर [illegible] करें [illegible]
चूर्ण के मध्य हिंगुल रख उसे २ तोले [illegible] निवाते में [illegible]
दाब दे कर उन निवातो पर [illegible]
कर उस [illegible] को [illegible]
उतार शीतल कर हिंगुल निकाले [illegible] उपयोग में [illegible], [illegible] की
मात्रा आधी रत्ती से १ रत्ती तक है। [illegible]
शीताग, सन्निपात, [illegible] वृद्धि, [illegible] नाशक है।

(शताक दरद) चणकानि च खण्डानि दरदस्य तु कारयेत ।
शीशजे वाऽयसे पात्रे स्थाप्य तच्च धमेद् दृढम ॥
जातायामुष्णतायां वै तते द्रव्याणि सेचयेत् ।
द्रव्यतुल्य द्रवद्रव्य मेषास्याद्धति भावना ॥
मेषी क्षीरेण दशधा दशधा क्षीरैरर्कजै ।
दीप्त वर्गेण दशधा विरेकाश्चैक पञ्चधा ॥
पञ्चधादुग्धवर्गेण अन्तरान्तस्य भावना. ।
अय शतार्क दरदो नाना रोग विनाशक' ॥
क्षुद्बोधस्य करो नित्य योगवाही निगद्यते । र. रा. सु.

हिंगुल के चने जैसे टुकडे करके काच या लोह के प्याले मे रख गरम करे गरम होने पर उस मे प्रथम भेड़ के दूध का चोया दे इस तरह दस वार करे, फिर आक दूध का चोया १० वार दे, फिर त्रिकटु, चित्रक आदि दीप्त वर्ग के क्वाथ का चोया १० वार दे, फिर रेचक द्रव्यो के रस का चोया ५ वार दे, फिर दुग्ध वर्ग (भेड, वकरी, गौ, भैस, गधी) का चोया ५ वार दे तो यह शतार्क दरद नामक हिंगुल अनेक रोगो का नाशक है और क्षुधा वर्धक है।

(तैलपाकी दरद) म्लेच्छ सूत्र विवेष्ठित पलमितं मापस्यपिण्डे क्षिपेत् ।
प्रस्थे धूर्तज तैलजे हुतवहे सम्पाच्य पिण्डान्नयेत् ॥
र. रा श, र. यो. सा.

४ तोला हिंगुल की डली लेकर उसपर धागा लपेटे ताकि हिंगुल ढक जाय फिर उस पर उर्द के आटे का १ अगुल मोटा लेप कर दे, उसे धतूरे के तेल मे डाल कर कडाई मे चढाय पकावे, जब आटा लाल हो जाय निकाल ले। इसे वाजी करण के लिये प्रयोग करे। नोट-अन्य साधारण तेलो मे भी पाक

कर सकते हैं। लाभ उतना ही करता है जितना धतूरा तेलका।

(स्फटि दरद) एकोन वसु भागे तु चूर्णे सौराष्ट्रि सम्भवे।
कर्षेक दरद खण्ड शुद्धं मध्ये निवापयेत् ॥
विद्या धरेण यन्त्रेण पाक कुर्याद्यथा विधि।
दुग्धेन सहदातव्यं माप मात्रञ्च रोगीणाम् ॥

रसा. स., र यो सा.

९ तो० फिटकरी चूर्ण के मध्य १ तो० हिंगुल को दाबू दे कर विद्याधर यन्त्र मे चढाय आच दे तो ऐसा सिद्ध हुआ हिंगुल १ माशा दूध से देने पर नपुन्सकता, प्रमेह आदि मे लाभ करता है।

(धान्यराशि पाक) हिंगुल ५ तो० को भेड के दूध की भावनाए देता रहे, १ सेर दूध की दे कर टिकिया बनाय सुखाय प्याले में सम्पुट कर धान्यराशिमे दबादे, ६ मास बाद निकाल उपयोग मे लावे। अ त.

(शुद्ध दरद) ५ तो० हिंगुल की डली को १० तो० सोठ के नुगदे में रख पोटली बनाय भागरी पत्र रस, आक पत्र रस प्रत्येक ढाई सेर देग मे डाल कर दोला यन्त्र विधि से १ दिन मन्द मन्द आचपर स्वेदन करे तो यह शुद्ध हिंगुल अर्धांग, लकवा में लाभ करता है। मि ख, अ. स

(२) हिंगुल को थोहर दूध में ७ दिन भिगो रखे फिर पोटली में बाध ५ सेर दूध में दोला यन्त्र विधि से स्वेदन करे। यह कुष्ठ, फिरगमें लाभदायी है।

रसू ति, मि . ख, अ. स

(डमरू पाक) ५ तो० हिंगुल को १ सेर अजवायन के मध्य रख हण्डी मे बन्द कर चूल्हे पर चढाय ४ प्रहरकी मन्द मन्द आँच दे। निकाल पीस व्यवहार में लावे। अ त

(२) हिंगुल को चौगुने मीठा तेलिया चूर्ण मे लपेट ५ सेर कुसुम्भा बीजो के मध्य रख डमरु यन्त्र मे बन्द कर २ प्रहर की आच दे, इस विधि से १० बार करे उत्तम क्लीवत्व नाशक बनता है। सि भै मा.

(३) हिंगुल डली को वट पत्रमे लपेट उसे प्याज १ सेर और अजवायनके मध्य रख डमरु यन्त्र मे बन्द कर ४ प्रहर की आच दे। का. अ., मि ख.

(पुट पाक) हरमल, भिनावा, माल कागनी का पाताल यत्र से तेल निकाल इस तेल से हिंगुल डली को चुपड कर आक के पत्तो मे लपेट सम्पुट कर पुटपाक

करे। इस प्रकार ४० बार करे तो सिद्ध हो। अ हि नि र

(२) हिंगुल डली को धतूरा फल के भुरते में रख सम्पुट कर पुट पाक करे इस विधि से २०० बार करे। अत्यन्त वीर्य वर्धक, स्तम्भक कामोद्दीपक है। मात्रा ½ रत्ती। मि. र

(३) हिंगुल डली पर हींग का लेप कर प्याज के भुरते में रख सम्पुट कर पुटपाक करे, इस विधि से २५ बार करे। क्षुधा वर्धक, काम वर्धक, स्तम्भक है। मि र, अ त

(चोया पाक) ५ तो० हिंगुल को प्याज के १ सेर रस का और १ सेर अनार का चोया क्रम से दे तो हिंगुल बने। अ न, मि र

नोट—मुफरदात उलअजाईन के लेखक ने ५ सेर प्याज रस का चोया दिया है।

(१) ५ तो० हिंगुल को करछी में रख १ सेर अद्रक रस का थोड़ा थोड़ा चोया दे। क्षुधा वर्धक है। म अ

(२) १ तो० हिंगुल, १ तो० तुत्थ भस्म १० तो० आक दूध प्रथम आक दूध में तुत्थ भस्म छोड कर १ सप्ताह रखा रहने दे फिर आक के दूध का पानी छान ले हिंगुल को करछी मे रख कर उस पानी का चोया दे तो सिंगरफ मोमी हो जायगा। स अ

(करछी पाक) २ तो० हिंगुलपर ३ मा० अफीमका लेप कर सुखाय कुचला, जैपाल, मालकांगनी के चूर्ण में दाबू देकर करछीको आगपर रख आधा सेर घी आधा सेर शहद मिलाकर उसका चोया दे, अच्छा शक्ति वर्धक बल वर्धक है। र मि

(२) हिंगुल ५ तो०, बलि ३ तो०, तिल आध सेर, हरमल बीज ½ सेर हिंगुल को बलि के मध्य रखकर तिल, हरमल से दाब् देकर करछी को आग पर रखे जब आग लग जाय उतार ले शीतल होने पर निकाल पीस ले। मात्रा आधी रत्ती। व्यवहार में लावे। न अ

(३) हिंगुल डली को मालकागनी २० तो० के मध्य करछी मे दाब् देकर आगपर रखे मालकागनी के जल जाने पर उतार शीतल होने पर निकाल पीस रखे। अ. त

(४) हिंगुल की डली को आक दूध में तर कर के सुखा ले फिर १ पाव

हरमल के मध्य करछी मे दाबू देकर आग पर रखे हरमल जल जाय निकाल पीस ले। अर्धांग, दर्द सन्धि, लकवा, रीगनमें लाभदायी है। मात्रा १ रत्ती। अ त

(५) हिंगुल पर अफीम का लेप कर २० तो० भिलावा चूर्ण के मध्य करछी मे दाब् देकर उसे २० तो० शहद, २० तो० शराव से तर कर के आग पर रख पकावे, जब भिलावा जल जाय उतार पीस रखे। शक्ति वर्धक है, स्तम्भक है। मि ख, म हि.

(६) हिंगुल डली को ४० तो० लहसुन के मध्य दाबू देकर करछी मे रख आग पर जलावे लहसुन जल जाय उतार पीस रखे। मात्रा १ रत्ती। अर्धांग, अर्दित, आक्षेप, आमवात, धनुष्टंकारमे लाभदायी है। अ हि, मि ख

(तेल व घृतपाक) हिंगुल की डली पर ३ माशा अफीम का लेप कर के सुखावे फिर भिलावाको शहदमे नुगदा बनाय उसके मध्य डली रख उसे लोहे की जाली से बाध तेल में लटका कर तेल को पकावे जब तेल मे आग लग जाय और तेल जल जाय निकाल कर हिंगुल को पीस ले। मात्रा आधी रत्ती। अ त

(२) हिंगुल डली को धतूरा फलके नुगदा में रख आटा का सम्पुट कर उस आटे को तेल में पकावे आटा लाल होने पर निकाल ले। इस तरह १०१ बार करे और व्यवहार में लावे। अ ति अ त, नि ख

(३) हिंगुल डली को साडे के पेट मे रख पेट को सी कर उसे तेलमे तले, इस विधि से १०० बार करे। शक्ति वर्धक, वीर्य वर्धक, स्तम्भक है। अ त

(४) हिंगुल डली को मुर्गी के अण्डे की सफेदी निकाल उसके स्थान पर उस डली को रख अण्डे के छिलके से मुँह को ढक उर्द के आटे का सम्पुट कर उसे तेल या घृत मे तले इस प्रकार १०० अण्डो मे पाक करे उक्त गुण युक्त बने। अ त, मि ख

(५) हिंगुल डली को मीठा तेलिया २० तो० चूर्ण का जिमिकन्द रस से नुगदा बनाय उस में डली रख कर कपडे की पोटली बनाय तारामीरा तेल मे पकावे तो हिंगुल बने। मि ख

नोट—कपडे के स्थान पर लोहे की जाली से बाधने से वह नही जलेगा। ४ घटे पकाकर निकाल ले, पीस धरे।

(६) हिंगुल डली को आक दूध मे ३ दिन भिगो रखे फिर आक के पत्तो में लपेट स्वेदन करे या पुटपाक करे। फिर मास के कीमे मे लपेट जाली से

वाध घृतपाक या तेल मे पाक करे माम के लाल होनेपर निकाल ले, इस तरह २१ वार करे। जा अ, मि ख

(७) हिंगुल को निम्बू रस की भावना दे टिकिया वनाय सुखाय धतूरे के नुगदे मे रख १ सेर लीर को जरातेल में तर कर के उसका सम्पुट करे और उसे दिया सलाई दिखा दे तो हिंगुल भस्म वने।

(भस्म यत्र या लवणयन्त्र) हिंगुल डली को आक दूधमें खरल कर टिकिया वनाय सुखाय नमक में दावू दे सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे। फिर एक अण्डे की जर्दी (पीले भाग) मे रख सम्पुट कर पुटपाक करे इस तरह ११ वार करे। लेखक कहता है इसकी २ चावल मात्रा कवूतर की विष्टा से दे तो पार्श्व शूल मे लाभ करता है। र. ति, मि ख.

(२) लाल मिर्च वृक्ष की भस्म मे हिंगुल को दावू देकर ४ प्रहर की आच दे तो हिंगुल वने। स अ, मि ख

(३) अमलतास की राख मे हिंगुल डली को दावू देकर ३ प्रहर की आच दे तो हिंगुल वने। अ. त.

(४) हिंगुल डलीको धतूरा के नुगदे में रख सम्पुट कर सुखाय उसे वालुका यन्त्र मे दावू देकर ७ घटेकी आच दे। मात्रा २ चावल। नामर्दी में दे। स अ

पुट विधान से हिंगुल को पुट देने की वहुत सी विधिया ठरकी विरादरी के लिखे ग्रन्थो में दी हुई है जिसमे लावक पुट से लेकर गजपुट तक की आच देने का विधान दिया हुआ है हम उन विधियो को पाठकों के अवलोकनार्थ दे रहे है किन्तु हम निश्चय के साथ कहते है कि लावक पुट से अधिक की आच अर्थात् ३५० शताश से अधिक उत्ताप पर जव कि उसमे हवा का सम्पर्क मिलता रहे हिंगुल का यौगिक टूटने लगता है वलि ऊष्मजन से मिल कर ऊष्मिद में परिणत होता रहता है और पारा भिन्न हो जाता है। यदि आच ज्यादा हो तो पारा भी उड जाता है नही तो वही आम पास लगा रह जाता है। हमारे कथन की सत्यता को परखने के लिये निम्न विधियो में से किसी विधि से हिंगुल भस्म वना कर पाठक परीक्षा ले।

(१) हिंगुल डली को जगली अजीर के भस्म का कुमारी रस में नुगदा वनाय इसके मध्य डली रख सम्पुट कर ४ सेर वनोपल की आच दे, सफेद भस्म वने। स अ

(२) ४ सेर के तरबूज में १ तो० हिंगुल रख सम्पुट कर २५ सेर उपलो की आच दे। यदि कच्चा रहे तो एक पुट और दो। मि ख

(३) हिंगुलको हंसराज, वन्दाल, वटजटा, आक, थोहर इनके रस या दूधकी ७-७ भावना दे टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर १ सेर उपलो की आच दे तो हिंगुल भस्म वने। र रा सु

(४) हिंगुल डली पर अहिफेन का शहद में मिला लेप लगावे उस डली को छोटे कुल्हड में रख उसमें २० तो० वकरे का रक्त भर कर सम्पुट कर ४ सेर अनोपल की आच दे, इस तरह ३ पुट दे तो भस्म वने। श्लेष्मनाशक, शक्ति वर्धक है। स अ

(५) हिंगुल, केसर वरावर दोनो को पान और अद्रक रस की ७ भावना दे टिकियां वनाय सुखाय जावित्री के नुगदे मे सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे। यह जीर्ण ज्वर में लाभ करती है श्वास कास मे भी लाभदायी है। अ त

(६) हिंगुल को वन तम्वाकू के नुगदे में रख सम्पुट कर ५-६ सेर उपलो की आच दे तो भस्म वने। अ त,

(७) कुसुम्भावीज, अद्रक, थोहर, इनके मिश्रित नुगदे मे हिंगुल को रख सम्पुट कर १० सेर उपलो की आच दे तो भस्म वने। अर्धांग, गठिया मे देवे। अ त

(८) हिंगुल को पान, अद्रक रस मे खरल कर टिकिया वनाय सुखाय निर्विसी सुहागा का निम्वू रस मे नुगदा वनाय उसमे टिकिया रख अण्डे के खोल में वन्द कर आक मूल के खोलमें रख सम्पुट कर १५ सेर उपलो की आच दे तो भस्स वने। अ त

(९) कसीस, निर्विसी, मीठा तेलिया, सुहागा इन सवो को निम्वू रस में घोट नुगदा वनाय उसमें हिंगुल डली को रख आक मूल के खोल में विठा सम्पुट कर १५ सेर उपलो की आच दे तो भस्म वने। अ त

(१०) हिंगुल को थोहर की ३ भावना दे वरावर का चूना मिलाय टिकिया वनाय सुखाय सम्पुट कर गजपुट की आच दे तो भस्म हो। सि भैं मा

(११) हिंगुल की डली को चीनी की प्याली में रख उसे थोहर के दूध से तर करके भानु पाक करे इस प्रकार ७ तहे चढावे फिर थोहर के नुगदे मे रख सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आँच दे तो भस्म वने। र. सि.

(१२) हिंगुल को नागफनीफल रस और आक दूध में ७-७ दिन भिगो रखे, फिर गुड़हल, कनेर, फूल आक के नुगदे मे रख सम्पुट कर २ सेर उपलों की आँच दे तो भस्म बने। मि ख

(१३) हिंगुल को लहसुन रस की ३ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय उस पर १० तोला सूत लपेट आग लगादे तो भस्म बने। अ. ति मि.ख.

(१४) हिंगुल को ७ भावना आक दूध की दे टिकिया बनाय सुखाय फिर गौ सींग बुरादा २० तो० को शराव में डाल कर नुगदा बनाय उसमे टिकिया रख अभ्रक पत्रो से लपेट सम्पुट कर १० सेर अङ्गारो की भूभलमे दवा दे भस्म होगी। फिरग मे चमत्करी लाभकरता है। मात्रा २ चावल। मि. ख.

(१५) कुचला चूर्ण का आक दूध मे नुगदा बनाय उस मे हिंगुल की डली को रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो भस्म बने।

अ स., अ ति, मि ख.

(१६) हिंगुल को त्रिकाण्ड थोहर दूध मे ३ दिन भिगो कर हरमल बीज का नुगदा आक दूध मे बना कर उस मे डली रख उस पर आक फूल, केला फूल का नुगदा चढाय सम्पुट कर ४ सेर उपलो की आच दे तो भस्म बने।

अ ति मि ख

(१७) हिंगुल को भागरा, प्याज, एरण्ड रस १०-१० सेर एकत्र कर दोला यन्त्र विधि से १ दिन स्वेदन करे, फिर तितली बूटी, सूरज मुखी फूल के नुगदे मे रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की आच दे तो भस्म हो। मि ख

(१८) फिटकिरी को थोहर दूध मे पीस उसका मोटा लेप हिंगुल की डली पर करे और सुखावे फिर लौंग के नुगदे मे रख सम्पुट कर ५ सेर उपलो की आच दे तो भस्म बने। अ त

(१९) हिंगुल को पान और प्याज रस की ३-३ भावना दे टिकिया बनाय सुखाय प्याज के नुगदे मे सम्पुट कर १ सेर उपलो की आच दे। इस विधि से १०१ पुट दे तो सफेद भस्म बने। अ, त

(२०) एक अण्डा खाली करके उसमें सालव मिश्री चूर्ण आधा भर उसपर हिंगुल रख बाकी चूर्ण ऊपर से भर सम्पुट कर २ सेर बकरी की मेगनी की आच दे तो भस्म बने। अ त, मि ख

(२१) हिंगुल को आक दूध, प्याज रस की १-१ भावना दे टिकिया बनाय

[सु]खाय प्याज के नुगदे में रख सम्पुट कर १३/४ सेर उपलो की ग्राच [दे]ने।
अ.

(२२) हिंगुल को सूरजमुखी के रसकी ३ भावना दे टिकिया वन[ाय उ]सी के नुगदे मे रख सम्पुट कर २ सेर उपलो की ग्राच दे तो भस्म व[ने]।
अ हि,

(२३) हिंगुल को ग्राक दूध, मिरका, ग्रर्क पुदीना की १-१ भाव[ना दे] टिकिया बनाय सुखाय मम्पुट कर १ मेर उपलो की ग्राच दे। यदि वजन [कम हो] तो उतना ही हिंगुल ग्रौर डाल कर उक्त विधि से भावना व पुट देता जाय त[ो] २१ पुट में भस्म वने।
अ स, मि ख

(२४) एक हण्डी में ६० तो० गेहू डाल उसके मध्य हिंगुल रख उस हण्डी [में] तेल सरसो, प्याज रस, शराब, शहद प्रत्येक १५ तोला डाल सम्पुट कर १५ [से]र उपलो की ग्राच दे तो लाल रग की भस्म वने।
अ स, मि ख.

(२५) हिंगुल को १ बोतल शराव में खरल कर टिकिया वनाय सुखाय करीर की कोपलमें रख ५ तोला लीरो का वस्त्र सम्पुट कर उसे ग्राग लगा दे। अगले दिन निकाल वरावर का पारा मिलाय निम्बू रस की भावना दे टिकिया बनाय उक्त विधि से पुट दे तो भस्म वने।
अ. स, मि ख

(२६) प्रथम हिंगुल को धतूरा फल में भरकर सम्पुट कर २१ वार पुट [ते]क करे। फिर उसे पीस कर ग्रातशी शीशी में डाल १० तो निम्बू रस में पकावे, निम्बू रस के जल जाने पर २ तो० गन्धक का तेजाव डाल कर पकावे तेजाव के जलने पर हिंगुल भस्म वन जाती है। यह भस्म सग्रहणी, रक्ताल्पता [स्न]ागिक निर्बलता, फिरग, ग्रर्श, कंठमाला, श्वित्रकुष्ठ में लाभ दायी है। मात्रा १ चावल।
अ. स., मि ख.

(२७) माक्षिक, दूध पथरी, मैनसिल, मिर्च काली, सफेद रत्तिया, ग्रभ्रक चूर्ण, काला नमक इन्हे भिन्न भिन्न ग्रण्डे की जर्दी मे घोट कर हिंगुल की डली पर लेप करे। लेप एकके ऊपर दूमरा क्रमसे चढावे ग्रौर सुखाता रहे तत्पश्चात् [स]म्पुट कर ५ तोला उपलो की ग्राच दे, फिर १० तोला उपलो की ग्राच दे। [इ]स तरह उस सम्पुट को विना खोले उसे नित्य १ छिटाक उपले वढा कर २५ छिटाक उपलो तक की ग्राच दे तो लेखक कहता है कि हिंगुल की भस्म वन जाती है। इसे निकाल शराव मे खरल करके रख ले।
अ त

भस्म-विज्ञान का शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१४	धातुसेवनी,	धातुसे बनने वाली
,,	२२	धातुओंसे,	धातुओ अधातुओ
,,	२५	इनकी	इसकी
,,	,,	इसकी	इनकी
६	७	वस्तुओ	वस्तुको
,,	१९	देती इसको	देते इनको
,,	२५	नि स्विाद	नि स्वाद
७	६	आवश्व्यकता	आवश्यकता
,,	९	रखना	रखनी
,,	१५	इसकी	इनकी
,,	१७	यौकिक जो	यौगिक है जो
,,	१८	इनमें वलि की	वलि की
८	२१	भस्क को	भस्म को
९	४	भा.आ.	मा अ
१०	२५	मतिप्क	मस्तिप्क
११	१८	अम्रक	अभ्रक
१२	३	घमन	वमन
,,	१४	व्रीह	व्रीहि
,,	१६	वहि	वहि.
१३	११	पुटिते	पुटित
१४	५	अम्रक	अभ्रक
,,	१९	अम्रक	अभ्रक
१५	५	मर्येउखल	मनेदूखलके
,,	६	वात्र	वास.
,,	२१	जव	
,,	३०	वर्णांताम्	
१६	६	धूप में	
,,	१०	निश्चित	
,,	११	वह्निआप	
,,	१७	सर्वदोक्त	
,,	२२	रस पकावे	र [cut off]
१६	२९	शोष्प	
१७	१	भस्क	
,,	२	दुग्ध तप्तेपुट	दु [cut off]
,,	२१	सदृश्य	
,,	२९	भट्टी	
१८	२६	गोलके	
१९	३	यदिद	
२०	८	वासरे	
,	१३	अम्रक	
,,	१७	३ फुट	
,,	,,	वर्द्धक	
२१	२	धान्याभ्रमक	
,,	१४	को	
२२	१२	अम्रक	
,,	२४	प्रत्येक	
२३	२१	पक्तिस्यामविक	

पृ०	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४	१८	प्रमदितम्	प्रमर्दितम्
२५	१५	पुटै	पुटै
,,	१८	प्रमेहापहे	प्रमेहापहम्
२६	७	कदली	कदलि
,,	१३	ओर	और
,,	२५	घे	का धे
२८	१४	ग्रन्थाकार	ग्रन्थकार
,,	२२	सादृश्य	सदृश
२९	१७	दिनम्वाभिपग्वरै	दिनम्वा-भिपग्वर
,,	२०	निर्विकार	निर्वकार
३०	२५	येत्वर्क	येत्वर्क
,,	३०	निश्चन्द्रतो	निश्चन्द्रिता
३१	३-४	द्वाम्यापक्तिभ्या	द्वयपक्ति
,,	८	तश्च	तच्च
३१	५	पुटिस्तथा	प्रपुटिस्तथा
३१	२०	पटे	पुट
,,	१९	दर्भेमकेपुटै	दर्भेभ्रके पुटे
,,	२६	पूर्वोक्त	पूर्वप्रोक्त
३३	१५	मदयेत्	मर्दयेत्
,,	१८	निश्चिन्द्रकं	निश्चन्द्रिक
३४	२८	वा र,	व,रा
३५	५	वर्णका	वर्णकी
,,	१८	क्वार्थैवट	क्वथैर्वट
,,	१९	त्रिपुटन्	त्रिपुटेन
३६	१४	वाराचपचदश,वाराश्चपचादश	
,,	२६	मदितम्	मर्दितम्
३८	५	दूवयो	दूर्वयो

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८	६	मैतंविम्	मेतंविम्
,,	२६	विक्षिपेत	विनिक्षिपेत्
,,	२९	पिधान्य	पिधाय
४२	२	पुटे	पुट
,,	,,	परानरा.	परोनर
,,	५	निगुंण्डाक	निगुंण्डिका
,,	३०	भार्गी	भार्गि
४३	६	रमेतच	रभेच्च
,,	२५	शुल्क	शुक्ल
४४	७	कीतितो	कीर्तितो
,,	१२	शराव	शराव
,,	१३	घोट	घोट
४५	९	घृत	घृत
,	१७	मूत्रक्छ	मूत्रकृच्छ
,,	२०	लाम	लाभ
४५	२९	कछुका	कछुग्रा
४७	२३	के आगे—शरावेणापरेणाथ सम्यगाच्छादयेत्तत ।	
,,	१४	कार्य	काम
,,	१८	त्वलात	त्वलात
,,	१९	फुल्लिका	फुल्लिता
,,	२५	म्यन्तरे	भ्यन्तरे
,,	२८	चूर्णाज	चूर्णित
५०	१०	चद्रिकया	चन्द्रिकया
,	११	गजारय	गजास्ये
,,	१९	मजपुट	गजपुट
,,	२३	विधि	विधि
५१	५	९२ से ९९	८९ से ९२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५२	२७	छढा	चढी
५४	१४	ऋृतवा	ऋतवा
,,	१९	प्राचलित	प्रचलित
,,	२४	मालती	मालनी
,,	३०	मालती	मालनी
५५	२४	योगिक	यौगिक
५६	८	सम्पुन्तस्थ	सम्पुटान्तस्थ
५८	२३	मित	मिद
५९	६	ततोद्	तदुद्
५९	७	भमस्याद्	भस्मस्याद्
५९	१४	विनिक्षियेद्	विनिक्षिपेद्
५९	१८	येद्रग्वि	येदग्नि
६०	४	तप्य	तु
६०	१५	उसके	उसको
६०	१८	वर्यासमया	वर्य सम पारद
६०	२३	दद्रुत्तमम्	त्यनुत्तमाम्
६१	२	गजाह्वा	गजाह्वे
६१	३	एकमेव	एवमेव
६२	११	करीपाग्नां	करीपाग्नि
६३	१२	चक्षुप्य	चाक्षुप्य
६४	७	खपडेलछते	खपडैलकी
६४	११	स्फटिकाम	स्फटिकम
६४	१५	गर्म में	गर्भ में
६४	१८	कलनारके	कलनार-फारसी के
६५	११	सकी	इसकी
६५	१७	श.से अधिकका,	श.अधिकके
६५	२८	वलकाइद	वलिकाइद
६६	२	वनाता	वनता
६६	२८	मशीन	मशीनी
६७	३	सयुज्य	सयोज्य
६७	९	भुक्त्या	भुक्त्वा
६८	१२	तदधौ	तदधो
६८	२१	कन्याम्भो	कन्याम्भोसि
६९	२	नास्ति	नास्ति
६९	११	पक्वामा	पक्वमा
६९	२०	रैतत्	रेतत्
६९	२१	शरावकै	शरावके
६९	२६	सूत	सूत
६९	२७	पात्राणि	पत्राणि
६९	३०	भावे हिंगुले	भाव हिंगुल
७०	११	ह्यंगुलो	द्व्यंगुलो
७०	२७	धोट	घोट
७०	२८	२ गुल	२ अंगुल
७१	२४	एपा	एप
७२	२३	तिमिप्टं	तिपिष्ट
७२	२६	धोट	घोट
७३	१५	पचेतत	पचेच्चतं
७३	२३	इमकी मात्र,	इसकी मात्रा
७३	२८	पत्रे	पत्रै
७४	१०	ददोतस्य	ददेतस्य
७४	२०	ताम्रपत्र	ताम्रपत्र
७४	२८	पत्रे	पत्र
७४	२९	तद्भाण्डे	तद्भाण्डं
७५	२	स्वरस	स्वरसे
७५	९	योगस्य	[illegible]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७५	९	ग्रन्ये	ग्रन्थेषु
७५	९	दृश्येत	दृश्यते
७५	१०	ज्वरोकुश	ज्वराकुश
७५	१८	ग्रस्म	भस्म
७५	२६	रेसै	रसै
७५	२८	पुटैत्	पुटेत्
७६	९	ट्ठडम्	दृढम्
७६	२३	तुल्यादि गृह्णी,	तुल्यानिगृह्णी
७६	२३	भाल्लात	भल्लात
७६	२७	चाद्य	चार्द्यं
७७	२	तत्वा	दत्त्वा
७७	२४	ध्यान्तददना	ध्यात्तदनन्त
७८	२४	द्रव्ये	द्रव्यै
७९	१४	द्वितये	द्वितिये
७९	१३	घाट	घोट
८०	३	सिलैगी	मिलैगी
८०	२५	क्षालित	क्षालिता
८०	२६	पिप्ट	पिप्टि
८१	११	सचूर्णे	सचूर्णं
८१	२७	ताभ्र	ताम्र
८३	३	मेव	मेव
८३	२३	ग्रन्तरस्यात्	ग्रन्तरमस्ति
८३	२९	मस्म	भस्म
८४	१४	व	वने
८४	२२	सिद्धये	सिद्धयै
८५	१५	कृत	कृत
८५	१७	तिर्दिष्टि	निर्दिप्टः
८५	२२	देय	देय
८५	२३	शर्कया	शर्करया
८५	२५	पिप्टवा	पिप्ट्वा
८५	२८	पिप्टवा	पिप्ट्वा
८६	१२	दत्वा	दत्वेति
८६	१७	रसघलिप्तम्	रसार्वलि
८६	१८	काम्वुल्युतं	काम्वुप्लुत
८६	१९	भवाम्मे	भवाम्भो
८६	२०	कृत्व	कृत्वा
८६	२५	भारा	भागरः
८७	७	रसावतार	रसावतारे
८७	१४	कार्कोद्येकभगो	कार्कोद्व्येक
८७	१७	तत्क्षिपे	तत्क्षये
८८	४	स्तपन	तपन
८९	६	त्पुटते	त्पुटिते
८९	११	को	की
८९	१५	लाभे	लाभ
८९	१५	ध्मात्वा	ध्माता
८९	१७	प्रक्रिया	प्रक्रियया
८९	१७	कंच्छद	कंच्छदा
८९	२३	च्छेतदनस्तपुनुना	च्छेदन-तनुना
८९	२४	सम्पुटिदति	सम्पुटेदिति
७९	२३	वल्कल	वल्कलमध्ये
८९	२४	एपमध्ये	एप समीर
९०	२६	ग्रकाश	ग्राकाश
९०	२९	कठूभर	कट्भर
९१	३०	दूघ	दूध

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९३	३	सेरकी	सेर उपलो की
९४	२	उदार	उदर
९४	१३	जवासा	धमासा
९५	७	मध्ये	मध्ये
९५	१४	टकण	टकण
९५	१५	तीव्रसूते	तीव्रे सूत
९५	१६	तुल्यभस्मादप्य,	तुल्यभस्माप्य
९५	२२	रोठा	रीठा
९६	१८	घर्पण	घर्पण
९९	९	स्तपन	तपन
१००	२६	अ की.	अल की
१०२	१८	मलित	मलिन
१०४	७	वन्यादवौ	वन्यदधो
१०५	२६	गीवर	गोवर
१०६	१०	सारिपचु	सारपिचु
१०६	१४	भिपड	भिपड्
१०६	२२	कलशे	कलश
१०६	२३	शराव	शराव
१०६	२३	स्थाप्या	स्थाप्य
१०८	२१	सिकताख्य	सितकाख्ये
१०९	२	यह	इस
१०९	६	मलासर	मलसार
१०९	२२	गन्व	गॅन्ध
११२	१८	समे	सम
११२	२१	कट्टन्रूप	किट्टरूप
११२	२३	भिवृ	भिघृं
११२	२६	जलनिवि	जलनिधौ
११२	२७	चिन्तामणि	चिन्तामणौ
११३	११	तत्रास्थि	तत्रस्थि
११३	१५	वधनम्	वर्धनम
११४	६	पिवेदनु	पिवेदनु
११४	७	पिवेन्	पिवेन्
११५	६	तस्योर्ध्वे	तस्योर्ध्वं
११५	१६	घमावे	धमावे
११५	२३	क्रान्ताह्व	क्रान्ताह्व
११६	१४	द्रवै	द्रावै
११७	२३	युर्जित्	युजित्
११८	१५	ऽङ्कर	ऽङ्कुर
११९	१८	कुक्कुटो	कुक्कुटे
११९	२५	को	की
११९	३	च र.	र च
१२०	२५	रमे	रसे
१२०	२५	रा स	रा सु.
१२१	१३	मागण	मार्गण
१२२	८	रक्तौ	रक्तो
१२२	१०	गन्वके	गन्धक
१२२	२२	यन्त्रे	त्रिधे
१२३	१८	कुक्कटी	कुक्कटे
”	२५	को	की
१२४	२१	तुल्या	तुल्या
”	२५	चूर्णांशो	चूर्णांशो
”	३०	वालुका	वालुका
१२५	६	काचकृते	काचघटी
”	१५	एवत्र	एकत्र
१२६	२	सम्मेलने	सम्मेलन
”	५	मर्दने	मर्दन

ठ	पवित	अशुद्ध	शुद्ध
२६	८	शीत्त	शीत्त
"	२६	ग्राघा	ग्राघा
२७	८	रसेनादि	रसेनापि
"	२६	क्षियेत्	क्षिपेत्
२८	५	साक्षाट्ट	साक्षाद्दृ
२९	४	क्वायये	भक्षये
"	"	नो	तु
१३०	१२	दाद्यद्य	दद्याद्य
१३१	१२	पद्धति	पद्धतौ
"	२७	विवर्धन	विर्वावित
१३२	५	मध्ये	मध्ये
"	६	मुवालुका	मनुवालुका
"	७	शीताद्धोच्छ	शीताद्धरेच्छ
"	१६	गेरिका	गैरिका
१३४	२	मिट्ठी	मिट्टी
"	२१	सेंघा	सेंधा
१३५	२०	द्वयं	द्वयो
१३५	२०	कृत्वा	कृतयो
"	२१	निम्तोस्ति	निम्नोऽस्ति
"	२१	वृद्धोग्नि	वृद्धोऽग्नि
"	३०	नाधास्था	नाधस्था
"	३०	स्यात्पूर्व्वं	स्यादूर्ध्वं
१३६	१५	केटली	कटेली
१३६	२३	द्वम्या ग्रन्थे	द्वयो ग्रन्थयो
१३६	२३	रहित	नास्ति
१३६	२४	भाग नियोजित	,भागानियो-जित
१३६	३०	पुटताद्	पुटनाद्

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३७	६	रण्ड्या	हुण्ड्या
१३७	९	घुनिशिम्	द्युनिशिम्
१३७	१०	कप्ठैर्घामण	काप्ठैर्घर्पण
१३७	१०	समुद्रय	समुद्र्य
१३७	११	मघ्य	मध्य
१३७	२३	पलाग्नि	पलानि
१३७	२७	सन्धि	सन्धिम्
१३८	१५	मतत्	मतम्
१३९	२०	चण्डाशु	चण्डाशौ
१३९	२६	मूल	मूल
१३९	२९	कञ्जिकं	काञ्जिकै.
१४०	२	भण्ड	भाण्ड
१४०	८	मुछेछी	मछेछी
१४०	१८	कृतेलेपै	कृतैर्लेपै
१४०	२६	रखकपूर	रसकपूर
१४१	९	राक्षक	राक्षस
१४१	२४	स्टोव	स्टोव
१४३	२३	अकाश	आकाश
१४४	१६	द्विपादीनास्ति	द्वौपादौनास्ती
१४५	१५	सन्वि	सन्धि
१४५	२८	तस्य	तस्थ
१४६	१८	श्वेताङ्काल	श्वेताङ्कोल
१५०	२	ककट	कटक
१५०	४	दुग्ध	दुग्धे
१५०	५	यददुग्ध	तद्दुग्ध
१५१	११	शुप्कपति	शुष्कयातं
१५१	१५	पाच्यै.	पाच्य
१५२	१०	चिन्तामणौ	चिन्तामणौ च

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५२	११	चण्डाशु	चण्डाशो
१५२	१२	कामधेनु	कामधेनु
१५२	१३	भगरा	भागरा
१५२	३०	रसे	रसै
१५३	११	पतितस्वेदिते	पतितस्वेदित
१५३	२०	व्रजाति	व्रजति
१५३	२८	रस	रस ४ प्रहर तक
१५३	२६	चोया ४प्रहरतक दे,	चोयादे
१५४	१७	दत्वा	दत्त्वा
१५४	२७	रात्र्यंक	रात्र्येक
१५६	२६	को	की
१५७	२	सराव	शराव
१५७	२१	मंद्य	मंद्यं
१५७	२७	सम्पुद	सम्पुट
१६१	४	भंवेत्	भंवेत्
१६१	६	अग्न्गादित्य	अग्न्गादित्य
१६२	११	दन्तराम	दो मत
१६२	२८	मपा	मूषा
१६२	३०	र ज नि	र ज.नि.
१६३	८	र न नि	र.न.नि
१६४	७	मद	मद्यं
१६५	३	[illegible]	[illegible]
१६६	१२	[illegible]	[illegible]
१६७	२८	न	तो
१६८	२०	[illegible]	[illegible]
१६८	२०	[illegible]	[illegible]
१६६	८	[illegible]	[illegible]
१६६	८	[illegible]	[illegible]
१७१	२०	झुरिय	झुरिया
१७१	२४	अवशेप	अवशेष
१७४	३०	भट्टी	भट्ठी
१७४	३०	ऊपर	ऊपर
१७६	८	मम्डूर	मण्डूर
१७६	२३	सि योग	सिद्धयोग
१७८	२६	पुटेदेव	पुटेदेव
१८०	८	कुर्वर्ती	कुर्वीत
१८१	४	तद्वय	तद्द्वय
१८२	२४	वाराह	वराह
१८३	२६	पटीयसो	पटीयसी
१८३	२६	योज्यो	योज्या
१८४	५	निम्बुनाम्बु	निम्बुकाम्बु
१८४	११	का	की
१८५	३	भावयेद्दग्ध	भायेद्दुग्ध
१८५	१०	नूतराजा	सूतराज
१८६	७	गापजवा	गावजवा
१८६	१५	माणिका	माणिक्य
१८७	३	। १-२ रत्ती ।	मात्रा१-२रत्ती
१८८	१८	भियंव्य	भिभाव्य
१८८	१६	दशभिवृ	दशभिर्दृ
१८६	११	घनत्ता	घनता
१६०	२	ऊप्मद	ऊष्मिद
१६१	३	गन्यो	गन्धो
१६५	२७	अ यो म.	अनु यो मा
१६६	२०	गंजा	जगंली
१६७	१०	तुल्ययो	तुल्यये।
१६७	२४	तुर्थं	तुल्य

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९९	२	कृत्याल	कृत्ताल
१९९	९	त्रिभि दत्वा	त्रीणिदत्तानि
२०१	२	मर्द्यं	मर्द्य
२०५	२८	सम्पट	सम्पुट
२०६	५	कृत्वा	कृत्वा
२०७	२	पिप्टा	पिप्टि
२०७	८	भगैक तु	भागैकशुद्ध
२०७	१२	मध्यस्थ	मध्यस्था
२०७	१३	तागतम्	तागताम्
२०७	१४	मदित	मर्दिता
२०८	२	तिगुन	तिगुने
२०८	३	परसुखाय	पर कर सुखाय
२०९	१४	ज्जले:	ज्जलै·
२०९	२२	थोडे	घोडे
२१०	१०	को	की
२११	२०	पुटतो	पुटितो
२१२	२५	लेन्थेन	लेन्येतम
२१३	२४	ह	हे
२१६	२	तप्तोतक	तप्तोदक
२१६	४	नुपत्तये	नुशान्तये
२१६	३०	खव	खूव
२१७	१५	शकुजीर्ध्व	शङ्कुजोर्ध्व
”	२७	मल्लातक	भल्लातक
”	१७	यत्तुतत्ते	यत्तुत्ते
२१८	४	ताम्रे	ताम्र
”	९	रस में छोड	रस में घोट
२१९	७	म	मे
”	१०	मृताश्च	मृताञ्च
२१९	३०	वर्ण निवार	वर्ण निकार
२२२	१७	पात्राणि	पत्राणि
”	२०	श्वयथु	श्वपथु
२२४	२६	भेद	भेदो
२२५	१९	पन.	पुन
”	२१	सगघ	सगन्ध
२२६	१६	लोह	लोह
२२७	२०	निविशेपम्	निर्विशेपम्
२२८	८	चिचकत्य	चिचकस्य
२२९	१७	खण्डा	खण्डा
”	”	स्थितै	स्थिते
”	२०	स्यात्ताद्वारि	स्यत्तद्वारि
२३०	१४	सम्मद्य	सम्मर्द्य
२३१	५	क्वाये	क्वाथ
”	१२	अन्तमे	अन्ते
२३२	१८	करभानु	कर ७ दिनभानु
२३२	१८	कर	—
२३३	५	खरातये	खरातपे
”	७	लेप्य	लेप
”	१४	दीयताम्	दत्त
”	२६	योरस्य	योरस
”	८	निर्दोप	निर्दोष
२३७	३०	शा० ध०	शा० ध०
२३८	१२		चि. र., यो. चि.
”	१७	पृथगेय	पृथगेव
२३९	१०	लस्याय	लश्चाय
२४१	२	दुम्वटि	दुम्वरि
”	७	का घ.	का घे.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४१	६	तत्व	तत्त्व
२४२	१२	पापाणे लु	पाषाणो लू
२४२	१६	तच्चूर्ण	तच्चूर्णं
२४३	४	अयोद्धत्य	अयोधृत्य
२४३	२६	पुटदेय	पुटे देव
२४४	२०	मृत	भृत
२४५	२३	क्रमादेयं	क्रमाद्देयं
२४६	२२	सरया	सरय्या
२४८	२८	निर्वातिह	निर्वातिऽह
२४८	२६	पुटान्तराम्	पुटान्तरम्
२४६	२०	लोह सु	लोहं तु
२४६	३०	मुत्तमम्	मुत्तमाम्
२५०	५	मल्लेच	मल्लेन
२५०	६	मर्द्येन	मद्येन
२५०	६	हुण्ड्या	हुण्ड्या
२५०	११	प्रकार	प्रकार
२५०	१८	विघि	विधि
२५१	२	कनके	कनक
२५१	३	वृक्षेर्दिने	वृक्षादिनी
२५१	८	कूर्मभिघ	कूर्मभिधे
२५१	६	पुटश्च	पुटाश्च
२५१	१०	स्त्रिया	स्त्रिय
२५१	१२	रसे	रसै
२५१	१४	कन्यका	कन्यका
२५१	१५	कज्जलि	कज्जल
२५१	१५	गुद्धे च लोहे	शुद्धं च लोह
२५१	२५	वाकी कज्जलीकी,	वाकीपुटे
५२	५	कृष्णताम्	कृष्णता
२५२	१५	शोथार्शा	शोथार्शं
२५४	२	ह	हैं
२५४	६	तदीय	तदीय
२५४	८	ततस्वेकी	ततस्त्वेकी
२५४	१६	मिति	इति
२५४	१६	दम्वरे	दम्वरे
२५४	२६	काटाहिका	कटाहिका
२५४	३०	मर्दयेट	मर्दयेत्
२५५	२२	दर्व्या	दर्व्या
२५६	५	भस्म	भस्म
२५६	१४	भा.आ.	मा आ
२५६	१५	रजा	रज
२५६	२८	आ अ.	आ अ.
२५८	२	तो ग	तो वंग
२५८	२६	सुसुक्ष्म	सुसूक्ष्म
२५८	३०	कर	पर
२५६	२३	अ क	अल.की
२६०	१०	चूर्ण पत्र	पत्र चूर्ण
२६०	१५	मघ्य	मध्य
२६०	२१	वेष्ठय	वेष्ठ्य
२६२	१३	मध्यरख	मध्यविछाय
२६२	२४	मे आँच	मे रख आच
२६३	५	र ज ति	र ज नि
२६४	७	लग्ने	लग्न
२६४	२२	प्रहर	प्रहर
२६५	१६	श्लक्ष्णं	श्लक्ष्ण
२५६	१६	पूरयेत	पूरयेत्
२६५	१६	ममुद्धरेत	समुद्धरेत्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६७	६	पिप्यलस्य त्व	पिप्पलस्य १त्व
२६७	११	तस्यो परि	३ तस्यो परि
२६७	११	३ प्रसता	प्रसती
२६७	१३	मुपर्यथो	५मुपर्यधो
१६७	२१	न्यसेतस्यो	न्यसेत्तस्यो
१६७	२३	पिप्यलस्य	पिप्पलस्य
२६७	२८	पत्र पर	पत्र विछावे
२६८	५	वङ्ग	वङ्गं
२६८	२६	चतुर्थागेचर्णं	चतुर्थं शचूर्णं
२६८	३०	तीव्रिकम्	तीव्रकम्
२६९	२६	पु दे	पुटदे
२६९	२९	विचा	चिंचा
२७०	६	हरताल	हरिताल
२७१	२२	पुट	पुटे
२७१	२५	अ प्र	आ वे प्र.
२७१	२७	भेंददृश्यते	भेदो दृश्यते
२७२	४	तालेश	तालेन
२७२	१३	भावयेत	भावयेत्
२७३	२	मल्लेन	मम्लेन
२७३	१२	नाट	नोट
२७३	२०	पिश्रयेत्	मिश्रयेत्
२७३	२५	ह	है
२७३	२८	वङ्ग	वङ्ग
२७३	३०	मत्राम्ल	मूत्राम्ल
२७४	६	पुट	पुटी
२७४	६	हे	है
२७४	१३	रेव	रेव
२७४	१३	मूत	मृत

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७४	२४	कामधेनौ	कामधेनो च
२७५	३	निलघ्ने	निलघ्नम्
२७५	४	मान्ध	मान्द्य
२७६	६	रसस्त्या	रसस्या
२७५	१५	मूत्रकृक्छ	मूत्रकृच्छ
२७६	८	मारणता	मरणता
२७६	१०	ययायोग	तथारोग
२७६	१२	कार्यं	कामं
२७६	१३	नास्य	न्यस्य
२७६	१४	चतुर्दस	चतुर्दश
२७६	२०	म्रियन्ते	म्रियते
२७७	७	कुत्वा च	कृत्वश्च
२७७	२७	सम्पु	सम्पुट
२७८	५	तेपुतंश्च	तेपु तं·
२७८	११	चर्णं	चूर्णं
२७८	११	कुम्भके	कुम्पके
२७९	१६	उल्या	उल्या·
२७९	१७	सार्वेन	सर्धेन
२७९	१९	शेपद्धि	शेपार्ध
२७९	२१	म्रियते	म्रियन्ते
२७९	२२	कुम्पिके	कुम्पके
२७९	२३	प्रभावोग्र	प्रभावोग्रे
२८०	१८	सर्वे	सर्वे
२८०	२१	स्त्रि	स्त्री
२८०	२९	वेप्टयेत	वेप्टयेत्
२८१	१३	स्त्रि	स्त्री
२८१	१५	स्त्रि	स्त्री
२८२	३०	कचवा	केचुवा
२८३	७	स्त्रि	स्त्री

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८३	८	स्त्रि	स्त्री
२८५	१०	सत्यवाक	सत्यवाक्
२८५	१७	भूभाग	भूनाग
"	१८	जातीना	जातीना
"	"	मेपा	मेपा
"	"	पटेर्नहि	पुटेन हि
"	१९	कचुआ	केचुवा
"	२२	न्ये निसाहा	न्येव निस्सहा
२८६	२८	हरताल	हरिताल
"	२८	पुगदी	नुगदी
२८७	१३	द्रं वै.	द्रवै
२८८	३०	तै वप्टि	तै वेप्टि
२८९	८	रस	रसे
"	१६	भावतयेत	भावयेत्
२९१	२६	स्त्रि	स्त्री
२९२	१०	पटरी	पेटारी
"	२९	स्त्रि	स्त्री
"	३०	स्त्रि	स्त्री
२९३	१५	वारुण्या	वारुण्या
"	२८	स्त्रि	स्त्री
"	३०	स्त्रि	स्त्री
२९४	१६	सत्य	सत्य
"	३०	वज	वज्र
२९५	१२	स्त्रि	स्त्री
"	२७	स्त्रि	स्त्री
२९६	२	ह	है
"	८	रत्नान्ना	रत्नना
"	११	स्त्रि	स्त्री

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
"	१७	पुष्पवाल्या	पुष्पाल्या
"	२३	त्कुप्पके	त्कुम्पके
२९७	५	वास्तव	वास्तव में
२९७	२१	कार	प्रकार
२९८	२३	कोदो	कोदों
२९९	२४	कारक	कारकम्
३०१	१४	चूर्णं	चूर्णं
"	१५	हस्तोमिते	हस्तोन्मिते
"	११	विनि	विनि
"	२७	पादमेक	पादमेक
३०३	३	शंख	शख
३०४	५	लाति वाणो	लातिच वाणो
"	"	ताडकायाम्	ताडकाम्
"	२६	रस	रसै
३०८	९	दावा	दत्त्वा
"	१७	कूम्प	कुम्प
३०९	७	स्वर्णं	स्वर्णं
"	११	शुल्व ह्य	शुल्व ह्य
"	२०	का	को
"	२६	अंथवास्त्रिदुग्धमें	स्त्रीदुग्धसे
३११	४	तत्व	तत्त्व
३१३	६	`सा	ऐसा
३१४	२९	वेच्छेवे	वेच्छ्वे
३१६	१४	वैघराट्	वैद्यराट्
"	१७	सि. भे म.	सि भै मा.
"	३०	दुग्घ	दुग्ध
३१८	१९	४ सेंक	सेंकै
"	१९	विद्यद्रय	विघद्रय

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१९	५	हिंगुले	हिंगुल
"	१८	दुतार्या	दुत्तार्य
३२०	६	तिलत्य	तिलोत्य
"	१४	चूर्णं	चूर्णं
"	२६	टङ्कश्च	टङ्कश्च
३२१	३	पंक्ति से आगे—सुण्ठी टङ्क मिता देया घृत टंक चतुष्टयम् ।	
"	४	रक्तिकैक रसे	रक्तिकैकंरस
"	"	रसः	नार
"	२०	सुशीतला	सुशीतला
"	२२	गमार्जम्	गमार्यमा
"	२८	रस मिल	रस में मिल
३२३	३	अथ खप्ररे नाग	अथ खर्परे नागं
"	२३	शिलारवि	शिलया रवि
३२४	१५	रख	मे रख
३२६	३	असका	उसके
"	१४	मुद्धत्य	मुद्धृत्य
"	१६	जलनिवे	जलनिधी
"	१६	पाठ	पाठी
३२७	१०	रस चण्डाशु	रसचण्डाशौ
"	१०	तरगिणी	तरगिण्या च
३२८	११	मूलायसम्	मूलायसाम्
"	१२	भसम	मस्य
"	१५	त्रिशद्	त्रिस्याद्
"	१५	करोति	करीप
३२९	१९	कुक्कुट	करीप
३३०	१५	चालपेत्	चालयेत्
"	२३	तदर्धञ्च	तदर्धांच
३३१	२४	काज	काजी
३३२	२	सम्पु	सम्पुट
"	१४	कुङ्कमा	कुकुमा
३३३	३	हरता	हरती
"	३	का	की
"	२७	जाक्षी	जाती
३३५	११	अण	अणु
३३८	२०	कण्डो से	कण्डो में
"	२४	भि० ख०	मि० ख०
३३९	२६	पिप्ठी	पिप्टी
३४०	५	प ो पर	पत्रो पर
"	२३	पिप्टवा	पिष्ट्वा
३४१	२	क्षप्यो	क्षेप्यो
"	२३	सम्पट	सम्पुट
३४२	४	हलिन्या	हलिन्या
३४५	१२	मर्दयते	मर्दयेत्तु
३४६	१०	उद्धत्य	उद्धृत्य
"	२६	रुद्धत्य	रुद्धृत्य
३४७	१	सुवण	सुवर्ण
३४८	२	पलो	पलै
३४९	६	चार्कव	मार्कव
३५०	७	निकाल इसी	निकाल ले,
३५१	३०	मादर्त	मर्दित
३५२	२२	कुमारी	कुमारी
३५२	२४	करये	कारये
३५३	३	मितम्	मिताम्
३५३	६	तत्पुटे	तत्पुटेत्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५३	१७	देय	देव
३५३	२१	को	का
३५३	२२	लपकर	लेपकर
३५३	२४	कर्ता	कर्ता
३५४	२३	सहाम्लकै	महाम्लकै
३५४	२४	क्रियाम्	क्रिया
३५४	२७	तुल्यत	तुल्येन
३५५	२२	पुनम्‍ स	पुनरम्लेनम
३५५	२२	देव लेनदश	देव दशधा
३५५	२५	पुट	पुट
३५६	२८	प्रमाथि	प्रमाथी
३५७	२२	ग्रन्थ में	ग्रन्थो मे
३५८	१६	गोजिह्व	गोजिह्वा
३५८	२०	नि कि	ति कि
३५८	२३	सूजाक	सुजाक
३५९	६	वर्गाकार	वर्गाकार
३५९	२३	अभाव	प्रभाव
३५९	३०	ययक्षा	युयुक्षा
३६१	३	द्वगुल	द्व्यगुल
३६१	७	मे	में
३६१	११	कन्थारी	कन्थारी
३६१	११	काष्ठजा	काष्ठजा
३६१	३	रस	रस
३६२	१६	शिवलिंग	शिवलिंगी
३६२	२५	रसराजीयता	रस राजीयिता
३६२	२७	१४	१५
३६३	१८	तो की	तो सामल
३६४	१३	वीचो	वीजा
३६७	३०	की	में
३६८	२६	१ टा	घटा
३६९	२	सव	खूब
३६८	११	शास्त	शास्त्र
३६८	१४	पात्र	पात्रे
३७०	१३	मुद्र भेदे	मुद्राभेदे
३७०	२२	कूप्माण्डा	कूष्माण्डा
३७०	२२	गजाह्वयौ	गजाह्वयै
३७०	२५	वटाङ्कुरै	वटाकुरै
३७०	२८	किञ्चत्	किञ्चित्
३७१	२	दिने	दिन
३७१	३	हठाग्नि	हठाऽग्नि
३७१	१२	दद्रुन	दद्रुघ्न
३७१	२४	हे इसमे	है इस
३७३	३०	गन्ध	गन्धं
३७४	६	हृन्याप्टा	हृन्त्याप्टा
३७४	७	विविधे	विविध
३७४	२२	सरावाभ्या	शरावाभ्या
३७४	२७	कुडवभ्	कुडवम्
३७५	२६	दद्याञ्च	दद्याच्च
३७६	३	कुत्द	कुन्द
३७६	६	गुटिका	गुटिका
३७६	७	विलैस्त्रि	विन्नेपैस्त्रि
३७६	८	निर्वीयम्	निर्वयम्
३७६	२१	अश्वस्य	अश्वत्थ
३७६	२२	भूर्त्या	भूत्या
३७६	२२	गजाह्वयै	गजाह्वये
३७६	२३	व्रजेयाम	व्रजेद्याम

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३७६	२९	वर्णं	वर्णं
३७७	१०	तस्यैव	तस्यैक
३७८	१४	र का	र का वे,
३७९	११	ढाकके	ढाककी
३७९	२३	दद्यायत्नेन	दद्याद्यत्नेन
३७९	२८	ग्रहश्च	ग्रहञ्च
३७९	२८	पची	पचीम्
३७९	३०	गलित्	गलत्
३८०	७	दही	दाही
३८०	१२	रहित	रहित
३८०	१२	शुप्क	शुष्का
३८०	२१	चर्ण भस्मिन्	चूर्ण मस्मिन्
३८०	२२	जीर्णं	जीर्णं
३८०	२३	पूर्व शतो	पूर्वांगतो
३८०	२३	पातकारी	पातकारि
३८१	१५	के	में
३८२	१०	सकृदेव त	सकृदेव तु
३८२	११	मध्वाजेन	मध्वाज्येन
३८२	२९	त्वहम्	न्वहम्
३८३	११	क्षारे	क्षार
३८३	२१	भाण्डे	भाण्डं
३८४	४	कुण्ठरिण	कुण्ठानि
३८५	२८	हरताल	हरिताल
३८६	२	हरताल	हरिताल
३८६	४	ट की	पुटकी
३८६	५	सुवर्च	'स वच
३८६	५	प्रपिप्ट्य	प्रपिष्य

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८६	८	वह्नि	वह्नि
३८६	१४	भिषजोवर	भिषजावर
३८६	१८	हरताल	हरिताल
३८६	२०	हरताल	हरिताल
३८६	२७	भुप्ट्वा	मृष्ट्वा
३८६	२८	वर्पाभू	वर्षाभू.
३८७	१३	च्छवेत	च्छ्वेत
३८७	१८	देना	देनी
३८९	२०	को	का
३९१	२५	फिटकिरीको,	फिटकिरीउक्त
३९३	११	वेष्ठित	वेष्ठितं
३९३	१४	तोऽम्बरीप	तोऽम्बरीप
३९३	२१	छिद्रण्यत्र	छिद्राणत्र
३९३	२७	समर्पितोह	समर्पितोहि
३९३	२८	स्याता	स्यात
३९४	११	तते	ततो
३९४	१३	क्षीरैरर्कजै	क्षीरजार्कजै
३९५	३	स्फटि	स्फटी
३९५	१५	भागरी	भागरा
३९६	११	मुफताह	मिफताय
३९७	१०	अर्दित	अर्दिति
३९७	१०	धनुर्ष कार	धनुपटकार
३९९	२२	भस्स	भस्म
३९९	२३	निर्विमी	निर्विसी
३९९	१९	मे	में
४००	१०	चमत्करी	चमत्कारी

———

कूपीपक्व-रस-निर्माण-विज्ञान

यह ग्रन्थ स्वामी हरिशरणानन्दजी की मौलिक कृतियो मे से एक है। इस ग्रन्थ की ऐतिहासिक पदार्थ सामग्री सञ्चित करनेमें आपने १५-१६ वर्ष व्यतीत किये और जिन कूपीपक्व रसोंको आप अनेक प्रकार से बनाकर इस विषयको आज ३० वर्ष से समझते व अनुभव लेते आ रहे है उन्ही रहस्योका उद्घाटन आपने अपने इसग्रन्थमें किया है। इस ग्रन्थको आयुर्वेदमार्तण्ड यादवजी त्रीकम जी आचार्यने आयुर्वेद विद्यापीठके रसतन्त्र की पाठ्यविधिके आलोच्य ग्रन्थोमे रखने की सिफारश की है।

२ × ३० सोलह पेजी ऐण्टिक पेपर पर पृष्ठ सख्या ५०० तथा आर्ट पेपर पर मनोहर १४ चित्रोंसे सुसज्जित, ग्रन्थ का मूल्य सजिल्द ५) रुपया, पोस्ट और पैकिंग खर्च भिन्न।

सम्मतियां

श्रीयुत वालचन्द्र जी नाहटा सरदार शहर, बीकानेर से १६-२-४२ के पत्र मे लिखते है—बहुत अर्से के बाद आप को यह पत्र लिख रहा हूँ। दो कारणो से—एक तो आप को बधाई देने के लिये और दूसरे कुछ जानने के लिये।

बधाई! आपके अनुपम ग्रन्थ 'कूपीपक्व-रसनिर्माण-विज्ञान' के प्रकाशनार्थ है जिसको पढकर मैंने बहुत अधिक व्यावहारिक ज्ञानप्राप्त किया। मैं आपके उक्त ग्रन्थमें दिये विधानकी विद्युत् भट्ठी बनानेकी इच्छा रहने पर भी समया-भावसे कलकत्तेमें न बना सका। किन्तु सामान लाकर एक विद्युत् शास्त्री मित्र की सहायता से यहाँ उसे तैय्यार किया और उसमे १० तोला पारद, १० तोला गन्धक, १ तोला सुवर्ण डालकर उस विद्युत् भट्ठीमें मकरध्वज चढाया। १००० हजार वाट प्रति घण्टे के हिसाबसे विद्युत् शक्ति खर्च करके ६ घण्टेमें मकरध्वज बना ही लिया।

जिस परीक्षणकी इच्छा वर्षोंसे थी और जिसके लिये कलकत्ता की एक फर्मने विद्युत् भट्ठीकी कीमतका इस्टीमेट २५०) का दिया था वह विद्युत् भट्ठी आपकी कृपासे १५) या २०) रुपयेमें ही बना कर देखली, देखही नहीली उसपर कूपीपक्व रस तय्यार भी कर लिया।

इसके लिये आपको बधाई नही अनेकानेक धन्यवाद देना चाहिये। किन्तु यदि इतना ही होता तो धन्यवाद देकर ही रह जाता, आपने तो उसमे और इतनी अधिक प्रायौगिक बातें दी है जिसके लिये धन्यवाद पर्याप्त नही। बधाई इस लिये कि आप अपने प्रयत्न मे सफल हुए।